अनिल मोहन
बबूसा और राजा देव
मोना चौधरी, नगीना, जगमोहन,
प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज,
विजय वेदी, आर.डी.एक्स और
वीरेंद्र त्यागी एक साथ इसी
उपन्यास में!
देवराज चौहान सीरीज
नया उपन्यास

बबूसा और राजा देव

ISBN : 978-93-80871-53-0

लेखक से बातचीत के लिए ई-मेल
anilmohan012@yahoo.co.in
Now, Join me on Facebook :
facebook.com/anilmohan012
Join my page on Facebook :
facebook.com/anilmohanofficial

●
प्रकाशक
राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611410, 27612036, 27612039
●
वितरक
राजा पॉकेट बुक्स
112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,
दिल्ली-110006
फोन : 23251092, 23251109
●
मुद्रक
राजा ऑफसेट
1/51, ललिता पार्क
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

BABOOSA AOUR RAJA DEV : DEVRAJ CHOUHAN SERIES
ANIL MOHAN

मूल्य : साठ रुपए

आखिरकार 'बबूसा' ने राजा देव (देवराज चौहान)
को ढूंढ़ ही लिया और उधर रानी ताशा का
पोपा (अंतरिक्ष यान) भी डोबू जाति के पास आ
उतरा था। रानी ताशा राजा देव को
वापस सदूर ग्रह पर ले
जाने के लिए पृथ्वी ग्रह पर आई थी, परंतु विद्रोह
पर उतरा बबूसा रानी ताशा के सामने दीवार बनकर
खड़ा हो जाने की तैयारी कर रहा था।

बबूसा और राजा देव

शृंखला-2

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास

दो शब्द——लेखक की कलम से

पाठकों को

अनिल मोहन का नमस्कार!

'बबूसा' के बाद आपके हाथों में आ गया है **'बबूसा और राजा देव'** ये वो वक्त है कि 'मिस्ड कॉल' एक-दो दिन में बाजार में आने वाली है और इस पत्र में मैं **'मिस्ड कॉल'** और **'बबूसा'** के बारे में आने वाली पाठकों की राय, उनके नाम नहीं दे पा रहा हूं परंतु अब तक फेस बुक और ई-मेल पर आ चुकी पाठकों की राय और नाम अवश्य लिखूंगा। परंतु पहले इस उपन्यास **'बबूसा और राजा देव'** की बात कर ली जाए। उपन्यास को पढ़कर आप कुछ हैरान भी होंगे और थोड़े से रोमांचित भी। थोड़ा-सा सोचेंगे भी और आपको अच्छा भी लगेगा। दरअसल 'बबूसा' शृंखला की कहानी ही कुछ ऐसी है कि मुझे ये सब करना पड़ा। जो मैंने इस उपन्यास में किया है ये मेरे ही एक पाठक अंकुर जी ने मुझे आईडिया दिया था और इस बारे में तब मैंने **'दुबई का आका'** उपन्यास के पत्र में इस बात का जिक्र भी किया था। अंकुर जी ने कहा था कि अगर मैं अपनी सब सीरीज के हीरोज को लेकर एक कहानी लिखूं तो बढ़िया रहेगा। ये आईडिया मुझे पसंद आया और मेरे दिमाग में घूमता रहा, परंतु ये काफी कठिन काम भी था। इसी दौरान मैं 'बबूसा' की कहानी तैयार करता रहा। जोड़-तोड़ करता रहा कि अचानक ही 'बबूसा' उपन्यास के घटनाक्रम ने ऐसा मोड़ लिया कि मुझे अंकुर जी की कही बात की गुंजाइश दिखने लगी तो मैंने इस मौके को चूकना ठीक नहीं समझा और अपने उपन्यासों की हर सीरीज के हीरो को मैंने 'बबूसा' शृंखला के उपन्यासों में लेने का प्रोग्राम तय कर लिया। और इसी से ही 'बबूसा' शृंखला के उपन्यास महत्त्वपूर्ण और सबसे खास बन गए। मुझे लिखने में भी बहुत अच्छा लग रहा है क्योंकि हर सीरीज का हर हीरो अपने ही रंग में रंगा हुआ है और जब ये एक ही उपन्यास में काम करेंगे तो तरह-तरह रंग खुद ही बिखरेंगे। हर कोई अपने मिजाज का है। सबके अपने शौक और सोचें हैं। मुझे आशा है कि मेरी सब सीरीज के उपन्यास आप सबने पढ़ रखे होंगे। सब हीरो को आप बखूबी जानते होंगे। अब मैं उनके सबके नाम एक बार दोहरा देना चाहता हूं। देवराज चौहान, जगमोहन, नगीना तो आपके पास हैं ही और मोना चौधरी हसीन रंगों से लदी रहने वाली, प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज को तो आप भूल ही नहीं सकते और अपने जुगल किशोर पैंतीस हजारी के मालिक, नम्बरी मक्कार——कमीने, मौका परस्त, देवराज चौहान के चाचा सांवरा चौहान, जो कभी होटल ब्लू स्टार के गोल कमरे में बैठकर अंडरवर्ल्ड संभाला करता था परंतु जब किसी ने उसके परिवार की ही हत्या कर दी तो धंधों से मन उखड़ गया और सब कुछ छोड़कर शांत-सा जीवन बिताने लगा

उसी ब्लू स्टार के गोल कमरे में, परंतु उसकी निगाह अंडरवर्ल्ड की हर हरकत पर रहती और कोई अपने साथ हुई बे-इंसाफी की फरियाद लेकर उसके पास आता तो, वो दिल से उसकी सहायता करता। फिर अपने विजय बेदी साहब, बुरा दिन था वो, जब लूट के वक्त चलाई गई गोली, खामखाह ही बेदी के सिर में, दोनों तरफ के दिमागों के हिस्सों के ठीक बीचोबीच जा फंसी। ऐसी फंसी कि उसे छेड़ना भी खतरे से खाली नहीं था। परंतु बेदी साहब को पता चला कि डॉक्टर वधावन ही सही कुशलता से ऑप्रेशन कर सकते हैं, परंतु वधावन ऑप्रेशन के 12 लाख मांगने लगा। अब बेदी साहब 12 लाख का इंतजाम करने में लग गए। उस हादसे ने विजय बेदी की जिंदगी बदलकर रख दी। रात-दिन 12 लाख के सपने ही आते कि कहीं से 12 लाख का इंतजाम हो जाए। ऐसे में शरीफ इंसान विजय बेदी, दुनिया की हेराफेरियों से वाकिफ होने लगा। वो भी धीरे-धीरे चालू बनने लगा, परंतु अभी तक 12 लाख का इंतजाम नहीं हुआ और गोली वहीं की वहीं अटकी है। इसके बाद अगर मैं वीरेंद्र त्यागी का जिक्र न करूं तो सब कुछ अधूरा लगेगा। देवराज चौहान, त्यागी को खत्म करना चाहता है तो त्यागी देवराज चौहान को बर्बाद करके रख देना चाहता है। इन दोनों के बीच दुश्मनी पहले के उपन्यासों में पैदा हुई थी। देखना ये है कि वीरेंद्र त्यागी इस बार क्या रंग दिखाता है। अमन ओबराय और हरीश खुदे तो आपके जेहन में पूरी तरह ताजा होंगे। आपको **'जिंदा आंखें'** पढ़े ज्यादा वक्त नहीं बीता। इन सबके बाद अगर R.D.X. यानी कि राघव-धर्मा और एक्स्ट्रा का जिक्र न करें तो नाइंसाफी होगी। काफी देर से इन तीनों को लेकर कोई उपन्यास नहीं लिख पाया, परंतु **'बबूसा'** शृंखला में ये आपके सामने आ रहे हैं। गजाला को तो आप भूले नहीं होंगे जो कि विश्व साम्राज्ञी बनने की चाहत मन में लिए तैयारी कर रही है और मेरे कई पाठक गजाला को उपन्यास में देखना चाहते हैं। दोस्तो ये हैं मेरे अब तक के खास-खास सब सीरीज के हीरो। हालांकि इनमें वीरेंद्र त्यागी, गजाला और सांवरा चौहान हीरो नहीं हैं उपन्यासों के, परंतु हीरो से कम भी नहीं हैं। इस वक्त इनका जिक्र न करना इनके साथ बेईमानी करने जैसा होगा। तो ये है मेरे मुख्य पात्रों का कच्चा चिट्ठा। आप खुद ही सोचिए कि अगर ये सब एक ही उपन्यास की कहानी में आ जाएं तो कैसा लगेगा आपको? सुनकर ही मजा आ रहा है तो पढ़ने में भी मजा आएगा। प्रस्तुत उपन्यास **'बबूसा और राजा देव'** में मैंने इन पात्रों को एक-एक करके लेने की चेष्टा की है। जाहिर है इन सब पात्रों को एक ही उपन्यास में नहीं लिखा जा सकता। फिर कहानी में इन्हें जरूरत के हिसाब से डाला जा रहा है। तो कुछ ही इस उपन्यास में आ पाए हैं। बाकी अगले उपन्यास **'बबूसा खतरे में'** में आएंगे। सिलसिला शुरू हो चुका है, देखते जाइए कि आगे क्या रंग बिखरते हैं।

'बबूसा' शृंखला के उपन्यास लिखने में मेरी मेहनत भी काफी लग रही है और मुझे मजा भी आ रहा है परंतु बढ़िया तो तब रहे कि आपको भी मजा आये।

जब आपकी राय इन उपन्यासों के बारे में मुझे मिलेगी तो तब पता चलेगा कि मेरी मेहनत कितनी सफल रही। मुझे यकीन है कि रानी ताशा, सोमाथ, धरा, बबूसा और बाकी सब पात्रों में अवश्य मजा महसूस कर रहे होंगे और मेरी सब सीरीज के सब हीरो के कहानी में आने से आपको कैसा लगा, ये जानने का इंतजार मुझे जरूर है। मेरी पूरी कोशिश होगी कि अपने सब हीरो को इन उपन्यासों में शामिल कर सकूं। सम्भव है एक-दो को इस कहानी में लेने से रह भी जाऊं परंतु अभी मैं स्पष्ट तौर पर कुछ नहीं कह सकता कि इनके बारे में आगे क्या होने वाला है। अब मेरी सब सीरीज के हीरो आपके सामने हैं पुरानी यादें ताजा हो रही हैं अगर आप किसी सीरीज का उपन्यास पढ़ना चाहते हैं तो फेसबुक पर मुझे इसकी खबर अवश्य दें, मैं आपको उसी सीरीज का उपन्यास दूंगा।

तो अब बात आप, पाठकों की, फेसबुक और ई-मेल पर आई पाठकों की राय की बात शुरू करता हूं। दिनेश शर्मा, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से कहते हैं कि ये मेरे पुराने पाठक हैं और लम्बे समय से मेरे उपन्यास पढ़ते आ रहे हैं। इनका कहना है कि कोई आपके उपन्यास बाजार से गायब कर देता है, क्योंकि जब उपन्यास लेने जाओ तो मिलता ही नहीं। नयनराज, दिल्ली से, इन्हें पूर्व जन्म पर लिखे गए देवराज चौहान और मोना चौधरी के उपन्यास पसंद हैं। रूपेश कुमार, नोएडा से, कहते हैं कि 'जुआघर' में माला के बारे में पहले ही पता चल गया था कि क्या होने वाला है। इनका कहना है कि वह नेपाल जा चुके हैं और उपन्यास पढ़ते हुए लगा कि ये नेपाल में ही घूम रहे हैं। सौम्य कंठ त्रिपाठी, दिल्ली से, ये पुराने उपन्यासों को री-प्रिंट करवाने के लिए कह रहे हैं। मोहम्मद नदीम, मुजफ्फर नगर, यू.पी. से, इन्हें 'मुखबिर' बढ़िया लगा, कहते हैं कि डबल डकैती का प्लान जबर्दस्त था। सुरेश खत्री, मुम्बई से कहते हैं आपके उपन्यास अच्छे होते हैं, देवराज चौहान की बात ही कुछ और है। पवन पारिख, रांची से कहते हैं 'मुखबिर' पढ़कर मजा आ गया, त्यागी का किस्सा खत्म ही क्यों नहीं कर देते। आदित्य शर्मा, दिल्ली, इन्हें त्यागी का बैड करैक्टर पसंद नहीं। ये विनय बरूटा को पढ़ना चाहते हैं। विनोद भंसाली, वीजापुर, कर्नाटक से कहते हैं कि हरीश खुदे पर उपन्यास लिखें, देवराज चौहान मुझे बढ़िया लगता है। सरबजीत सिंह, डाल्टनगंज, झारखंड से कहते हैं कि मैं आपकी सीरीज का फैन हूं। संदीप थापन, जगह का नाम नहीं लिखा, 'वर्दी का नशा' में गाड़े बढ़िया लगा और जब सोहनलाल की एंट्री हुई तो और भी बढ़िया लगा। हरिदास पाटिल, उल्लास नगर, महाराष्ट्र से लिखते हैं कि मोना चौधरी और त्यागी को एक साथ लाइये (प्रस्तुत उपन्यास में ऐसा ही है) अतुल गुप्ता, जगह नहीं लिखी कहते हैं कि देवराज चौहान को जगमोहन कैसे मिला, दोनों साथी कैसे बने? (आज से पच्चीस साल पहले जब देवराज चौहान सीरीज शुरू की गई थी तो पहले उपन्यास से ही देवराज चौहान और जगमोहन को एक साथ दिखाया गया था। इस मुद्दे पर अभी तक कोई उपन्यास नहीं लिखा

गया, परंतु अब आपके कहने पर, इस बारे में शायद प्रोग्राम बन जाए) हार्दिक भट्ट, सिडनी, आस्ट्रेलिया से फेसबुक पर लिखते हैं कि मैं जब इंडिया में था तो आपके उपन्यास पढ़ा करता था, परंतु सिडनी में तो आपका उपन्यास मिलना सम्भव ही नहीं है। यहां पर आप मुझे बहुत याद आते हैं। कैलाश कलसुले, जलगांव महाराष्ट्र से लिखते हैं कि ये मेरे पुराने पाठक हैं, देवराज चौहान सीरीज इन्हें बहुत अच्छी लगती है, खासतौर से देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाले उपन्यास, परंतु ये कहते हैं कि यहां आपके उपन्यास देर से मिलते हैं या मिलते ही नहीं। अमित मिश्रा, जगह का नाम नहीं लिखा, ये भी कहते हैं कि पुराने पाठक हैं और देवराज चौहान इन्हें पसंद है। नवीन आर्या, कोटा, राजस्थान से कहते हैं कि देवराज चौहान इन्हें पसंद है। इनके अलावा और भी पाठक हैं, जैसे कि विनय नागवेकर, रत्नागिरी, महाराष्ट्र, रवि सिंह वाराणसी, हरिंद्र सिंह बेदी, दिल्ली से, अजय कुमार शर्मा, बीकानेर, राजस्थान से, सौरभ सक्सेना, भोपाल, म.प्र. से, नवीन अग्रवाल, रायपुर से, राज माथुर, दिल्ली से, अवध चौबे, सूरत से, मुकेश कपूर फरीदाबाद से, मनीष अग्रवाल, सेंधवा, म.प्र. से, ऐसे और पाठक भी हैं, जिनका जवाब मैं जगह की कमी के कारण नहीं दे पा रहा हूं। एक बहुत ही खास बात कहना चाहूंगा कि मेरे लखनऊ के एक पाठक हैं, जिनका जिक्र मैंने अपने पूर्व के उपन्यास में किया था, उनकी शिकायत है कि मैं उपन्यास के पत्र में उन पाठकों को ही लेता हूं जो उपन्यास की तारीफ करते हैं। जबकि ये बात सही नहीं कही उन्होंने। फेसबुक पर जाइए, वहां तो पाठकों के विचारों को हर कोई पढ़ सकता है। पाठक मुझे जैसी राय भेजते हैं उन्हें वैसे ही मैं इस पत्र में लिखता हूं। कभी-कभी शब्दों को ठीक करके लिखना पड़ता है। आप लोगों को अगर उपन्यास पसंद नहीं आता और अपनी राय लिख भेजते हैं तो उसे मैं जरूर इस पत्र में शामिल करूंगा। अब मैं जो कहने जा रहा हूं वो तो आप जानते ही हैं कि देवराज चौहान सीरीज के **'बबूसा'** श्रृंखला वाले उपन्यासों पर राजा पॉकेट बुक्स के द्वारा ईनामी प्रतियोगिता रखी गई है। इसलिए इन उपन्यासों को पढ़ने के बाद इन्हें संभालकर रखिए, क्योंकि बबूसा श्रृंखला के अंतिम उपन्यास में, कुछ सवाल पूछे जाएंगे, जो कि कहानी से ही सम्बंध रखते होंगे। मुझे विश्वास है कि आप सब भाग्यशाली हैं और अधिक भाग्यशाली, कौन-कौन से पाठक बनते हैं, जो विजेता बनेंगे। ये एक दिलचस्प खेल रहेगा। मैंने आपका काफी वक्त ले लिया और अब वक्त है उपन्यास शुरू करने का **'बबूसा और राजा देव'** आशा है कि आपका भरपूर मनोरंजन होगा। पढ़ने के बाद फेसबुक पर अपनी राय जरूर भेजें। मुझे खुशी होगी। तो अगली मुलाकात देवराज चौहान सीरीज के आगामी नए उपन्यास **'बबूसा खतरे में'** में होगी।

शेष फिर!

—अनिल मोहन

बबूसा और राजा देव

देवराज चौहान हैरानी से बबूसा को देखे जा रहा था।

जगमोहन कभी देवराज चौहान को देखता तो कभी बबूसा या धरा को देखने लगता।

बबूसा का चेहरा खुशी से चमक रहा था। जबकि धरा के चेहरे पर व्याकुलता थी।

"तुम्हें यकीन है कि ये ही देवराज चौहान है?" धरा, बबूसा से कह उठी।

"ये ही राजा देव है।" बबूसा मुस्कराकर सिर हिलाते कह उठा—"राजा देव की गंध पहचानने में मुझसे कभी भूल नहीं हो सकती। मेरे जन्म के समय महापंडित ने वो शक्ति मुझमें डाल दी थी जिससे कि मैं दूसरों को गंध से भी पहचान सकूं। कितने जन्मों के बाद मैंने करीब से राजा देव की गंध ली है। मुझे बहुत चैन मिला। आज कितना खुश हूं मैं कि राजा देव मुझे मिल गए। सदूर ग्रह पर बिछड़े राजा देव पृथ्वी पर मिले।" बबूसा ने कहते हुए देवराज चौहान का हाथ पकड़ा और चूम लिया।

देवराज चौहान के चेहरे पर छाई हैरानी कम नहीं हो रही थी।

रैस्टोरेंट में रात के साढ़े ग्यारह बजे काफी भीड़ थी। रह-रहकर चम्मच या प्लेटों की आवाजें कानों में पड़ रही थीं। मध्यम-सी आवाजें उठ रही थीं। वर्दीधारी वेटर तेजी के साथ ग्राहकों की तरफ आ-जा रहे थे।

"राजा देव।" बबूसा पुनः बोला—"क्या आप अपने बबूसा को देखकर खुश नहीं हैं?"

"तुम—तुम बबूसा हो?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"आपने अभी तक मुझे पहचाना नहीं क्या?"

"तुम्हारी आवाज वो ही है, जब तुम कहते थे कि समाधि लगाकर मुझसे बात कर रहे हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"वो तो अब की बात है राजा देव। मैं ढाई सौ बरस पहले की बात कर रहा हूं, जब मैं आपका सेवक, आपका सच्चा सलाहकार हुआ करता था। मैं आपके लिए ही जीता, आपके लिए ही मरता था। आप भी मेरे बिना नहीं रहते थे। मुझे हमेशा अपने साथ रखते थे। मैंने हमेशा आपको राजा देव ही समझा, परंतु आप मेरे साथ दोस्तों की तरह व्यवहार करते थे।" बबूसा ने खुशी से कहा।

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।
जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता थी।
"क्या बात है राजा देव। आप खामोश क्यों हो गए?" बबूसा पुनः कह उठा।
"बैठ जाओ।" देवराज चौहान ने सोच भरे स्वर में, चेयर की तरफ इशारा करते हुए कहा।
"जो आज्ञा राजा देव।" बबूसा तुरंत जगमोहन के बगल वाली चेयर पर, देवराज चौहान के सामने की तरफ बैठ गया। बीच में टेबल थी।
देवराज चौहान ने धरा को भी बैठने का इशारा किया।
धरा देवराज चौहान के बगल वाली कुर्सी पर जा बैठी।
"राज़ा देव...।" बबूसा ने कहना चाहा।
"डिनर लोगे?" देवराज चौहान ने पूछा।
"मेरी तो भूख ही खत्म हो गई। आपको सामने क्या देखा राजा देव कि पुराने दिन याद आ गए।" बहुत खुश था बबूसा—"कितना अच्छा था वो वक्त। अब तो सदूर ग्रह बहुत बदल गया है तब से। कुछ तरक्क़ी की है, परंतु धीमी गति से। आप होते तो आज सदूर का रूप ही दूसरा होता।" एकाएक बबूसा की आंखें गीली हो गई थीं।
"डिनर लोगे?" देवराज चौहान ने पुनः पूछा।
"नहीं।" आंखें साफ करते बबूसा ने कहा।
"मैं लूंगी।" धरा कह उठी।
देवराज चौहान ने वेटर को बुलाकर धरा के लिए डिनर का आर्डर दिया। देवराज चौहान और जगमोहन ने डिनर कर लिया था। वेटर ने बर्तन उठा ले जाने वाले को भेजा जो कि बर्तन ले गया और टेबल साफ कर दी।
इस दौरान देवराज चौहान की गम्भीर निगाह बबूसा पर जाती रही।
वेटर के जाते ही बबूसा ने जल्दी से कहा।
"राजा देव, अब...।"
"मुझे देवराज चौहान कहो।"
"ये कैसे हो सकता है। आप राजा देव हैं तो आपको राजा देव ही कहूंगा। देवराज चौहान कैसे कह सकता हूं।"
"मैं राजा देव नहीं, देवराज चौहान हूं।"
"आप राजा देव हैं।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा—"मैं आपका सेवक बबूसा हूं।"
"देवराज चौहान कहने में तुम्हें क्या दिक्कत है।" जगमोहन बोला।
"तुम चुप रहो।" बबूसा ने जगमोहन से कहा—"मेरे और राजा देव के बीच मत बोलो।"

जगमोहन मुस्कराया और सामने बैठी धरा से कहा।
"तुम्हारे गले पर क्या हुआ?"
"डोबू जाति के लोगों ने मुझ पर हमला किया था। मेरी गर्दन कटते-कटते बची।"
"उसी चौकोर पत्ती जैसे हथियार से?"
धरा ने सहमति से सिर हिला दिया। (जगमोहन और धरा के विषय में विस्तार से जानने के लिए **राजा पॉकेट बुक्स** से **अनिल मोहन** का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा'** अवश्य पढ़ें।)
"मैं तो मर ही जाती। मेरा गला कट जाता।" धरा सिहर उठी—"ये तो बबूसा ने बचा लिया।" धरा ने बबूसा को देखा।
"तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगा।" बबूसा बोला—"पूरी कोशिश करूंगा कि डोबू जाति वाले तुम्हारी जान न ले सकें।" फिर बबूसा ने देवराज चौहान से कहा—"राजा देव, आज रात रानी ताशा आ रही है या आ चुकी होगी। हालात खतरनाक होने लगे हैं।"
"तुम्हारी ये सब बातें मैं सुन चुका हूं।" देवराज चौहान ने कहा—"मैं तुमसे मिलना चाहता था।"
"परंतु आपने तो मिलने से मना कर दिया था।"
"उसके बाद सोचा कि एक बार तुमसे मिल लेना ही ठीक रहेगा। मैं तुम्हें देखना चाहता था।"
"तो आपको मेरी बातों का विश्वास आ गया कि मैं सच कह रहा...।"
"जरा भी भरोसा नहीं तुम्हारी बातों पर।"
"नहीं।"
"बिल्कुल नहीं।"
बबूसा ने बेचैनी से पहलू बदलकर कहा।
"राजा देव आप बबूसा की बातों पर विश्वास नहीं कर रहे।"
"मैं तुम्हें नहीं जानता।" देवराज चौहान गम्भीर था।
"ऐसा मत कहिए राजा देव। मैं आपका सेवक बबूसा हूं। मुझे पहचानिए। मैं वो हूं जो आपके लिए जान भी देने को तैयार रहता है। सच तो ये है कि मैं ही आपका हूं। मेरे अलावा सब धोखेबाज हैं। रानी ताशा ने आपको धोखा दिया और...।"
"ऐसी बातें कहने का क्या फायदा जो मैं समझ न सकूं। मैं तुम्हें नहीं जानता। रानी ताशा को नहीं जानता।"
"आप भूल चुके हैं सब कुछ। मैं आपको याद दिलाता हूं...।"
तभी वेटर टेबल पर डिनर सर्व कर गया।

धरा ने बबूसा को देखकर कहा।
"तुम मेरे साथ थोड़ा-बहुत खा लो।"
बबूसा ने धरा की बात की तरफ ध्यान न देकर, देवराज चौहान से कहा।
"आप सदूर ग्रह के मालिक हैं राजा देव। वहां के...।"
"मैं सदूर ग्रह को नहीं जानता।"
"सब कुछ बता रहा हूं आपको कि...।"
"मुझे तुम्हारी बातों पर भरोसा नहीं है।"
बबूसा ने देवराज चौहान को देखा फिर गम्भीर स्वर में कह उठा।
"नहीं भरोसा तो न सही। पर आप मेरी बात सुनिए राजा देव। सुन-सुनकर आपको भरोसा आने लगेगा।"
देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।
धरा खाने में व्यस्त हो चुकी थी।
जगमोहन का पूरा ध्यान बबूसा की बातों पर था।
"सदूर ग्रह पर आपका राज्य चलता था राजा देव। आप ग्रह के भले के लिए काम करते थे। जनता का बहुत खयाल रखते थे। हर कोई आपको पसंद करता था। मैं आपका सेवक हर पल आपके पास ही रहा करता था। आपके सारे काम-काज मैं देखता था। आपको जो भी समस्या होती, उसका हल निकालता था। ग्रह बहुत फल-फूल रहा था फिर एक दिन—वो बुरा दिन था मैं तो ऐसा ही मानता हूं—उस बुरे दिन आपकी नजर ताशा पर पड़ी जो कि एक गरीब आदमी की बेटी थी। परंतु जवान थी। अथाह खूबसूरत थी। लाजवाब थी। तब मैं भी आपके साथ था और मैंने ही आपसे कहा था कि ये ग्रह की सबसे सुंदर युवती है। आप तो ताशा के दीवाने हो गए। उस पर ऐसा मोहित हुए कि मेरा कुछ कहना इस वक्त ठीक नहीं होगा। ताशा से आपको प्यार हो गया। ताशा भी आपको प्यार करने लगी परंतु उसका बाप आपके इस प्यार से खुश नहीं था। लेकिन आपने उसे संभाल लिया। आप ताशा को अपनी रानी बनाना चाहते थे। आपने मेरे से राय मांगी परंतु मैंने राय देने की अपेक्षा टाल दिया। जाने क्यों मुझे आपका फैसला सही नहीं लग रहा था। उसके बाद मैंने आपको समझाने की चेष्टा की परंतु आपको तो मेरी बात सुनना भी गंवारा नहीं था और आपने रानी ताशा के साथ ब्याह कर लिया। गरीबी से उठकर ताशा सदूर ग्रह की रानी बन गई। रानी ताशा बन गई। याद आया कुछ राजा देव?"
"नहीं।" देवराज चौहान गम्भीर था।
बबूसा ने सिर हिलाया फिर कहा।
"उसके बाद तो आप रानी ताशा को दीवानगी की हद तक चाहने लगे।

रानी ताशा के पास ही रहते हरदम। सदूर राज्य के जरूरी काम मैं करने लगा। आप तो जैसे सदूर को भूल ही गए। बहुत लम्बा वक्त आपने रानी ताशा के साथ बिताया। फिर मैंने ही आपको कहकर-समझाकर, सदूर के कार्यों की तरफ ध्यान देने को कहा। इसका ये फायदा हुआ कि आप थोड़ा-बहुत फिर से सदूर के कार्यों की तरफ ध्यान देने लगे। किले से बाहर निकलने लगे। कई बार आप कामों को बीच में ही छोड़कर किले पर रानी ताशा के पास चले जाते थे। मैं आपके व्यवहार से काफी परेशान था मन ही मन।"

बबूसा ठिठका तो देवराज चौहान उसे ही देख रहा था।

"आप पोपा बनाने की बहुत चाहत रखते थे।"

"पोपा?" देवराज चौहान बोला।

"अंतरिक्ष यान।" खाते-खाते धरा कह उठी।

"आप सदूर ग्रह के मालिक थे परंतु जबर्दस्त वैज्ञानिक भी थे। इन चीजों की आपको बहुत जानकारी थी। आप चाहते थे कि पोपा बनाकर, दूसरे ग्रहों पर जाया जाए और अगर वहां लोग रहते हैं तो उनसे मिला जाए। इसलिए आपने पोपा बनाने के लिए हर जरूरी चीज तैयार कर ली थी परंतु पोपा की बाहरी बॉडी के लिए आपको विशेष और मजबूत धातु नहीं मिल रही थी। तो ऐसे में आपके निर्देशन में जम्बरा उस विशेष धातु को तैयार करने में लगा था।"

"जम्बरा कौन?"

"वो भी आपकी तरह वैज्ञानिक था और आपके कामों में सहायक था कि पोपा बनाया जा सके। फिर एक दिन जम्बरा ने आपके पास खबर भेजी कि वो उस खास धातु को बनाने में सफल हो गया है। पोपा की बाहरी परत उस धातु की बनाई जाएगी तो उससे तब पोपा को कोई नुकसान नहीं होगा, जब वो अंतरिक्ष की सैर पर निकलेगा। परंतु आप तो रानी ताशा में गुम थे। जम्बरा की खबर आती रही वो आपको बुलाता रहा। मैं भी आपको अक्सर कहता कि आपको पोपा का निर्माण शुरू कर देना चाहिए। काफी लम्बे वक्त के बाद आप जम्बरा के पास जाने को तैयार हुए। आपकी हालत ये थी कि रानी ताशा पर ज्यादा भरोसा था और मेरे पे कम। पहले आप मुझ पर बहुत भरोसा करते थे। रानी ताशा का मोहक रूप हमेशा आपके सिर चढ़ा रहता था। हम जम्बरा के पास पहुंचे। आपने धातु को देखा, चैक किया तो आपकी कसौटी पर खरी उतरी। तो आप जम्बरा और अन्य लोगों के साथ पोपा का बाहरी कवच तैयार करने में लग गए। वहां आपको वक्त लगने लगा। रानी ताशा किले के आदमी को भेजती रही कि, आपको किले पर रानी ताशा याद

कर रही है। परंतु तब आप पोपा का कवच बनाने में जुट चुके थे। किले के आदमी को हमेशा ही ये कहकर वापस भेज देते कि रानी ताशा से कहो कि मैं जल्दी किले पर पहुंच जाऊंगा। परंतु आप गए नहीं, पोपा तैयार करने में ही व्यस्त रहे। धीरे-धीरे किले से बुलावा आना बंद हो गया। आप ढाई साल तक पोपा बनाते रहे, किले पर एक बार भी नहीं गए और आपने पोपा बनाकर तैयार कर दिया। वो खुशी का दिन था आपके लिए। जम्बरा ने पोपा उड़ाकर देखा तो वो ठीक से काम कर रहा था। परंतु कुछ चीजें और बेहतर बनानी थीं। आपने जम्बरा को उन चीजों को बेहतर बनाने के निर्देश दिए और मुझे पहले ही किले पर रवाना कर दिया कि मैं रानी ताशा को आपके आने की खबर दे दूं। परंतु किले में प्रवेश करते ही मुझे बदली फिजा का एहसास हुआ। सच बात तो ये थी कि रानी ताशा ने इन ढाई सालों में किले पर अपना प्रभाव जमा लिया था। किले का हर कर्मचारी रानी ताशा के आदेशों को मानता था। मैंने बहुत कुछ देखा और समझा। सेनापति धोमरा को हमेशा ही मैंने रानी ताशा के इर्द-गिर्द देखा। मेरी पत्नी सोमारा ने मुझे रानी ताशा की कई नई बातें बताई जिन्हें सुनकर मुझे बहुत तकलीफ हुई। तब मैं महापंडित के पास गया जो सबके कर्मों का हिसाब रखता था। मैंने उसे कहा कि किले में मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा। परंतु महापंडित खामोश रहा। उसने मेरी किसी बात का जवाब नहीं दिया तो वहां से चला आया। सोचा जब आप वापस लौटेंगे तो इस बारे में आपसे बात करूंगा। महल गया और अपनी पत्नी सोमारा से मिला। तब तक सोमारा और रानी ताशा में अच्छी पहचान थी। दोनों में दोस्ती हो चुकी थी। मैंने सोमारा से रानी ताशा के बारे में बात की कि धोमरा मुझे अच्छा नहीं लग रहा। तो सोमारा ने मुझे कहा कि किले के भीतर की बातों की मुझे परवाह नहीं करनी चाहिए। परंतु राजा देव, मैं किसी भी तरफ से आपका अहित नहीं देख सकता था। मैं वापस किले पर जा पहुंचा। रानी ताशा से मिला और स्पष्ट बात की। परंतु रानी ताशा का नया ही रूप मेरे सामने आया। उसने मुझे कैद में डालने की धमकी दे डाली। गुस्से से भरा मैं किले से बाहर आ गया। मुझे महसूस हो गया था कि रानी ताशा बेहद खूबसूरत सही, परंतु वो बुरी है। मन में सोचा कि ये बात राजा देव को मैं किस तरह कह पाऊंगा। हकीकत जानकर राजा देव का दिल टूट जाएगा। रानी ताशा की मुझे परवाह नहीं थी। एक तो वो बुरी थी दूसरे मैं राजा देव का सेवक था। फिर मैं राजा देव के किले पर आ पहुंचने का इंतजार करने लगा।"

बबूसा के खामोश होते ही जगमोहन ने कहा।

"फिर?"

देवराज चौहान की निगाह बबूसा पर थी।

धरा का ध्यान, खाते समय, पूरी तरह बबूसा की बातों पर था।

"अगले दिन राजा देव ने आना था। आप आए जरूर राजा देव, परंतु किले तक न पहुंच सके।" बबूसा के चेहरे पर दुख उमड़ा।

"क्यों?"

"मैंने सब कुछ देखा, रानी ताशा ने सेनापति धोमरा और कुछ खास सैनिकों के साथ मिलकर आपको ग्रह से बाहर फेंक दिया है।" बबूसा की आंखें गीली हो गईं।

"ग्रह से बाहर—वो कैसे?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"कुछ याद नहीं आया आपको?" बबूसा ने पूछा।

"नहीं।"

"मैं आपको याद दिलाने की कोशिश में ही ये सब बातें बता रहा हूं...।"

"मुझे कुछ याद आएगा भी नहीं।" देवराज चौहान ने कहा—"क्योंकि तुम्हारी बातों में कोई दम नहीं है। मैं राजा देव नहीं हूं।"

"आप राजा देव ही हैं।"

"नहीं। मैं नहीं मानता।" देवराज चौहान ने दृढ़ स्वर में कहा।

"तुम आगे कहो।" जगमोहन बोला।

बबूसा ने गीली आंखों को साफ किया और बोला।

"यह खबर लगते ही मैं परेशान हो गया। पागल हो गया। भागा-भागा महापंडित के पास गया। महापंडित परेशान नजर आ रहा था। मैंने उससे बात की तो महापंडित ने कहा, उसे सब खबर है। उसने कहा आने वाले वक्त में रानी ताशा बहुत पछताएगी। मेरा तो बुरा हाल हो रहा था राजा देव। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने मेरा अंग काट दिया हो। मैं बहुत गुस्से में किले पर पहुंचा तो वहां सोमारा को, रानी ताशा के साथ पाया। मैंने रानी ताशा से राजा देव के बारे में पूछा तो वो हंस पड़ी। मेरा खून खौल उठा। मैंने एक पहरेदार की तलवार ली और रानी ताशा पर झपट पड़ा। परंतु सैनिक बीच में आ गए। मुझसे तलवार छीन ली गई। अगर मेरी पत्नी सोमारा उस वक्त वहां मौजूद नहीं होती तो यकीनन बात बढ़ जानी थी, रानी ताशा ने मेरे बारे में भी कोई बुरा फैसला ले लेना था। सोमारा, रानी ताशा को शांत करके मुझे किले के ऊपर कमरे में—वहीं मैं और सोमारा रहते थे—ले गई। मेरी हालत पागलों की तरह हो चुकी थी। उसके बाद मैं कमरे में ही बंद रहा। सोमारा ने मुझे इस डर से बाहर न जाने दिया कि कहीं मैं फिर रानी ताशा को सख्त बात न कह दूं, सोमारा मुझे कमरे से ही बाहर न

निकलने देती थी। कुछ दिन बीते, शायद दो या तीन दिन कि सोमारा ने मुझे बताया कि रानी ताशा ने तलवार से धोमरा को मार दिया है। रानी ताशा रो रही है। पछतावा हो रहा है कि उसने राजा देव को मार दिया है। उसने खाना-पीना छोड़ दिया है। ये सुनकर मुझे थोड़ा-सा सकून तो मिला कि उस धोखेबाज औरत को पछतावा तो हुआ। अपनी गलती का पता तो चला। सोमारा दो दिन बाद रानी ताशा से मिलने गई तो वापस आकर मुझे बताया कि धोमरा रानी ताशा से ब्याह करके राजा बनना चाहता था इस ग्रह का। रानी ताशा ने धोमरा से शादी करने के लिए किले के भीतर तैयारियां शुरू कर दीं, परंतु ठीक शादी से पहले रानी ताशा ने एक सैनिक की तलवार ली और धोमरा का गला काटकर अलग कर दिया। सोमारा ने बताया कि ऐसा उसने इसलिए किया कि धोमरा किसी तरफ से भी राजा बनने के लायक नहीं था और उसे राजा देव याद आने लगे थे। परंतु राजा देव को वापस पाने का कोई उपाय नहीं था। आपको तो उसने सैनिकों और धोमरा के साथ मिलकर ग्रह से बाहर फेंक दिया था।" बबूसा ने गम्भीर और परेशान स्वर में कहने के पश्चात देवराज चौहान को व्याकुल निगाहों से देखा।

धरा ने खाना समाप्त कर लिया था।

"ग्रह से बाहर कैसे फेंका जाता है किसी को?" जगमोहन ने पूछा।

"सदूर ग्रह इस पृथ्वी की तरह बड़ा ग्रह नहीं है। वो गोल भी नहीं है। चपटे जैसा है। परंतु वो गोल है। सिर्फ दो सौ किलोमीटर के घेरे जितना वो ग्रह है। वो ज्यादा मोटा भी नहीं है। राजा देव को बुरे लोगों की हत्या करना पसंद नहीं था। ऐसे में राजा देव ने तरकीब निकाली कि ग्रह में छेद करके एक मोटा पाइप आर-पार डाल दिया जाए। ऐसा ही किया गया। खुदाई के पश्चात ऊपर से पाइप डाला और ग्रह के नीचे से निकाल दिया। पाइप के मुहाने पर एक कमरा बनाकर दरवाजा लगा दिया और दरवाजे पर एक पहरेदार खड़ा कर दिया गया कि कोई अंजाने में भीतर न गिर सके। उसके बाद तो ग्रह पर जिसे मरने की सजा देनी होती तो उसे उस पाइप में फेंक दिया जाता, जिससे कि वो नीचे से ग्रह से बाहर निकल जाता।"

"सदूर ग्रह कितना मोटा है?"

"सिर्फ एक किलोमीटर ही मोटा है वो।" बबूसा ने बताया।

देवराज चौहान शांत और गम्भीर दिख रहा था।

जगमोहन भी गम्भीर था।

"तुम इसकी बातों का भरोसा नहीं कर रहे?" एकाएक धरा ने देवराज चौहान से कहा।

देवराज चौहान ने इंकार में कहा।

"पर ये जो भी कह रहा है सच कह रहा है।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"मैं इसके साथ काफी दिन से हूं और इसे जाना है। बबूसा की कोई भी बात अभी तक मुझे गलत या झूठी नहीं लगी। मेरी मानो तो इसकी बात पर भरोसा कर लो। मुझे तो ये सच्चा इंसान लगा है।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"अगर ये तुम्हें कहता कि तुम सदूर ग्रह की रानी हो तो तुम मान लेती?" देवराज चौहान मुस्कराया।

"फौरन मान लेती। मान लेने में मेरा जाता ही क्या है।"

"परंतु मैं इस तरह किसी के हाथों बेवकूफ बनना पसंद नहीं करता।" देवराज चौहान बोला।

"राजा देव। मैं बबूसा हूं बबूसा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"आपको सदूर ग्रह वाला जन्म तब याद आएगा, जब रानी ताशा का चेहरा आप देखेंगे। ये बात महापंडित ने मुझे बताई थी।"

"महापंडित सदूर ग्रह पर क्या हैसियत रखता है?" जगमोहन ने पूछा।

"वो विद्वान है। जीवन-मरण का और इंसान के कर्मों का हिसाब रखता है। उसके पास शक्तियां हैं और वो भविष्य में भी झांकने की कला जानता है। वो ग्रह के लोगों का दोबारा से जन्म कराता है। उनमें इंसानी असर डालता है। महापंडित में और भी कई तरह के गुण हैं। वो तारों और धातु के आदमी (रोबॉट) भी बनाता है।"

"तो क्या तब महापंडित ने ये नहीं जाना कि रानी ताशा, राजा देव को ग्रह से बाहर फेंकने जा रही है?" जगमोहन ने पूछा।

"मैं नहीं जानता कि महापंडित को ये बात पता थी या नहीं। इस बारे में उसने हमेशा अपना मुंह बंद रखा। वो अपनी मर्जी का मालिक है। राजा देव और रानी ताशा की जरूर इज्जत करता है। उनकी बात मानता है।" बबूसा ने कहा।

"रानी ताशा ने राजा देव को ग्रह से बाहर फेंका, तब भी वो रानी ताशा की बात मानता है।" जगमोहन बोला।

बबूसा के चेहरे पर गुस्सा दिखने लगा।

"महापंडित के लिए सबसे जरूरी राजा देव है। परंतु वो रानी ताशा का साथ देने पर लगा हुआ है।"

"वो कैसे?"

"रानी ताशा, राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है।

रानी ताशा का इरादा है कि चाहे जबर्दस्ती ही सही, राजा देव को सदूर ग्रह पर वापस ले जाना है। महापंडित इसमें रानी ताशा का साथ दे रहा है।"

"और तुम रानी ताशा के साथ नहीं हो?"

"मैं राजा देव के साथ हूं।"

"रानी ताशा कुछ बुरा तो नहीं चाह रही। वो राजा देव को वापस ग्रह पर ले जाना चाहती...।"

"रानी ताशा इस काम में बहुत चालाकी इस्तेमाल कर रही है। वो राजा देव को इस बात का एहसास होने से पहले ही ग्रह पर ले जाना चाहती है कि उसने कभी राजा देव को धोखा दिया था। जबकि मैं ऐसा नहीं चाहता। मैं चाहता हूं कि राजा देव को तब का रानी ताशा का चरित्र ठीक से याद आ जाए और तब राजा देव, रानी ताशा के बारे में फैसला लें।"

"तुमने अभी कहा कि रानी ताशा को देखने के बाद राजा देव को अपना वो जन्म याद आ जाएगा।"

"तो?"

"फिर क्यों चिंता करते हो। रानी ताशा को आने दो, उसे देखते ही देवराज चौहान को वो जन्म...।"

"अगर तुम समझते हो कि खड़े पांव, उसी पल राजा देव को सब कुछ याद आ जाएगा तो ये सम्भव नहीं। याद आने में कुछ वक्त तो लगेगा ही। जबकि मुझे किसी और बात का डर है।" बबूसा गम्भीर होता दिखा।

"किस बात का?"

"राजा देव, रानी ताशा के दीवाने रहे हैं। अगर इस बार भी रानी ताशा को देखने पर राजा देव उसके दीवाने हो गए तो इन्हें सदूर ग्रह का जन्म याद आने में परेशानियां आने लगेंगी। ज्यादा वक्त लग सकता है और तब तक रानी ताशा चालाकी से राजा देव को पोपा तक ले जाएगी। और पोपा में पहुंच जाने के बाद तो राजा देव कुछ भी नहीं कर पाएंगे। महापंडित ने बताया कि उसने सोमाथ नाम के आदमी को बनाकर (रोबॉट) रानी ताशा के साथ भेजा है। महापंडित कहता है कि सोमाथ बहुत ताकतवर है और उसकी मृत्यु भी नहीं हो सकती। ऐसे में रानी ताशा अपनी ताकत का भरपूर इस्तेमाल कर सकती है। राजा देव अगर रानी ताशा के दीवाने हो गए तो रानी ताशा के सारे काम आसान हो जाएंगे। मैं चाहता हूं कि राजा देव, रानी ताशा को उस जन्म में किए गए धोखे की सजा दें। सजा न भी दें तो जो भी फैसला लें, वो सोच-समझकर लें। मैं राजा देव का सेवक हूं। जो भी करूंगा राजा देव के भले के लिए करूंगा। रानी ताशा और महापंडित बेईमानी पर उतर आए हैं। अगर वो सच्चे होते तो सबसे पहले वो राजा देव को उस

जीवन की याद कराते। उसके बाद रानी ताशा उनके सामने आती तो बात बनती। परंतु रानी ताशा तो गुपचुप ही सारा काम कर जाना चाहती है। वो राजा देव को जैसे भी हो सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है। हो सकता है वहां महापंडित चालाकी कर दे और राजा देव के दिमाग में ऐसा कुछ कर दे कि राजा देव को कुछ याद ही नहीं आए कि उस जन्म में उनके साथ रानी ताशा ने क्या किया था।"

"महापंडित ऐसा कर सकता है?"

"ऐसा कर देना उसके लिए मामूली बात है।"

"तो अब वो ऐसा क्यों नहीं कर रहा?"

"मैं नहीं जानता। महापंडित से मेरी ज्यादा बात नहीं होती। वो मुझे कुछ नहीं बताता।"

"तुमने।" देवराज चौहान बोला—"डोबू जाति क्यों छोड़ी?"

"क्योंकि मैं रानी ताशा को पसंद नहीं करता। रानी ताशा ने राजा देव को जबर्दस्त धोखा दिया था। मैं नहीं जानता अभी कि आपको ग्रह से बाहर फेंके जाने के बाद भी कैसे बच गए। कैसे पृथ्वी ग्रह पर आ गए (इस बारे में पाठकों को कहानी में आगे बताया जाएगा) जबकि ग्रह से बाहर फेंके जाने पर इंसान की मृत्यु हो जाती है।"

"बात ये हो रही थी कि तुमने डोबू जाति क्यों छोड़ दी?" देवराज चौहान ने कहा।

"क्योंकि मेरा जन्म ही, रानी ताशा के कहने पर इस मकसद से कराया गया था कि जब रानी ताशा, राजा देव को वापस ले जाने के लिए पृथ्वी ग्रह पर आए तो मैं इस काम में रानी ताशा की सहायता करूं। मुझे आपकी तरह ताकतवर बनाया गया है। आप ग्रह पर सबसे ताकतवर थे राजा देव। जब मेरा जन्म कराने के लिए, रानी ताशा का मकसद बताकर, महापंडित ने मुझसे बात की तो तब मैं खुशी से तैयार हो गया था। क्योंकि आपको फिर पाने की सोचकर मैं खुश हो गया था। तब महापंडित ने आप जैसी ताकत के साथ मेरा जन्म कराया और पोपा मुझे डोबू जाति में छोड़ गया। ऐसा इसलिए कि मैं पृथ्वी के लोगों की तरह ही परवरिश पाऊं और यहां के माहौल को समझूं। मैंने ऐसे ही परवरिश पाई। बड़ा हो गया। डोबू जाति का सबसे खतरनाक योद्धा मैं ही बना। मेरा मुकाबला कोई नहीं कर सकता। परंतु पृथ्वी पर भेजे जाने का मेरा मकसद क्या है, ये बात महापंडित ने जन्म के समय ही मेरे दिमाग में डाल दी थी और मुझे याद रही। बड़ा हुआ तो मुझे महसूस हुआ कि रानी ताशा, राजा देव को ले जाने के लिए आने वाली है, जबकि उसने राजा देव के साथ बुरा व्यवहार किया था। रानी ताशा

तो सजा की हकदार है और मैं रानी ताशा का साथ देने वाला हूं इस काम में। राजा देव का सेवक होकर, राजा देव के खिलाफ ही काम कर रहा हूं। जबकि रानी ताशा ने मुझे भी धमकियां दी थीं जब मैं राजा देव के आने की सूचना लेकर किले पर गया था। जो भी हो मेरा मन बदलता चला गया कि मैं रानी ताशा का साथ नहीं दूंगा। मैं तो राजा देव के लिए बना हूं। तब रानी ताशा के आने की तैयारियां सदूर ग्रह पर चल रही थीं। मुझे सब खबर थी। डोबू जाति के सरदार ओमारू की यंत्रों पर, सदूर ग्रह से बात होती रहती थी। आखिरकार मैंने फैसला किया कि मैं डोबू जाति छोड़कर, आपको तलाश करूंगा। आपसे मिलूंगा और सारी बातें कह दूंगा आपसे। मैंने डोबू जाति छोड़ दी। मेरा ये फैसला आसान नहीं था। डोबू जाति वालों ने मुझे रोकना चाहा तो मैंने कई योद्धाओं की जानें ले लीं। मैं सबसे बेहतर योद्धा था। महापंडित ने मुझमें आपके गुण डाले थे। ओमारू ने मेरे विद्रोह को पहचाना तो उसने अपने योद्धाओं को आगे से हट जाने को कहा। मैं वहां से चला आया। इतना तो मैं सुन चुका था कि आप मुम्बई में कहीं पर हैं तो मैं यहां मुम्बई आ गया। पैसे की मेरे पास कमी नहीं थी। डोबू जाति से मैं कीमती पत्थर ले आया था जिन्हें यहां बेचने पर बहुत पैसे मिल जाते हैं। साथ में मैं डोबू जाति के हथियार भी ले आया, जो कि इस वक्त उस होटल के वेटर के घर रखे हुए हैं, जिस होटल में मैं ठहरा था। छः महीने तक मैं उसी होटल में रुका रहा और आपको ढूंढ़ता रहा, परंतु नहीं ढूंढ़ सका। आपकी गंध महापंडित ने मेरे दिमाग में, मेरी सांसों में जन्म के समय ही डाल दी थी। एक दिन मैं समाधि लगाकर गंध के सहारे आपको तलाश कर रहा था कि एक जगह मैंने आपकी गंध पा ली और तब आपसे बात की और आज मैंने आपको ढूंढ़ लिया। इस वक्त आप मेरे सामने हैं राजा देव।" बबूसा गम्भीर था।

देवराज चौहान की निगाह बबूसा के चेहरे पर थी।

जगमोहन और धरा गम्भीर दिख रहे थे।

तभी बर्तन उठाने वाला टेबल से बर्तन ले गया और वेटर ने पास पहुंचकर पूछा।

"कुछ और लाऊं सर?"

"चार कॉफी ले आओ।" जगमोहन बोला।

वेटर चला गया।

"खतरा सिर पर आ पहुंचा है राजा देव।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"रानी ताशा आज रात पोपा में सवार हुई, डोबू जाति में पहुंच जाएगी। वो आपको वापस सदूर ग्रह ले जाना चाहती है। आपको बहुत

सतर्क रहने की जरूरत है। रानी ताशा कभी भी मुम्बई पहुंच सकती है और वो मेरी तरह आपको नहीं ढूंढ़ेगी कि उसे आप तक पहुंचने में महीनों का वक्त लग जाए। महापंडित उसे बता देगा कि आप कहां पर मौजूद हैं और वो सीधी आप तक पहुंचेगी। रानी ताशा आपके सामने आई नहीं कि उसका और महापंडित का खेल शुरू हो जाएगा। सब कुछ सोच-समझकर हो रहा है। आप हर बात से अंजान हैं राजा देव जबकि रानी ताशा को हर बात की खबर है। मुझे पूरा यकीन है कि अगर आप नहीं संभले तो रानी ताशा को कोई परेशानी नहीं आएगी आपको सदूर ग्रह ले जाने में। एक बार आप सदूर ग्रह पहुंच गए तो फिर आपकी एक नहीं चलेगी। महापंडित रानी ताशा की हर बात मानता जा रहा है। क्या पता वो आपके दिमाग को ऐसा बना दे कि उस जन्म की आपको याद ही न आए और रानी ताशा बिना सजा पाए अपना सिर आपकी गोद में रख दे। मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं कि रानी ताशा आपको पाने के लिए, महापंडित से कुछ भी करा सकती है। महापंडित चाहता है कि आप फिर से सदूर ग्रह संभाल ले। क्योंकि रानी ताशा बेहतर ढंग से ग्रह के कामकाज नहीं संभाल पा रही है। मैं भी ऐसा ही चाहता हूं राजा देव, परंतु रानी ताशा और महापंडित की चालों को फेल कर देना चाहता हूं। आपको एकदम चौकस कर देना चाहता हूं कि रानी ताशा को आप वक्त आने पर सजा दे सकें। मैं राजा देव का वो ही रूप देखना चाहता हूं जो मैंने पहले देखा है, परंतु मुझे डर है कि रानी ताशा को देखते ही आप उसपर पहले की तरह मोहित न हो जाएं। मुझे पूरा यकीन है कि एक बार आपको वो जन्म याद आ गया तो फिर आप सब कुछ ठीक से संभाल लेंगे।"

"मुझे रानी ताशा में कोई दिलचस्पी नहीं। यहां मेरी पत्नी है, वो ही है मेरे लिए।" देवराज चौहान ने कहा।

"मुझे आपके शब्दों पर भरोसा है राजा देव, परंतु इस बात का क्या होगा कि महापंडित ने इस बार रानी ताशा का जन्म कराते समय उसके चेहरे पर ऐसा कुछ असर डाल दिया था कि आप उसे देखते ही मोहित हो जाएं।"

"ऐसा नहीं होगा।" देवराज चौहान ने दृढ़ स्वर में कहा।

बबूसा, देवराज चौहान को देखने लगा।

तभी धरा कह उठी।

"तो देवराज चौहान साहब, आपकी बात से लगता है कि आप बबूसा की बातों पर अब यकीन करने लगे हैं।"

"ये बात नहीं।"

"मुझे तो ये बात ही लगती है।" धरा ने कहा।

"मैं तो बबूसा की सिलसिलेवार बातों का जवाब दे रहा हूं कि कोई औरत मुझ पर हावी नहीं हो सकती।" देवराज चौहान बोला।

"वक्त का पता नहीं चलता कि कब क्या हो जाए।" धरा ने सोच भरे स्वर में कहा—"बबूसा की बातों को मानने में आपको क्या परेशानी है, क्या ये आपको झूठा लगता है?"

"मुझे सिर्फ इतना पता है कि इसकी कही बातों से मेरा कोई मतलब नहीं है।"

"मतलब कि आप उस जन्म के राजा देव नहीं हैं?"

"नहीं।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

तभी वेटर आया और चार कॉफी सबके सामने रखकर चला गया।

"सुना तुमने।" धरा, बबूसा से कह उठी—"देवराज चौहान साहब क्या कह रहे हैं।"

"इनके कहने से कुछ नहीं होगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"जो भी सच है, वो सामने आने वाला है। रानी ताशा जल्दी ही राजा देव के सामने होगी और तब वो सब कुछ होगा, जिसकी राजा देव कल्पना भी नहीं कर सकते। मैं राजा देव को सब कुछ पहले बताकर सतर्क कर रहा हूं क्या पता उस वक्त क्या हो जाए। ज्यादा कुछ नहीं तो राजा देव को मेरी बातें तो याद आएंगी ही और अपने को संभाले रखेंगे।"

"मुझे सिर्फ अपने तीन जन्म याद हैं।" देवराज चौहान ने बबूसा को देखा—"एक ये जन्म जी रहा हूं। पहला जन्म मेरा किसी रहस्यमय धरती पर हुआ था, जो कि आज जमीन के भीतर कहीं पर आज भी रहस्य बनी हुई है और वक्त का चक्रव्यूह मुझे कई बार उस जमीन पर ले जा चुका है। दूसरा जन्म लुधियाना में हुआ था और तब मेरी पत्नी मोना चौधरी बनी थी और बहुत सुख से मैंने और मोना चौधरी ने वो जन्म जिया था।"

"ये बातें आपको किसने बताईं?" बबूसा ने पूछा।

"पेशीराम (फकीरबाबा) ने।"

"आपने पेशीराम की इन असामान्य बातों पर यकीन किया तो मेरी बातों पर यकीन क्यों नहीं कर लेते?" बबूसा बोला।

"पेशीराम की बातों पर यकीन करने की मेरे पास वजह है। इस जन्म में जीते हुए भी मैं उस पहले जन्म में जा चुका हूं जहां पेशीराम रहता है। वहां पर सब कुछ मैंने अपनी आंखों से देखा है। उस पहले जन्म के कुछ और लोग भी हैं यहां जो मेरे साथ ही उस पहले जन्म की जमीन पर गए हैं जो आज भी यहीं मौजूद है। अगर मैं वहां नहीं गया होता और पेशीराम मुझे आकर ये बात कहता तो मैं कभी भी उसकी बात पर यकीन नहीं करता।"

"आप सही कह रहे हैं राजा देव। मुझे आपके इन तीनों जन्मों की जानकारी है। ये बात मुझे महापंडित ने बताई थी। परंतु महापंडित ने ही मुझे ये भी बताया था कि पृथ्वी के पहले जन्म से पहले आप सदूर ग्रह पर राजा देव बनकर रहे हैं। आपको मुझ पर यकीन बेशक न हो, परंतु मुझे महापंडित की बातों पर पूरा यकीन है।" बबूसा गम्भीर था—"आपको मेरी बातों पर यकीन कर लेना...।"

"नहीं।" देवराज चौहान ने स्पष्ट तौर पर इंकार किया—"तुम्हारी बात पर यकीन करना, मेरे बस में नहीं है।"

"यकीन तो आपको करना ही होगा राजा देव। अब नहीं तो तब करेंगे, जब रानी ताशा से आपका सामना होगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु मुझे डर है कि तब कहीं वक्त हाथ से न निकल जाए। आप रानी ताशा पर मोहित न हो जाएं। उसके दीवाने न बन बैठें पहले की तरह। आपने सुध-बुध खो दी तो मेरी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।"

जगमोहन ने कॉफी का घूंट लेने के बाद देवराज चौहान से कहा।

"कुछ देर के लिए इसकी बात मान लें तो क्या हर्ज है?"

"क्या तुम्हें इसकी बातों पर यकीन है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"सच तो ये है कि कभी यकीन आता है तो कभी नहीं। परंतु मन में ये ही आता है कि इसकी बात मान लें तो क्या हर्ज है।"

"मैं यकीन नहीं कर सकता।"

"जैसे कि ये कहता है कि कोई रानी ताशा है, अगर वो सच में हो और तुम्हारे सामने आ जाए तो?"

"परवाह नहीं।" देवराज चौहान के चेहरे पर सख्त मुस्कान उभरी—"मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"देवराज चौहान जी।" धरा बोली—"मैं बबूसा की बातों को झूठ नहीं मानती।"

"मैं भी यही कहता हूं कि कुछ देर के लिए बबूसा की बातों को सच मान लेना चाहिए।" जगमोहन ने कहा।

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुम इसकी बातों में आ गए।" देवराज चौहान ने बबूसा के चेहरे पर नजर मारी—"इससे पहले कि तुम्हारा दिमाग पूरी तरह खराब हो, हमें चलना चाहिए।" देवराज चौहान ने वेटर को इशारे से बुलाया।

वेटर करीब पहुंचा।

"बिल ले आओ।" देवराज चौहान ने कहा।

वेटर चला गया।

धरा ने बबूसा को देखा। जगमोहन को देखा।

बबूसा चेहरे पर उलझन समेटे, देवराज चौहान से कह उठा।

"आप कहां जा रहे हैं राजा देव?"

"अपने घर।"

"ये ठीक है।" बबूसा ने सिर हिलाया—"मैं काफी थक गया हूं। धरा को भी आराम की जरूरत है। बाकी बातें वहीं पर...।"

"तुम मेरे घर पर नहीं चलोगे बबूसा।" देवराज चौहान बोला।

"नहीं चलूंगा?" बबूसा ने हैरानी से कहा—"क्यों?"

"मैं तुम्हें अपने घर क्यों ले जाऊं?"

"राजा देव, मैं बबूसा हूं, आपका सेवक। सेवक तो आपके साथ ही रहेगा न?"

"नहीं तुम...।"

"इन हालातों में मैं आपको अकेला छोड़ने का खतरा नहीं ले सकता।" बबूसा गम्भीर था।

"तुम मेरी फिक्र मत करो, मैं...।"

"बबूसा राजा देव की फिक्र नहीं करेगा तो कौन करेगा। महापंडित का कहना है कि पृथ्वी ग्रह पर जन्म लेते-लेते आपकी ताकत कम हो गई है। आपमें पहले जैसी ताकत नहीं रही जबकि महापंडित ने मुझे ताकतवर बनाया...।"

तभी वेटर बिल ले आया।

देवराज चौहान ने बिल दिया और उठ खड़ा हुआ।

जगमोहन, बबूसा और धरा भी खड़े हो गए।

"तुम्हारी बातें मैंने बहुत सुन ली बबूसा। समझ भी ली। अब तुम्हें चले जाना चाहिए।"

"आपको मुझ पर भरोसा नहीं, तभी ऐसा कह रहे हैं। परंतु मैं आपके साथ ही रहूंगा।"

देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता उभरी।

"नाराज मत होइए राजा देव।" बबूसा व्याकुल स्वर में कह उठा—"आप हालातों को समझ नहीं रहे हैं। बहुत खराब वक्त आने वाला है। रानी ताशा पृथ्वी ग्रह पर पहुंच चुकी होगी और वो आपकी तरफ आने ही वाली होगी। महापंडित पूरी तरह रानी ताशा का साथ दे रहा है आपके खिलाफ। वरना वो सोमाथ को नहीं बनाता। आप बुरी तरह घेरे जाने वाले हैं। ऐसे मौके पर मैं ही आपकी सहायता कर सकता हूं क्योंकि मुझे तो हर चीज का पता है।"

देवराज चौहान पलटा और रैस्टोरेंट के बाहर की तरफ बढ़ गया।

बबूसा के चेहरे पर चिंता नाच उठी।

"देवराज चौहान तो तुम्हारी बात सुनने को भी तैयार नहीं।" धरा कह उठी।

जगमोहन भी आगे बढ़ा तो बबूसा उसके साथ चलता कह उठा।

"तुम्हारा नाम जगमोहन है न?"

"हां।"

"तुम राजा देव के साथी हो इस जन्म में।"

"हां।"

"सुनो। मेरी बातें सच्ची हैं। मैं झूठ नहीं कह रहा। राजा देव बहुत बड़े खतरे में पड़ने वाले हैं। रानी ताशा बहुत बड़ी चालबाज है। वो राजा देव को बड़ी आसानी से सदूर ग्रह वापस ले जाएगी और महापंडित राजा देव के दिमाग का वो हिस्सा ही साफ कर देगा कि पहले बिताया, सदूर ग्रह वाला जन्म या रानी ताशा के धोखे वाली बात राजा देव को याद ही न आए। तुम मेरी बात समझो और राजा देव को समझाओ।"

"तुम जो कहना चाहते थे वो देवराज चौहान ने सुन लिया है। अब ये उस पर है कि...।"

"तुम सच्चे मन से राजा देव का भला नहीं चाहते।" बबूसा ने नाराजगी से कहा।

"देवराज चौहान का जितना भला मैं चाहता हूं, उतना तुम नहीं चाह सकते।" जगमोहन बोला।

"गलत। राजा देव के लिए मैं अपनी जान भी दे सकता हूं। तुम ऐसा नहीं कर सकते।" बबूसा ने कहा।

"मैं ऐसा कर सकता हूं।"

"मैं तुम्हारी बात का यकीन नहीं कर सकता। अगर तुम राजा देव का भला चाहते तो उन्हें कहते कि बबूसा सही कह रहा है। उसकी बात सुनो और यकीन करो फिर आने वाले हालातों से बचने का रास्ता ढूंढ़ो, लेकिन तुम...।"

"तुम्हारी बातों का तो मुझे भी पूरी तरह यकीन नहीं।"

"अभी तो तुम कह रहे थे राजा देव को कि मेरी बातों पर यकीन कर लेना...।"

"तुम मेरा दिमाग खा रहे हो बबूसा।" जगमोहन गम्भीर स्वर में कह उठा—"तुमने जो कहना था वो देवराज चौहान ने सुन लिया है। तुम्हें सामने भी देख लिया है। अब कम-से-कम उसे सोचने का वक्त तो दो।"

"राजा देव बेशक सोच लें। परंतु वो मुझे साथ क्यों नहीं ले जा रहे। मैं तो उनका सेवक हूं।"

"पर उसे याद नहीं कि कभी तुम उसके सेवक थे।" जगमोहन ने चलते हुए कहा।

पीछे आती धरा कह उठी।

"बबूसा, मुझे तो लगता है जैसे तुम पहाड़ से सिर टकरा रहे हो। तुम्हारी बातों का इन पर कोई असर नहीं हुआ।"

बबूसा के चेहरे पर परेशानी के भाव आ गए।

"तुम अपने घर जाओ। जरूरत पड़ी तो देवराज चौहान तुम्हें फोन कर...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

"पर मेरे पास तो न घर है, न फोन।"

"कहीं तो इस वक्त रह रहे हो?"

"होटल में।"

"वहीं रहो। धरा के पास फोन है, उसके फोन पर फोन कर देंगे।"

"तुम भी ये ही चाहते हो कि मैं तुम लोगों के साथ न रहूं। चला जाऊं।" बबूसा ने खिन्नता भरे स्वर में कहा।

"मेरे चाहने न चाहने से कुछ नहीं होता। फैसला तो देवराज चौहान ही लेगा।"

"तुम राजा देव को समझाओ।"

"वो बच्चा नहीं है कि मैं उसे समझाऊं। तुम्हारी बातों को पूरी तरह उसने सुन...।"

"बबूसा।" एक कदम पीछे से धरा बोली—"तुम्हारा राजा देव तो एकदम फुस्स निकला। तुम्हारी बातों का उस पर कोई असर नहीं हो रहा। वो तो तुम्हें झूठा मान रहा है।"

वे रैस्टोरेंट से बाहर आ गए।

मध्यम-सी बहती हवा उनके चेहरों से टकराई।

बाईं तरफ रैस्टोरेंट की पार्किंग में खड़ी कारें नजर आईं। आगे जाता देवराज चौहान उन्हीं कारों की तरफ बढ़ गया था। वहां की हल्की रोशनी में बबूसा के चेहरे पर व्याकुलता दिखी। धरा पास आती कह उठी।

"मेरी बात मानो तो देवराज चौहान को उसके हाल पर छोड़ दो।"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता। राजा देव को मुसीबतों से बचाए रखना मेरा फर्ज है।" बबूसा बोला।

"पर वो तो तुम्हारी बात समझ नहीं रहा। तुम्हें झूठा मानकर, चले जाने को कह रहा है।"

"ये सब इसलिए हो रहा है कि राजा देव को कुछ याद नहीं आ रहा उस जन्म का।" बबूसा का लहजा चिंता से भरा था—"रानी ताशा ने आज

रात पृथ्वी पर डोबू जाति में पहुंच जाना है। राजा देव के लिए मुसीबत खड़ी हो जाएगी।"

"तुम कर भी क्या सकते हो?" धरा बोली।

"मैं बहुत कुछ कर सकता हूं। मेरे सामने होते रानी ताशा अपनी नहीं कर पाएगी। क्योंकि मैं रानी ताशा का सारा खेल जानता हूं, वो राजा देव को, उस जन्म की याद आने से पहले ही, सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है। वहां महापंडित राजा देव के दिमाग को कुछ ऐसा कर देगा कि उन्हें कभी अपना वो जन्म याद आएगा ही नहीं। याद आएगा तो रानी ताशा के धोखे वाली बात कभी याद नहीं आएगी। ऐसे में राजा देव एक बार फिर धोखेबाज रानी ताशा के दीवाने होकर जीवन बिताने लगेंगे। जबकि मैं रानी ताशा को उस धोखे की सजा दिलवाना चाहता हूं राजा देव से। मैं चाहता हूं कि धोखेबाज रानी ताशा को राजा देव ऐसी सजा दे कि रानी ताशा का अंत पृथ्वी ग्रह पर ही हो जाए और रानी ताशा फिर कभी सदूर ग्रह पर जन्म न ले सके।"

"जरूरी तो नहीं कि देवराज चौहान रानी ताशा को मौत की सजा दे" धरा बोली।

"राजा देव कैसी भी सजा दें, मुझे इसकी चिंता नहीं है। पर राजा देव को सब कुछ याद आ जाना चाहिए।"

"ऐसा कैसे होगा?"

"सब हो जाएगा। वक्त करेगा। परंतु इसके लिए मुझे राजा देव के करीब रहना होगा कि उन्हें रानी ताशा से बचाता रहूं।"

"तुम सोमाथ के बारे में बता रहे थे कि वो ताकतवर है। उसकी मृत्यु नहीं होगी। वो रानी ताशा के साथ है, ऐसे में तुम देवराज चौहान को रानी ताशा से कैसे बचा सकते हो। तुम उसके रास्ते में आए तो सोमाथ तुम्हें मार देगा।"

"वो मैं नहीं जानता कैसे होगा। सोमाथ के बारे में महापंडित ने बताया है, पर सोमाथ से मेरा सामना नहीं हुआ। ये ठीक है कि अगर सोमाथ शक्तिशाली है तो मैं भी कम नहीं। मेरा मुकाबला कर पाना उसके लिए आसान नहीं होगा। ये बाद की बात है, अभी मसला तो ये है कि राजा देव मुझे अपने करीब तो रखे।"

जगमोहन भी साथ चलता, उसकी बातें सुन रहा था। उसने देखा आगे देवराज चौहान अपनी कार के पास पहुंचकर रुक चुका है। जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता झलक रही थी। वो देवराज चौहान के पास पहुंचकर रुका।

बबूसा और धरा भी वहां रुक गए।

देवराज चौहान की निगाह बबूसा पर थी।

"देवराज चौहान साहब।" धरा नाराजगी से बोली—"बबूसा तुम्हारे

भले के लिए सूखा जा रहा है और तुम हो कि इसकी बातों को सच भी नहीं मान रहे। ये कहां की शराफत है। तुम्हारे तक पहुंचने में इसे महीनों लग गए। तुम मानो या न मानो परंतु ये जो कह रहा है, सच कह रहा है। जब से मैं इसके साथ हूं मैंने इसे झूठ बोलते नहीं देखा। हो सकता है, मैं भी तुम्हारी तरह इसकी बातों का यकीन नहीं करती, परंतु मैंने डोबू जाति को करीब से देखा है। वहां होकर आ चुकी हूं और उसके बाद डोबू जाति वाले जिस तरह मेरी जान के पीछे पड़े, जिस तरह बबूसा ने मुझे बचाए रखा अभी तक, इस बात का एहसास सिर्फ मैं ही कर सकती हूं परंतु तुम्हें नहीं एहसास करा सकती। मेरा यकीन करो, बबूसा झूठ नहीं बोलता।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया।

"तुम्हें मान लेना चाहिए कि किसी दूसरे ग्रह पर तुम कभी राजा देव थे और बबूसा तुम्हारा सेवक था।" धरा पुनः बोली।

जगमोहन चुप था।

"ये भी मान लेना चाहिए कि रानी ताशा वाली बात सच है। वो तुम्हें लेने पृथ्वी पर पहुंच रही है। आने वाले वक्त में रानी ताशा की वजह से तुम मुसीबतों में फंस सकते हो। बबूसा सच कहता है।"

बबूसा ने फौरन सहमति से सिर हिलाया।

"ये तुम्हारे पास रहना चाहता है तो इसमें बुरा ही क्या है।"

"मैं आपका सेवक हूं राजा देव। जो करूंगा आपके भले के लिए ही करूंगा।"

"तुम खुद को मेरा सेवक कहते हो, परंतु मेरी बात नहीं मान रहे।" देवराज चौहान बोला।

"कौन-सी बात राजा देव?"

"मैंने तुम्हें जाने के लिए कहा है।"

"आपकी गलत बात मैं कैसे मान लूं। आपसे दूर जाने में, आपका ही नुकसान है राजा देव। मैं आपका नुकसान नहीं देख सकता। मैं आपके करीब रहूं तो इसी में आपका भला है।" बबूसा ने कहा।

"क्या पता तुम किस मन से मेरे पास रहना चाहते हो।"

"राजा देव। अब आप मुझसे जुदा नहीं हो सकते। कोशिश करके देख लीजिए। आप जिस-जिस रास्ते से जाएंगे, मैं आपकी गंध के द्वारा वो रास्ता पा लूंगा और आप तक पहुंच जाऊंगा। मेरे लिए ये साधारण काम होगा। आप अगर घर के भीतर नहीं आने देंगे तो मैं बाहर ठहर जाऊंगा पर आपको अकेला नहीं छोड़ सकता। रानी ताशा की चालाकी मैं अब सफल

नहीं होने दूंगा। आपका ध्यान रखना मेरा फर्ज है। तब पोपा बनाने के बाद आपने मुझे खुशी-खुशी में एक दिन पहले वहां से भेज दिया कि मैं जाकर रानी ताशा को आपके आने की खबर दे सकूं। और जब आप आए तो रानी ताशा, सेनापति धोमरा और सिपाहियों ने रास्ते में ही आपको पकड़ लिया कि किसी को कानोंकान खबर न हुई।"

"तब मैं अकेला आ रहा था?" देवराज चौहान ने पूछा।

"नहीं राजा देव। पांच सैनिक आपके साथ थे और उन सबको मार दिया गया था।" बबूसा ने कहा।

तभी जगमोहन आगे बढ़ा और देवराज चौहान की बांह पकड़कर एक तरफ ले जाकर बोला।

"जाने क्यों मुझे इसकी बातों पर यकीन होता जा रहा है कि ये सच कह रहा है। कोई बात तो है जरूर।"

"ये हर बात सच कह रहा है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या?" जगमोहन चौंका—"तुम मानते हो?"

"हां। इसके कहने के दौरान मैं इसके चेहरे और शरीर के हाव-भावों को नोट करता रहा हूं। एक बार भी मुझे ऐसा नहीं लगा कि ये झूठ कह रहा हो। मेरे खयाल में इसने जो कहा है, वो हर बात सच है।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन हक्का-बक्का सा देवराज चौहान को देखने लगा।

"इसकी बातें सुनकर मैं गहरी उलझन में पड़ गया हूं कि ये मेरे साथ क्या हो रहा है।" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"तुम इसे अपने साथ रखना नहीं चाहते?" जगमोहन ने पूछा।

देवराज चौहान चुप रहा।

"ये रानी ताशा को पहचानता है। हालातों को समझता है। जबकि हमारे लिए ये सब कुछ नया है।"

"ठीक है।" देवराज चौहान ने सहमति से सिर हिलाया—"इसे साथ ले लेते हैं।"

"और वो लड़की—धरा?"

"उसके बारे में बबूसा ही फैसला करेगा।"

जगमोहन बबूसा के पास पहुंचता कह उठा।

"तुम हमारे साथ चल सकते हो, परंतु धरा कहां रहेगी?"

"मेरे साथ ही रहेगी।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"डोबू जाति वाले इसे मार देना चाहते हैं। मैं इसे बचाने की कोशिश कर रहा हूं।"

पोपा (अंतरिक्ष यान) पहाड़ के सामने जमीन पर उतर चुका था। सामने कुछ दूरी पर एक ओर बर्फ से ढका पहाड़ था। दोनों पहाड़ों के बीच की, काफी बड़ी खाली जगह पर पोपा उतरा था। रात के इस वक्त उसका रंग-रूप स्पष्ट नजर नहीं आ रहा था और बड़े से स्याह धब्बे की तरह दिख रहा था। नीचे उतरने से पहले पोपा के नीचे वाले हिस्से से लेजर जैसी जो नीली रोशनी निकल रही थी, वो बंद हो चुकी थी। पोपा काफी फैलावट में था, परंतु उसकी ऊंचाई तीस फुट के करीब थी। पोपा के इंजन से उठती मध्यम-सी आवाजें बंद हो चुकी थीं।

डोबू जाति के लोगों में सन्नाटा छाया हुआ था। हर कोई अपनी जगह खड़ा स्तब्ध-सा पोपा को देख रहा था। जो लोग पोपा के उतरते वक्त, डरकर पहाड़ के भीतर जा घुसे थे वो अब बाहर निकलना शुरू हो गए थे। सनसनाहट-सी वातावरण में मौजूद थी। कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। सब टकटकी बांधे पोपा को देखते इस बात का इंतजार कर रहे थे कि कब भीतर से रानी ताशा बाहर निकलती है। रानी ताशा को देखने को हर कोई उत्सुक था। ढाई सौ बरस से सदूर ग्रह से उनके सम्पर्क बने हुए थे। पोपा पहले भी कुछ बार आ चुका था सदूर ग्रह के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को लेकर, परंतु रानी ताशा कभी नहीं आई थी। वो सदूर ग्रह से यंत्रों के माध्यम से ही बात करती रही थी। पहली बार रानी ताशा अब आई है।

डोबू जाति का सरदार गम्भीर-सा एक तरफ खड़ा पोपा को सोच भरी निगाहों से देख रहा था। उसका दिमाग भारी तौर पर उलझन में था। उसे होम्बी (जादूगरनी) पर पूरा भरोसा था और अभी होम्बी से बात करके आया था। होम्बी ने ही उसे बुलाया था। होम्बी ने ओमारू के सामने अपने विचार रखे थे कि रानी ताशा का आना उसके लिए सुखदायक नहीं होगा। ओमारू के पूछने पर भी होम्बी जवाब नहीं दे पाई कि, ऐसा क्यों? परंतु होम्बी ये ही कहती रही कि उसे आने वाले वक्त की सूचनाएं नहीं मिल रहीं। कुछ भी आभास नहीं हो पा रहा। भविष्य की घटनाओं का हमेशा ही उसे पहले पता चल जाता है परंतु इस बार भविष्य की धुंधली आकृतियां ही नजर आ रही हैं। ऐसे में होम्बी को 'बुरे' की आशंका हो गई थी। ओमारू होम्बी की बातों को सुनकर उलझन में पड़ गया था कि आज होम्बी को भविष्य की घटनाओं का एहसास क्यों नहीं हो पा रहा? होम्बी से अंतिम बात ये ही हुई थी कि वो सामान्य बन कर रानी ताशा का स्वागत करे और वो पुनः कोशिश करती है कि भविष्य की घटनाओं को स्पष्ट देख सके। तब ओमारू बाहर आ गया था।

पोपा जमीन पर रुक चुका था।

वक्त बीतने लगा। इंतजार का ये पल-पल भारी था।

तभी बोबला, ओमारू के पास आया। बोबला ही वो इंसान था जो डोबू जाति के योद्धा तैयार करता है। युद्ध कला में सबको एक्सपर्ट बनाता है। बोबला का बेहद खास स्थान था डोबू जाति में।

"हमारे दोस्त आ गए ओमारू।" बोबला बोला।

"हां।" ओमारू ने शांत स्वर में कहा।

"रानी ताशा को हम पहली बार देखने जा रहे हैं।" वो पुनः बोला।

"हां।" ओमारू ने छोटा-सा जवाब दिया।

"क्या तुम खुश नहीं हो?"

"खुश हूं।"

"नहीं। तुम मुझे खुश नहीं लग रहे। क्या बात है?"

"कुछ नहीं। मैं सोच रहा हूं कि रानी ताशा, अपने राजा देव को वापस ले जाने के लिए आई है, जो इस पृथ्वी पर कहीं रहता है। क्या रानी ताशा के लिए आसान होगा, राजा देव को वापस अपने सदूर ग्रह पर ले जाना?"

"आसान क्यों नहीं होगा।" बोबला ने कहा—"रानी ताशा के साथ हमारे योद्धा होंगे जो कि रानी ताशा के कहने पर राजा देव को उठाकर पोपा में बिठा देंगे और पोपा चला जाएगा।"

ओमारू चुप रहा।

"रानी ताशा अपने ग्रह से हमारे लिए उपहार लाई होगी। वो हमारी दोस्त है।" बोबला पुनः कह उठा।

"होम्बी ने बताया कि रानी ताशा के साथ सोमाथ नाम का व्यक्ति आया है। वो कृत्रिम मानव है। बिजली की तारों और धातु का बना हुआ है। उसका दिमाग भी नकली है। परंतु वो सामान्य मानवों की तरह दिखता है। वो इतना शक्तिशाली है कि हमारे योद्धा भी उसके सामने नहीं ठहर सकते। वो सिर्फ रानी ताशा का हुक्म मानता है।" ओमारू ने कहा।

"तो सोमाथ से हमें चिंता कैसी?" बोबला बोला।

"होम्बी ने इशारा दिया है कि रानी ताशा से हमें नुकसान हो सकता है।"

"इशारा दिया है, मैं समझा नहीं ओमारू?"

"होम्बी हमेशा की तरह भविष्य में स्पष्ट नहीं झांक पा रही है। आने वाले वक्त को वो समझ नहीं पा रही। ये उसके लिए आश्चर्य की बात है कि इस बार ऐसा क्यों हो रहा है, पोपा के आने पर उसकी शक्तियां कमजोर क्यों पड़ गई हैं। होम्बी कहती है कि ऐसा होना, बुरे संकेत की निशानी है।" ओमारू बेचैन हो उठा।

"होम्बी बूढ़ी हो चुकी है। शायद उसकी शक्तियां कमजोर पड़...।"

"मैंने जब से होश संभाला, होम्बी ऐसी ही थी। वो बूढ़ी नहीं हो सकती। उसकी शक्तियां उसे जिंदा रखती हैं। वो हमेशा ही डोबू जाति के भले का काम करती है, परंतु इस बार वो खुद को बेबस क्यों महसूस कर रही है।"

"होम्बी थक गई है। उसे आराम की जरूरत है।" बोबला ने कहा—"होम्बी ठीक हो जाएगी, ये तो...।"

तभी पोपा (अंतरिक्ष यान) के बाहर से एक रोशनी निकलने लगी, जो कि धीरे-धीरे तेज होती चली गई। मिनट भर में वो रोशनी आस-पास इतनी फैल गई कि सब कुछ स्पष्ट देखा जा सके। अब डोबू जाति के लोग एक-दूसरे को स्पष्ट देख पा रहे थे। पोपा का एक बड़ा हिस्सा भी रोशनी में चमक रहा था। दो मिनट बीते कि पोपा के बाहरी दीवार में एक दरवाजा-सा दिखा, फिर भीतर से धातु की बनी सीढ़ी बाहर आकर जमीन से टिक गई। सीढ़ी चार फुट चौड़ी थी और नीले रंग की थी। तभी भीतर से निकलकर एक युवक सीढ़ी पर आ पहुंचा। रोशनी में वो स्पष्ट दिखा। उसने कपड़ों जैसा कुछ पहन रखा था, जो कि सफेद जैसा था और वहां से चमक उठ रही थी। सिर के बाल छोटे थे।

"स्वागत।"

"स्वागत।" डोबू जाति के लोगों की आवाजें उठीं।

जवाब में उस युवक ने हाथ हिलाया। तभी वो सीढ़ी के एक तरफ हो गया। भीतर से और लोग बाहर निकलने लगे और सीढ़ी उतरते नीचे आने लगे। ओमारू तुरंत सीढ़ी के पास जा पहुंचा।

"मैं ओमारू, डोबू जाति का सरदार आप सबका स्वागत करता हूं।" ओमारू ने खुशी भरे स्वर में कहा।

उन लोगों ने कुछ कहने की अपेक्षा ओमारू के कंधे पर बारी-बारी हाथ रखने लगे। शायद ये किसी से मिलने का उनका तरीका था। वो सब सीढ़ी के आसपास खड़े हो गए। उनकी संख्या उन्नीस थी।

ओमारू सीढ़ी के पास मुस्कराता हुआ खड़ा था।

ऊपर सीढ़ी में खड़ा युवक, अपनी जगह पर ही मौजूद था।

तभी पोपा के दरवाजे से वो हसीन युवती निकली, जो कि रानी ताशा थी। बेहद सुंदर, जैसे कि कयामत सुंदरता में लिपटकर आ गई हो। उसका रंग-रूप देखते ही सब भौंचक्के से रह गए। उसने टांगों से लिपटता ऐसा कपड़ा पहन रखा था जो कि कमर तक जा रहा था और दोनों टांगें अलग-अलग नजर आ रही थीं। कमर पर भी वो कपड़ा टाईट-सा लिपटा हुआ था। फिर ऊपर वक्षों पर ब्लाऊज जैसा कोई कपड़ा बंधा था। कपड़ों का रंग हल्का गुलाबी था और वो चमक मार रहा था। सिर के बालों को गूंथकर पीछे जूड़े जैसे बांध रखा था। वो तीखे नैन-नक्श की खूबसूरती में बेहद

असाधारण युवती थी। उसका नाक, गाल, ठोडी, आंखें, होंठ, हर चीज बेहद लाजवाब थीं। उसकी आंखों में हल्का नीला पन था। चेहरा ऐसे मासूमियत से भरा दिखता था जैसे कि कभी कोई गुनाह किया ही न हो। पांवों में कुछ खास ऐसा पहन रखा था कि पांव उस पर टिके थे और उसे डोरियों के साथ, पांव से बांध रखा था। गले में आभूषण के तौर पर जाने क्या डाला हुआ था, जो कि रह-रहकर चमक उठता था। कलाइयों में भी कोई चमकदार चीज पहनी हुई थी। उसने हाथ में ट्रांजिस्टर जैसा, छोटा-सा कोई यंत्र थाम रखा था, जिसमें से बार-बार सफेद रोशनी चमक रही थी बुझ रही थी।

रानी ताशा ने पहली सीढ़ी पर खड़े होकर सब तरफ नजर मारी। फिर मुस्करा पड़ी। मुस्कराते ही उसके दांत मोतियों जैसे चमके और उसकी सुंदरता में चार चांद लग गए। फिर उसने दोनों हाथ उठाकर हिलाए।

रानी ताशा के ऐसा करते ही डोबू जाति के लोगों की आवाजें उठीं।

"स्वागत है।"

"स्वागत है।"

(रानी ताशा, सोमाथ और सदूर से आए लोगों की गर्दनों के पीछे ऑपरेशन करके चने के दाने के आकार का यंत्र (ट्रांसलेटर) लगाया हुआ था, जिसका सीधा कनेक्शन दिमाग से था। किसी अनजानी भाषा में बात होने पर वो ट्रांसलेटर फौरन उन्हें अपनी भाषा में ही शब्दों को ट्रांसलेट करके कानों और दिमाग तक पहुंचाता था। और जब वे अपनी बात सामने वाले से कहते तो ट्रांसलेटर से उसी भाषा में ही शब्द बदलकर सुनाई देते थे।)

तभी रानी ताशा का मदहोश कर देने वाला स्वर गूंजा।

"हम आपके कौन हैं?"

पल भर के लिए वहां चुप्पी छा गई।

नीचे सीढ़ी के पास खड़ा ओमारू मुस्कराकर कह उठा।

"आप हमारी दोस्त हैं रानी ताशा।"

"हमारी दोस्ती अटूट है।" रानी ताशा ने ऊंचे स्वर में कहा—"दोस्ती के नाम पर मैं अपने ग्रह से पोपा में भरकर उपहार लाई हूं। तुम सबकी जगह मेरे दिल में है। हम एक-दूसरे के काम आए हैं और आते रहेंगे। हम तुम्हारी बात मानेंगे तुम हमारी बात मानोगे। ये ही खास रिश्ता है हम में। मैं इतना लम्बा सफर तय करके तुम लोगों के पास क्यों आई, क्योंकि हम दोस्त हैं। तुम लोग मुझे मेहमान मत समझना। जिस तरह ये जगह तुम लोगों का घर है उसी तरह ये मेरा भी घर है। मैं अपने घर में आई हूं।"

"हां रानी ताशा।" ओमारू बोला—"यहां जो कुछ भी है उस पर आपका पूरा हक है।"

"तुमने अपना परिचय नहीं दिया?" रानी ताशा ने ओमारू से कहा।
"मैं डोबू जाति का सरदार...।"
"तो ओमारू हो तुम। हमारे सच्चे दोस्त।" कहने के साथ ही रानी ताशा सीढ़ियां उतरी और ओमारू के पास पहुंच गई। रानी ताशा ने ओमारू के कंधे पर हाथ रखा और मुस्कराकर बोली—"तुम्हें मैं बहुत याद करती हूं ओमारू। यंत्रों के द्वारा हमने कई बार बात की। तुम्हारी आवाज मुझे बहुत अच्छी लगती है।"
"मैं भी आपको हमेशा याद करता हूं।"
रानी ताशा ने उसके कंधे से हाथ हटाया और सामने फैले पहाड़ को निहारा।
"तो इस पहाड़ के भीतर रहते हो तुम लोग।" रानी ताशा बोली।
"ये ही हमारा घर है।"
"सुंदर है। मैं ऐसी जगह पर कभी नहीं रही, पर अब रहूंगी।" फिर रानी ताशा वहां लगी डोबू जाति की भीड़ की तरफ हाथ हिलाकर ऊंचे स्वर से कह उठी—"तुम सब कैसे हो?"
"ठीक हैं।"
"अच्छे हैं।"
"आपको देखकर बहुत अच्छा लगा।" ऐसी आवाजें उठने लगीं।
रानी ताशा ने पीछे देखा। सीढ़ी पर खड़ा युवक अब दो पायदान पीछे खड़ा था।
"तुम मेरे साथ रहो सोमाथ।"
"जो हुक्म रानी ताशा।"
ओमारू ने गहरी निगाहों से सोमाथ को देखा।
"ओमारू अब हमें पहाड़ के भीतर ले चलो।"
"आइए रानी ताशा। मैं तो कब से आपके चलने का इंतजार कर रहा हूं।" ओमारू पलटता हुआ कह उठा।
ओमारू और रानी ताशा साथ-साथ पहाड़ी के द्वार की तरफ चल पड़े। पीछे सोमाथ था।
उसके पीछे वो उन्नीस लोग जो रानी ताशा के साथ आए थे।
उसी पल पोपा की सीढ़ियां जैसे खुली थीं, वैसे ही सिमटकर वापस चली गईं और पोपा का खुला दरवाजा भी बंद होता चला गया। उसके बाद पोपा की साइड से जो रोशनी की किरण प्रकाश फैला रही थी, वो भी बुझ गई। वहां पर पुनः पहले की तरह अंधेरा छा गया। उनके पीछे-पीछे डोबू जाति के सब लोग पहाड़ के भीतर प्रवेश करने लगे थे।
साथ चलता प्रभावित-सा दिखता ओमारू कह उठा।

"तुमसे मिलने की इच्छा बहुत थी रानी ताशा। अब तुम्हें देखा तो मन को चैन मिला।"
"मैं तुम सबको चैन देने ही आई हूं ओमारू।" रानी ताशा कदम उठाती बोली।
"आप बेहद खूबसूरत हैं।"
"हम जानते हैं।" रानी ताशा मुस्कराई।
"क्या सदूर ग्रह पर हर औरत आपकी तरह सुंदर है?"
"नहीं। पर क्या तुम सदूर ग्रह की औरत को प्राप्त करना चाहते हो अपने लिए?"
"क्यों नहीं रानी ताशा।"
"अगली बार जब पोपा आएगा तो तुम्हें भेंट करने के लिए अपने साथ सदूर ग्रह की खूबसूरत युवती भी लाएगा।"
ओमारू का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।
"तुम हमारे दोस्त हो ओमारू।"
"हां। हम दोस्त हैं।"
"और दोस्त की इच्छा को पूरा करना एक-दूसरे का फर्ज है। मैंने ठीक कहा या गलत?"
"ठीक कहा।"
"मुझे राजा देव को वापस पाना है ओमारू।"
"मेरी सेवाएं हाजिर हैं।"
आगे बढ़ते रानी ताशा की निगाह हर तरफ जा रही थी।
"राजा देव मेरे सब कुछ हैं। वो मुझे सबसे प्यारे हैं।"
"परंतु वो आपको छोड़कर इस धरती पर क्यों आ गए?"
रानी ताशा ने ओमारू को देखा फिर सामने देखती कह उठी।
"हमसे कुछ गलती हो गई थी और अब राजा देव को वापस ले जाकर उस गलती को सुधारना है। हम इतनी दूर से पोपा में बैठकर आए हैं तो तुम समझ सकते हो कि राजा देव हमारे लिए कितने जरूरी हैं।"
"तुम हमें बता देती कि राजा देव कहां पर हैं तो हम उन्हें यहां ले आए होते।"
"ये इतना भी आसान नहीं रहेगा ओमारू।"
"क्यों?"
"महापंडित कहता है कि हमें राजा देव को वापस लाने में, ढेर सारी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।"
"महापंडित तो सदूर ग्रह का विद्वान है।"

"महापंडित की कही बात को हम गलत नहीं कह सकते। वो जो कहेगा, सच कहेगा। अब इन बातों को छोड़ो ओमारू, मैं और मेरे साथ आए आदमी तुम्हारा ये ठिकाना पूरी तरह देखना चाहते हैं। वो दिखाओ हमें।"

"तुम सफर से थक गई होगी। आराम कर लो, कुछ खा लो...।"

"हम कभी नहीं थकते। पोपा में सफर करते वक्त तो किले में बैठने जैसा ही महसूस होता है। तुम हमें यहां की सारी जगह दिखाओ।" रानी ताशा ठिठकी। यहां डोबू जाति के लोगों की भीड़ थी। सब कौतूहल से उसे ही देख रहे थे। ये जगह वो थी जहां चबूतरे पर मूर्ति लगी थी—"ये मूर्ति कैसी है?" रानी ताशा ने पूछा।

"हम इस मूर्ति की पूजा करते हैं। इसके आगे सिर झुकाते हैं।" ओमारू बोला।

"पत्थर की मूर्ति के आगे सिर झुकाते हो, हैरानी की बात है।" रानी ताशा ने मूर्ति को गहरी निगाहों से देखा—"तुम लोग इतने ताकतवर हो और मूर्ति के आगे सिर झुकाते हो। ये बात मुझे पसंद नहीं आई।"

"हमारी आस्था है ये मूर्ति। इसे हम देवी कहते हैं।"

"ये मूर्ति तो टूट-फूट चुकी है।" रानी ताशा ने कहा—"इसकी जगह तुम्हें नई मूर्ति लगवा लेनी चाहिए। मैं तुम्हें अपने ग्रह से मूर्ति बनवाकर यहां भेजूंगी कि उसे यहां लगा सको। वो मूर्ति खूबसूरत भी होगी और बड़ी भी होगी।"

ओमारू, रानी ताशा को देखता रहा, कुछ कह न सका।

"तुम मुझे होम्बी की बात बताया करते थे। वो कहां है?"

"जादूगरनी? वो आराम कर रही है।"

"आराम? रानी ताशा ने ओमारू को देखा।

"हां।"

"ऐसा भी क्या आराम कि वो हमारे स्वागत को भी सामने नहीं आए?" रानी ताशा शांत भाव में बोली।

"वो हम लोगों में से नहीं है। वो हमारे कामों में कभी भी दखल नहीं देती। परंतु जाति की बेहतरी की खातिर वो हमें बुरी खबरें पहले ही बता देती है और हम खतरे से निबटने को तैयार हो जाते हैं।"

"क्या अब भी बुरी खबर बताई उसने?"

"कैसी बुरी खबर?"

"हमारे बारे में कुछ कहा हो?"

"आपका आना तो अच्छी खबर है रानी ताशा। आपके बारे में जादूगरनी क्या कहेगी?"

रानी ताशा ओमारू को देखती रही फिर कह उठी।

"होम्बी को जादू नहीं आता।"

"क्या?"

"होम्बी को अगर जादू आता होता तो वो बुरी खबर तुम्हें जरूर बता देती।" एकाएक रानी ताशा मुस्करा पड़ी—"मुझे तो होम्बी के बारे में चिंता हो रही थी कि कहीं वो सच में जादूगरनी न हो। परंतु अब मेरी चिंता दूर हो गई।"

"मैं समझा नहीं रानी ताशा कि तुम क्या कहना चाहती हो।"

"होम्बी जब आराम कर ले तो मैं उससे मिलूंगी।"

"ठीक है।"

"अब मुझे यहां की सारी जगह दिखाओ।" कहने के साथ रानी ताशा इस तरह आगे बढ़ गई जैसे यहां सब कुछ उसका हो।

ओमारू उसके पीछे चल पड़ा।

उनके पीछे बाकी सब लोग थे।

▭ ▭

दो घंटों बाद रानी ताशा एक खुले कमरे में बैठी थी। ये कमरा खास तौर से रानी ताशा के लिए तैयार किया गया था। बाकी सब लोगों को भी ठहरने की जगह दे दी गई थी। सोमाथ कमरे में रखे एक बड़े से पत्थर पर बैठा था। वो शांत था। आराम से बैठा था। कमरे में मशाल जल रही थी। रानी ताशा यहां की सारी जगह देख चुकी थी। पहाड़ियों के भीतर ही भीतर, पहाड़ों को खोखला करके एक किलोमीटर लम्बी ये जगह तैयार की गई थी। वो समझ चुकी थी कि ये काम इन लोगों ने सैकड़ों बरसों पहले से शुरू किया होगा। ये जगह सुरक्षित और अच्छी लगी रानी ताशा को। रानी ताशा ने यंत्रों वाला वो बिजली की तारों वाला कमरा भी देखा था, जिसे कभी उसके ही लोग तैयार करके गए थे और अब वहीं के यंत्रों से ये लोग सदूर ग्रह पर उनसे बातचीत किया करते थे। रानी ताशा ने अभी तक कुछ भी खाया-पिया नहीं था। वो सोचों में डूबी लगी। तभी ओमारू ने भीतर प्रवेश किया।

सोमाथ फौरन सतर्कता भरे अंदाज में उठ खड़ा हुआ था।

"रानी ताशा तुमने अभी तक कुछ खाया नहीं?" ओमारू ने कहा।

"बाद में खाऊंगी। मैं तुमसे बबूसा के बारे में बात करना चाहती हूं।"

"बबूसा?" ओमारू रानी ताशा को देखने लगा।

"क्या हुआ बबूसा का नाम सुनकर?" रानी ताशा बोली।

"बबूसा ने मेरा बहुत नुकसान किया है रानी ताशा।" ओमारू गम्भीर दिखने लगा।

"कैसे?"

"उसने मेरे तीस से ऊपर योद्धा मार डाले हैं।"

"लेकिन क्यों?"

"ये तो तुम्हें बता ही चुका हूं कि बबूसा किसी बात को लेकर तुमसे नाराज है। वो छोटा-सा था जब पोपा उसे यहां छोड़ गया था, उसके बाद उसने युद्ध की शिक्षा यहीं से ली। उसके भीतर बचपन से ही ये खास बात रही कि वो हर चीज को फौरन सीख लेता था। बेशक युद्ध हो या कुछ और। बड़ा होते-होते वो बेहतरीन योद्धा बन गया।"

"महापंडित ने उसके भीतर ऐसी शक्तियां डाल दी थीं कि वो सबसे बेहतर हो।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसका दिमाग तेज है। उसके शरीर की ताकत ज्यादा होगी और युद्ध कला में वो शानदार होगा। महापंडित ने ऐसी कई चीजों का मिश्रण बबूसा का जन्म कराते वक्त, उसके भीतर डाला था, जो कि राजा देव से मेल खाता था। उसे मेरे लिए शक्तिशाली बनाया गया था। ताकि अब वो मेरे काम आ सके। तो वो ये जगह छोड़कर चला गया?"

"हां।"

"तुमने उसे रोकने की चेष्टा नहीं की?"

"बहुत की, परंतु जब वो मेरे योद्धाओं की जान लेने लगा तो मैंने उसे जाने दिया।"

"लेकिन तुम उसे रोक सकते थे।"

"मैंने बबूसा पर ज्यादा सख्ती करना ठीक नहीं समझा।"

"क्यों?"

"क्योंकि वो आपकी अमानत के रूप में मेरे पास था। मैं आपको नाराज नहीं करना चाहता था।"

"बबूसा चला गया तो, उसने तुम्हारे योद्धा पहले मारे या बाद में?"

"बाद में।" ओमारू पूरी तरह गम्भीर था—"एक लड़की पूरे चंद्रमा की रात यहां तक आ पहुंची, तुम्हें तो पता ही है कि हमारी जाति की रीत है कि पूरे चंद्रमा की रात हम पेट के बल लेटकर बिताते हैं। ये रीत जाने कब से चली आ रही है, परंतु मेरी जानकारी में ये ही है कि पहली बार जब पोपा हमारे यहां आया था तो तब पूरे चंद्रमा की रात थी। ऐसे में हर पूरे चंद्रमा की रात हम पोपा के स्वागत में इसी तरह बिताते हैं। उस रात भी हम इसी पहाड़ के भीतर पेट के बल लेटे थे और वो लड़की आ पहुंची। हममें से कोई भी उठ नहीं सकता था ये हमारी जाति का नियम है। इसलिए वो आजाद रही और ये सारी जगह देखकर चली गई। (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें अनिल मोहन का उपन्यास **'बबूसा'**।) बाद में पता चला कि उसका नाम धरा है और वो मुम्बई में रहती है। मुझे चिंता थी कि वो हमारा बिजली वाला कमरा देख

गई है और ये बात उसने बाहरी दुनिया को बता दी तो वो लोग ये जानने के लिए यहां आ सकते हैं कि हम उस कमरे का क्या इस्तेमाल करते हैं।"

"फिर क्या हुआ?"

"दिन का उजाला फैलते ही हमारे योद्धा धरा की तलाश में निकल गए। उसे यहां तक लाने वाला टाकलिंग ला इलाके के गांव का आदमी जोगाराम था। उसे तो योद्धाओं ने मार दिया, परंतु वो लड़की जाने कैसे बचकर निकल गई। योद्धाओं ने टाकलिंग ला का वो गांव घेर लिया कि धरा वहां पहुंचेगी, परंतु वो वहां नहीं पहुंची तो हम समझ गए कि वो मुम्बई की तरफ निकल गई है। हमारे योद्धा फौरन मुम्बई पहुंचे। धरा के घर पहुंचे। वहां उसकी मां थी। उससे पूछताछ की तो वो सिर्फ इतना ही बता सकी कि धरा मुम्बई से बाहर गई है। तो हम समझ गए कि अभी वो मुम्बई नहीं पहुंची। मैं इधर से अपने योद्धाओं को मुम्बई की तरफ भेजता रहा कि जैसे भी हो धरा को खत्म किया जा सके। उस दौरान बबूसा भी मुम्बई में रह रहा था और मेरे योद्धा उस पर पहले से ही नजर रखे थे कि तभी धरा बबूसा के साथ दिखाई दी।"

"बबूसा के साथ, वो लड़की?" रानी ताशा की खूबसूरत आंखें सिकुड़ीं।

"हां।" ओमारू ने सिर हिलाया—"पता नहीं बबूसा का धरा के साथ क्या रिश्ता है। बबूसा मेरे योद्धाओं से लड़की को बचाने में लग गया। मेरे योद्धा धरा को मार देना चाहते थे। ऐसे में कई बार बबूसा से सामना हुआ और झगड़े में मेरे योद्धाओं की जानें, जाने लगीं। मजबूर होकर मैंने बबूसा को भी मारने को कह दिया, परंतु मेरे योद्धा अभी तक न तो बबूसा का कुछ बिगाड़ पाये, न धरा का।"

रानी ताशा के चेहरे पर मुस्कान नाच उठी।

"बबूसा का कुछ नहीं बिगड़ सकता। महापंडित ने उसमें राजा देव के कई गुण डाले हैं। पूरे सदूर ग्रह पर राजा देव से मुकाबले में कोई नहीं जीत सकता था। अक्सर राजा बनने के लिए ताकतवर लोग राजा देव को चुनौती देते रहते थे और राजा देव कभी नहीं हारे। बबूसा में कई गुण राजा देव के भरे हुए हैं।" रानी ताशा ने कहा।

"मैंने आपको बबूसा का हाल सुना दिया।"

"अब बबूसा मुम्बई में ही है।"

"हां।"

"कहां?"

"अभी वो हमारी नजरों से बच गया है। इसकी वजह हमारे खास योद्धा सोलाम की गद्दारी है। उसने एक मौके पर बबूसा की मदद की और उसे छोड़कर चला गया। सोलाम मुम्बई में ही रहना चाहता है। उसे वहां का

जीवन पसंद आ गया। इस वक्त मेरे योद्धा बबूसा की तलाश कर रहे हैं। जल्दी ही बबूसा फिर मेरे योद्धाओं के कब्जे में होगा।"

"बेशक तुम्हारे योद्धा बबूसा को तलाश करते रहें, परंतु अब बबूसा कुछ नहीं कर सकेगा।" रानी ताशा की आंखों में तीव्र चमक लहरा उठी और होंठों के बीच कातिल मुस्कान—"मैं राजा देव को वापस सदूर ग्रह ले जाऊंगी। बबूसा अपने इरादे में कभी भी कामयाब नहीं हो सकेगा। वो हार जाएगा।"

"बबूसा के इरादे क्या हैं?" ओमारू बोला—"वो चाहता क्या है?"

रानी ताशा ने ओमारू को देखा और कह उठी।

"बबूसा के विचारों के बारे में महापंडित मुझे बता चुका है। मैं उसे सफल नहीं होने दूंगी।"

"पर बबूसा से मुकाबला कर पाना खेल नहीं है।"

रानी ताशा की निगाह दस कदमों पर खड़े सोमाथ की तरफ गई।

"उसे देख रहे हो।"

ओमारू की निगाह उस तरफ गई।

"हां।" ओमारू के होंठों से निकला।

"वो सोमाथ है। दस बबूसा भी आ जाएं, तो उन पर भी भारी पड़ेगा।" रानी ताशा हंस पड़ी।

"बबूसा को मार दोगी तुम?"

"नहीं। उसे तो मैं वापस सदूर ग्रह पर ले जाऊंगी और हमेशा के लिए कैद में डाल दूंगी। रानी ताशा के खिलाफ चलने का अंजाम कभी भी अच्छा नहीं होता। बबूसा को जरूर एहसास कराऊंगी इस बात का।"

"अगर बबूसा ने इस सोमाथ को ही मार दिया तो?"

"तुम सोमाथ को नहीं जानते, तभी ऐसा कह रहे हो।" रानी ताशा खतरनाक अंदाज में मुस्कराई—"बबूसा मेरे लिए कभी भी समस्या नहीं बन सकता। समस्या तो राजा देव की है।"

"मैं तुम्हारी हर समस्या को दूर कर दूंगा।"

रानी ताशा ने ओमारू को देखा और कह उठी।

"राजा देव की हर समस्या का हल मुझे ही निकालना होगा। वो सिर्फ मेरे हैं और मैं उनकी रानी हूं। जो हुआ उसमें गलती मेरी थी तभी हम जुदा हुए। परंतु राजा देव सिर्फ मेरे हैं। रानी ताशा के हैं।"

"तुम्हें पता है वो कहां रहता है?"

"मालूम हो जाएगा। महापंडित मुझे रास्ता बताएगा राजा देव तक पहुंचने का। परंतु इतना जरूर कह सकती हूं कि बबूसा मुम्बई में है तो राजा देव भी मुम्बई में है। वो राजा देव को ही ढूंढ़ रहा होगा।"

"हैरानी है बबूसा राजा देव को कैसे ढूंढ़ लेगा जबकि...।"

"महापंडित की दी शक्तियों से वो राजा देव को पहचान कर, उस तक पहुंच सकता है ओमारू।"

"मैं कुछ समझा नहीं।"

"तुम्हें समझने की जरूरत भी क्या है। रानी ताशा पहली बार तुम्हारे पास आई है। तुम सिर्फ मेरी सेवा-सत्कार की सोचो। राजा देव और बबूसा के बारे में सोचना-समझना मेरा काम है। मैं तुम्हारी दोस्त हूं न?"

"हां रानी ताशा।"

"जो मैं कहूंगी, वो करोगे न?"

"क्यों नहीं रानी ताशा।"

"सुबह तुम्हारा इम्तिहान लूंगी कि तुम अपनी बात पर खरे उतरते हो या नहीं। अब मेरे लिए खाने-पीने का इंतजाम करो। देखूं तो सही कि तुम मुझे क्या खिलाते हो।" रानी ताशा मुस्कराई।

ओमारू बाहर निकल गया।

"सोमाथ।" रानी ताशा ने सोमाथ को देखा।

"कहो रानी ताशा?" सोमाथ का स्वर सामान्य था।

"सतर्क रहना। इस वक्त हम न तो दोस्तों में हैं, न दुश्मनों में। कभी भी ये लोग खतरा बन सकते हैं हमारे लिए।"

▭ ▭

अगले दिन रानी ताशा की नींद खुली तो सोमाथ को चौकस मुद्रा में वहां मौजूद पाया। सोये उठने पर रानी ताशा का खूबसूरत चेहरा खिला हुआ और भी सुंदर लग रहा था। वो किसी सीनरी की हिरोइन की तरह लग रही थी जो कि दीवार पर टंगी होती है। उसके रस भरे गुलाबी होंठ, जैसे अपनी दास्तान सुना रहे हों। नींद से भरी उसकी बड़ी आंखों पर जब पलकें झपकतीं तो समां और भी सुहावना-सा महसूस होने लगता।

"यहां की सुबह कैसी है सोमाथ?" रानी ताशा ने मुस्कराकर पूछा।

"कुछ अलग है।"

"क्या?"

"यहां का सूरज हमारे जैसा नहीं है। यहां का सूरज ऊपर आसमान के बीचोबीच आ जाता है।"

"अच्छा, तुमने देखा?" रानी ताशा की निगाह सोमाथ पर थी।

"हां। कुछ देर पहले बाहर गया था तो देखा।"

"मुझे अकेला छोड़ गए थे?"

"हमारे तीन आदमी तब इस कमरे के बाहर खड़े थे।"

"लेकिन इस ग्रह का सूरज और हमारे ग्रह का सूरज है तो एक ही।"

"सूर्य एक ही है, परंतु यहां पर वो आसमान में पहुंच जाता है। जब सुबह दिखा तो ग्रह के एक तरफ था उसके बाद बीच में, यहां के लोगों के सिरों की तरफ आने लगा।"

"ये पृथ्वी ग्रह दिलचस्प है।" रानी ताशा मुस्कराई।

सोमाथ ने कुछ नहीं कहा।

"महापंडित ने तुम्हारे दिमाग में बहुत अच्छे ढंग से जानकारी भरी है। वो सच में महान है।"

"मैं भी आपकी तरह इंसान हूं।"

"जरूर। तुम हो।" रानी ताशा उठ खड़ी हुई—"कोई नई बात?"

"कुछ नहीं। परंतु सुबह से यहां के लोग इस कमरे में झांककर तुम्हें देखने की चेष्टा करते रहे।"

"कौतूहल है उन्हें कि रानी ताशा इतनी खूबसूरत क्यों है।" रानी ताशा हंसी।

"यहां की औरतें खूबसूरत नहीं हैं।" सोमाथ ने कहा।

"औरत देखने में जैसी भी हो, मर्द के लिए वो खूबसूरत ही होती है। औरत है ही ऐसी। औरतें न होतीं तो जहान वीरान-सा लगता। कोई रंगीनी न होती। इस दुनिया को बनाने के पीछे औरत का ही हाथ है। वरना मर्द तो किसी काम के नहीं हैं। मर्दों से काम लेना पड़ता है। इनका बस चले तो ये कोई भी काम न करें।"

"राजा देव के बारे में ऐसे ही विचार हैं आपके?" सोमाथ ने पूछा।

"राजा देव।" रानी ताशा ने गहरी सांस ली—"राजा देव जैसा मर्द मिलना बहुत कठिन है सोमाथ। वो प्यार करना भी जानता है और अपना काम करना भी जानता है। उस जैसा कोई दूसरा नहीं। तभी तो उसे वापस ले जाने के लिए मुझे पृथ्वी ग्रह पर आना पड़ा। मैंने राजा देव के साथ बुरा व्यवहार किया। मैंने जो किया वो मुझे कभी नहीं करना चाहिए था। ये बात मुझे तब समझ में आई जब राजा देव को मैंने खो दिया। अब उसी भूल को सुधारने पृथ्वी पर आई हूं।"

"राजा देव से प्यार है आपको?" सोमाथ ने पूछा।

"बहुत।"

"उन्हें चाहती हैं?"

"अपने से भी ज्यादा।"

"राजा देव भी आपको चाहते हैं?"

रानी ताशा सोमाथ को देखने लगी। आंखें गीली हो गईं।

"आपने जवाब नहीं दिया।"

"राजा देव मुझे बहुत चाहते हैं। वो मेरे दीवाने रहे हैं। उनका प्यार करने का ढंग भी सबसे जुदा था। वो—वो—बस करो सोमाथ। पुरानी बातों को याद करके मुझे तकलीफ होती है कि राजा देव ने मुझे इतना प्यार किया और मैंने...।"

"आप रो रही हैं।"

रानी ताशा ने गीली आंखों को साफ किया।

"मैंने पूछा था कि राजा देव भी आपको चाहते हैं?"

"अब क्या हालात हैं मैं अभी कुछ नहीं कह सकती। उसके बाद से राजा देव पृथ्वी ग्रह पर आकर तीन जन्म ले चुके हैं। ऐसे में उन्हें वो जन्म याद नहीं होगा। महापंडित ने बताया था। लेकिन महापंडित का कहना है कि मेरा चेहरा देखने के बाद राजा देव को वो जन्म याद आने लगेगा। मैं याद आने लगूंगी।"

"आपने तब क्या किया था राजा देव के साथ?"

रानी ताशा चुप-सी हो गई।

"मेरा मतलब है कि राजा देव को ये बात भी याद आ सकती है। क्या आपने बहुत बुरा किया था राजा देव के साथ?"

"हां।" रानी ताशा के होंठ हिले।

"तब तो वो बात याद आते ही, राजा देव आपसे नाराज हो जाएंगे।"

"ये ही तो डर है मुझे।"

"अगर नाराजगी में राजा देव ने आपके साथ सदूर ग्रह पर जाने को मना कर दिया तो?"

"राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाना ही मेरा लक्ष्य है और इसमें तुम मेरी सहायता करोगे सोमाथ।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा—"अपने ग्रह पर पहुंचकर राजा देव मुझे जो भी सजा देंगे, उसे मैं स्वीकार करूंगी।"

"अगर राजा देव ने आपको कठोर सजा दे दी तो?"

रानी ताशा के होंठ भिंच गए।

"अगर राजा देव ने महापंडित को हुक्म दिया कि तुम्हारी जान ले ले और दोबारा तुम्हारा जन्म न कराए तो तब क्या फायदा होगा राजा देव को सदूर ग्रह ले जाने का। तुम्हें तो कोई फायदा नहीं हुआ।" सोमाथ ने कहा।

रानी ताशा एकाएक मुस्कराई और सोमाथ से बोली।

"सच में, महापंडित ने तुम्हारा दिमाग बहुत शानदार बनाया है।"

"आप ये सोचकर रहिए कि राजा देव आपको कठोर सजा देंगे।"

"मैंने राजा देव के साथ जो व्यवहार किया था, उसके बदले में मैं कठोर

सजा की ही हकदार हूं।" रानी ताशा गम्भीरता से कह उठी—"मुझे राजा देव की दी हर सजा मंजूर है, परंतु सजा मैं सदूर ग्रह पर ही स्वीकार करूंगी। मेरा लक्ष्य राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाना है। राजा देव बेहतर ढंग से अपने ग्रह को संभाल सकते हैं। मुझे उनसे प्यार है। अगर उन्होंने प्यार के बदले मुझे सजा दी तो मुझे कोई अफसोस नहीं होगा। मैंने भी तो बुरा किया था उनके साथ।"

"औरतें कैसी होती हैं मैं ठीक से जान नहीं पाया।"

"क्यों?"

"प्यार भी करती हैं, धोखा भी देती हैं और सजा भी खुशी से...।"

तभी ओमारू ने भीतर प्रवेश किया। रानी ताशा को देखते ही मुस्कराकर बोला।

"जाग गई तुम। आधा दिन बीत गया। मैं तो कब से तुम्हारे उठने का इंतजार कर रहा था।"

"रात का खाना बहुत अच्छा था ओमारू।"

"मैं दिल से दोस्त का स्वागत कर रहा हूं। रानी ताशा हमारी दोस्त है।"

"और ओमारू रानी ताशा की दोस्त है।" रानी ताशा ने मुस्कराकर कहा।

"आपके लिए अब खाना तैयार है। लाऊं क्या?"

"कुछ देर बाद, अभी मैंने पोपा के भीतर जाना है। उसके बाद बाहर निकलकर खाना खाऊंगी।" कहने के साथ ही रानी ताशा ने एक तरफ रखा ट्रांसमिटर जैसा यंत्र उठाकर हाथ में लिया—"सुना है तुम्हारे ग्रह का सूर्य सिर पर पहुंच जाता है।"

"ये तो सामान्य बात है।"

"परंतु हमारे लिए नई बात है। क्योंकि हमारे यहां सूर्य इस तरह नजर नहीं आता। आओ सोमाथ बाहर चलें। सूर्य भी देख लेंगे और पोपा के भीतर जाकर आवश्यक काम भी पूरे कर लेंगे।" रानी ताशा ने कहा और दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

ओमारू साथ चल पड़ा।

सोमाथ पीछे था।

"रानी ताशा।" ओमारू साथ चलते बोला—"क्या तुम्हारे मुम्बई जाने का इंतजाम कर दूं?"

"मुम्बई क्यों?" रानी ताशा कमरे से बाहर निकल आई थी।

"आपने कहा था कि राजा देव की तलाश के लिए...।"

"मुझे कोई जल्दी नहीं है राजा देव की तलाश की।" रानी ताशा

मुस्कराकर कह उठी—"कुछ और भी सोचकर आई हूं, वो सब भी पूरा करना है। सब काम ही होने हैं।"

"जैसा तुम ठीक समझो।"

फिर रानी ताशा वहां से निकली, जहां चबूतरे पर मूर्ति मौजूद थी। वो ठिठकी।

वहां काफी लोग आ-जा रहे थे। रानी ताशा को उत्सुक निगाहों से देख रहे थे।

"ओमारू, ये मूर्ति मुझे अच्छी नहीं लगी।" रानी ताशा कह उठी।

ओमारू ने उलझन भरी निगाहों से रानी ताशा को देखा।

सोमाथ दो कदम पीछे खड़ा था।

"सुना ओमारू, ये मूर्ति...।"

"ये मूर्ति हमारी देवी है। हम इसकी पूजा करते हैं।" ओमारू अजीब-से स्वर में कह उठा।

"पत्थर की मूर्ति देवी कैसे बन सकती है।" रानी ताशा मुस्कराई।

"पर ये हमारी देवी है।"

"मैं तुम्हें नई देवी की मूर्ति पोपा में भेजूंगी। ये मूर्ति टूट-फूट चुकी है। मैं तुम्हें कैसी लगती हूं?"

"अ-अच्छी हो तुम।"

"तो फिर यहां पर मेरी मूर्ति लगा लो। मुझे अपनी देवी बना लो।"

"ये तुम क्या कह रही हो।"

"क्या मैं देवी के रूप में अच्छी नहीं लगूंगी?"

ओमारू चुप रहा।

"हम दोस्त हैं न ओमारू?"

"हां।"

"तो एक दोस्त को दूसरे की बात माननी चाहिए। इस टूटी-फूटी मूर्ति को उठाकर बाहर खड़ा कर दो।"

"बाहर?"

"हां। ये चबूतरा खाली करा दो। यहां मैं बैठा करूंगी।"

"ये असम्भव है।" ओमारू के होंठों से निकला—"चबूतरे पर जादूगरनी के अलावा कोई नहीं बैठ सकता। ये हमारी देवी की मूर्ति है इसे यहां से बाहर नहीं निकाला जा सकता। तुम्हारी बातें अजीब-सी हैं रानी ताशा।"

"कुछ भी अजीब नहीं। मैं तुम्हारी दोस्त हूं। तुम्हारा भला चाहती हूं। मैं तुम सब के लिए अपने ग्रह से उपहार लाई हूं। हमारा रिश्ता पुराना है और अटूट है। तुम्हें मेरी बात जरूर माननी चाहिए।"

"ये—ये सम्भव नहीं।"

"मूर्ति को बाहर निकालना?"

"हां। ये हमारी देवी है। भला ये तुम्हें क्या तकलीफ दे रही है। ये तो...।"

"रहने दो।" रानी ताशा मुस्कराई—"इस बारे में हम फिर बात करेंगे। ओमारू मुझे अब पोपा में जाना है और बाहर का सूरज भी देखना है कि वो आसमान के बीच में पहुंचकर कैसा दिखता है।" फिर रानी ताशा पलटकर सोमाथ से बोली—"हमारे लोग क्या कर रहे हैं। मुझे कोई भी नजर नहीं आ रहा?"

"वो इस सारी जगह को ठीक से देख रहे हैं।" सोमाथ ने कहा।

"हूं। ठीक है चलो।"

वे तीनों पहाड़ से बाहर निकले। बाहर धूप खिली हुई थी। जमीन हर तरफ बर्फ से ढकी चांदी की तरह सफेद दिख रही थी। ठंडी हवा चल रही थी।

"यहां का मौसम कितना अच्छा है।" रानी ताशा कह उठी—"काश राजा देव इस ग्रह के मालिक होते।"

"रानी ताशा।" सोमाथ बोला—"सूर्य को देखिए वो किस तरह आसमान के भीतर, ऊपर आ गया है।"

रानी ताशा ने सिर उठाकर ऊपर देखा।

सूर्य को देखा तो उसी पल उसके होंठों से निकला।

"अद्‌भुत। ओह ये मैं क्या देख रही हूं। सूर्य आसमान के बीच में आ गया। अति अद्‌भुत, ऐसा नजारा मैंने पहले कभी नहीं देखा। सोमाथ ये तो कमाल हो गया। मुझे यकीन नहीं आ रहा कि जो मैं देख रही हूं वो सच है। मैंने ऐसा नजारा पहले कभी नहीं देखा। ये पृथ्वी ग्रह कितना सुंदर है। कितना अद्‌भुत है। हमारे ग्रह पर सूर्य ऐसा नहीं होता...।"

▭ ▭

ओमारू, मूर्ति के पीछे के रास्ते से होता, वहां जा पहुंचा जहां होम्बी रहती थी। कमरे में मशाल जल रही थी। लाल-सा प्रकाश फैला था। होम्बी अपने बिस्तरे जैसे पत्थर पर लेटी हुई थी। उसका झुर्रियों से भरा चेहरा सोच में डूबा हुआ था। उसके सिर के काले बाल, सिर के आसपास बिखरे हुए थे।

आहट सुनकर भी होम्बी ने उसकी तरफ नहीं देखा।

"जादूगरनी।" ओमारू उसके पास बैठता कह उठा।

"बोल।" होम्बी के होंठ हिले। मध्यम-सी आवाज उभरी।

"मैं परेशान हो रहा हूं।" ओमारू बोला।

"मैंने तो पहले ही कहा था कि ये वक्त ठीक नहीं चलेगा। क्या परेशानी हो गई।"

ओमारू चुप रहा।

"रानी ताशा से मिला?" होम्बी बोली।

"हां जादूगरनी।"

"क्या कहता है तू उसके बारे में?"

"वो खूबसूरत है। अच्छी है। सब ठीक है, परंतु वो देवी की मूर्ति हटाने को कह रही है।"

होम्बी उठ बैठी। चिंता भरी निगाहों से ओमारू को देखा।

"देवी की मूर्ति?"

"वो उसे पत्थर कह रही है। कहती है इसे यहां से उठाकर बाहर रख दो। चबूतरे पर मैं बैठूंगी।"

"ये अनर्थ है।" होम्बी के होंठों से निकला—"मैंने तो पहले ही कहा था कि पोपा के आने से हमारा कोई भला नहीं होगा। कुछ नुकसान ही हो सकता है। मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा।"

"तुम्हारा जादू क्या कहता है?" ओमारू ने पूछा।

"मुझे कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा। मैं भविष्य में नहीं देख पा रही हूं। मेरे जादू को जाने क्या हो गया है कि उसने काम करना बंद कर दिया। भविष्य में झांकती हूं तो धुंधला-सा दिखता है, स्पष्ट नहीं।"

"मैं क्या करूं जादूगरनी?"

"जाति का सरदार है तू, जाति के भले के लिए जो ठीक लगता है वो कर।" होम्बी बोली।

"रानी ताशा हमारी दोस्त है।"

"तेरे को जाति प्यारी है या दोस्ती?"

"जाति।"

"तो सख्ती से कह दे उसे कि दोस्तों की तरह मेहमान बन के रहे।" होम्बी शांत स्वर में बोली।

"ये कहना ही होगा।" ओमारू गम्भीर था—"अगर तेरा जादू ठीक से काम करता तो मेरे लिए आसानी हो जाती।"

"मेरी शक्तियों को, रानी ताशा के आते ही जाने क्या हो गया है। सिर्फ बबूसा का चेहरा ही स्पष्ट दिखता है मुझे। बाकी सब धुंधला नजर आता है। ऐसे वक्त में बबूसा क्यों दिख रहा है मुझे?"

"जरूर कोई बात होगी।"

"वो तो है पर मुझे आने वाले वक्त का स्पष्ट आभास क्यों नहीं हो रहा?"

"तुमने कोशिश की?"

"बहुत कोशिश की। पर कोई फायदा नहीं हो रहा।" होम्बी ने गम्भीर स्वर में कहा।

ओमारू होम्बी को देखता रहा। फिर बोला।

"तुम मुझे कोई राह नहीं दिखा रही जादूगरनी?"

होम्बी, ओमारू को देखती रही फिर कह उठी।

"राह दिखाने का वक्त निकल गया है।" उसका झुर्रियों से भरा चेहरा गम्भीर था।

"क्या मतलब?"

"वक्त आगे निकल चुका है और तू पीछे खड़ा है। अब कुछ भी ठीक नहीं हो सकता।"

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"अब कुछ भी कहने का कोई फायदा नहीं। तूफान उठ चुका है। उसे अब रोका नहीं जा सकता। तबाही होगी। इस जाति के पुरखों ने सदूर ग्रह के लोगों से दोस्ती करके भूल की। उस भूल की सजा आज के लोग भुगतेंगे।"

"तुम—तुम्हारा मतलब कि तुम्हें सब पता है कि क्या होने वाला है।" ओमारू का स्वर तेज हो गया।

होम्बी ने सहमति से अपना झुर्रियों भरा चेहरा हिलाया।

"क्या? मुझे सब कुछ स्पष्ट...।"

"अब कोई फायदा नहीं होगा। तूफान उठ चुका है, बरबादी होकर रहेगी।" होम्बी ने कहा।

"कुछ बताओ तो कि...।"

"मेरा चुप रहना ही, जाति के लिए बेहतर है। मैं जिंदा रहूंगी तो जाति को फिर से राह दिखाने की कोशिश करूंगी। परंतु अब कुछ भी ठीक नहीं हो सकता।"

"तुमने ये सब पहले क्यों नहीं बताया?"

"मेरे जादू ने कुछ वक्त के लिए काम करना बंद कर दिया था।"

"हमारी दुश्मन रानी ताशा ही है न?"

"सही सोचा।"

"रानी ताशा ही हमें बरबाद करेगी?" ओमारू के दांत भिंच गए।

"हां।"

"फिर तो कोई समस्या नहीं।" ओमारू गुर्राया—"मेरे योद्धा अभी रानी ताशा को खत्म कर...।"

"ऐसी भूल मत कर देना ओमारू।"

"क्या मतलब?"

"रानी ताशा को मारा नहीं जा सकता। वो बहुत चालाक है, शातिर है। उसके पास गजब तरह के हथियार हैं। वो पलों में पूरी जाति की जान ले लेगी। अब उसके कदम वापस नहीं जा सकते। ऊपर से उसे सोमाथ का सहारा है, जो कि तारों और धातु का बना इंसान है। मैंने बहुत कुछ देखा है कि अब बरबादी होगी ही।" होम्बी ने गम्भीर स्वर में कहा और पास ही रखी कंघी उठाई और अपने बालों में फेरने लगी।

ओमारू होंठ भींचे होम्बी को देखता रहा।

"तुमने अपना काम ठीक से नहीं निभाया। तुम तब ये बात मुझे बता रही हो जब रानी ताशा यहां आ पहुंची। अगर ये सब तुझे पहले बताया होता तो मैं पोपा को नीचे नहीं उतरने देता।" ओमारू गुस्से से बोल।

"उस वक्त तक तो ज्यादा मुझे भी नहीं पता था।"

"अब तुम रानी ताशा को मारने से मना कर रही हो।"

"मैंने मना नहीं किया। सलाह दी है। अगर तुमने रानी ताशा को मारा तो उसके साथ आए लोग, यहां सबको मार देंगे। ये खतरनाक हथियार साथ लाए हैं। मैं देख रही हूं कि अगर इन्हें कुछ कहा गया तो यहां कोई भी जिंदा नहीं बचेगा।"

"कुछ न कहा जाए इन्हें तो?"

"तब जाति के लोग बच जाएंगे। बाद में हम फिर से सामान्य जीवन बिताने लगेंगे। बरबादी होगी तो अवश्य परंतु कम होगी। अब तेरे मन में जो आता है, तू वो ही कर।" होम्बी ने कहा।

"तू कोई रास्ता नहीं दिखाएगी जादूगरनी?"

"ये सब कहकर मैंने तेरे को रास्ता ही दिखाया है।"

"रानी ताशा किस तरह की बरबादी करेगी?"

"तेरे सामने आ जाएगा।"

"तू नहीं बताएगी।"

"कोई फायदा नहीं होगा। फायदा होने का वक्त निकल चुका है। जाति को बचाना है तो मेरे कहने पर चल और रानी ताशा को संभाले रख। तभी सब कुछ बचा रह सकता है।" होम्बी ने कहा।

"पर रानी ताशा तो अपने राजा देव को पृथ्वी से ले जाने आई है।" ओमारू परेशान-सा बोला।

"इस काम में वो अपने और भी मतलब साध रही है। आगे जो होने वाला है वो संभाल। अपनी जाति को बचा। रानी ताशा के इरादे ठीक नहीं हैं। वो हमें सिर्फ नुकसान ही पहुंचाएगी और हम कुछ नहीं कर सकते।"

"जादूगरनी। हम उसके साथ आए आदमियों को फौरन खत्म कर सकते हैं। उसके बाद रानी ताशा अकेली रह जाएगी और कुछ नहीं कर सकेगी। मैं उसे भी मार दूंगा। सब ठीक हो जाएगा।" ओमारू कह उठा।

"जितने लोग रानी ताशा के बाहर हैं, उससे ज्यादा भीतर हो सकते हैं।"

"भीतर—पोपा के?" ओमारू के होंठों से निकला।

होम्बी मुस्करा पड़ी, बोली।

"रानी ताशा को कम मत समझ। बहुत कुछ है उसके दिमाग में। वो सिर्फ बरबादी फैलाएगी।"

ओमारू का चेहरा कठोर हो गया। वो होम्बी को देखता रहा, फिर उठ खड़ा हुआ।

▭ ▭

ओमारू, होम्बी से मिलने के बाद, बोबला से मिला। बोबला उस वक्त पहाड़ के एक बड़े से कमरे में कुछ युवकों को हथियार थामने की कला के बारे में समझा रहा था। ओमारू के चेहरे पर छाये कठोरता के भाव देखकर बोबला चौंका और ओमारू के करीब आते ही उलझन भरे स्वर में कह उठा।

"क्या बात है ओमारू। सब ठीक तो है?"

"तुमसे बात करनी है, अकेले में आ।"

दोनों उस कमरे से निकलकर पहाड़ के भीतर ही खुले में एक दीवार के पास जा पहुंचे।

"कुछ बुरा हुआ लगता है।" बोबला बोला।

"बुरा होने वाला है।" ओमारू का स्वर सख्त था।

"रानी ताशा की तरफ से कोई बात हुई क्या?"

ओमारू ने बोबला को होम्बी की कही बातें और होम्बी से हुई बातचीत बताई। साथ ही रानी ताशा के बारे में बताया कि जो देवी की मूर्ति को वहां से हटाने के लिए कह रही थी।

सुनकर बोबला हक्का-बक्का रह गया।

"वो मूर्ति नहीं, हमारी देवी है। रानी ताशा कौन होती है उसके बारे में कुछ कहने वाली।" बोबला का स्वर तेज हो गया।

"मैंने रानी ताशा को ये ही कहा कि वो मूर्ति हमारी देवी है।"

"रानी ताशा अपनी औकात से बाहर की बात कर रही है।" बोबला गुस्से में आ गया—"उसकी हिम्मत कैसे हुई हमारी देवी की मूर्ति के बारे में ऐसा कहने की। हम रानी ताशा को यहां से निकाल देंगे।"

"इस बारे में जादूगरनी जो कहती है, तुम्हें बता ही चुका हूं।" ओमारू ने होंठ भींचकर कहा।

बोबला, ओमारू को देखने लगा।

"होम्बी कहती है कि रानी ताशा के पास खतरनाक हथियार हैं। वो हमें बर्बाद कर देगी। अगर हम खामोश रहे तो जाति बच सकती है। होम्बी की सलाह है कि हम खामोश रहें।" ओमारू ने कहा।

"लेकिन रानी ताशा करना क्या चाहती है?" बोबला के माथे पर बल नजर आ रहे थे।

"जादूगरनी इस बारे में स्पष्ट नहीं बता रही।"

"क्यों?"

"जादूगरनी शायद समझ चुकी है कि हमें कुछ न बताने में ही हमारा भला है। तभी वो चुप है।"

"रानी ताशा हमारी देवी की मूर्ति को उठाकर बाहर रखने को कह रही है, इस बात को कोई नहीं सहेगा। खून बहेगा ओमारू और हमारे योद्धा कुछ ही पलों में रानी ताशा सहित सबको खत्म कर देंगे।"

"जादूगरनी कहती है कि पोपा में और भी लोग हैं। वो हमें मार देंगे।" ओमारू गुर्राया।

बोबला के चेहरे पर सख्त भाव दिखाई दे रहे थे।

"हम पोपा के भीतर जाकर उन्हें मारेंगे।"

"जादूगरनी कहती है कि उनका मुकाबला करने में हमारा नुकसान है।"

"ये थोड़े से लोग हैं, हम इन्हें मार देंगे।"

"तुम जादूगरनी के शब्दों की परवाह नहीं कर रहे।"

"तो तुम क्या कहते हो कि क्या करें हम?"

"ये ही तो समझ नहीं आ रहा।" ओमारू ने दांत भींचकर कहा—"जब से बबूसा यहां से गया है, तब से हमारा चैन छिनता जा रहा है। जब से धरा नाम की वो लड़की यहां से होकर गई है, तब से हमारे योद्धा जान गंवाने लगे हैं। पहले बबूसा को लेकर हम परेशान थे और अब रानी ताशा की तरफ से मुसीबत आने वाली है। हम हाथ पर हाथ रखे बैठे तो नहीं रह सकते। हमें कुछ करना होगा। परंतु जादूगरनी कहती है कि हम कुछ न करें।"

"आखिर रानी ताशा चाहती क्या है?" बोबला कह उठा।

"ये पता नहीं।" ओमारू ने सोच भरे स्वर में कहा।

"जब तक दुश्मन के इरादे का पता न हो, उस पर हमला करना बेवकूफी होगी ओमारू।"

"तुम उन पर हमला करने की सोच रहे हो?"

"खुद पर कोई मुसीबत आती है तो हमारे योद्धा किस दिन काम आएंगे।" बोबला ने खतरनाक स्वर में कहा।

"और जादूगरनी? वो जो कहती है कि हमारा खामोश रहना ही बेहतर...।"

"मैं जादूगरनी की बात को नहीं मानता। अगर कोई हमारे घर में घुसकर हम पर हमला करे तो हम खामोश कैसे रह सकते हैं। क्या जादूगरनी पसंद करेगी कि कोई उसे चांटे मारता रहे और वो खामोश रहे।"

ओमारू के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"पहले हमें रानी ताशा के इरादों को समझना होगा।" बोबला कह उठा—"फिर कुछ विचार करेंगे।"

"मेरे खयाल में हमारे पास काफी वक्त है।" ओमारू बोला—"हम मुकाबले की तैयारी कर सकते हैं।"

"तुम ठीक कहते हो। हमारे पास करने को बहुत काम है। सोचो ओमारू, हम क्या करें?"

"मैं रानी ताशा से बातचीत करके उसका इरादा जानने की चेष्टा करूंगा। वो क्या चाहती है और क्या करने वाली है। तुम अपने खास योद्धाओं के हवाले, पोपा पर हर वक्त नजर रखने का काम कर दो। उन्हें पोपा के भीतर जाने का, चुपके से मौका मिले तो वो भीतर जाकर, भीतर मौजूद लोगों पर कब्जा जमा लें या उन्हें मार दें। जादूगरनी की बातों से लगता है कि पोपा के भीतर के लोग हमें ज्यादा नुकसान पहुंचा सकते हैं। उन्हें खत्म कर दिया तो जो लोग यहां पर मौजूद हैं, उन्हें आसानी से मार सकते हैं। इस तरह सब ठीक हो जाएगा।"

"परंतु पोपा का दरवाजा तो हर वक्त बंद रहता है।" बोबला बोला।

"इंतजार करो और देखो कि दरवाजा कब खुलता है।" ओमारू ने कहा—"कोई ऐसा वक्त, जब चुपके से पोपा के भीतर जाने का मौका मिले तो तब भीतर जाना है और इस तरह सारा काम करना है कि इधर के लोगों को पता ही न चले कि पोपा में हम उनके साथियों के साथ क्या कर रहे हैं।"

बोबला चुप रहा।

"मेरी बात में तुम्हें क्या ठीक नहीं लगा?" ओमारू बोला।

"ये बात नहीं।"

"तो?"

"मैं सोच रहा हूं कि अभी तक हम जो भी सोच रहे हैं, वो सब कुछ जादूगरनी की बातों को सुनकर सोच रहे हैं।"

"हां।"

"देवी की मूर्ति के अलावा रानी ताशा ने अभी तक कोई गलत बात नहीं की।"

"वैसे तो नहीं की।"

"तो पहले हमें यकीन तो कर लेने दो कि रानी ताशा सच में हमारे लिए, बुरे विचार रखती है अपने मन में।"

"तुम जादूगरनी की बात पर अविश्वास कर रहे हो।"

"मुझे जादूगरनी की बात पर पूरा भरोसा है।" बोबला ने होंठ भींचे सख्त स्वर में कहा—"जादूगरनी ने हमें सतर्क करके अपना काम पूरा कर दिया। हम सतर्क हो चुके हैं, परंतु हमें भी तो यकीनी तौर पर इस बात की तसल्ली करनी है कि रानी ताशा सच में हमारे खिलाफ कुछ करने की सोच रही है। अभी तक कुछ भी सामने नहीं आया है।"

"जादूगरनी ने आज तक कोई बात गलत नहीं कही। बबूसा के बारे में भी उसने पहले ही कह दिया था कि अगर उसे रोका नहीं गया तो मुसीबतें आएंगी और वो आ रही हैं।" ओमारू कह उठा।

बोबला के चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे।

"रानी ताशा, राजा देव को वापस ले जाने आई है, जो इसी पृथ्वी पर रहता है।"

"हां—तो?"

"ऐसे में रानी ताशा हमारा बुरा क्यों करेगी। हमसे झगड़ा क्यों करेगी। उसे तो हमारी सहायता चाहिए होगी।"

ओमारू, बोबला को देखने लगा।

"ओमारू।" बोबला सोच भरे स्वर में कह उठा—"मुझे लगता है कि जादूगरनी को इस वक्त भविष्य दिखाई नहीं दे रहा या उससे कोई गलती हुई है भविष्य की बातों को समझने में।"

"जादूगरनी ने ये तो कई बार कहा है कि उसे भविष्य की घटनाएं इस बार स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहीं।"

"वो ही तो मैं कह रहा हूं कि जादूगरनी से कोई गलती हो रही है। रानी ताशा हमारी दुश्मन नहीं बन सकती। वो हमारा बुरा नहीं सोच सकती। इससे उसे कोई फायदा नहीं होने वाला। वो तो राजा देव को ढूंढ़ने की सोच रही होगी।"

"राजा देव की बात की थी मैंने परंतु रानी ताशा ने कहा कि उसे राजा देव को ढूंढ़ने की कोई जल्दी नहीं है। उससे पहले और भी काम करने हैं। मुझे नहीं समझ आया कि उसके और काम क्या हैं।"

बोबला सोच भरी निगाहों से ओमारू को देखने लगा।

"अब मैं जो कहता हूं वो करो बोबला।" ओमारू बोला।

"क्या?"

"हमें सतर्क रहना होगा। पोपा पर हर वक्त नजर रखनी होगी और इस काम में विश्वासी आदमियों को लगाना होगा जो किसी को भी न बताएं कि हम क्या सोच रहे हैं। जहां पर गड़बड़ देखी तो हम हरकत में आ...।"

"एक बात मुझे खटक रही है।" बोबला ने कहा—"रानी ताशा के लोग पोपा के भीतर क्यों बैठे हैं। कुछ बाहर आ गए तो कुछ भीतर हैं। हमने उन्हें देखा भी नहीं। वो बाहर भी नहीं निकले। ऐसा क्यों?"

ओमारू बेचैन-सा हुआ।

"कुछ बात तो है।" बोबला पुनः बोला।

दोनों कई पलों तक खामोश रहे। फिर ओमारू ही बोला।

"जैसा मैंने कहा है, वैसा ही करो बोबला। किसी को कानो-कान खबर न हो कि हमारे मन में क्या चल रहा है।"

▭ ▭

रानी ताशा ने पोपा में प्रवेश किया और पल भर के लिए ठिठकी। सोमाथ उसके साथ था। एक अन्य आदमी भी था जिसने बटन दबाया तो सीढ़ी सिमटकर भीतर आ गई तो दरवाजा बंद कर लिया गया। पोपा में हल्की ठंडक व्याप्त थी। रानी ताशा के हाथ में यंत्र दबा था।

"अब तुम आराम कर सकते हो सोमाथ।" रानी ताशा ने कहा।

"ठीक है रानी ताशा।" सोमाथ ने कहा और एक तरफ चला गया।

यहां से तीन रास्ते अलग-अलग दिशाओं में जा रहे थे।

रानी ताशा ने दरवाजा बंद करने वाले से कहा।

"ठीक हो किलोरा?"

"जी रानी ताशा।"

रानी ताशा सामने जाते रास्ते पर बढ़ी तो किलोरा साथ चल पड़ा।

"बाहर कैसा रहा?"

"बहुत बढ़िया।" रानी ताशा बोली—"पहाड़ों के बीच बनी जगह सुरक्षित है। ऐसी जगह को हमें अपना बना लेना चाहिए, ताकि हम जब भी पृथ्वी ग्रह पर आएं तो हमारे पास रहने को सुरक्षित जगह हो।"

"तो ये जगह आपको पसंद आई?"

"बहुत। इस जगह को हमने अपने कब्जे में करना है और जाते वक्त यहां अपने लोग छोड़ देने हैं। ये ग्रह मुझे पसंद आया अभी तक। यहां सूर्य आसमान के बीच चला जाता है। सब कुछ लाजवाब है यहां।"

"उन लोगों की संख्या क्या है?" किलोरा ने साथ चलते पूछा।

"चार सौ-पांच सौ हो सकती है। जैसा कि हम पहले से ही जानते हैं कि ये लोग युद्ध कला में निपुण हैं। ऐसे में हमें सोच-समझकर कदम उठाना

होगा। सबको नहीं मारा जाएगा। डोबू जाति के मजबूत कंधे तोड़ दिए जाएंगे ताकि इनका संचालन करने वाला कोई न रहे। फौज तब बेकार हो जाती है, जब सेनापति न रहे।" रानी ताशा शांत स्वर में कह रही थी—"डोबू जाति का सरदार ओमारू है। ओमारू के साथ-साथ और जो भी महत्त्वपूर्ण लोग हैं, उन्हें पहचानना होगा। ताकि एक ही बार में उन्हें खत्म किया जा सके।"

"होम्बी भी तो है।" किलोरा बोला।

"उससे अभी मेरी मुलाकात नहीं हुई। परंतु होम्बी डोबू जाति में दखल नहीं देती। वो अपना जीवन बिता रही है और कभी-कभी मन से पैदा करके कुछ बातें जाति के लोगों को बता देती है कि उसका प्रभाव बना रहे। जैसा कि हम जानते ही हैं कि इन लोगों का सम्पर्क पृथ्वी ग्रह के बाकी लोगों से नहीं है। ये हमारे लिए अच्छी बात है। यहां जो भी होगा कोई नहीं जान सकेगा। हमारे लोग इस जाति के बनकर यहां की दुनिया का हिस्सा बन सकते हैं। हमें यहां के लोगों को, यहां की दुनिया को करीब से जानना और देखना है।"

"राजा देव के बारे में कोई खबर?"

"कुछ नहीं। राजा देव की तलाश में जाएंगे। फिर उन्हें अपने साथ पोपा में ले आएंगे। परंतु पहले यहां पर कब्जा कर लेना ठीक होगा। यहां पर पूरी हुकूमत हमारी होगी तो राजा देव को आराम से ढूंढ़ लेंगे।"

"बबूसा नहीं मिला?"

"नहीं। बबूसा यहां के मुम्बई शहर में कहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि वो राजा देव को तलाश कर रहा होगा।" रानी ताशा का चेहरा सख्त हुआ—"हमसे विद्रोह कर दिया है बबूसा ने। इसकी उसे सजा अवश्य मिलेगी।"

"तो क्या बबूसा हमारे साथ नहीं है?"

"अगर वो हमारे साथ होता तो हमारे इंतजार में यहां मौजूद होता। परंतु महापंडित का कहना है कि बबूसा ने स्पष्ट तौर पर हमसे विद्रोह कर दिया है। अब वो राजा देव की तलाश में है। परंतु बबूसा ये भी बेहतर जानता है कि हम उसे माफ करने वाले नहीं। बेशक वो राजा देव का सेवक है, परंतु मैं उसे सजा देकर रहूंगी। उसका जन्म मेरे कहने पर, महापंडित ने ताकतवर बनाकर कराया था कि आज के वक्त में वो हमारी सहायता करेगा, परंतु अब उसने विद्रोह कर दिया। बबूसा से हमारी मुलाकात अवश्य होगी, तब देखेंगे कि वो क्या रुख अपनाता है।"

उस छोटे-से रास्ते को पार करके वे एक गोल जैसे कमरे में पहुंचे।

कमरे में पांच दरवाजे नजर आ रहे थे। वहां की दीवारों के साथ बैंच जैसी सीटें कतार में लगी हुई थीं। एक तरफ काउंटर जैसा बना था, जिसके

सामने स्क्रीन लगी थी। काउंटर पर असंख्य यंत्र और बटन लगे हुए थे। बटनों का रंग पीला और नीला था। लीवर जैसी चीजें भी खड़ी दिख रही थीं। वहां की छत किसी धातु से बनी नजर आ रही थी और दीवारें भी धातु की थीं। फर्श भी वैसा ही था।

इस वक्त दीवार के साथ सीटों पर सात-आठ आदमी बैठे बातें कर रहे थे कि रानी ताशा को आया पाकर वे सब सतर्कता से उठ खड़े हुए। रानी ताशा ने ठिठककर, मुस्कराते हुए उन्हें देखा।

"कैसे हो तुम सब?" रानी ताशा ने कहा।

"हम बेहतर हैं और ये ग्रह देखना चाहते हैं।" एक ने कहा—"परंतु हमें बाहर निकलने की इजाजत नहीं है।"

"अभी भीतर ही रुको।" रानी ताशा ने कहा—"हमें डोबू जाति पर कब्जा करना है कि पृथ्वी ग्रह पर हम अपना पक्का ठिकाना बना सकें और पोपा में बैठकर हम लोग आते-जाते रहें। हो सकता है ये ग्रह हमारे काम का हो। यहां का सूर्य कमाल का है। वो आसमान के बीचोबीच आ जाता है। जबकि हमारे ग्रह पर ऐसा नहीं होता। यहां और भी ऐसी अद्भुत चीजें होंगी, जो कि हमें जरूर पसंद आएंगी।"

"तो क्या हमें अभी पोपा के भीतर ही रहना होगा?" दूसरे ने कहा।

"हां। क्योंकि इस जगह पर कब्जा जमाने के लिए, झगड़ा हो सकता है। उस स्थिति में मुझे तुम लोगों की जरूरत पड़ेगी। तब तुम लोगों ने पोपा से बाहर निकलना है और उन पर कब्जा जमाना है। तुम लोग मेरे खास योद्धा हो और मेरी चाह के मुताबिक सब काम कर लोगे। बाकी लोग कहां हैं?"

"वो अपनी जगहों पर आराम कर रहे हैं।"

"हूं, अगर बाहर जाने का ज्यादा मन हो तो रात को बाहर निकलकर घूम सकते हो। परंतु सब लोग नहीं, दो-तीन की संख्या में। वो भी ज्यादा देर बाहर नहीं रहना है। जल्दी ही वापस आ जाना है।"

"जी रानी ताशा।"

रानी ताशा तारों-स्विचों वाले काउंटर के पास पहुंची और उनसे छेड़छाड़ करने लगी।

किलोरा ने तुरंत हटकर अलग पड़ा बड़ा-सा स्टूल रानी ताशा के पास रख दिया।

अपने काम में व्यस्त रानी ताशा ने कहा।

"जम्बरा से बात हुई?"

"उसे सिर्फ पृथ्वी ग्रह पर पहुंचने की खबर दी थी। उसके बाद बात नहीं की गई।" किलोरा बोला।

"जम्बरा ने भी सम्पर्क नहीं बनाया?"

"नहीं रानी ताशा।"

"हमारे हथियार तैयार हैं?"

"पूरी तरह। क्या हम हमला करने के लिए तैयार हो जाएं?"

"अभी नहीं। इस बात में अभी समय है। हमें इन सब लोगों को खत्म करना नहीं है। इन्हें गुलाम बनाकर रखने में ज्यादा फायदा है। परंतु इस जाति के अहम लोगों को अवश्य खत्म किया जाएगा ताकि वो हमारे सामने कोई परेशानी पैदा न कर सकें। हमारे लोग ऐसे लोगों की पहचान करने में लगे हैं वहां। इनके लिए हम जो भी उपहार लाए हैं वो पोपा के बाहर पहुंचा दो। उपहार पाकर ये लोग व्यस्त हो जाएंगे। कुछ करने से पहले हमें अपना विश्वास जमाना है इन पर। ताकि जब हम कुछ भी करना चाहें तो आसानी से कर सकें।"

किलोरा वहां से चला गया।

उसी पल स्क्रीन पर जगमगाहट-सी हुई और किर्र-किर्र की आवाजें आने लगीं।

रानी ताशा ने हैडफोन जैसा यंत्र वहां से उठाकर कानों से लगा लिया। उसके हाथ तेजी से स्विचों और बटनों पर चल रहे थे। लीवर जैसी चीजों को आगे-पीछे किया जा रहा था।

तभी स्क्रीन पर अस्पष्ट-सी तस्वीर उभरने लगी जो कि धीरे-धीरे स्पष्ट होती चली गई। तस्वीर पचास बरस के व्यक्ति की थी। अब उसका चेहरा स्पष्ट स्क्रीन पर नजर आ रहा था।

"कैसे हो जम्बरा?" रानी ताशा ने कहा।

"आप से बात करके मुझे खुशी हो रही है रानी ताशा। मैं तो कब से इस बात का इंतजार कर रहा था कि आप सम्पर्क बनाएं। पृथ्वी ग्रह पर पहुंचकर कैसा लग रहा है? क्या पृथ्वी हमारे सदूर ग्रह से ज्यादा अच्छी है?"

"अभी मैं ज्यादा नहीं देख पाई, परंतु यहां सूर्य आसमान के बीच में आ जाता है।" रानी ताशा ने कहा।

"सूर्य आसमान के बीच में? ये कैसे सम्भव है?" नजर आती तस्वीर के चेहरे पर हैरानी उभरी।

"ऐसा ही है यहां।"

"ये तो हैरानी की बात है रानी ताशा।"

"सच में हैरानी की बात है।" रानी ताशा मुस्कराई—"मैं भी देखकर हैरान हो गई थी।"

"फिर तो पृथ्वी ग्रह हमारे ग्रह से अलग है।"

"ये देखना अभी बाकी है। सदूर पर सब ठीक है न?"

"सब ठीक है रानी ताशा। सब कुछ आपके हुक्म के मुताबिक ही मैंने सम्भाल रखा है।"

"डोबू जाति की जगह मुझे पसंद आई। ये जगह पृथ्वी पर हमारे रहने का अच्छा ठिकाना बन सकती है।"

"तो डोबू जाति का क्या होगा?"

"उन पर हम कब्जा करने की सोच रहे हैं। ये काम हम आसानी से कर लेंगे।"

"राजा देव मिल गए क्या रानी ताशा?"

"अभी नहीं। डोबू जाति पर कब्जे के बाद मैं राजा देव को तलाश करूंगी। साथ ही इस ग्रह को अच्छी तरह देखना है। अगर ये मुझे पसंद आया तो हम इस ग्रह पर कब्जा करने की कोशिश करेंगे।"

"क्या ऐसा सम्भव है?"

"पता नहीं। ये मेरा विचार है। क्या पता इस ग्रह के लोग हमसे कमजोर हों। डोबू जाति के हालात देखकर तो लगता है कि यहां के लोग बहुत पीछे का जीवन जी रहे हैं। बाकी बातें बाद में पता चलेंगी। तुम महापंडित को लाइन दो। इस वक्त वो अपने ठिकाने पर होगा। मेरे पास कम वक्त है, तुम्हारी लाइन पर ही उससे बात करूंगी।"

"मैं अभी महापंडित से आपकी बात कराता हूं रानी ताशा। लेकिन मैं कुछ कहना चाहता हूं।"

"कहो जम्बरा।"

"आप राजा देव को लेने पृथ्वी ग्रह पर गई हैं तो क्यों न राजा देव पर ही ध्यान दिया जाए। कहीं ऐसा न हो कि डोबू जाति से उलझकर हमारा नुकसान हो जाए और आप राजा देव तक न पहुंच सकें।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। डोबू जाति हमारे सामने बेहद कमजोर है। उन पर काबू करने में हमें कोई समस्या नहीं आएगी। तुम महापंडित को लाइन दो। अभी मेरे पास वक्त कम है।"

"जी।"

रानी ताशा कानों पर हैडफोन लगाए खड़ी रही।

स्क्रीन पर से जम्बरा की तस्वीर गायब हो गई थी।

करीब पांच मिनट का लम्बा इंतजार करने के बाद स्क्रीन पर एक अन्य व्यक्ति का चेहरा दिखाई दिया। गोल सा, कुछ मोटा चेहरा, फूला-फूला-सा। वो मुस्कराया फिर बोलता दिखा।

"रानी ताशा को महापंडित का नमस्कार।" हैडफोन के माध्यम से नर्म-सी

आवाज रानी ताशा के कानों में पड़ी—"पृथ्वी पर सुरक्षित पहुंच जाने की बधाई हो। तो अब आप डोबू जाति पर कब्जा करने की सोच रही हैं।"

"जम्बरा ने तुम्हें बताया?"

"नहीं रानी ताशा, ये बात तो मैं पहले ही जान चुका हूं।" महापंडित की आवाज आई।

"तुम अपनी विद्या के दम पर मेरी छानबीन करते रहते हो।"

"आपके भले के लिए रानी ताशा।"

"क्या मैं सफल रहूंगी अपनी कोशिश में?"

"पूरी तरह।"

"राजा देव के बारे में मुझे जानकारी दो। मेरे खयाल में वो मुम्बई नाम के शहर में हैं।" रानी ताशा बोली।

"आपका खयाल सही है। राजा देव मुम्बई नाम के शहर में हैं।" महापंडित की आवाज आई।

"कहां पर?"

"बेहतर रहेगा कि पहले आप डोबू जाति का काम निबटा लें। उसके बाद मैं राजा देव के बारे में सारी जानकारी आपको दे दूंगा। कुछ काम बाकी है तब तक मैं उन्हें भी पूरा कर लूं।"

"क्या मैं राजा देव को सदूर पर ले जाने में सफल रहूंगी?"

"अभी कह नहीं सकता।" महापंडित की सोच भरी आवाज रानी ताशा के कानों में पड़ी—"मैंने अपनी विद्या का इस्तेमाल करना चाहा इस बात के लिए तो साफ तौर पर कुछ नहीं जान पाया। परंतु बबूसा का रूप मेरे सामने जरूर आता रहा। सम्भव है बबूसा की तरफ से आपको समस्या पैदा हो।"

"बबूसा को सोमाथ आराम से संभाल लेगा।" रानी ताशा ने कठोर स्वर में कहा।

"जानता हूं।"

"तुम इस बारे में मुझे कुछ स्पष्ट नहीं बता पा रहे महापंडित।"

"सदूर और पृथ्वी में काफी दूरी है रानी ताशा। मेरी मशीनें ज्यादा दूरी की वजह से ठीक तरह काम नहीं कर पा रहीं। मैं इस वक्त अपनी मशीनों का दायरा बढ़ाने पर लगा हूं। इसमें कुछ वक्त लगेगा। मैंने तो आपको पहले ही कह दिया था कि पृथ्वी पर आपकी ज्यादा सहायता नहीं कर पाऊंगा।"

"तुम्हें ये तो पक्का पता है न कि राजा देव कहां पर हैं?"

"वो मालूम कर चुका हूं आपको राजा देव तक पहुंचा दूंगा।"

"मैं तुमसे फिर बात करूंगी महापंडित।" कहने के साथ ही रानी ताशा ने हैडफोन उतारकर रखा और दो लीवरों को खींचने के बाद कुछ स्विच

दबाए तो स्क्रीन पर नजर आती महापंडित की तस्वीर हट गई। रानी ताशा के चेहरे पर सोच भरी गम्भीरता नजर आ रही थी। उसने अपना यंत्र उठाकर हाथ में पकड़ा और पलटी।

वो छः-सात लोग अभी तक खड़े थे।

"तैयार रहना। कभी भी तुम सबकी जरूरत पड़ सकती है।" कहने के साथ ही रानी ताशा आगे बढ़ी और एक रास्ते में प्रवेश कर गई। दस फुट आगे जाकर वो रास्ता खत्म हुआ तो गैलरी आ गई। रानी ताशा दाईं तरफ मुड़ते हुए आगे बढ़ी और सीढ़ियां आने पर, सीढ़ियों पर चढ़ गई।

सीढ़ियां खत्म होते ही ऊपर की गैलरी में जा पहुंची तो आगे बढ़ने के बाद एक कमरे का दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश करते हुए दरवाजा बंद कर लिया। पोपा में ये कमरा उसका था। सोमाथ के अलावा यहां कोई नहीं आ सकता था। हाथ में थाम रखा ट्रांसमिटर जैसा यंत्र एक तरफ रखा और सोच भरे अंदाज में अपने कपड़े उतारने लगी। कमरे में बेड था। कुर्सियां थीं। टेबल था। वार्डरौब था। जरूरत की हर चीज थी वहां।

▭ ▭

रानी ताशा नहा-धो चुकी थी। कपड़े बदल लिए थे। काले रंग का ऐसा चमकीला कपड़ा पहना था कि जिससे उसका रूप और भी निखर उठा था। वो इंतहाई खूबसूरत लग रही थी। उसने अपना यंत्र उठाया और उस पर मौजूद बटनों में से एक बटन दबाया तो फौरन ही उसमें से सोमाथ की आवाज उभरी।

"कहिए रानी ताशा?"

"हमें पोपा से बाहर जाना है।" रानी ताशा ने यंत्र पर कहा।

"मैं अपनी बैट्री चार्ज कर रहा हूं। कुछ देर मुझे और लगेगी।" सोमाथ की आवाज यंत्र से उभरी।

"तुमने नई बैट्री क्यों नहीं लगाई। पुरानी को चार्ज पर लगा देते।"

"ये थोड़ी-सी कम थी तो मैंने चार्ज कर लेना ही बेहतर समझा।"

"अब ऐसे ही चलो। बाकी चार्जिंग बाद में करना सोमाथ। हमने डोबू जाति पर कब्जा करना है। उसके बाद ही मैं राजा देव से मिलने के लिए यहां से चलूंगी।"

"मैं अभी तैयार हो जाता हूं।"

रानी ताशा ने यंत्र का एक बटन दबाकर उसे बंद किया। हाथ में थामे दरवाजे के पास पहुंची और उसे खोलते हुए बाहर निकलकर दरवाजा बंद किया और आगे बढ़ गई। सीढ़ियां उतरने के बाद वो नीचे की गैलरी में पहुंचकर आगे बढ़ने लगी। उसके खूबसूरत चेहरे पर गम्भीरता दिख रही

थी। इस बात का आभास स्पष्ट हो रहा था कि वो सोचों में उलझी हुई है।

गैलरी पार करके बाएं मुड़ी और एक दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश कर गई। अगले ही पल ठिठक गई और होंठों पर शांत-सी मुस्कान उभरी वो आगे बढ़ी और कुर्सी पर बैठ गई।

कमरे मे बाईस-तेईस बरस की लड़की टहल रही थी। जो कि उसे देखते ही रुक गई। वो हरे रंग के कपड़े पहने हुई थी। दोनों टांगों पर अलग-अलग लिपटा कपड़ा कमर पर जाकर खत्म हो रहा था। पैरों में ऐसा कुछ पहना था जिसकी डोरी पांवों से बांध रखी थी। वक्षों पर चोली जैसा कपड़ा बंधा था। उसके बाल खुले थे और रेशम की तरह लग रहे थे। कानों में झुमके जैसे गहने लटक रहे थे। उसका पेट और नाभी वाला नग्न हिस्सा बहुत ही आकर्षक लग रहा था। वो खूबसूरत थी। बेहद खूबसूरत थी परंतु रानी ताशा के सामने उसकी खूबसूरती बेहद कम थी। एकाएक वो कह उठी।

"बाहर के लोग कैसे लगे रानी ताशा?"

"ठीक हैं। ये ज्यादा तरक्की वाले लोग नहीं हैं। हमसे पीछे हैं।"

"बबूसा नहीं मिला?" उसने पुनः पूछा।

"सोमारा। तुम बबूसा के बिना इतनी बेचैन क्यों हो रही हो?" रानी ताशा मुस्कराई।

"वो मेरा पति है।"

"इस जन्म में नहीं...।"

"वो हर जन्म में मेरा पति रहा है तो इस जन्म में भी वो मेरा पति बनेगा।" सोमारा जिद भरे स्वर में कह उठी।

रानी ताशा, सोमारा को देखती रही।

"मैं उसे तैयार कर लूंगी कि वो मेरा पति बने।" सोमारा ने कहा।

"तुम्हारे लिए समस्या आ सकती है सोमारा।" रानी ताशा ने कहा।

"क्या?" सोमारा आगे बढ़ी और कुर्सी पर जा बैठी।

"बबूसा यहां नहीं है। तुम्हें पता है कि वो विद्रोह करके यहां से चला गया है और मुम्बई नाम के किसी शहर में है।" रानी ताशा सोच भरे स्वर में कहती जा रही थी—"मुम्बई में बबूसा के साथ एक लड़की है।"

"लड़की?"

"धरा नाम है उसका। डोबू जाति वाले उसकी जान लेना चाहते हैं और बबूसा, उस लड़की को बचाता हुआ, डोबू जाति के ही लोगों को मारने में लगा है। हो सकता है बबूसा, धरा की तरफ आकर्षित हो गया हो।"

सोमारा के माथे पर बल आ ठहरे।

"वो लड़की धरा तुम्हारी राह में समस्या बन सकती है।"

"रानी ताशा, आपका...।"

"मैंने तुझे कितनी बार कहा है कि मुझे ताशा कहा कर। तू मेरी सहेली है।"

"सहेली जरूर हूं रानी ताशा, पर आपका रुतबा मेरे से बड़ा है। आप ग्रह की रानी हैं। मैंने भी कितनी बार कहा है कि हममें जो फर्क है, वो बना रहने दीजिए। मैं आपको रानी ताशा ही कहती रहूंगी।" सोमारा सोच भरे स्वर में बोली—"आपका मतलब कि बबूसा को उस लड़की से प्यार हो गया है।"

"सम्भव है।"

"मैं बबूसा का गला दबा दूंगी।" सोमारा का चेहरा गुस्से से भर उठा।

"इससे तो बबूसा मर जाएगा।" रानी ताशा मुस्कराई।

"मैं उस लड़की को मार दूंगी।"

"ऐसा किया तो बबूसा नाराज हो जाएगा।"

"आप कहना क्या चाहती हैं?"

"इस समस्या के बारे में गम्भीरता से सोचकर हल निकालना।"

"बबूसा मेरा है और मेरा ही बनेगा।" सोमारा जिद भरे स्वर में कह उठी—"अगर वो उस लड़की से प्यार करने लगा है तो भी वो मेरा बनेगा। उस लड़की को मैं चुपके से खत्म कर दूंगी।"

"सोमारा।" रानी ताशा ने कहा—"मैं तेरे को इसलिए अपने साथ पृथ्वी पर लाई हूं कि तेरे द्वारा बबूसा पर काबू पाया जा सके क्योंकि बबूसा जानता है कि तू बीते जन्मों में उसकी पत्नी रही है। महापंडित ने हर बार तुझे बबूसा की पत्नी के रूप में ही बनाया है, क्योंकि तू महापंडित की छोटी बहन है और तूने हर बार बबूसा को चाहा है। परंतु इस बार बबूसा के हालात दूसरे हैं। बबूसा ने सदूर ग्रह पर नहीं, पृथ्वी ग्रह पर परवरिश पाई है और वो राजा देव के मामले में उलझ गया है। मेरे से विद्रोह कर बैठा है। वो मेरे खिलाफ चलने की चेष्टा कर रहा है।"

"आप कहना क्या चाहती हैं?"

"इस जन्म में बबूसा तेरा नहीं बन पाएगा। किसी और को चुन ले।"

"मैं समझी नहीं रानी ताशा।" सोमारा कह उठी।

"बबूसा को विद्रोह की सजा जरूर मिलेगी।" रानी ताशा का स्वर सख्त हो गया।

"और वो सजा क्या होगी?"

"सदूर ग्रह पर बबूसा को ले जाकर, जन्म भर के लिए कमरे में बंद कर देना।"

सोमारा गम्भीर हो उठी।

"मेरी खातिर बबूसा को माफ नहीं किया जा सकता?" सोमारा बोली।
"बबूसा का जुर्म संगीन है। वो राजा देव को मेरे खिलाफ भड़काना चाहता है। मैं चाहती हूं राजा देव को मेरे बारे में जो भी याद आए, सदूर ग्रह पर जाकर याद आए। जबकि बबूसा अभी उन्हें सब कुछ याद दिला देना चाहता है।"
"अगर मैं बबूसा को इस राह पर जाने से रोक लूं तो?" सोमारा ने पूछा।
"तब बबूसा को माफ किया जा सकता है।" रानी ताशा ने कहा।
"मैं बबूसा को रोक लूंगी। वो मेरी बात मान जाएगा।"
"ये अच्छी बात होगी।"
"वो लड़की धरा खूबसूरत है?"
"मैंने उसे नहीं देखा। परंतु बबूसा ने पसंद किया है उसे तो वो खूबसूरत ही होगी।"
"मैं बबूसा के पास जाना चाहती हूं रानी ताशा।"
"पहले यहां मामला ठीक कर लें, उसके बाद ही...।"
"यहां का मामला क्या है?"
"डोबू जाति की ये जगह मुझे अपना ठिकाना बनाने के लिए पसंद आ गई है। सदूर ग्रह का ये जगह ठिकाना बनेगी कि जब भी हमारे लोग आएं पोपा पर तो यहां खामोशी से रह सकें और अन्य जगह पर जाकर यहां की दुनिया के बारे में जानकारी ले सकें। अब हमने इस जगह पर कब्जा करना है।" रानी ताशा ने कहा।
"ये कब होगा?"
"आज-कल में हो जाएगा। डोबू जाति की जगह पर मौजूद मेरे लोग सोच-समझ रहे हैं कि कैसे इस काम को किया जाए, हम डोबू जाति को खत्म नहीं करना चाहते। वो लोग हमारे काम आएंगे। परंतु जो मुख्य लोग हैं, उन्हें खत्म कर दिया जाएगा।"
"मुझे सिर्फ बबूसा में दिलचस्पी है।" सोमारा मुस्कराकर कह उठी।
"दो दिन लग जाएंगे, मुम्बई की तरफ रवाना होते-होते।" रानी ताशा मुस्करा पड़ी—"तुम चाहो तो तुम भी पोपा के बाहर डोबू जाति में जाकर देख सकती हो कि वहां के लोग कैसे हैं।"
"मैं खुद को बबूसा की सोचों में व्यस्त रखना चाहती हूं।"
"तुम्हें धक्का पहुंचेगा अगर बबूसा उस लड़की को प्यार करने लगा हो तो...।"
"मैं उस लड़की की परवाह नहीं करती। बहुत मौके मिलेंगे, उसे खत्म करने के और बबूसा को पता भी नहीं चलेगा कि ये काम मैंने किया है। बबूसा सिर्फ मेरा है और मेरा ही रहेगा।"

"बबूसा को संभालना तुम्हारा काम है, तभी तुम्हें साथ लाई हूं।" रानी ताशा ने कुर्सी से उठते हुए कहा—"यहां का सूर्य आश्चर्यजनक है। वो आसमान के बीचोबीच आ जाता है। हमारे ग्रह का सूर्य तो बिल्कुल अलग है।"

"सच में?"

"हां, तुम बाहर जाकर देख सकती हो।"

"मैं जरूर देखूंगी परंतु तुम जल्दी से अपने काम पूरा करो कि हम बबूसा की तरफ जा सकें।" सोमारा बोली—"राजा देव के बारे में कोई नई खबर मिली क्या?"

"महापंडित जानता है कि राजा देव कहां पर हैं। जब हम मुम्बई पहुंचेंगे तो वो मुझे बता देगा।"

"राजा देव को देखने के लिए तुम बेचैन तो बहुत हो रही होगी रानी ताशा।"

"बहुत।" रानी ताशा ने गहरी सांस ली—"राजा देव तो मेरे दिल की धड़कन हैं।"

"जैसे कि बबूसा मेरे दिल की धड़कन...।"

"राजा देव उससे भी ज्यादा मेरे को प्यारे हैं। मैं तुम्हें बता नहीं सकती सोमारा। मेरी दुनिया राजा देव से शुरू होकर राजा देव पर ही खत्म होती है। मैं पागल हो गई थी जब मैंने राजा देव को धोखा दिया। उनके साथ बुरा किया। उस बात का इतना पश्चाताप है मुझे कि हर जन्म राजा देव के नाम पर ही बिताए जा रही हूं।" रानी ताशा ने कहा और पलट कर कमरे से बाहर निकल गई।

पोपा के भीतर के रास्तों को पार करती रानी ताशा आगे बढ़ने लगी। चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी। रास्ते में कोई मिलता तो आदर से सिर हिला देता था। फिर रानी ताशा पोपा के भीतर के एक ऐसे हिस्से से गुजरी जो कि बर्फ की तरह ठंडी जगह थी। वहां सर्द तापमान था। उसके बाद वो फिर पोपा के सामान्य हिस्से में आ गई। इस वक्त वो ऐसी तंग गैलरी से निकल रही थी जो एक ही व्यक्ति के आने-जाने के लिए थी। उसके बाद एक कमरे में प्रवेश कर गई। ये सामान्य-सा कमरा था। कमरे में किलोरा एक टेबल की ड्राज को खोले वहां कुछ कर रहा था। रानी ताशा ने उसे देखा। आहट पाकर वो सीधा हुआ और रानी ताशा को देखते ही मुस्कराकर बोला।

"उपहारों को पोपा के बाहर गिरा दिया गया है रानी ताशा। अभी ये काम पूरा करके यहां पहुंचा हूं।"

"क्या उन्होंने उपहार उठा लिए?"

"नहीं। मैंने स्क्रीन पर देखा है। वो दूर खड़े होकर उत्सुक निगाहों से उपहारों को देख रहे हैं।"

रानी ताशा मुस्कराई।

"मैं और सोमाथ बाहर जा रहे हैं। हमारे लोगों ने अब तक क्या खबर दी?"

"वो पहाड़ के भीतर की सारी जगहों को देख चुके हैं। वो ऐसे लोगों को पहचान चुके हैं जो डोबू जाति के लोगों को कंट्रोल करते हैं और जाति के बड़े माने जाते हैं। हमारे लोग आपसे बात करना चाहते हैं।"

"मैं उनके पास ही जा रही हूं। यंत्र पर उन्हें मेरे आने के बारे में बता दो कि वो मुझसे बात कर लें। इधर तुम सारी तैयारी रखो। कभी भी कुछ भी हो सकता है। मुझे तुम लोगों की जरूरत पड़ सकती है।"

"हम तैयार हैं। परंतु बाहर हमारे लोगों का कहना है कि उन्हें मूर्ति के पीछे के रास्ते की तरफ जाने से रोक दिया गया कि वहां पर जादूगरनी आराम कर रही है।" किलोरा ने कहा।

"जादूगरनी?" रानी ताशा के होंठ सिकुड़े—"अब इससे भी मिलना पड़ेगा।"

▭ ▭

किलोरा ने पोपा का दरवाजा खोला तो सामने ही डोबू जाति के लोगों की भीड़ दिखाई दी। वो सब उत्सुक निगाहों से पोपा से गिराए गए बड़े-बड़े बंडलों को देख रहे थे जो कि बहुत ज्यादा संख्या में इधर-उधर बिखरे हुए थे। किलोरा ने पोपा की सीढ़ी खोलनी चाही तो उन बंडलों में अटककर वो पूरी नहीं खुली। पोपा के दरवाजे से जमीन मात्र बारह फुट नीचे थी। रानी ताशा ने जरा भी इंतजार नहीं किया और बड़े आराम से नीचे कूद गई। सोमाथ ने भी ऐसा ही किया। किलोरा ने पोपा का दरवाजा बंद कर लिया।

रानी ताशा ने वहां की भीड़ को देखते हाथ हिलाया।

"हम तुम्हारे दोस्त हैं।" रानी ताशा ने ऊंचे स्वर में कहा—"ये उपहार तुम लोगों के लिए हैं।"

वहां हर तरफ बंडल ही बंडल बिखरे दिखाई दे रहे थे।

डोबू जाति के लोग, रानी ताशा के शब्द सुनते ही खुशी से चिल्लाने लगे। परंतु कोई आगे न बढ़ा।

"उठा लो इस सारे सामान को।" रानी ताशा ने पुनः ऊंचे स्वर में कहा।

कोई आगे न बढ़ा। सब रानी ताशा को ही देख रहे थे।

रानी ताशा के होंठों पर मुस्कान उभरी और सोमाथ से बोली।

"मेरे खयाल में जब तक ओमारू नहीं कहेगा, तब तक ये सामान को हाथ नहीं लगाएंगे।"

"ये लोग अपने सरदार की इज्जत करते हैं रानी ताशा।"
रानी ताशा आगे बढ़ी।
तभी पहाड़ के भीतरी रास्ते से निकलकर ओमारू बाहर आ गया।
"आह रानी ताशा।" ओमारू मुस्कराकर आगे बढ़ता बोला—"इन कपड़ों में तुम कितनी खूबसूरत लग रही हो। पहले से भी ज्यादा।"
रानी ताशा मुस्कराई।
"ये सब क्या है?" ओमारू वहां बिखरे बंडलों को देखता कह उठा।
"इनमें तुम सबके लिए हमारी तरफ से उपहार हैं। ये हम सदूर ग्रह से लाए हैं।" सोमाथ ने कहा।
"ओह, इन उपहारों को पाकर मुझे कितनी खुशी हो रही है।" ओमारू बोला।
रानी ताशा आगे बढ़ी और ओमारू के कंधे पर हाथ रखकर बोली।
"हम दोस्त हैं ओमारू।"
"हम सच्चे दोस्त हैं रानी ताशा।" ओमारू ने फौरन कहा।
रानी ताशा, ओमारू का कंधा थपथपाकर पहाड़ के भीतर प्रवेश कर गई। सोमाथ साथ था। पीछे से ओमारू को ये कहते सुना कि ये सारा सामान उठाकर भीतर पहुंचा दो। तुम सबको उपहार मिलेंगे।
शब्दों के खत्म होते ही बाहर खुशी का शोर उभरने लगा। रानी ताशा कुछ ही आगे गई कि उसके अपने दो आदमी मिले। वे पास आ गए।
"क्या देखा तुम लोगों ने?" रानी ताशा ने उनसे पूछा।
"पृथ्वी ग्रह की ये जगह हमारे लिए बेहतर है। हम इस जगह पर सदूर से आया करेंगे। यहां निश्चिंत होकर रुक भी सकते हैं। हमने बाहर भी देख लिया है। यहां पर और लोग नहीं रहते।" दोनों में से एक ने कहा।
"और क्या किया?"
"हमने चौदह ऐसे लोगों की पहचान की है जो इस जाति में बड़े हैं और यहां के लोग उनकी बात मानते हैं।" दूसरे ने कहा—"वो नहीं रहेंगे तो इनकी हिम्मत इनका साथ नहीं देगी। इसके अलावा यहां के योद्धा बहुत खतरनाक हैं परंतु उनके पास हथियार नहीं होंगे तो वो हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हमें उनसे हथियार लेने होंगे।"
"परंतु ये कठिन काम है।" पहले वाले ने कहा—"इन लोगों को अपने हथियारों से प्यार है। ये हथियार नहीं देंगे।"
रानी ताशा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।
"इसके अलावा और कोई बात?" रानी ताशा ने पूछा।
"ये लोग हर सुबह शिकार करने निकल जाते हैं और शाम को जानवरों

को मारकर लाते हैं। खाने में जानवरों को पकाया जाता है। खाने का बाकी सामान लाने के लिए भी रोज कुछ लोग आसपास की जगहों पर जाते हैं, जहां दूसरे लोग रहते हैं। अगर इन्हें खाना नहीं मिले तो ये हमारे सामने कमजोर पड़ने लगेंगे।"

रानी ताशा ने सिर हिलाया, फिर कहा।

"मैं इन लोगों से हथियार ले लूंगी। ये काम मेरा है। और जो लोग शिकार करने और खाना लेने जाते हैं, उन्हें रास्ते में खत्म कर दो। इसके लिए यंत्र पर किलोरा से बात करो। वो कोई योजना बना लेगा।"

तब तक लोग बड़े-बड़े बंडलों को उठाकर भीतर लाने लगे थे। वो खुश थे और शोर कर रहे थे।

रानी ताशा और सोमाथ वहां से आगे बढ़ गए।

पीछे से ओमारू आ पहुंचा।

"इस बार तो बहुत ज्यादा उपहार लाई हो तुम।" ओमारू मुस्करा रहा था। वो साथ चलने लगा।

"हम दोस्त हैं ओमारू।" रानी ताशा ने मुस्कराकर कहा—"अगली बार पोपा और भी ज्यादा उपहार लाएगा।"

"मुझे खुशी होगी और भी उपहार पाकर।"

"पोपा में तुम्हारे लिए देवी की बढ़िया मूर्ति भी भेजूंगी। तुमने वो मूर्ति चबूतरे से उठाकर बाहर रखवा दी न?"

"ऐसा नहीं हो सकेगा रानी ताशा।" ओमारू गम्भीर हो गया।

"क्यों?"

"मेरे लोग मूर्ति को पूजते हैं। उसे वहां से हटाए जाना पसंद नहीं करेंगे।"

"तुम दोस्त होकर मेरी बात नहीं मान रहे। जबकि मैंने तुम्हें नई मूर्ति देने का वादा किया है।"

"जाति मूर्ति को उठाकर बाहर रखने पर, सहमत नहीं होगी। विद्रोह पैदा हो जाएगा।" ओमारू बोला।

"तुम यहां के सरदार हो। तुम्हारी बात से तो हर कोई सहमत होगा।"

"मूर्ति को बाहर रखने की बात पर नहीं।"

"ठीक है। कल हमारा एक पर्व है ओमारू।"

"वो क्या?"

"सदूर ग्रह पर हम ऐसा ही करते हैं। यहां पर तुम हमारा साथ दो तो तभी हम पर्व मना सकते हैं।"

"मुझे बताओ।"

"कल हम हथियारों की पूजा करते हैं। ये ही पर्व होता है। सब हथियारों को एक कमरे में भरकर, कमरे का दरवाजा बंद कर दिया जाता है। गहरे अंधेरे में रखते हैं हम हथियारों को। इससे हमारी ताकत बढ़ती है। ऐसा हमारा विश्वास है। इसलिए क्या तुम जाति के सब हथियार, जो यहां मौजूद हैं, उन्हें कल अंधेरे से भरे कमरे में रख सकते हो। ये पर्व दिन निकलने से शुरू होता है और रात बीतने तक चलता है। इस दौरान अच्छे-अच्छे पकवान खाए जाते हैं और सब खुशी से गले मिलते हैं।" रानी ताशा ने कहा।

"ऐसा हो जाएगा रानी ताशा। ये तो मामूली काम है।" ओमारू फौरन कह उठा।

"हम कितने अच्छे दोस्त हैं।"

"जरूर। मैं आज रात-रात में ही सारे हथियार अंधेरे से भरे कमरे में रखवा दूंगा।"

"किसी के पास भी हथियार नहीं होना चाहिए।"

"नहीं होगा।"

"वो कमरा सोमाथ को दिखा देना जहां तुम हथियार रखने की सोच रहे हो।"

"अभी दिखा दूंगा।"

"तुम तो जानते ही हो ओमारू कि जल्द ही मैंने राजा देव की तलाश में मुम्बई जाना है।" रानी ताशा बोली।

"हां।"

"उस सफर के लिए मुझे यहां के लोगों की तरह कपड़े चाहिए। जैसे कपड़े यहां पहने जाते हैं।"

"मैं आज ही आदमी भेजता हूं। कल तक वो कपड़े लेकर आ जाएंगे।"

"कपड़े ज्यादा चाहिए। बीस-तीस लोगों के लिए।"

"इंतजाम हो जाएगा रानी ताशा।" ओमारू ने कहा।

तीनों तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे।

"तुम मेरे सच्चे दोस्त हो। अब की बार जब पोपा आएगा तो मैं तुम्हें सदूर ग्रह की सुंदर युवतियां तोहफे में भेजूंगी।"

"ऐसा तोहफा लेकर मुझे बहुत खुशी होगी।" ओमारू खुश हो गया।

"मुझे होम्बी से मिलना है ओमारू।" रानी ताशा एकाएक कह उठी।

"जादूगरनी से?" ओमारू के होंठों से निकला।

"होम्बी से मिलने की बहुत इच्छा है। मुझे उसके पास ले चलो। हम सच्चे दोस्त हैं ओमारू।"

"हां। चलो मैं तुम्हें होम्बी से मिलवाता हूं।" ओमारू कह उठा।

होम्बी बेड जैसी जगह पर बैठी अपने काले बाल फैलाए, उनमें कंघी फेर रही थी। ऐसा करते समय उसके गालों पर लटकता मांस हिल रहा था। उसकी आंखें एकटक सामने की दीवार को देख रही थीं।

"आ गई।" होम्बी बुदबुदा उठी—"मैं जान चुकी थी कि ओमारू कि तू ही उसे लेकर मेरे पास आएगा।"

चंद पल बीते कि होम्बी के कानों में कदमों की आहटें पड़ने लगी।

होम्बी के चेहरे पर बेहद शांत भाव थे।

तभी दरवाजे जैसी जगह पर आहट हुई और ओमारू ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"जादूगरनी। रानी ताशा तुमसे मिलने आई है।"

होम्बी ने ओमारू को देखा, परंतु खामोश रही।

तभी रानी ताशा ने भीतर कदम रखा।

होम्बी ने उसे देखा। बालों पर कंघी करती रही।

रानी ताशा के चेहरे पर मुस्कान छाई थी।

"तुम्हारी बहुत बातें सुनी थी होम्बी।" रानी ताशा कह उठी—"तुमसे मिलकर खुशी हुई।"

होम्बी ने कुछ नहीं कहा।

"क्या होम्बी मुझसे नाराज है?" रानी ताशा ने पूछा।

इसी पल सोमाथ ने भीतर कदम रखा।

होम्बी की निगाह सोमाथ पर जा टिकी। उसे ध्यानपूर्वक देखा। फिर ओमारू से बोली।

"तू जा।"

"पर मैं यहां रहना चाहता हूं जादूगरनी।" ओमारू कह उठा।

"जा तू।" होम्बी के स्वर में इस बार आदेश के भाव थे।

ओमारू खामोशी से बाहर निकल गया।

"तेरा नाम सोमाथ है।" होम्बी बोली—"तू सबसे खतरनाक है। तू इंसान नहीं, धातु और तारों का बना है। तेरे में कृत्रिम दिमाग बनाकर डाला गया है। पर तू हर काम में सबसे आगे है।"

रानी ताशा के चेहरे पर हैरानी के भाव उभरे।

"तू बबूसा का मुकाबला कर लेगा? होम्बी ने पुनः कहा।

"मैं उसे मार दूंगा।"

"मैं तेरा भविष्य देख रही हूं। परेशानी और कठिनाइयां बहुत हैं।" होम्बी शांत स्वर में बोली।

"तुम तो सच में जादूगरनी हो। तुमने सोमाथ के बारे में जान लिया।" रानी ताशा कह उठी।

"तू।" होम्बी ने रानी ताशा को देखा—"राजा देव को लेने आई है तू।"

"हां।" रानी ताशा पैनी निगाहों से होम्बी को देख रही थी।

"और क्या करना चाहती है तू?"

"और?"

"क्या है तेरे मन में? मुझसे मत छिपा। सब जानती हूं मैं कि तेरे इरादे क्या हैं।"

"क्या हैं मेरे इरादे?" रानी ताशा बोली।

"ये पूछकर तू मेरा इम्तिहान ले रही है। क्या तुझे मुझ पर विश्वास नहीं?" होम्बी का स्वर शांत था।

"बता, क्या हरादे हैं मेरे?" रानी ताशा ने पूछा।

"बुरे इरादे हैं। दोस्त बनकर आई है और दुश्मनों से भी बुरा बर्ताव करने का तेरा इरादा है।" होम्बी बोली—"इस जगह पर कब्ज़ा करने का इरादा है तेरा कि इस तरह इस ग्रह पर तू आने-जाने की जगह बना सके। यहां अपने लोगों को छोड़ सके। इसी ताने-बाने में लगी है तू। तू डोबू जाति के साथ धोखा करने वाली है।"

रानी ताशा के चेहरे पर आश्चर्य उभरा।

"तू तो सब कुछ सच कह रही है होम्बी।" रानी ताशा अजीब से स्वर में कह उठी।

होम्बी, रानी ताशा को देखती रही।

"ये बात तूने ओमारू को बताई?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मैं नहीं चाहती कि तेरे को डोबू जाति खत्म करने का बहाना मिल जाए। ओमारू को ये बात पता चल गई तो वो उसी वक्त तेरे खिलाफ खड़ा हो जाएगा। तेरे साथ आए लोग जरूर मरेंगे, परंतु अंत में जीत तेरी होगी, क्योंकि तेरे पास खतरनाक हथियार हैं। पोपा में तूने हथियार चलाने वाले आदमियों को रखा हुआ है।"

"तू तो सच में जादूगरनी है। मैं तो तेरे को झूठा समझ रही थी।"

होम्बी के चेहरे पर किसी तरह का भाव नहीं था।

"तुमने सच कहा, ये जगह मुझे पसंद आई। मैं इस वीरान जगह पर अपने ग्रह का ठिकाना बनाना चाहती हूं। पहाड़ों को भीतर से खोखला करके कितना सुरक्षित ठिकाना बनाया हुआ है। मुझे ऐसे ही किसी ठिकाने

की तलाश थी। पोपा पर मेरे लोग यहां पहले भी आते रहे हैं। उन्होंने जब मुझे इस जगह के बारे में बताया तो होम्बी, मैंने तभी सोच लिया था कि जब मैं पृथ्वी पर जाऊंगी तो इस जगह पर अधिकार कर लूंगी। यहां मेरे लोग आया-जाया करेंगे और पृथ्वी ग्रह को देखने-समझने में हमें आसानी होगी। यहां की कोई चीज हमारे काम की होगी तो उसे पोपा में रखकर अपने सदूर ग्रह पर ले जाया करेंगे। मुझे ये जगह जरूर चाहिए।"

होम्बी कुछ नहीं बोली। रानी ताशा को देखती रही।

"तूने तो सब कुछ कहकर मुझे आश्चर्य में डाल दिया। तू मेरे बहुत काम आ सकती है। मेरे साथ सदूर ग्रह चलेगी?"

होम्बी मुस्कराई और मुस्कान लुप्त हो गई।

"बोल चलेगी न?" रानी ताशा ने पुनः पूछा।

"जा। अपना काम कर। होम्बी इस पहाड़ की तरह नहीं है जो तेरी मुट्ठी में आ जाएगी। राजा देव के बारे में सोच जिसे लेने तू आई है। उस काम में सफलता पाने की कोशिश कर।" होम्बी बोली।

"मैं राजा देव को सदूर ग्रह ले जाऊंगी न?" रानी ताशा ने पूछा।

होम्बी चुप रही।

"बता होम्बी। मैं राजा देव को फिर पा लूंगी न?" रानी ताशा बोली।

"मैं सिर्फ डोबू जाति को भविष्य बताती हूं। बाहर के लोगों को नहीं।" होम्बी ने कहा।

"हम दोस्त हैं होम्बी। मैं तुम लोगों के लिए कितने उपहार लेकर आई हूं।"

होम्बी मुस्करा पड़ी। उसे देखती रही।

"क्या बात है होम्बी?"

"तू बहुत चालाक है, चतुर है परंतु होम्बी के सामने तू नन्ही बच्ची है। मैं तेरे मन और दिमाग की हर बात पढ़ रही हूं। तू क्या सोच रही है, क्या चाहती है, सब मुझे पता चल रहा है। तू क्या करने जा रही है यहां, ये भी मैंने पढ़ लिया है। मैं तेरे आर-पार देख रही हूं। मेरे सामने तू शीशा है। तेरा कुछ भी मेरे से नहीं छिपा। होम्बी को अपनी बातों में फंसाने की कोशिश मत कर।"

रानी ताशा की आंखों में चमक थी। वो कह उठी।

"तू तो बहुत शानदार जादूगरनी है। मैं तेरे से प्रभावित हो गई। सिर्फ एक बात बता दे कि मैं राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाने में कामयाब हो सकूंगी या नहीं? सिर्फ हां या न कह दे।"

होम्बी ने सोमाथ को देखा।

सोमाथ शांत-सा खड़ा होम्बी को देख रहा था।

"बता होम्बी। सिर्फ हां या न कर दे।"

"मैं डोबू जाति से बाहर के लोगों के सवालों का जवाब नहीं देती। तेरे को मेरे से कुछ भी हासिल नहीं होगा। मैं तेरा न तो भला करूंगी न बुरा करूंगी। तेरे सवाल का जवाब तो आने वाला वक्त ही देगा।"

"हां-न भी नहीं कहेगी होम्बी?"

होम्बी मुस्करा पड़ी।

"राजा देव के बारे में कुछ बता दे होम्बी।" एकाएक रानी ताशा की आंखों में आंसू चमक उठे—"तू तो जानती ही है कि मैं राजा देव को कितना चाहती हूं। कई जन्म उनसे मिलने की आस में बिता दिए। तू जादूगरनी है तो मेरे मन की हर बात पढ़ चुकी होगी। बता होम्बी बता, राजा देव के बारे में कुछ तो बता। अच्छा ये बता क्या कभी वो मुझे याद करते हैं?"

"तूने ऐसा क्या काम किया राजा देव के साथ कि वो तुझे याद करे।" होम्बी कह उठी—"वो सब भूल चुका है। पृथ्वी पर जन्मों के फेर में पड़कर उसे कुछ भी याद नहीं कि वो हकीकत में कौन है और कहां से पृथ्वी पर आया है। ये तेरी बातें हैं, तेरा काम है तू जान। मैं सिर्फ डोबू जाति के बारे में ही भविष्य बताती हूं।"

"इतना बता दे होम्बी कि मैं राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाऊंगी न?"

जवाब में होम्बी ने होंठ बंद कर लिए। फिर कोई शब्द मुंह से निकला ही नहीं।

रानी ताशा, सोमाथ के साथ वहां से बाहर निकल गई।

"बुरा ही बुरा नजर आ रहा है हर तरफ।" होम्बी बुदबुदा उठी।

▭ ▭

मूर्ति के पास ही ओमारू बेचैनी भरे अंदाज में टहल रहा था। वो समझ नहीं पा रहा था कि क्यों जादूगरनी ने उसे बाहर कर दिया और रानी ताशा से अकेले में बात करने लगी। तभी उसने रानी ताशा और सोमाथ को मूर्ति के पीछे के रास्ते से बाहर निकलते देखा।

ओमारू चेहरे पर मुस्कान लाया और रानी ताशा के पास जा पहुंचा।

"जादूगरनी क्या बातें कर रही थी रानी ताशा?" ओमारू ने पूछा।

रानी ताशा ठिठकी और सोमाथ को देखकर कह उठी।

"तुम बताओ सोमाथ।"

"होम्बी बहुत खुश है हमारे आने से। वो जानती है कि हमारे आने से, डोबू जाति की मुसीबतें दूर होंगी।" सोमाथ ने कहा—"होम्बी चाहती है कि हम यहां पर ज्यादा देर रुके रहें, परंतु ऐसा नहीं हो सकता। हमें अपने ग्रह

पर भी जाना है। हमने उसे कहा कि हमारे द्वारा लाए तोहफों में उसके लिए भी कुछ है तो वो खुश हुई।"

जवाब में ओमारू सिर हिलाकर रह गया।

"तुम्हारी जादूगरनी तो कमाल की है ओमारू।" रानी ताशा मुस्कराकर बोली।

"वो कैसे?"

"उसने मेरे बारे में कुछ बातें बताईं, जो कि बिल्कुल सही थीं। मैं तो उसे यूं ही समझ रही थी।"

"जादूगरनी भविष्य के बारे में बहुत अच्छा बताती है।" ओमारू ने कहा।

"ये बात आज मुझे पता चल गई।"

"अब तुम खाना खा लो रानी ताशा। तुम्हारे लिए सब कुछ तैयार हो चुका है।"

"मेरे आदमियों ने खा लिया?"

"हां। वे कुछ पहले ही खा चुके हैं। सोमाथ खाना नहीं खाता क्या? रात को भी नहीं खाया।"

"इसे कभी भी भूख नहीं लगती।" रानी ताशा मुस्कराई—"ये हम जैसा नहीं है।"

"जो लोग पोपा के भीतर हैं, उनसे भी कह दो कि वो बाहर आकर खाना खा लें।"

रानी ताशा ने शांत भाव से ओमारू को देखा, फिर कह उठी।

"उनके पास खाने को बहुत कुछ है।"

"वो बाहर क्यों नहीं आते?"

"वे भीतर जरूरी काम कर रहे हैं। जब उनका काम पूरा होगा वो बाहर आ जाएंगे।" रानी ताशा ने सामान्य स्वर में कहा—"मैं रात वाले कमरे में जा रही हूं तुम मेरा खाना वहीं पहुंचा दो।"

"ठीक है। मैं खाना लाने को अभी कहता हूं। तुम उस कमरे तक चलो।"

रानी ताशा सोमाथ के साथ आगे बढ़ गई। रास्ते में डोबू जाति के लोग मिल रहे थे वो उनसे मुस्कराकर बातें कर लेती थी। वो और सोमाथ नजरों से ओझल हो गए। ओमारू एक आदमी को बुलाकर, रानी ताशा तक खाना पहुंचाने का आदेश देने लगा। वो आदमी चला गया तो उसे बोबला दिखा, जो कि उसके पास आ पहुंचा था।

"तुम क्या कर रहे हो?" ओमारू ने धीमे स्वर में पूछा।

"पोपा पर नजर रखी जा रही है दूर रहकर।" बोबला ने बताया—"वो पोपा का दरवाजा कभी भी खुला नहीं रखते।"

"मेरे को तो ऐसा कुछ नहीं लगा कि जिससे मुझे इनके इरादे बुरे लगे।"

"ऐसे दोस्तों का भी क्या फायदा, जिनके लिए मन में शक उभरता रहे। ये मामला निबटा क्यों नहीं देते?"

"कैसे?"

"रानी ताशा के खाने में जहर डाल दो। उसके बाकी लोगों को हम संभाल लेते हैं।"

"ऐसा करना ठीक नहीं होगा। मुझे रानी ताशा में अभी तक कोई बुराई दिखाई नहीं दी।"

"और जादूगरनी जो कहती है, उसका क्या...?"

"मुझे कुछ वक्त दो। जल्दी में मैं रानी ताशा जैसा दोस्त नहीं गंवाना चाहता।" ओमारू ने सोच भरे स्वर में कहा—"क्या तुमने कोई ऐसी बात देखी-सुनी कि संदेह उठे?"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं देखा। परंतु रानी ताशा के आदमी, जो पोपा में उसके साथ ही बाहर निकले थे, वो हमारे पहाड़ के भीतर, हर जगहों पर घूमते रहते हैं। उनका इस तरह से घूमना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"वो हमारे दोस्त भी हैं, मेहमान भी। वो कहीं भी जा सकते हैं बोबला।"

"जैसा तुम ठीक समझो। तुम यहां सरदार हो...।"

"आज रात रानी ताशा अपना पर्व यहां मनाने वाली है। पर्व ताकत से वास्ता रखता है। रानी ताशा का कहना है कि रात के वक्त हम सारे हथियार एक अंधेरे से भरे कमरे में रख दें और कमरा बंद कर दें। दरवाजे के बाहर सोमाथ पहरा देगा। बाकी की रात हम सब मिलकर हंसी-खुशी बिताएंगे और सुबह हथियारों वाला कमरा खोल दिया जाएगा।"

"ये कैसा पर्व हुआ?"

"सदूर ग्रह का पर्व है। रानी ताशा कहती है कि आज रात पर्व की रात है।"

"तुम ऐसा करोगे?"

"मेहमान की खुशी के लिए ऐसा करना चाहिए हमें।"

"जैसा तुम ठीक समझो। अभी तक हमारे योद्धा उस लड़की और बबूसा को नहीं मार सके।"

"हमारे योद्धा वहां अपने काम में लगे हैं। अब हमें बबूसा की फिक्र नहीं करनी चाहिए।"

"क्यों?"

"रानी ताशा बबूसा से निबट लेगी। आखिर वो उसी के ग्रह का है।"

"और वो लड़की?"

"उसे हम अवश्य मार देंगे।"

रानी ताशा ने खाना खाया, परंतु कम खाया। आज उसका दिमाग उलझा हुआ था। वो सोचों में गुम दिखी।

इस दौरान सोमाथ कमरे में टहलता रहा था। उसे खाना खिलाने में डोबू जाति की कुछ औरतें लगी थी। अंत में रानी ताशा के कहने पर वो औरतें बर्तन वगैरह ले गईं।

रानी ताशा ने पास रखा यंत्र उठाया और उसके कुछ बटनों को दबाया।

"कहिए रानी ताशा?" यंत्र में से किलोरा की आवाज उभरी।

"क्या तैयारी हो रही है?" रानी ताशा ने पूछा।

"हमारे आदमी डोबू जाति के महत्त्वपूर्ण लोगों की पहचान करने में लगे हैं, अब उनकी संख्या सत्रह हो गई है। हमने योजना बनाई है कि आज रात हम उन सबको खत्म कर देंगे। वैसे तो ये काम हम बेहद सावधानी से करेंगे और कोशिश करेंगे कि किसी को उनकी हत्या होने का पता न चले। परंतु हमारी हरकत उनकी नजरों में आ सकती है और वो अपने हथियारों से हम पर हमला कर सकते हैं। हमारे लोग भी मर सकते हैं।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। आज रात मैं पर्व के बहाने डोबू जाति के सारे हथियार एक कमरे में बंद करवाने जा रही हूं। ऐसे में ये चाहकर भी हम पर अपने हथियारों का इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे।"

"वो कमरे से हथियार निकाल भी सकते हैं।" किलोरा की आवाज यंत्र से उभरी।

"ऐसा कुछ नहीं होगा। सोमाथ उस कमरे पर पहरे पर रहेगा।"

"ठीक है रानी ताशा। हम आज रात के लिए तैयार हैं। मैं आपको खबर करता रहूंगा।"

"आज जो लोग खाना लेने गए हैं उनके बारे में कोई प्लान बनाया?"

"मेरे खयाल में उन्हें खाना ले आने दिया जाए। हमारा प्लान आज रात शुरू होगा। उनमें भी तीन महत्त्वपूर्ण आदमी हैं डोबू जाति के। रात उन्हें भी खत्म कर दिया जाएगा।"

"इन पर कौन-सा हथियार इस्तेमाल किया जाएगा?" रानी ताशा ने पूछा।

"जोबिना का इस्तेमाल करेंगे। देखते-ही-देखते इनका शरीर राख हो जाएगा और किसी को पता भी नहीं चलेगा कि क्या हुआ।"

"ठीक है। ऐसा ही करना।" रानी ताशा ने कहा और यंत्र का बटन दबाकर उसे बंद कर दिया।

सोमाथ ठिठका और कह उठा।

"जाति के बाकी लोग भी बाद में सिर उठा सकते हैं रानी ताशा।"

"मेरी कोशिश ये ही होगी कि ऐसा न हो सके।" रानी ताशा गम्भीर दिखी।

सोमाथ ने कुछ नहीं कहा वो पुनः टहलने लगा और बोला।

"इस बारे में महापंडित क्या कहता है?"

"हम सफल रहेंगे।" कहते हुए रानी ताशा मुस्करा पड़ी।

तभी ओमारू भीतर प्रवेश करते कह उठा।

"किस सफलता की बात की जा रही है रानी ताशा?"

"ओह ओमारू, मेरे दोस्त, आओ।" रानी ताशा ने कहा—"हम राजा देव की बात कर रहे थे कि उन्हें वापस अपने ग्रह पर ले जाने में सफल रहेंगे। वो हमारे साथ वापस जाना जरूर पसंद करेंगे।"

ओमारू एक तरफ रखे पत्थर पर बैठता कह उठा।

"वो वहां के राजा हैं। वापस क्यों नहीं जाएंगे।" ओमारू मुस्कराया।

"आज खाना अच्छा था ओमारू।"

"जाति के लोगों ने खासतौर से तुम्हारे लिए बनाया था।" ओमारू कह उठा।

"उन्हें मेरा शुक्रिया कहना। तुम्हें याद है कि आज रात हमारा पर्व है?" रानी ताशा ने कहा।

"मुझे सब याद है। शाम तक ही सारे हथियार एक बड़े कमरे में रख दिए जाएंगे। वहां रोशनी भी नहीं की जाएगी, क्योंकि तुमने वहां अंधेरा रखने को कहा है। ऐसा करने के आदेश दे दिए हैं मैंने।"

"एक बात और भी है।"

"क्या?"

"हम दोस्त हैं न?"

"पक्के दोस्त हैं।" ओमारू बोला—"हम एक-दूसरे का भला चाहते हैं। क्या मेरी दोस्ती में कोई कमी रही?"

"तुमने मेरी मूर्ति वाली बात नहीं मानी, लेकिन मैंने बुरा नहीं माना। दोस्ती में बुरा नहीं माना जाता, परंतु अब मैं चाहती हूं कि तुम अपनी जाति के सब लोगों से कहो कि वो मेरी बात को भी, तुम्हारा ही हुक्म समझे।"

"ये तो साधारण बात है। मैं अभी कह देता हूं।"

"जब तुम ये बात अपने लोगों से कहोगे तो मैं तुम्हारे साथ रहूंगी।" रानी ताशा ने कहा। वो मुस्करा रही थी।

"मुझे भला क्या एतराज हो सकता है। अभी चलो रानी ताशा।" ओमारू कह उठा।

रानी ताशा उसी पल उठ खड़ी हुई।

शाम चार बजे बोबला, ओमारू से मिला।

"ये तुमने क्या कह दिया जाति वालों से?"

"क्या?" ओमारू, बोबला को देखने लगा।

"ये ही कि रानी ताशा का कहा, तुम्हारा कहा माना जाए। तुम तो जाति के सरदार हो और वो मेहमान...।"

"इसमें बुरा क्या है। सरदार तो मैं ही हूं। मेहमान की खुशी के लिए...।"

"पर तुम्हें ये बात सबसे नहीं कहनी चाहिए थी। मुझे अच्छा नहीं लगा।"

"मेरे इतना भर कह देने से रानी ताशा खुश हो जाती है तो, मैंने गलत नहीं किया।" ओमारू ने सामान्य स्वर में कहा—"रानी ताशा के लाए उपहारों को देखा है। वो सब जाति के लोगों में बांट दो।"

"कल सुबह ये काम करूंगा।" बोबला ने कहा—"तुम रानी ताशा को जरूरत से ज्यादा महत्त्व दे रहे हो।"

"ऐसा कुछ नहीं है। मैं रानी ताशा के प्रति सतर्क हूं।"

तभी एक व्यक्ति ने ओमारू से आकर कहा कि जादूगरनी उसे बुला रही है।"

"आज रानी ताशा के ग्रह का पर्व है। ऐसे में हमें रात को उनकी खुशी में शामिल होना है। जैसे रानी ताशा के लोग कहें, वैसे ही हमें पर्व में उनका साथ देना है। इस सारे काम की तैयारी तुम अपने हाथ में ले लो।"

बोबला ने सहमति से सिर हिला दिया।

ओमारू वहां से सीधा होम्बी के पास पहुंचा।

होम्बी दीवार के सहारे टेक लगाए बैठी थी। उसके सिर के काले बाल कुछ पीछे की तरफ थे तो कुछ उसके कंधों से होते आगे की तरफ आ रहे थे। उसका झुर्रियों से भरा चेहरा गम्भीरता से भरा था।

ओमारू होम्बी के सामने पत्थर के फर्श पर बैठता कह उठा।

"कहो जादूगरनी, क्या कुछ नया देखा तुमने?"

होम्बी ने ओमारू को देखा और धीमे स्वर में कह उठी।

"तेरे को देखने, तेरे से बात करने का मन था तो तेरे को बुला लिया।"

ओमारू की निगाह होम्बी के झुर्रियों भरे चेहरे पर जा टिकी।

"क्या बात है जादूगरनी। इस तरह तो पहले तुमने कभी बात नहीं की?"

"वक्त ही ऐसा है, क्या करूं। क्या तेरे को कहूं और क्या तेरे को न कहूं।" होम्बी बोली—"मैं बहुत कुछ देख रही हूं। दो बातों में जाति का भविष्य देख रही हूं। समझ में नहीं आता कि तेरे से बात करूं या नहीं?"

"कर बात।"

"तू सब कुछ सुनने के बाद मेरे कहने पर चलेगा। इसी में जाति का भला है।" होम्बी ने कहा।

"जाति के भले के लिए मैं सब कुछ करूंगा।" ओमारू ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो फिर सुन, अगर तूने अपने पर काबू रखा तो जाति को फिर से संवारा जा सकता है।"

"फिर से का क्या मतलब जादूगरनी?"

"बरबादी के बाद।"

"बरबादी कैसी होगी?"

"अब ये मत पूछ। जो होना है उसे रोका नहीं जा सकता। रोकने की चेष्टा में बरबादी बहुत बड़ी हो जाएगी।"

"मुझे बताओ जादूगरनी। तुम छिपा रही हो मुझसे।"

होम्बी, ओमारू को देखने लगी।

वहां कुछ पल खामोशी रही।

"जो पूछना हो, कल सुबह पूछना।" होम्बी ने बेहद शांत स्वर में कहा।

"कल सुबह?"

"हां, कल तेरे को सब बता दूंगी।"

"अभी क्यों नहीं?"

"समय ठीक नहीं है। अनर्थ हो सकता है। कल सुबह से पहले मेरा कुछ भी कहना गलत होगा।"

"आज रानी ताशा अपने ग्रह का पर्व यहां कर रही है।" ओमारू ने कहा।

जादूगरनी मुस्करा पड़ी।

"रात काफी व्यस्त रहूंगा। क्या ये अच्छा नहीं होगा कि तुम अभी मुझे कह दो, जो कहना चाहती हो।"

"अनर्थ हो जाएगा। तू अपने पर काबू नहीं रखेगा और तेरा उग्र स्वभाव ही जाति को पूरी तरह खत्म करवा देगा। तू आज की रात खामोशी से बिता ले तो जाति, डोबू जाति आगे भी चलती रहेगी। बाद में सब ठीक किया जा सकता है।"

"मैं तेरी बात का मतलब नहीं समझ रहा जादूगरनी, पर तू जो सोचती है, ठीक ही सोचती होगी। तेरा फैसला ठीक ही होगा।" ओमारू ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैंने हमेशा तेरी बात मानी है।"

होम्बी, ओमारू को देखती रही।

"कोई और बात जादूगरनी?"

"बस तेरे को देखना चाहती थी। तेरे से बात करना चाहती थी।" होम्बी ने शांत स्वर में कहा।

"आज तेरी बातें रहस्य से भरी हैं जादूगरनी।" ओमारू ने कहा।

"सब रहस्य आज रात का ही है। कल सब कुछ स्पष्ट होगा। इधर आ मेरे पास।"

ओमारू तुरंत उठा। होम्बी के करीब पहुंचा तो वो बोली।

"नीचे हो। अपना माथा मेरे पास ला।"

ओमारू ने ऐसा ही किया।

होम्बी ने हाथ उठाया। उसके सिर पर रखा और चेहरा करीब खींचकर उसके माथे को चूमा। फिर उसे पीछे धकेल दिया। ओमारू सीधा हो गया। परंतु उसके चेहरे पर हैरानी के भाव आ ठहरे थे।

"ये क्या जादूगरनी। आज तूने पहली बार स्नेह से मेरा माथा चूमा है।"

होम्बी की आंखों में आंसू चमके।

"आज दिल किया। तेरे पे प्यार आ गया। तूने जाति की बहुत सेवा की। दिल लगाकर की। पूरी मेहनत से की। मुझे प्यारा है तू। बच्चों की तरह है तू। तेरा बचपन भी मैंने देखा है। जवानी भी देखी और अब भी देख रही हूं। बस—जा अब तू।" होम्बी ने निगाहें फेर लीं—"रानी ताशा के पर्व की तैयारी कर। आज रात के बाद तूफान थम जाएगा। कल का सूरज नया होगा। डोबू जाति को फिर से संवारना होगा। मैं सब संभाल लूंगी। परंतु उसमें काफी वक्त लगेगा।"

"मैं समझा नहीं तुम क्या कह रही हो जादूगरनी?"

"अब जा। कल सुबह आना मेरे पास। तब बताऊंगी।"

ओमारू वहां से चला गया।

होम्बी ने गीली आंखें साफ कीं और बुदबुदा उठी।

"मैं जानती हूं कि अब तेरे को नहीं देख सकूंगी सरदार ओमारू।"

▭ ▭

रानी ताशा इस वक्त पहाड़ी के भीतर डोबू जाति के ठिकाने का चक्कर लगाकर लौटी थी। जो कि पहाड़ के भीतर ही भीतर गहराई में जाकर सब देखा था और सब कुछ उसे पसंद आया था। तब उसके साथ सोमाथ के अलावा उसके चार लोग और थे जो कि तभी से सारी जगह की खोजबीन कर रहे थे, जबसे वे पोपा से यहां पहुंचे थे।

"सब ठीक है।" रानी ताशा बोली—"ये जगह हमारे लिए इस ग्रह पर बहुत बेहतर रहेगी।"

"इसे हम अपनी जरूरत के मुताबिक बना लेंगे।" एक आदमी ने कहा।

तभी रानी ताशा के हाथ में थमे यंत्र से अजीब-सी आवाजें निकलने

लगीं। रानी ताशा ने यंत्र का एक स्विच दबाया और यंत्र को मुंह के पास ले जाकर धीमे स्वर में बोली।

"किलोरा।"

"रानी ताशा।" किलोरा की आवाज आई—"मैं आपको बताना चाहता हूं कि ये लोग पोपा पर निगाह रख रहे हैं।"

"दिलचस्प।" रानी ताशा के होंठों से निकला—"सच में ऐसा हो रहा है?"

"जी हां। हमने पोपा के कैमरों द्वारा आस-पास की जगह का निरीक्षण किया तो सात लोग अलग-अलग कुछ दूरी पर छिपे, पोपा पर नजर रखते देखे गए।" उधर से किलोरा ने कहा।

"बाहर शाम हो गई?" रानी ताशा ने सोच भरे स्वर में पूछा।

"अंधेरा फैल रहा है।"

"अंधेरा फैलते ही अपने लोगों को उन सातों के पास भेजना। अपने लोगों से कह देना जोबिना हथियार का इस्तेमाल करें। ताकि वो राख हो जाएं और किसी को उनकी मौत की जानकारी न हो।" रानी ताशा ने कहा और यंत्र को बंद कर दिया।

रानी ताशा सोमाथ के साथ और अन्य चारों के साथ आगे बढ़ी जा रही थी।

"आज रात पोपा से जोबिना के साथ हमारे लोग बाहर आएंगे।" रानी ताशा उन चारों से बोली—"तुम सब उन्हें डोबू जाति के उन महत्त्वपूर्ण लोगों को दिखा देना जिन पर जोबिना का इस्तेमाल करके, उन्हें राख बनाना है।"

"जी रानी ताशा।"

"अब तुम लोग जाओ और अपनी तैयारी में लग जाओ।"

"सरदार ओमारू पर जोबिना का इस्तेमाल करना कठिन होगा क्योंकि वो हर किसी की नजर में रहता है।"

रानी ताशा दो पल सोचकर कह उठी।

"ओमारू को मैं देख लूंगी।"

"रानी ताशा ओमारू को मैं मार दूंगा।" सोमाथ ने कहा।

"तुम नहीं। ओमारू का शरीर इन्हें नहीं दिखना चाहिए। उस पर भी जोबिना का ही इस्तेमाल करना होगा।" फिर रानी ताशा ने एक से कहा—"तुम पोपा में जाओ और मेरे लिए एक जोबिना ले आओ।"

"जी रानी ताशा।" उसने कहा और तेजी से आगे बढ़ गया।

"तुम लोग भी अपने काम करो।"

बाकी के तीन भी चले गए।

"आज रात सब कुछ हमारे काबू में आ जाएगा रानी ताशा?"

"जरूर।" रानी ताशा ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"डोबू जाति हमारी मुट्ठी में होगी सुबह तक।"

रानी ताशा और सोमाथ मूर्ति वाले हाल में पहुंचे।

वहां सब रात के पर्व की तैयारियों में लगे थे। शोर हो रहा था। रानी ताशा कठिनता से ओमारू को उन लोगों की भीड़ में देख पाई। सोमाथ को भेजकर ओमारू को अपने पास बुलाया।

"ओमारू रात के पर्व की तैयारी हो रही है?"

"पूरी तरह।" ओमारू मुस्कराया—"जाति वाले आपके पर्व में शामिल हैं और आज नाच-गाना भी करेंगे।"

"ये तो अच्छी बात है। पर्व रात के खाने के बाद शुरू होता है हमारे यहां।"

"आज तो खाने में ज्यादा पकवान बनाए गए हैं आपके पर्व के लिए।"

"ओह तुम कितने अच्छे दोस्त हो। हमारा कितना ध्यान रख रहे हो। क्या तुमने अपनी जाति के हथियार किसी कमरे में पहुंचा दिए?"

"ये काम हो चुका है।"

"अच्छा किया। रात के खाने के बाद सोमाथ उस जगह पर पहरा देगा। एक और खुशखबरी है कि पोपा में मौजूद लोग भी बाहर आकर रात को पर्व में शामिल होंगे। वो यहां पर खाना भी खाएंगे।" रानी ताशा ने कहा।

"फिर तो वो भी हमारे दोस्त बन जाएंगे।"

"वो अब भी तुम्हारी जाति के दोस्त हैं। आज रात तुम उन्हें देख पाओगे। वो भी अपने दोस्तों से मिलना चाहते हैं।" रानी ताशा ने भीड़ की तरफ देखते हुए कहा—"मैं बाहर खुली हवा में घूमना चाहती हूं। क्या तुम मेरे साथ चलोगे?"

"चलिए।" ओमारू ने तुरंत सिर हिलाया।

"चलो सोमाथ।"

रानी ताशा, सोमाथ और ओमारू बाहर जाने के लिए आगे बढ़ गए।

तभी सामने से वो आदमी आता दिखा जिसे रानी ताशा ने जोबिना लाने पोपा में भेजा था। वो पास आया और मात्र दो इंच लम्बी, आधा इंच मोटी पारदर्शी पाइप रानी ताशा को दी, जिसके भीतर पीले रंग का तरल पदार्थ हिलता नजर आ रहा था। उसके एक तरफ नन्हा-सा बटन लगा था। वो आदमी चला गया।

"ये क्या है रानी ताशा?" साथ चलते ओमारू ने पूछा।

"ये दवा है।" रानी ताशा मुस्कराई—"इस दवा को लेने के बाद कोई दर्द बाकी नहीं रहता।"

"हमारी जाति को भी ऐसी दवा की जरूरत है। कुछ दवा हमें भी दे देना।" ओमारू ने कहा।

"जरूर देंगे।" रानी ताशा की मुस्कान गहरी हो गई।

तीनों पहाड़ से बाहर निकले और रानी ताशा के रुकते ही, सोमाथ-ओमारू भी रुके।

पूरी तरह अंधेरा घिर चुका था। आसमान पर बादलों के टुकड़े भटकते दिखाई दे रहे थे। ठंडी हवा चल रही थी और मौसम सर्द था। पोपा ऐसे में किसी दैत्य की तरह लग रहा था।

"किस तरफ ले जाओगे हमें ओमारू?" रानी ताशा ने पूछा।

"इस तरफ चलते हैं।" ओमारू ने एक तरफ इशारा किया।

तीनों उस तरफ चल पड़े।

सामने पहाड़ बर्फ की सफेदी लिए अंधेरे में भी स्पष्ट नजर आ रहे थे।

रानी ताशा ने हाथ में पकड़े यंत्र के कुछ बटन दबाए तो किलोरा की आवाज आई।

"कहिए रानी ताशा?"

"जो काम कहा था वो किया?" रानी ताशा ने पूछा।

"हो गया। हमारे आदमी पहरेदारों पर जोबिना का इस्तेमाल करके वापस लौट आए हैं।"

"रात के लिए तैयारी रखो। आज काम होगा।" कहकर रानी ताशा ने यंत्र को बंद किया।

"किस काम की बात कर रही हो रानी ताशा?"

"पर्व में कुछ काम किया जाता है। वो तुम रात को ही देख पाओगे।" रानी ताशा ने आगे बढ़ते हुए कहा—"तुम्हारी ये जगह मुझे बहुत पसंद आई ओमारू। सदूर ग्रह पर ऐसी जगह नहीं है।"

"जब भी तुम्हारा मन यहां रहने को करे तो यहीं आ जाना।"

"हां अब तो ऐसा करना ही पड़ेगा।"

धीरे-धीरे वे पहाड़ से कुछ दूर आ गए। इतना दूर कि आसानी से उन्हें कोई देख न सके। तब रानी ताशा ठिठकी और ओमारू को देखते मुस्कराई और कह उठी।

"तुम्हारी जाति के लोग पोपा पर नजर रख रहे थे ओमारू।"

"क्या?" ओमारू चौंका फिर संभला।

"वो ऐसा क्यों कर रहे थे? तुमने उन्हें ऐसा करने को क्यों कहा?"

"म-मैंने नहीं कहा।"

रानी ताशा कुछ पल उसे देखती रही फिर बोली।

"तुम्हारे इशारे के बिना तो वो पोपा पर नजर रखेंगे नहीं। तुम्हें सब पता है। बोलो, वो ऐसा क्यों कर रहे थे?"

ओमारू ने आंखें सिकोड़कर सोमाथ को और रानी ताशा को देखा।

"मुझे समझ नहीं आ रहा कि ऐसी वीरान जगह पर आकर, ऐसा सवाल पूछने का क्या मतलब है?"

रानी ताशा मुस्करा पड़ी।

"होम्बी ने तुमसे ये बात छिपाए रखी है कि हम कुछ करने वाले हैं यहां।"

"बताया था।" ओमारू के होंठों से निकला।

"क्या?"

"ये ही कि तुम कुछ बुरा कर सकती हो हमारा।"

"फिर भी तुम सतर्क नहीं हुए?" रानी ताशा हंसी।

ओमारू के चेहरे पर उलझन उभरी। अंधेरे की वजह से भाव दिखे नहीं।

"तुम कैसी बातें कर रही हो रानी ताशा।"

"तुम्हारा सफर यहीं पर खत्म होता है।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा—"वैसे हम बुरे लोग नहीं हैं परंतु तुम्हारी ये पहाड़ों के बीच बनी जगह, मुझे बहुत पसंद आई। भविष्य में हम इस ग्रह पर, इस जगह को अपना ठिकाना बना सकते हैं और तुम किसी भी कीमत पर इस जगह को हमारे हवाले नहीं करोगे।"

"ये क्या कह रही हो, हम दोस्त हैं रानी ताशा। तुम इस जगह को हमसे छीनने की कैसे सोच सकती हो?"

"दोस्त बनकर ही तो गर्दन काटी जाती है।" रानी ताशा ने जोबिना थामे, वो हाथ सीधा किया—"मुझे अफसोस है ओमारू पर ये जरूरी है। आज रात हम तुम्हारे इस ठिकाने पर कब्जा करने जा रहे हैं। यहां हमारी हुकूमत होगी।" कहने के साथ ही रानी ताशा ने जोबिना वाली पारदर्शी ट्यूब पर लगा बटन दबा दिया।

चुटकी बजाने जैसी आवाज उभरी।

ओमारू को लगा जैसे कोई अंगारा उसके पेट में धंस गया हो। अगले ही पल वो नीचे जा गिरा और तड़पने लगा। वातावरण में मांस जलने की दुर्गंध फैल गई।

ओमारू का शरीर राख बनता जा रहा था। मात्र मिनट भर का वक्त लगा, नीचे सफेद बर्फ पर मानवीय आकृति के रूप में राख पड़ने का निशान-सा नजर आने लगा। हैरत की बात थी कि शरीर की हड्डियां भी राख में परिवर्तित हो गई थीं। वहां कोई हड्डी पड़ी नहीं दिख रही थी।

सोमाथ ने पैर से राख के उस निशान पर बर्फ सरका दी।

▭ ▭

सूर्य निकल आया था।

वो ही दिन की रोशनी। वो ही सूर्य। वो ही जगह। वो ही बर्फ के पहाड़। सब कुछ रोज की तरह था परंतु डोबू जाति में सब कुछ बदल चुका था। ओमारू, बोबला सहित जाति के अट्ठारह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति एकाएक ही रात को जाने कहां गायब हो गए थे। पहाड़ के भीतर जाति के ठिकाने पर कई जगह थोड़ी-थोड़ी राख पड़ी नजर जरूर दिखी। परंतु कोई समझ नहीं पाया कि वो राख क्या है। जाति के लोगों में हलचल थी। जाति के कई महत्त्वपूर्ण लोग ढूंढ़े नहीं मिल रहे थे।

उन्हें हर तरफ ढूंढ़ा जा रहा था। पहाड़ के भीतर भी, बाहर भी।

भागा-भागी का माहौल बना हुआ था।

पोपा के भीतर से रात को जो लोग निकलकर डोबू जाति के लोगों में आए थे, वो रात को ही वापस पोपा में चले गए थे। जो लोग शुरू से ही रानी ताशा के साथ पोपा से बाहर आए थे, वो ही अब डोबू जाति के लोगों में मौजूद थे। डोबू जाति में हैरत फैली हुई थी कि ओमारू, बोबला और अन्य लोग अचानक कहां चले गए, जो कि जाति के लोगों को राह दिखाते थे। बीती रात डोबू जाति के हथियार जिस कमरे में रखे गए थे, वहां से अभी तक हथियार बाहर नहीं निकाले गए थे। वहां पर पोपा से आए दो आदमी जोबिना हाथों में थामे पहरे के तौर पर खड़े थे। डोबू जाति के कुछ लोग हथियार लेने आए भी, परंतु उन दोनों व्यक्तियों ने कहा कि सरदार ओमारू की इजाजत से ही हथियार बाहर निकाले जाएंगे। सरदार ओमारू से कहो कि वो आकर ऐसा आदेश दे।

परंतु ओमारू तो था ही नहीं।

जब डोबू जाति के लोग तलाश से थक-हार कर बैठ गए, दिन कुछ आगे बढ़ा तो रानी ताशा, सोमाथ के साथ सबके सामने आई। सबको मूर्ति वाले हॉल में इकट्ठा किया। सब चुपचाप और सहमे हुए थे। रानी ताशा ऊंचे स्वर में बोली।

"कल तुम लोगों के सरदार ओमारू ने कहा था कि मेरी बात को ओमारू की बात के बराबर समझा जाए। मुझे लगता है कि ओमारू को किसी काम के सिलसिले में कहीं जाना था तभी उसने ऐसा कहा और आप सबको मेरे हवाले करके चला गया। साथ में वो जाति के कुछ और महत्त्वपूर्ण लोगों को भी ले गया। परंतु आप लोग चिंता न करें। वो लौट आएंगे। जाति के सब काम पहले की तरह ही चलते रहेंगे। मुझे भी किसी काम के सिलसिले में मुम्बई शहर जाना है। कल मैं चली जाऊंगी परंतु जाति के काम सिलसिलेवार

चलते रहें, इसके लिए मेरे आदमी आपके पास रहेंगे और जाति को चलाएंगे। ओमारू के और अन्य लोगों के वापस लौटने तक आप सबको मेरे आदमियों का हुक्म मानना होगा और हथियार आप लोगों को तब तक नहीं दिए जाएंगे, जब तक कि ओमारू लौट नहीं आता। वैसे भी हथियारों की जरूरत नहीं रही। युद्ध कला सिखाने वाला बोबला भी ओमारू के साथ चला गया है। कोई भी फिक्र नहीं करे। ओमारू वापस आएगा और सब ठीक हो जाएगा। हो सकता है बोबला पहले ही वापस आ जाए या ऐसा भी हो सकता है कि वो सब ही आज या कल में लौट आए। आप लोग जैसे जिंदगी बिता रहे हैं, वैसे ही बिताते रहिए। मेरे आदमी आपकी हर जरूरत का खयाल रखेंगे सिर्फ युद्ध कला को छोड़कर।"

डोबू जाति वालों को दिलासा देने के बाद रानी ताशा होम्बी के पास पहुंची। सोमाथ साथ में था। होम्बी दीवार से टेक लगाए बैठी थी। शांत निगाहों से उसने रानी ताशा को देखा।

"तुम्हें तो अपनी जादूगरी के दम से हर पल की खबर होगी होम्बी।" रानी ताशा के चेहरे पर गहरी मुस्कान उभरी।

"बुरा किया तूने।" होम्बी ने गम्भीर स्वर में कहा—"मेरे बच्चों की जान ले ली।"

"अब ये जगह सदूर ग्रह का हिस्सा बन चुकी है। यहां पर हमारी हुकूमत चलेगी।"

होम्बी, रानी ताशा को देखती रही फिर कह उठी।

"इतनी ऊंची उड़ान मत उड़। वक्त और हवा का पता नहीं चलता कि वो किस तरफ चलने लगे।"

"क्या मतलब?" रानी ताशा के चेहरे से मुस्कान गायब हो गई।

"आने वाला वक्त तेरे को मतलब समझाएगा।"

"साफ कह, जो कहना चाहती है तू।" रानी ताशा की आवाज में तीखापन आ गया।

"यहां तेरी हुकूमत नहीं चल सकती। कुछ वक्त की बात है, फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

"तेरे को हमारी ताकत का अंदाजा नहीं होम्बी।" रानी ताशा का स्वर कठोर हो गया।

"तेरी ताकत क्या करेगी, जब आने वाला वक्त ही तेरा नहीं होगा।" होम्बी ने कहा।

"वक्त कैसा भी हो, ताकत हमारी ही चलेगी।"

"तूने जो करना था कर लिया। अब और कुछ नहीं कर सकेगी तू।"

"मैं तुझे भी मार सकती हूं।"

"पर तू मारेगी नहीं। मेरी मौत से तेरे को जरा भी फायदा नहीं होगा। डोबू जाति को संभालने वाला जल्दी आएगा।"

"यहां मेरे आदमी रहेंगे। वो ही सब कुछ संभालेंगे। यहां के लोग उनके इशारे पर चलते रहेंगे।"

"तेरे को तेरी बात का जवाब आने वाला वक्त देगा।"

रानी ताशा, होम्बी को देखती रही फिर कह उठी।

"हमने यहां जो भी किया जरूरत के हिसाब से किया। जबकि हम ऐसे लोग नहीं हैं। ये जगह हमें अच्छी लगी अपने लिए तो यहां पर हमने कब्जा करने की सोच ली। तेरे को बुरा नहीं मानना चाहिए।"

"तूने मेरे बच्चों की जान ली।"

"करना पड़ा ऐसा। मैं बुरी नहीं हूं।"

"तू बुरी है या अच्छी, मैं सब जानती हूं तेरा आगा-पीछा। मुझे अपने बारे में मत बता। तू इसी काम के लिए यहां रुकी हुई थी, वरना अपने राजा देव के पास जाने के लिए तू उतावली हुई पड़ी है।"

रानी ताशा मुस्करा पड़ी।

"राजा देव मुझे मिल जाएगा न होम्बी?"

"जाति के बाहर के लोगों के सवालों का मैं जवाब नहीं देती। तेरा मामला जाति के बाहर का मामला है।"

"अब तो डोबू जाति मेरे रहमोकरम पर है।"

"डोबू जाति हमेशा आजाद रही है और अब भी आजाद हो जाएगी। तेरा भ्रम टूट जाएगा।"

तभी सोमाथ कह उठा।

"इसे मार दूं रानी ताशा।"

"कोई फर्क नहीं पड़ता ये जिंदा रहे या न रहे। ये न तो हमारा कुछ संवार सकती है, न बिगाड़ सकती है। इसे जिंदा रहने दो और देखने दो कि आज के बाद डोबू जाति किस तरह हमारी मुट्ठी में रहती है।" रानी ताशा ने तीखे स्वर में कहा।

होम्बी खामोश रही।

रानी ताशा, सोमाथ के साथ वहां से वापस चली गई। मूर्ति वाले हॉल में पहुंची। डोबू जाति के लोग रोज की तरह अपने कामों में लग चुके थे। रानी ताशा के लोग उन्हें निर्देश दे रहे थे। उसने एक आदमी से कहा।

"कल ओमारू ने हमारे कपड़े लेने के लिए किसी को भेजा था। मालूम करो कि क्या कपड़े आ गए हैं?"

□ □

रानी ताशा, सोमाथ के साथ पोपा में पहुंची। हमेशा की तरह किलोरा ने ही पोपा का दरवाजा खोला था।

"सब ठीक है किलोरा?" रानी ताशा मुस्कराई।

"सब काम ठीक से निपट गया रानी ताशा।" किलोरा मुस्कराया।

"सोमाथ।" रानी ताशा बोली—"तुम आराम करो। कल नई बैट्री लगा लेना। हमने अब राजा देव के पास जाना है।"

सोमाथ चला गया।

रानी ताशा, सोमारा के कमरे में पहुंची।

"ओह रानी ताशा।" सोमारा उसे देखते ही कह उठी—"बबूसा की कोई खबर?"

"तेरे को बबूसा के अलावा कोई और भी खयाल आता है क्या?" रानी ताशा मुस्कराई।

"वे लड़की धरा के बारे में बताकर तो तुमने मुझे और भी चिंता में डाल दिया है।" सोमारा बोली।

"सब कुछ ठीक हो जाएगा। कल हम पृथ्वी ग्रह के उस शहर की तरफ चलेंगे जहां राजा देव और बबूसा हैं।"

"ओह।" सोमारा खुशी से बोली—"ये खबर तुमने अच्छी सुनाई।"

"तू बहुत जल्दी बबूसा से मिल पाएगी।"

"और आप राजा देव से। फिर से सब अच्छा हो जाएगा। बबूसा हर जन्म में मेरा पति बना है और इस जन्म में भी बनेगा।"

"क्यों नहीं, आखिर तू महापंडित की बहन है परंतु बबूसा को विद्रोह की सजा मैं जरूर दूंगी।"

"जब ऐसा वक्त आएगा तो आपसे बात करूंगी।" सोमारा ने कहा—"राजा देव और बबूसा एक ही जगह रहते हैं?"

"मैं नहीं जानती। महापंडित से इस बारे में बात करनी पड़ेगी।"

रानी ताशा उस कमरे में पहुंची जहां स्क्रीन और स्विचों के अलावा लीवर लगे थे।

वहां तीन लोग और भी थे जो दीवार के साथ लगी सीटों पर बैठे थे। रानी ताशा को देखते ही वो खड़े हो गए। रानी ताशा स्क्रीन के पास पहुंचकर, बटनों और लीवरों से छेड़छाड़ करने लगी। दो-तीन मिनट बीतने पर स्क्रीन पर महापंडित दिखाई देने लगा, फिर उसकी आवाज आई।

"कामयाबी की बधाई हो रानी ताशा।"

"तो तुम्हें पता चल गया।" रानी ताशा मुस्कराई।

"मुझे सब खबर रहती है।"

"कल मैं राजा देव के लिए मुम्बई शहर रवाना हो जाऊंगी।"

"ये तो खुशी की बात है।"

"तुम्हारी बहन बबूसा के लिए तड़प रही है।"

"वो बेवकूफ है। मेरी बात नहीं मानती। सदूर ग्रह पर उसके लिए अच्छे से अच्छा इंसान मौजूद है। परंतु हर बार उसे बबूसा ही जाने क्यों पसंद आता है। इस जन्म में तो बबूसा मुसीबतों से घिरने वाला है।"

"मैं सोमारा को इसलिए साथ लाई कि वो, बबूसा पर प्यार से काबू पा सकती है।"

"इस जन्म में बबूसा के उद्देश्य का रुख समझ नहीं आ रहा। वो विद्रोह कर चुका है।" महापंडित की आवाज आई—"बबूसा राजा देव को तलाश कर चुका है और उनके पास ही रह रहा है।"

"ये खबर नई है मेरे लिए।"

"जिस रात तुम पृथ्वी ग्रह पर पहुंची, उसी रात बबूसा ने राजा देव को ढूंढ़ निकाला।"

"राजा देव को वो जन्म याद आ गया क्या?" रानी ताशा ने पूछा।

"नहीं। परंतु बबूसा सब बातें राजा देव से कह रहा है। राजा देव को कुछ समझ नहीं आ रहा। वो उलझन में है कि बबूसा की बात को सत्य माने या न माने। परंतु आपको इन बातों की चिंता करने की जरूरत नहीं है। आप उस शहर में पहुंचकर राजा देव के सामने जाइए।" महापंडित की आवाज आई।

"तो क्या राजा देव मुझे फौरन पहचान जाएंगे?"

"नहीं। कुछ वक्त तो लगेगा उन्हें आपकी याद आने में। वो वक्त थोड़ी देर का भी हो सकता है और ज्यादा देर का भी। इस बारे में मैं अभी कुछ नहीं कह सकता। समय चक्र के साथ ही ये बातें सामने आएंगी।"

"तुमने मुझे राजा देव का पता नहीं बताया कि वो मुम्बई में कहां पर है।"

"आप उस शहर में पहुंचें रानी ताशा। राजा देव तक पहुंचने का रास्ता मैं आपके दिमाग में डाल दूंगा।"

"बबूसा ने जो रास्ता चुना है, उसमें उसकी जान भी जा सकती है। सोमाथ उसे मार देगा अगर उसने परेशानी पैदा की।"

"बबूसा के मन में क्या है, मुझे पता नहीं चल पा रहा। वो मरा तो सोमारा को दुख होगा।"

"जो भी होगा बबूसा की गलती से होगा। मैं सोमारा को सब बातें बता चुकी हूं। सोमारा कहती है कि वो बबूसा को राह पर ले आएगी।"

"बबूसा अगर सोमारा की बात मान जाए तो इससे अच्छी और क्या

बात होगी।" स्क्रीन पर नजर आते महापंडित ने कहा—"आप कल यहां से जाने के लिए तैयारी शुरू कर दीजिए। मुझे यकीन है कि आप राजा देव को सदूर ग्रह पर ले आने में सफल रहेंगी।"

"मुझे सफलता मिलेगी महापंडित?" रानी ताशा ने पूछा।

"कह नहीं सकता। पृथ्वी ग्रह दूर होने की वजह से मेरी मशीनें मुझे ठीक से बता नहीं पा रहीं। जब-जब मुझे इन बातों का पता चलता रहेगा, मैं आपको खबर करता रहूंगा रानी ताशा। मेरे अपने विचार हैं कि राजा देव को सदूर ग्रह तक ले आने में, आपको कोई परेशानी नहीं आनी चाहिए, क्योंकि राजा देव को सदूर ग्रह वाला जन्म याद नहीं। कुछ भी नहीं पता। ऐसे में बबूसा अवश्य कुछ परेशानी खड़ी कर सकता है, परंतु बबूसा को सोमाथ संभाल लेगा, जरूरत पड़ी तो बबूसा को मार देगा।"

"मैं राजा देव को फिर से पाने में सफल रहूंगी महापंडित।" रानी ताशा दृढ़ स्वर में कह उठी।

▭ ▭

बबूसा और धरा को देवराज चौहान के पास रहते हुए आज तीसरा दिन था। बबूसा हर वक्त देवराज चौहान के पास ही मंडराता रहता और अपनी बातें कहने और उसे याद दिलाने की कोशिश करता। देवराज चौहान उसकी बातें सुन भी रहा था और समझ भी रहा था। बबूसा के हाव-भाव और उसके बोलने के ढंग से नहीं लगता था कि वो झूठ बोल रहा हो। देवराज चौहान गम्भीरता से उसकी हर बात सुनता। बबूसा अक्सर कहता रहता कि रानी ताशा पृथ्वी ग्रह पर पहुंच चुकी है और कभी भी उसके पास आ सकती है। महापंडित उसे राह दिखाएगा, उस तक पहुंचने के लिए।

इस वक्त धरा बंगले के हॉल में जगमोहन के सामने बैठी थी। कुछ देर पहले ही जगमोहन का बाहर से लाया नाश्ता, सबने किया था। बबूसा देवराज चौहान के पास था। वो वापस आया तो जगमोहन ने पूछा।

"तीन दिन से तुम रानी ताशा के आने की बात कह रहे हो, परंतु वो आई नहीं।"

"आ जाएगी।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसके आने का इंतजार मत करो।"

"क्यों?"

"वो आएगी तो अच्छा नहीं होने वाला। एक बात तो बताओ कि तुम राजा देव के खास हो, इस ग्रह पर।"

"वो मेरे दोस्त हैं, भाई हैं, सब कुछ हैं।" जगमोहन ने कहा।

"अगर रानी ताशा, राजा देव को सदूर ग्रह पर वापस ले गई तो क्या होगा?"

"मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।"

"अगर राजा देव ही रानी ताशा के साथ सदूर ग्रह पर जाना चाहें तो तुम क्या करोगे?"

"देवराज चौहान अगर अपनी मर्जी से ऐसा करता है तो मैं उसे नहीं रोकूंगा।"

"तुम्हें लगे कि राजा देव अपनी मर्जी से रानी ताशा के साथ जाने को कह रहे, जबकि वो रानी ताशा के प्रभाव में हों?"

"ऐसा कुछ हुआ तो मैं पहचान लूंगा। तब देवराज चौहान को नहीं जाने दूंगा।"

"वो जाना चाहेंगे तो तुम उन्हें रोक नहीं सकोगे।"

"क्यों?"

"मेरे खयाल में तो तुम रानी ताशा का ही मुकाबला नहीं कर सकते। राजा देव ने उन्हें कभी युद्ध कला सिखाई थी, फिर अब तो रानी ताशा के साथ सोमाथ है जो कि बहुत ताकतवर इंसान है। तुम उन्हें रोक नहीं सकते।"

"मुझे बता रहे हो या समझा रहे हो?" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"सतर्क कर रहा हूं कि रानी ताशा के सामने आने पर तुम उनके सामने कोई हैसियत नहीं रखते। राजा देव अगर खुद जाना चाहें तो तुम रोक नहीं सकते। रानी ताशा उन्हें जबर्दस्ती ले जाए तो तब भी तुम कुछ नहीं कर सकते।"

"वक्त आने पर बताऊंगा कि मैं क्या कर सकता हूं।"

"तुमने ज्यादा झगड़ा डाला तो वे तुम्हें जोबिना से मार डालेंगे।"

"जोबिना क्या?"

"हथियार है जो इंसान को पलों में राख बना देता है।" बबूसा ने बताया।

"तुम तो उन्हें रोक सकते हो?" जगमोहन बोला।

"कह नहीं सकता।" बबूसा ने चिंतित स्वर में कहा—"महापंडित ने कहा सोमाथ मुझसे ज्यादा ताकतवर है।"

"तो क्या तुम सोमाथ को देखते ही भाग जाओगे।"

"बबूसा ने भागना नहीं सीखा। सारी समस्या तो राजा देव को कुछ याद न आने की है। अगर उन्हें अपना वो जीवन याद आ जाए तो फिर राजा देव सब कुछ संभाल लेंगे। रानी ताशा के बस में कुछ नहीं रहेगा। परंतु राजा देव को कुछ याद नहीं आ रहा। मैंने पूरी कोशिश कर ली परंतु राजा देव को तब का कुछ पता नहीं है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

जगमोहन कुछ कहने लगा कि मोबाइल बज उठा। दूसरी तरफ सोहनलाल था।

"बबूसा का क्या हाल है?" उधर से सोहनलाल ने पूछा।

"मजे कर रहा है।" जगमोहन ने बबूसा पर निगाह मारी।
"मजे?"
"और क्या...कभी नॉन लाकर खिलाता हूं तो कभी छोले भठूरे। कभी डोसा खाना पसंद करता है। ये हम जैसा भी नहीं है कि एक प्लेट में इसका काम निबट जाए। चार-पांच प्लेट तो चाहिए ही इसे। तीन दिन से इसकी सेवा करने में लगा हूं।"
"रानी ताशा की कोई खबर?"
"अभी तो कुछ भी नहीं।"
"रानी ताशा कोई है भी या हम बेवकूफ ही बन रहे हैं?"
"बेवकूफ बन रहे हैं तो इसमें हमारा कोई नुकसान नहीं। परंतु ऐसा लगता नहीं।"
"बबूसा क्या कहता है। कब तक आ सकती है रानी ताशा?"
"वो तो कहता है कभी भी आ सकती है।"
"मतलब कि पता नहीं कि कब आती है।"
जगमोहन ने देवराज चौहान को इस तरफ आते देखा।
"देखते हैं क्या होता है।" जगमोहन बोला—"अभी तो सब कुछ ठीक ही चल रहा है।" कहकर जगमोहन ने फोन बंद कर दिया।
देवराज चौहान पास पहुंचा तो बबूसा कह उठा।
"मुझे अपने हथियार लाने हैं।"
"कहां से?" देवराज चौहान ने पूछा।
"जिस होटल में मैं पहले ठहरा हुआ था, वहां के वेटर को मैंने काफी सारे पैसे देकर, हथियार रखने को दिए थे।"
"जगमोहन को अपने साथ ले जाओ और ले आओ।"
बबूसा ने धरा पर निगाह मारकर कहा।
"मैं धरा को अकेला नहीं छोड़ सकता। डोबू जाति के योद्धा इसकी जान ले लेंगे।"
"मेरे होते फिक्र मत करो। ये सुरक्षित रहेगी।"
"वो सामने आ गए तो राजा देव वो आपकी जान भी ले लेंगे। आप उनका मुकाबला नहीं कर सकते।" बबूसा बोला।
"तो तुम क्या चाहते हो?"
"मैं धरा को अपने साथ ले जाऊंगा, तुम अपनी कार मुझे दे दो।"
"जैसा तुम ठीक समझो।" देवराज चौहान ने कहा।
बबूसा ने धरा से मोबाइल फोन लिया और वेटर को फोन करने में व्यस्त हो गया।

धरा कार ड्राइव करती बंगले से निकली। बबूसा उसकी बगल में बैठा था। बंगले से बाहर निकलकर, कार सड़क पर आई ही थी कि धरा तेज स्वर में कह उठी।

"खतरा—वो मुझे मारने के लिए यहां मौजूद है।"

"कौन?" बबूसा के चेहरे पर खतरनाक भाव उभरे।

"वो, पीछे काले रंग की कार पर मैंने उसे देखा है।" धरा का रंग फक्क पड़ चुका था।

बबूसा ने तुरंत गर्दन घुमाकर पीछे देखा।

पीछे काली कार आती दिखी। बबूसा देखता रहा और चंद पलों के बाद बोला।

"वो सोलाम है। कार को रोको, सोलाम को यहां देखकर मुझे हैरानी हो रही है।"

"मैंने कार रोकी तो वो मुझे मार देंगे।"

"उससे बात करनी होगी। जरूर कोई बात है। सोलाम ने अभी तक मेरा पीछा क्यों नहीं छोड़ा।"

धरा कार दौड़ाती रही।

"कार रोको।"

"मुझे डर लग रहा है। वो मुझे...।"

"मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम डरो मत।" बबूसा की निगाह अभी भी पीछे थी—"वो शायद अकेला है।"

धरा ने कार को सड़क किनारे रोक दिया।

वो काली कार भी पीछे आ रुकी।

धरा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी और शीशे में पीछे रुकी काली कार को देखा।

बबूसा ने बाहर निकलने के लिए दरवाजा खोला तो धरा कातर स्वर में कह उठी।

"प्लीज, मेरे पास रहो बबूसा।"

बबूसा ने धरा की टांग थपथपाई और कार से बाहर निकल गया।

तब तक काली कार से सोलाम भी बाहर आ गया था। बबूसा ने महसूस किया कि पीछे की सीट पर दो और डोबू जाति के योद्धा बैठे हैं। सोलाम उसके पास आया। कुछ पल दोनों एक-दूसरे को देखते रहे।

"तो तुम मुझ पर नजर रखे थे सोलाम।" बबूसा बोला।

"बुरे इरादे के साथ नहीं।" सोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम्हारे साथ और योद्धा भी हैं।" बबूसा ने काली कार की तरफ देखा।

"वो मेरे साथ हैं और कार में ही बैठे हैं। वो ही तुम पर नजर रखे हुए थे।" (सोलाम के बारे में विस्तार से जानने के लिए **राजा पॉकेट बुक्स** से अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा'** अवश्य पढ़ें।)

"क्या चाहते हो अब? तुम तो डोबू जाति छोड़ चुके हो।" बबूसा ने कहा।

"हां। मुम्बई मुझे अच्छी लगी। मैं यहीं रहना चाहता हूं परंतु अपनी जाति को भी नहीं भूल सकता।"

बबूसा, सोलाम को देखता रहा।

"बुरी खबर देने के लिए तेरे पास आया हूं।"

"क्या?"

"दो घंटे पहले मैंने अपने यंत्र द्वारा वहां अपनी जाति के लोगों से बात की। रानी ताशा तीन दिन से वहां पहुंची हुई है।"

"मुझे पता है वो आ चुकी है।"

"कल रात रानी ताशा ने अपनी जाति के लोगों के साथ कुछ बुरा किया है। अभी बात स्पष्ट नहीं है, परंतु जाति का हर महत्त्वपूर्ण व्यक्ति अचानक ही पहाड़ से गायब हो गया है। ओमारू भी गायब है। बोबला भी गायब है। जो-जो लोग जाति को संभालते थे वो हर कोई गायब है। ऐसे में रानी ताशा ने हमारी जाति पर अपना अधिकार जमा लिया है। वो ही अब हमारी जाति का संचालन करने लगे हैं। जाति के हथियार एक कमरे में बंद कर दिए गए हैं। किसी को हथियार छूने की इजाजत नहीं है।"

बबूसा के माथे पर बल पड़े।

"तेरे को ये बात किसने बताई?"

"अगोमा ने। वहां बिजली वाले कमरे में उसी से मेरी बात हुई। उसने बताया कि आज सुबह पहाड़ में कई जगह राख के छोटे-छोटे ढेर देखने को मिले, जो कि अजीब बात थी कि...।"

"राख के ढेर?" बबूसा चौंका।

"अगोमा कहता है कि थोड़ी-थोड़ी राख बहुत जगह पड़ी देखी गई।"

"तो उन्होंने जोबिना का इस्तेमाल किया।" बबूसा के होंठों से निकला।

"जोबिना?" ये क्या है?"

"ये सदूर ग्रह वालों का खास हथियार है।" बबूसा का चेहरा गुस्से से भर उठा—"इस हथियार का इस्तेमाल करने से सामने वाला बिना आग के जल जाता है। हड्डियां भी नहीं बचतीं और वो मिनट भर में राख हो जाता है। ये सदूर ग्रह का बहुत ही ज्यादा खतरनाक हथियार है। इसे वहां के वैज्ञानिक जम्बरा ने बनाया था। तो रानी ताशा उस जगह को अपने अधिकार में कर

रही है। बहुत बुरा इरादा है उसका। रानी ताशा कभी भी चैन से नहीं बैठ सकती। वो कुछ न कुछ करती रहेगी। ये बहुत बुरी खबर है सोलाम। वो हमारी जाति के लोगों को अपना गुलाम बना लेगी।"

"मेरा भी ये ही खयाल है।" सोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा—"सब कुछ जानने के बाद मैंने तुमसे मिलने का इरादा किया कि तुम उन्हें ज्यादा अच्छी तरह जानते हो, क्योंकि तुम भी उन्हीं में से ही हो।"

"जो भी हो सोलाम, मेरा ये जीवन डोबू जाति में बीता है। मैं डोबू जाति का बुरा नहीं चाह सकता। कम-से-कम ये तो कभी भी नहीं सोच सकता कि रानी ताशा वहां पर अपनी हुकूमत कायम कर ले।"

"वो ऐसा कर रही है।"

"बहुत तेजी दिखाई रानी ताशा ने।" बबूसा ने कठोर स्वर में कहा—"काश मैं वहां मौजूद होता।"

"मैं तुम्हारे साथ हूं।" सोलाम ने कहा—"तुम जब कहो मैं डोबू जाति में जाने को तैयार हूं।"

बबूसा सोलाम को देखने लगा।

"क्या हुआ?" सोलाम ने पूछा।

"मैं अभी नहीं जा सकता।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्यों?"

"इस वक्त मुझे राजा देव के साथ रहना है।"

"मैं समझा नहीं...।"

"रानी ताशा सदूर ग्रह से राजा देव को वापस ले जाने के लिए आई है और वो कभी भी राजा देव के पास पहुंच सकती है। महापंडित जो कि सदूर ग्रह का विद्वान है, वो रानी ताशा की सहायता कर रहा है वहीं बैठा। राजा देव अकेले पड़ रहे हैं और मैं सदूर ग्रह पर राजा देव का खास सेवक हुआ करता था। मैंने यहां पर राजा देव को ढूंढ़ निकाला है और इस वक्त उनके साथ ही रह रहा हूं कि रानी ताशा आए तो मैं हालातों को संभाल सकूं। ये बातें शायद तुम न समझ सको सोलाम।"

"जो भी हो डोबू जाति के प्रति भी तुम्हारा कुछ फर्ज बनता है।"

"जरूर बनता है। परंतु इस वक्त मैं डोबू जाति की तरफ नहीं जा सकता।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"रानी ताशा ने बहुत गलत काम किया है जो डोबू जाति पर हुकूमत करने की सोची। हमें जरूर कुछ करना चाहिए।"

"परंतु तुम तो वहां चलने को इंकार कर रहे हो।"

"इंकार नहीं कर रहा। इस वक्त मेरा यहां रहना जरूरी है। तुम साथ दो तो हम काफी कुछ कर सकते हैं।"

"क्या?"

"अगोमा के साथ सम्पर्क में रहो और वहां के हालातों की जानकारी लेते रहो। इस दौरान तुम वहां पहुंचो परंतु ठिकाने पर नहीं जाना, वरना रानी ताशा के लोग तुम पर भी जोबिना का इस्तेमाल करके तुम्हें खत्म कर देंगे। तुम वहां से दूर अपना ठिकाना बना लेना। इस दौरान जब भी मुझे मौका मिलेगा, मैं तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा और हम रानी ताशा के लोगों के पांव उखाड़ने में लग जाएंगे। हमें अपनी शुरुआत तो कर देनी चाहिए।"

"मुझे कैसे पता लगेगा कि तुम वहां आ रहे हो?"

"मैं यंत्र पर अगोमा से सम्पर्क करके मालूम कर लूंगा।"

सोलाम खामोश रहा।

उसके चेहरे पर व्याकुलता उभरी हुई थी।

"क्या सोच रहे हो? मुझे बताओ।" बबूसा बोला।

"मैं सोच रहा हूं मुम्बई भर में तीस-चालीस योद्धा हैं डोबू जाति के, जो कि तुम्हारी और धरा की जान लेने की फिराक में हैं। मुझे उन सब को इकट्ठा करके जाति के हालात बताने होंगे। अगर वो साथ मिल जाते हैं तो हमारे पास ताकत हो जाएगी।"

"वो साथ जरूर मिलेंगे।"

"कह नहीं सकता। क्योंकि ओमारू ने उन्हें तुम्हें और उस लड़की को मारने का काम सौंप रखा है। ओमारू सरदार है।"

"उनसे कहो कि यंत्र द्वारा जाति से बात करके, वहां के हालात पता करें।" बबूसा ने कहा—"मेरे खयाल में वहां के हालात पता लगने पर वो तुम्हारा साथ देने को तैयार हो जाएंगे आखिर तुम भी जाति के महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो।"

"मैं कोशिश करूंगा उन्हें राह पर लाने की।"

"ये जरूरी है। हमारे पास योद्धा होंगे तो हम रानी ताशा के लोगों को सख्ती से जवाब दे सकेंगे। डोबू जाति पर ये मुसीबत का वक्त है। हमें अपने लोगों को रानी ताशा के लोगों से आजाद कराना है।"

"अब मैं तुमसे बात करना चाहूं तो कैसे करूं?"

"मैं तुम्हें मोबाइल नम्बर दे देता हूं जो कि उसी लड़की धरा का है।" कहकर बबूसा ने सोलाम को नम्बर बता दिया।

नम्बर याद करके सोलाम गम्भीर स्वर में बोला।

"इस लड़की के साथ तुम्हारा क्या सम्बंध है?"

"मैं समझा नहीं।"

"तुम लड़की से प्यार करते हो?"

"नहीं।" बबूसा के होंठों से निकला।

सोलाम मुस्करा पड़ा।

"तुम लड़की से प्यार करते हो।"

"कैसे कह सकते हो?"

"तुम उसे बचा रहे हो। डोबू जाति के योद्धाओं को मार रहे हो।" सोलाम ने कहा।

कुछ पल चुप रहकर बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"इस वक्त मैं किसी लड़की से प्यार करने की स्थिति में नहीं हूं। मेरे सामने ढेर सारे काम हैं।"

"मैंने उस लड़की को पकड़ लिया था परंतु छोड़ दिया ये सोचकर कि तुम उससे प्यार करते हो।" सोलाम बोला।

"धरा ने बताया था मुझे।"

"प्यार करना बुरा नहीं है। तुम चाह सकते हो उसे।"

"मेरे पास बहुत काम हैं सोलाम और अब तुमने एक नया काम दे दिया। ये सुनकर मुझे दुख हुआ कि रानी ताशा ने जाति के लोगों पर कब्जा कर लिया है। तुम्हें जो कहा है वो करो और फोन पर मुझे बताते रहना कि क्या कर पाए तुम।"

▭ ▭

बबूसा और धरा वापस आ गए थे। उस वेटर से बबूसा अपने हथियार ले आया था। जो कि उसने कार की डिग्गी में भर रखे थे और जगमोहन-देवराज चौहान के साथ लगकर उन हथियारों को बंगले के भीतर पहुंचाया था, जबकि बबूसा, देवराज चौहान से कहता रहा कि राजा देव आप कष्ट न करें, परंतु देवराज चौहान ने इस काम में पूरा हाथ बंटाया।

इस काम के पश्चात जब वे आराम से बैठे तो तब बबूसा ने उन्हें ये बात बताई कि रानी ताशा ने किस तरह डोबू जाति के महत्त्वपूर्ण लोगों की जान लेकर जाति पर अपना कब्जा कर लिया है।

"ये तो बहुत गलत किया रानी ताशा ने।" जगमोहन ने कहा।

"वो है ही ऐसी। कब क्या कर जाए, पता नहीं चल सकता।" बबूसा ने परेशानी से कहा।

"डोबू जाति वालों ने उन्हें रहने का ठिकाना दिया और उसने उनके साथ ऐसा कर डाला।"

तभी धरा का फोन बजने लगा।

"हैलो।" धरा ने बात की।

"बबूसा से मेरी बात कराओ।" उधर से सोलाम की आवाज आई।

सोलाम की आवाज को पहचानते ही धरा ने फोन बबूसा की तरफ बढ़ाया।
"कौन है?"
"तुम्हारी जाति का ही आदमी है। धरा ने घबराए स्वर में कहा।
"हैलो।" बबूसा ने फोन लेकर बात की।
"बबूसा, मैंने अभी अगोमा से यंत्र द्वारा फिर बात की है। उसने बताया कि रानी ताशा अपने कुछ आदमियों के साथ और डोबू जाति के दो आदमी, जो कि मुम्बई तक का रास्ता जानते हैं, साथ लेकर मुम्बई रवाना हो गई है।"
"ओह।" बबूसा के होंठों से निकला—"वो अब राजा देव के पास ही आ रही होगी।"
"मैं डोबू जाति के योद्धाओं को इकट्ठा करने की चेष्टा में लग गया हूं जो मुम्बई में मौजूद हैं।" उधर से सोलाम ने कहा।
"जो भी खबर हो मुझे बताते रहना।" कहकर बबूसा ने फोन बंद करके सबको देखते हुए कहा—"रानी ताशा, वहां से मुम्बई आने के लिए चल दी है। राजा देव अब आपको सावधान हो जाना चाहिए, वो आपके पास ही आ रही है। जिस वक्त का हमें इंतजार था, वो आने ही वाला है। चूंकि आपको कुछ याद नहीं आ रहा उस जन्म का, ऐसे में रानी ताशा आपकी हालत का लाभ उठा सकती है और आपको आसानी से सदूर ग्रह पर, पोपा में बैठाकर ले जा सकती है।"
"मेरे होते ऐसा नहीं हो सकता।" जगमोहन दृढ़ स्वर में कह उठा।
बबूसा ने गम्भीर निगाहों से, जगमोहन को देखते हुए कहा।
"तुम कुछ नहीं कर सकते। रानी ताशा को रोक नहीं सकते।"
"रोक सकता हूं।"
"रानी ताशा के लोगों के पास खतरनाक हथियार हैं। रानी ताशा के साथ सोमाथ है जो मुझसे भी ताकतवर है। सोमाथ की मृत्यु नहीं हो सकती। महापंडित ने मुझे ये बात बताई थी।" बबूसा बोला।
देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता दिखाई दे रही थी।
तभी धरा, बबूसा से कह उठी।
"तुम्हारे पास वो हथियार है?"
"कौन-सा?"
"जिससे इंसान राख में बदल जाता है।"
"वो-वो तो सदूर ग्रह का हथियार है। मेरे पास कैसे होगा?"
"अगर वो तुम्हारे पास हो तो सोमाथ को राख बनाया जा सकता है।" धरा ने कहा।
"परंतु वो हथियार मेरे पास नहीं है।" बबूसा ने व्याकुलता से कहा।

"ये तो बुरा हुआ। अगर होता तो तुम काफी कुछ कर सकते थे।"

बबूसा ने देवराज चौहान को देखकर कहा।

"आप कुछ कहिए राजा देव।"

"मेरे पास कहने को कुछ नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा।

"रानी ताशा आ रही है।"

"मैं उसे नहीं जानता। वो आई तो उसे पहली बार देखूंगा कि...।"

"मुझे बहुत चिंता हो रही है। आप रानी ताशा को नहीं जानते। उसने कभी आपके साथ बहुत बुरा किया था। फिर महापंडित ने इस बार रानी ताशा के चेहरे पर कुछ ऐसा असर डाल रखा है कि आप उसे देखकर उसके दीवाने हो सकते...।"

"बकवास।" देवराज चौहान के होंठों से निकला—"मैं इस बात को नहीं मानता।"

"तो क्या तब मानेंगे जब ऐसा कुछ हो जाएगा।" बबूसा ने पहलू बदलकर कहा—"परंतु ये बात भी साथ में है कि रानी ताशा का चेहरा देख लेने के बाद ही आपको अपना वो जन्म याद आना शुरू होगा। उसका चेहरा देखने में आपको फायदा भी है और नुकसान भी। मैं सोचता हूं कि आपको किसी ऐसी जगह छिपा दूं कि महापंडित की शक्तियां आपको ढूंढ़ न सकें।"

"मैं कहीं भी छिपने वाला नहीं।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा—"मैं यहीं रहूंगा। अगर रानी ताशा आ रही है तो बेशक आ जाए। तुम्हें रानी ताशा से डरने की जरूरत नहीं है।"

बबूसा देवराज चौहान को चिंतित निगाहों से देखता रहा फिर कह उठा।

"मैं खामखाह ही घबरा रहा हूं। मैं उनका मुकाबला करूंगा। मेरे पास ताकत है। हथियार हैं। सोमाथ मेरे से जीत नहीं सकता। महापंडित ने मुझे ताकतवर बनाया है। मेरे हथियार मेरे पास हैं। मैं सब ठीक कर दूंगा।"

▭ ▭

तीसरे दिन...।

रानी ताशा मुम्बई आ पहुंची। साथ में सोमारा थी, सोमाथ था, और तीन अन्य लोग थे।

तीन अन्य लोग होटल के साथवाले कमरे में ठहरे। डोबू जाति के साथ आए दोनों लोगों को रानी ताशा ने वापस भेज दिया था। सोमारा, सोमाथ और रानी ताशा एक ही कमरे में रुके होटल में, जो कि अन्य कमरों से बड़ा था और उसमें दो डबल बेड थे। उन्होंने जो कपड़े पहन रखे थे, उन्हें डोबू जाति के लोग ही लाए थे और रास्ते में लड़कियों को बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहने देखकर रानी ताशा भी बढ़िया कपड़े पहनना चाहती थी।

रानी ताशा और सोमारा बारी-बारी नहाईं। वो ही कपड़े पहन लिए।
"बबूसा कहां मिलेगा रानी ताशा?" सोमारा ने व्याकुलता से पूछा।
"वो भी मिल जाएगा। ज्यादा आतुरता न दिखा। इन कपड़ों में तू बबूसा से मिलेगी।" रानी ताशा मुस्कराई।
सोमारा ने अपने कपड़े देखे फिर रानी ताशा को देखा।
"जहां कपड़े मिलते हैं, वहां जाएंगे। बढ़िया-से-बढ़िया ढेर सारे कपड़े लेंगे।" रानी ताशा ने कहा—"उन्हें पहनकर, मैं और भी सुंदर लगूंगी। तब राजा देव के पास जाऊंगी और कपड़ों को वापस सदूर ग्रह पर भी ले जाऊंगी।"
"आपको पता है राजा देव कहां हैं?"
"तेरा भाई महापंडित बताएगा। वो किसी तरह मुझे खबर कर देगा।"
"बबूसा, राजा देव के साथ ही है न?"
"हां। परंतु बबूसा मेरे लिए मुश्किलें खड़ी कर सकता है।"
"आप बबूसा की चिंता न करें। उसे मैं संभाल लूंगी।"
"न संभाल सकी तो उसके साथ मुझे कठोरता से पेश आना पड़ेगा।" कहते हुए रानी ताशा कुर्सी पर जा बैठी।
"बबूसा को संभालना मेरा काम है।" सोमारा ने विश्वास भरे स्वर में कहा।
"आप राजा देव से सबसे पहली क्या बात करेंगी रानी ताशा?"
"मालूम नहीं, तब मुंह से क्या निकलता है। कितने लम्बे वक्त के बाद मैं राजा देव को देख पाऊंगी। कितना अच्छा लग रहा है ये सोचकर, परंतु उन्हें उस जन्म का कुछ भी याद नहीं। वो मुझे पहचानेंगे कैसे?"
"आपने ही तो कहा था कि राजा देव को आपको देखते ही उस जन्म की याद आने लगेगी।"
"हां, महापंडित ने ये ही बताया था।" रानी ताशा के चेहरे पर गम्भीरता आ गई।
"मैं बताऊं मैं क्या कहूंगी बबूसा को देखते ही।"
"क्या?" रानी ताशा मुस्करा पड़ी।
"पूछूंगी कि उस लड़की से तेरा क्या रिश्ता है, जिसे तू डोबू जाति के योद्धाओं से बचा रहा है।"
"और बबूसा ने कहा कि वो उससे प्यार करता...।"
"तो मैं बबूसा का गला दबा दूंगी।" सोमारा पांव पटककर बोली—"वो हर जन्म में मेरा पति बना है तो इस जन्म में भी मेरा ही पति बनेगा। मैं उसे किसी और का नहीं बनने दूंगी। आप जल्दी चलिए न बाजार से कपड़े लेने...।"
"पहले कुछ खा लें। सफर काफी लम्बा था। सोमाथ...।" रानी ताशा

ने सोमाथ को देखा—"होटल वालों से कहो कि हमें कुछ खाने को दें। हमें नहीं पता इस बारे में यहां पर कैसे बात करनी है।"

"मैं अभी सब इंतजाम करता हूं रानी ताशा।" सोमाथ ने कहा और बाहर निकल गया।

सोमारा भी कुर्सी पर बैठ गई और कहा।

"राजा देव के बारे में सोचकर आपके दिल में तो गुलगुले उठ रहे होंगे।"

"हां। परंतु चिंतित भी हूं।" रानी ताशा ने सोच भरे स्वर में कहा—"मुझे वो वक्त कभी नहीं भूलता जब मैंने राजा देव के साथ बुरा व्यवहार किया था। कहीं वो वक्त राजा देव को सदूर ग्रह पहुंचने से पहले याद आ गया तो जाने राजा देव क्या कर दें।"

"आप राजा देव को सदूर पर जल्दी से ले जाइएगा। वहां मेरा भाई राजा देव के दिमाग का वो हिस्सा ही साफ कर देंगे, जहां उस जन्म की ये घटना दर्ज है। सबसे बड़ा सवाल तो राजा देव को यहां से ले जाने का है। एक बात कहूं रानी ताशा।"

"तुम मेरी सहेली हो कुछ भी कह सकती हो।"

"आपने उस जन्म में, तब बबूसा को धमकाया था, जब उसने आपसे धोमरा के बारे में एतराज जताया था। इस वजह से बबूसा आपसे बहुत नाराज है। बबूसा ने ये बात मुझसे की थी।"

"परंतु जब मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ तो मैंने बबूसा से माफी मांग ली थी।"

सोमारा खामोश रही।

"क्या तेरे को शक है कि बबूसा, तेरे कहने पर मानेगा नहीं, मेरे रास्ते से नहीं हटेगा।" रानी ताशा ने कहा।

"वो बात नहीं, मैं तो ऐसे ही कह रही थी।"

तभी सोमाथ ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"अभी खाने का सामान आ रहा है।"

▭ ▭

वो विजय बेदी था।

वो ही अपने बेदी साहब, जिनकी किस्मत ने उनसे दगा की। अपने ऑफिस से लंच के वक्त टहलने बाहर निकले थे सालों पहले कि बगल में मौजूद बैंक में डकैती चल रही थी और भागते वक्त एक लुटेरे ने लोगों को डराने के लिए यूं ही गोली चला दी जो कि विजय बेदी के माथे की तरफ से दोनों तरफ के दिमागों के हिस्से के बीच आ फंसी थी और उसके बाद तो विजय बेदी की दुनिया ही बदल गई थी। गोली अभी तक दिमागों के दोनों

हिस्सों के बीच फंसी हुई थी। यूं तो सब कुछ सामान्य था। डॉक्टरों का कहना था कि हो सकता है, इसी प्रकार जिंदगी बीत जाए और कुछ न हो परंतु अगर गोली ने अपनी जगह छोड़ दी तो जहर फैलने से कुछ ही घंटों में मौत हो जाएगी और बेदी साहब को अपनी जिंदगी बहुत प्यारी थी। उसके बाद से तो बेदी साहब का जैसे जिंदगी का मकसद ही बन गया कि दिमागों के बीचोबीच फंसी गोली को निकलवाना है। पता चला कि अगर लापरवाही से ऑप्रेशन किया गया तो तब भी उसकी मौत हो सकती है, ऐसे में पता चला कि ऐसे ऑप्रेशन करने में डॉक्टर वधावन एक्सपर्ट डॉक्टर हैं।

बेदी साहब ने डॉक्टर वधावन से मुलाकात की।

डॉक्टर वधावन ने 12 लाख रुपए मांगें ऑप्रेशन करने के ।

अब विजय बेदी के पास बारह लाख रुपए कहां से आते? वो तो जैसे-तैसे जिंदगी की गाड़ी चला रहा था नौकरी करके। भगवान ने उसे खूबसूरत चेहरा दिया, ऐसा कि लड़की देखे तो आह भर ले। इसके अलावा उसकी जमापूंजी कुछ नहीं थी। परंतु विजय बेदी गोली की वजह से बेमौत नहीं मरना चाहता था। ऐसे में उसने नौकरी छोड़ी और बारह लाख का इंतजाम करने में लग गया कि डॉक्टर वधावन से ऑप्रेशन कराकर, सिर के बीच फंसी गोली निकलवा सके। अब बारह लाख के इंतजाम की खातिर विजय बेदी ने बेहद हसीन, बेहद खतरनाक, बेहद ज्यादा मुसीबतों वाले गुल खिलाए (विस्तार से जानने के लिए पढ़िए अनिल मोहन के विजय बेदी सीरीज के पूर्व प्रकाशित छः उपन्यास—**1.खलबली, 2. चाबुक, 3.36 दिन, 4. नब्बे करोड़, 5. सच का सिपाही, 6. डमरू।**) बड़ी-बड़ी मुसीबतें मोल लेने पर भी बेदी साहब 12 लाख का इंतजाम नहीं कर सके। कभी दो-चार-पांच-सात लाख रुपया हाथ भी लगा तो वो खा-पीकर बराबर हो गया। बेदी ने इकट्ठा कर रखा पैसा डाक्टर वधावन के पास जमा कराना चाहा तो सनकी डाक्टर वधावन ने वो पैसा रखने से भी मना कर दिया कि उसके पास वो तभी आए जब बारह लाख उसके पास हो। तबसे विजय बेदी की जिंदगी में ऐसी भागदौड़ शुरू हुई कि उस भागदौड़ ने अब तक रुकने का नाम नहीं लिया था।

विजय बेदी साहब को अपने हैंडसम होने का पूरा एहसास था। उन्हें पता था कि लड़की उन्हें देखे तो वो आह जरूर भरती है, यहां तक कि शादीशुदा औरतें भी उनमें दिलचस्पी लेती हैं। ऐसे में बेदी साहब अपनी इस खूबी का फायदा जरूर उठाते रहे हैं और 12 लाख के इंतजाम की खातिर लड़कियों, औरतों को ही अपना शिकार बनाने की कोशिश करते रहे हैं, क्योंकि वो उसके लिए आसान शिकार महसूस होता है। औरतें जल्दी फंस जाती हैं उनके

चंगुल में। ये जुदा बात है कि इन्हीं औरतों के चक्कर में पड़कर बेदी साहब बड़ी-बड़ी मुसीबतों में फंसे। कई बार जान बचानी भी भारी पड़ने लगी। 12 लाख का इंतजाम करने की खातिर क्या-क्या नहीं सहा बेदी साहब ने। लेकिन विजय बेदी कभी मायूस नहीं हुए थे। उन्हें पूरा यकीन था कि जल्दी ही वो बारह लाख का इंतजाम कर लेंगे और वो दिन दूर नहीं जब डॉक्टर वधावन से ऑप्रेशन कराकर सिर में फंसी गोली निकलवा लेंगे और फिर चैन और शराफत से अपनी जिंदगी जिएंगे। सीधे-सादे विजय बेदी साहब अब सीधे नहीं रहे थे। 12 लाख के इंतजाम की कोशिशों ने उन्हें दुनिया के ऐसे रंग दिखाए थे कि चालाकी उनके भीतर आ गई थी। समझदारी भी आ गई थी। शिकार को ताड़ना भी आ गया था। अपने भोले और खूबसूरत चेहरे का फायदा उठाना भी आ गया था।

किसी औरत को शिकार बनाने या फिर कहें कि नया शिकार ढूंढ़ने की खातिर विजय बेदी ने इस शानदार होटल में प्रवेश किया था। शानदार सूट था शरीर पर। क्लीन शेव्ड चेहरा चमक रहा था। वो किसी रईस की तरह लग रहा था। जबकि उसके मन में चल रहा था कि ऐसी कोई लड़की या औरत पट जाए जो उसे बारह लाख थाल में सजाकर दे दे तो सारी मुसीबतें दूर हो जाएं। इसी फेर में उसकी निगाह रानी ताशा पर जा पड़ी थी। तब वो रिसैप्शन के सामने लॉबी में बैठा शिकार ही ताड़ रहा था।

रानी ताशा को देखते ही विजय बेदी स्तब्ध रह गया था।

लड़कियां-औरतें बेदी की दीवानी होती थीं परंतु वो रानी ताशा पर फिदा हो गया था।

ऐसी खूबसूरती उसकी नजरों के सामने से पहले न निकली थी। आंखें फाड़े वो रानी ताशा को देखता रह गया था। तब रानी ताशा के साथ सोमारा और सोमाथ थे। वो अपने लिए कपड़े खरीदने जा रहे थे। सोमारा पर तो उसने एक नजर भी नहीं डाली। अगर सोमारा अकेली होती तो तब विजय बेदी की निगाह उस पर अवश्य टिकती परंतु अब तो सोमारा उसे रानी ताशा के सामने फीकी नजर आ रही थी।

'बाई गॉड।' बेदी बड़बड़ा उठा—'क्या माल है। पैसे वाली लगती है। बारह लाख इससे हासिल हो सकता है।'

विजय बेदी तुरंत उठा और रिसैप्शन पर पहुंचा।

"हैलो।" बेदी मुस्कराकर रिसैप्शन पर मौजूद युवती से बोला—"उन मैडम को मैंने कहीं देखा है। क्या वो होटल में ठहरी हैं?"

"जी हां।"

"कौन से फ्लोर पर?" विजय बेदी ने पुनः पूछा।

"सैकंड फ्लोर, रूम नम्बर 218।"

"थैंक्यू मैडम।" बेदी ने कहा और वहां से हटकर रानी ताशा के पीछे चल पड़ा, जो कि होटल के बाहर की तरफ जा रही थी।

उसके बाद विजय बेदी ने रानी ताशा को अपनी निगाहों में ही रखा।

वो जहां-जहां गई। कपड़े खरीदे। सब देखता रहा। रानी ताशा के चेहरे पर से विजय बेदी की नजर नहीं हट रही थी और ये ही सोच रहा था कि ये पैसे वाली है। कोई तरकीब लगाकर बारह लाख इससे लिया जा सकता है। जब कपड़े खरीदकर रानी ताशा, सोमारा और सोमाथ होटल वापस लौटे तो विजय बेदी तब भी पीछे था।

▭ ▭

रानी ताशा सुंदरता का अद्वितीय पहचान लग रही थी। उसने और सोमारा ने नए-नए कपड़े खरीदे थे, उसके बाद पार्लर गई। सोमाथ पार्लर के बाहर खड़ा रहा। पार्लर ने भी उन्हें सजा दिया था। रानी ताशा इस वक्त जींस की पैंट और ढीली-सी स्कीवी पहने थी। उसके खुले बाल हवा में रह-रहकर लहरा रहे थे। जब भी वो कदम उठाती तो बाल उसी अंदाज में झटका खाते। हल्के रंग की लिपिस्टिक होंठों पर लगा रखी थी। उसकी खूबसूरती को चार चांद लग गए थे जैसे। लोग रानी ताशा को मुड़-मुड़कर देख रहे थे, ये महसूस करके रानी ताशा के चेहरे पर मोहक मुस्कान नाच उठती थी।

सोमारा भी कम नहीं लग रही थी। उसने भी कई कपड़े खरीदे थे और वो भी इस वक्त जींस की पैंट और ऊपर ढीले-से टॉप में थी। दोनों गजब ढा रही थीं। उनके साथ सोमाथ उनके कपड़ों के लिफाफे उठाए हुए था।

वे होटल पहुंचे।

रानी ताशा ने जब कमरे में कदम रखा तो गम्भीर दिखने लगी।

जबकि सोमारा खुश थी।

"सोमाथ।" रानी ताशा बेड पर बैठती कह उठी—"ये ग्रह हमारे ग्रह से सुंदर है।"

"जी हां रानी ताशा। मैंने भी ये बात महसूस की।"

"हमारे ग्रह पर ऐसा कुछ भी नहीं है, जो यहां है। बड़े-बड़े बाजार, बड़ी-बड़ी दुकानें, लम्बी-लम्बी सड़कें। उन पर दौड़ती गाड़ियां और सजे-संवरे लोग।" सोमारा कह उठी—"मेरा तो यहां से जाने का मन ही नहीं है।"

"ये ग्रह हमारे ग्रह से काफी आगे है। यहां का राजा जाने ये सब कैसे संभालता होगा।" रानी ताशा ने सोच-भरे स्वर में कहा—"हमारे ग्रह पर सब कुछ साधारण है। हम कहीं आने-जाने के लिए घोड़ों का इस्तेमाल करते

हैं, बग्गी पर जाते हैं, परंतु यहां तो सब कुछ बहुत तेजी से हो रहा है। सदूर और पृथ्वी में कितना फर्क है।"

"तब राजा देव ने पोपा का निर्माण किया था।" सोमारा कह उठी—"अगर राजा देव को वक्त मिला होता तो ग्रह के लिए वो और भी बहुत कुछ करते। शायद अब सदूर पर भी कारों जैसा कुछ दौड़ रहा होता। वहां भी लम्बी-लम्बी सड़कें होतीं और बड़े-बड़े बाजार होते। राजा देव हमेशा सदूर को बेहतर बनाने के लिए सोचते थे।"

रानी ताशा सोमारा को देखने लगी।

सोमारा कुछ क्षण तो खामोश रही फिर कह उठी।

"क्या मैंने कुछ गलत कह दिया रानी ताशा?"

"तूने ठीक कहा है सोमारा। गलती मैंने की जो राजा देव की कीमत नहीं समझी और धोखा दे दिया। मैं सदूर को नहीं संभाल सकती। राज-पाट संभालना राजा देव का ही काम था। मैं कभी भी सदूर को ठीक से नहीं संभाल सकी। मेरे से बहुत बड़ी गलती हो गई थी और अब उस गलती को मैं ठीक करने की कोशिश कर रही हूं राजा देव को वापस ले जाकर।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा—"अभी तक महापंडित ने राजा देव तक पहुंचने का कोई संकेत नहीं दिया। अब और रुकने का मन नहीं हो रहा। मैं फौरन राजा देव के पास पहुंच जाना चाहती हूं।" रानी ताशा की आंखों में आंसू चमक उठे।

"मैंने आपका दिल दुखा दिया रानी ताशा।" सोमारा ने गहरी सांस ली।

"तूने कुछ भी गलत नहीं कहा। राजा देव होते सदूर पर तो सदूर बहुत तरक्की कर लेता पृथ्वी की तरह। परंतु मैं पृथ्वी को अपना बनाने के बारे में सोचने लगी हूं। डोबू जाति की तरह हम पृथ्वी पर भी अपनी हुकूमत कायम कर दें तो दिल को सुकून मिलेगा।"

"ऐसा सम्भव है क्या?" सोमारा के होंठों से निकला।

"कुछ भी असम्भव नहीं। पृथ्वी के राजा को हम क्यों नहीं जीत सकते सोमारा। परंतु इसके लिए हमें सदूर पर जाकर तैयारी करनी होगी। फिर यहां आना होगा। इस बार हम यहां के राजा के बारे में पूरी जानकारी ले लेंगे और फिर हमले की तैयारी करेंगे।"

"परंतु रानी ताशा यहां इस ग्रह पर बहुत ज्यादा लोग हैं। हमारे ग्रह से भी ज्यादा। हम डोबू जाति से यहां तक आए हैं तो रास्ते में हमें लोग ही लोग दिखते रहे। ये ग्रह तो हमारे ग्रह से बहुत बड़ा है। इतने लोगों का हम कैसे मुकाबला कर सकते हैं?"

"इसका रास्ता तो राजा देव ही निकालेंगे।" रानी ताशा मुस्करा पड़ी।

"राजा देव?"

"हां। पहले राजा देव को सदूर पर ले जाऊंगी। सब ठीक हो जाएगा तो फिर राजा देव से पृथ्वी ग्रह के बारे में बात करूंगी। राजा देव पृथ्वी पर रहे हैं लम्बे समय से। ऐसे में वो बेहतर ढंग से बता सकेंगे कि पृथ्वी पर कैसे काबू पाया जाए...आह, ये क्या...।" रानी ताशा ने हाथ से अपना माथा पकड़ लिया।

"क्या हुआ रानी ताशा?" सोमारा जल्दी से उठी।

"मुझे बताओ क्या बात है।" सोमाथ एकाएक आगे आया।

उसी पल रानी ताशा सामान्य हो गई।

"आप ठीक तो हैं?" सोमारा पुनः बोली।

"मेरे मस्तिष्क में शब्दों की कुछ आकृतियां आ रही हैं। परंतु शब्द मुझे समझ में नहीं आ रहे। ये सब महापंडित ने किया है वो मुझे कोई इशारा दे रहा है।" रानी ताशा बोली—"अब एक ही आकृति मेरे सामने आ रही है। वो कोई शब्द है।"

"वो शब्द जिस आकृति में है, उसे किसी कागज पर उतारिए रानी ताशा।" सोमाथ ने कहा।

"कैसे उतारूं, कागज-पैन भी तो नहीं।"

"मैं अभी लाता हूं।" कहकर सोमाथ बाहर निकल गया।

"राजा देव से मिलने का समय करीब आता जा रहा है सोमारा।" रानी ताशा बोली।

"मैं बबूसा से मिलूंगी।" सोमारा खुश हो उठी।

"मेरे मस्तिष्क में शब्दों की जो आकृतियां आ रही हैं, वो जरूर राजा देव से सम्बंध रखती हैं।"

"वो वक्त कैसा होगा, जब मैं बबूसा को अपने सामने पाऊंगी।" सोमारा अपने सपनों में थी।

"मैं भी अब ऐसा ही सोचती हूं कि राजा देव जब मुझे अपने सामने पाएंगे तो उनका क्या हाल होगा। अगर वो मुझे पहचान गए तो खुशी से पागल हो जाएंगे अपनी ताशा को सामने पाकर।" रानी ताशा ने गहरी सांस ली।

"और तब उन्हें आपका दिया वो धोखा याद आ गया तो?"

"ऐसा मत कह। मेरी खुशियों पर चादर मत बिछा। राजा देव को कुछ भी याद नहीं आएगा और मैं उन्हें सदूर ग्रह पर वापस ले जाऊंगी और महापंडित सब कुछ ठीक कर देगा।"

तभी सोमाथ भीतर आया। हाथ में कागज पैन था जो कि उसने रानी ताशा को दिया।

रानी ताशा ने कागज पैन संभाल कर पलों के लिए आंखें बंद करके मस्तिष्क में उभरी शब्द की आकृति की तरफ ध्यान लगाया फिर आंखें खोलकर उसे कागज पर उतारा।

वो शब्द अब 9 लिखा था कागज पर।

फौरन बाद ही रानी ताशा कह उठी।

"अब आकृति बदल गई। दूसरा कुछ नजर आ रहा है।"

"वो भी लिखो।" सोमारा ने कहा।

रानी ताशा ने लिखा।

वो 8 का शब्द था।

इस तरह रानी ताशा मस्तिष्क में आती शब्दों की आकृतियों को सिलसिलेवार लिखती रही और ये काम दस अंको पर आकर थम गया। अब रानी ताशा के मस्तिष्क में कुछ नहीं आ रहा था।

रानी ताशा अपने द्वारा कागज पर लिखे गए शब्दों को देखने लगी।

"ये क्या है?" सोमारा ने पूछा।

"मैं नहीं जानती।" रानी ताशा ने कागज से नजरें हटाईं—"ये इस पृथ्वी की कोई भाषा है। सोमाथ।" रानी ताशा ने सोमाथ की तरफ वो कागज बढ़ाया—"यहां के लोगों से पता करो कि ये शब्द इस ग्रह पर क्या महत्त्व रखते हैं।"

सोमाथ वो कागज लेकर बाहर चला गया।

▭ ▭

एक घंटे बाद सोमाथ वापस लौटा।

"रानी ताशा।" सोमाथ ने कहा—"आपने जो शब्द लिखे हैं, वो यहां का मोबाइल नम्बर है। इससे दूसरे व्यक्ति से बात की जा सकती है जिसके पास ये नम्बर होगा। मैं किसी से फोन भी लाया हूं।" सोमाथ ने हाथ में दबा फोन आगे बढ़ाया—"ये नम्बर दबाकर, आप इस बटन को दबाएंगी तो दूसरी तरफ से कोई व्यक्ति बोलेगा।"

रानी ताशा और सोमारा की नजरें मिलीं।

"ये नम्बर किस व्यक्ति का है सोमाथ?" रानी ताशा ने पूछा।

"ये तो फोन करने पर ही पता चलेगा।"

"बबूसा का नम्बर होगा ये।" सोमारा एकाएक कह उठी।

रानी ताशा की आंखें सिकुड़ी कि एकाएक मुस्कराकर बोली।

"समझी। अब समझी। महापंडित ने मुझे राजा देव का नम्बर दिया है, ताकि मैं उनसे बात कर सकूं। मुझे फोन दो सोमाथ। ये राजा देव का ही नम्बर है। महापंडित ने मुझे राजा देव से बात करने का रास्ता दिखाया है।"

रानी ताशा ने सोमाथ से फोन लिया और वो कागज लिया जिस पर फोन नम्बर लिखा था। उन शब्दों को देख-देखकर रानी ताशा नम्बर मिलाने लगी। चेहरे पर गम्भीरता आ गई थी। फिर अंत में सोमाथ के कहे मुताबिक कॉलिंग बटन दबाया और फोन कान से लगा लिया। दूसरी तरफ बेल जाने लगी।

▭ ▭

"बबूसा।" धरा कह उठी—"सप्ताह हो गया, परंतु रानी ताशा अभी तक नहीं आई।"

"वो जरूर आएगी।" बबूसा ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

रात के आठ बज रहे थे। बबूसा और धरा बैठे समोसे खा रहे थे। बबूसा के कहने पर जगमोहन उनके लिए समोसे लाया था और साथ में कॉफी बनाकर दी थी। देवराज चौहान और जगमोहन भी कॉफी का प्याला लिए पास में बैठे थे कि अचानक ही धरा ने ये बात शुरू कर दी थी।

"परंतु अब तक तो उसे आ जाना चाहिए था।" धरा ने पुनः कहा।

"रानी ताशा जरूर आएगी। वो राजा देव को वापस पाने के लिए हर तरह का जुगाड़ लगा रही होगी।" बबूसा खाते-खाते बोला।

जगमोहन ने देवराज चौहान से कहा।

"इसकी सेवा करते-करते मैं थक गया हूं।"

"मुझे इसकी बातों पर भरोसा हो चुका है। ये गलत बंदा नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा।

"शुक्रिया राजा देव जो आपने मेरे लिए ये शब्द कहे।" बबूसा मुस्कराकर कह उठा।

"तुम चुप रहो।" जगमोहन ने मुंह बनाया—"अब मुझसे तुम्हारे काम नहीं होते।"

"रानी ताशा के आने पर सबसे ज्यादा मेरी जरूरत ही पड़ेगी।" बबूसा ने मुस्कराकर कहा—"तब तो...।"

उसी पल धरा का फोन बजा।

दूसरी तरफ सोलाम था और बबूसा ने उससे बात की।

"कुछ किया तुमने?" बबूसा ने फोन पर सोलाम से पूछा।

"हां। मैंने बहुत मेहनत लगाकर मुम्बई में मौजूद डोबू जाति के सब योद्धाओं को इकट्ठा किया है। मैंने उन्हें बताया कि किस तरह रानी ताशा डोबू जाति में आई और सब महत्त्वपूर्ण लोगों की जान लेकर डोबू जाति पर अपनी हुकूमत कायम कर ली है। पहले तो वो मेरी बात माने ही नहीं। वो यही कहते रहे कि ओमारू ने उन्हें बबूसा और लड़की को मारने भेजा है, वो काम पूरा करके ही वापस जाएंगे। परंतु मैंने यंत्र पर उनकी बात अगोमा

से कराई तो मामले की गम्भीरता का उन्हें पता चला, तब जाकर वो मेरी बात माने और मेरा साथ देने को तैयार हो गए।"

"ये तो खुशी की बात है।" बबूसा बोला—"वो कितने लोग हैं?"

"चौबीस।"

"काफी हैं। इससे हमारी ताकत काफी बढ़ जाएगी।" बबूसा सोच भरे स्वर में बोला।

"मैं इन सबको लेकर अपने ठिकाने की तरफ जा रहा हूं।"

"सीधे रानी ताशा के आदमियों के पास मत चले जाना।"

"हम दूर रहेंगे और इस बात की योजना बनाएंगे कि कैसे उनकी तरफ बढ़ा जाए। पहले हम वहां के हालात देखेंगे।"

"इन योद्धाओं के पास हथियार तो होंगे?" बबूसा ने पूछा।

"हथियार हैं। परंतु इतने भी ज्यादा नहीं हैं कि उन लोगों के साथ लड़ाई छेड़ी जाए।"

"मैं यंत्र द्वारा अगोमा से बात करूंगा कि क्या वो वहां से हथियार निकालकर तुम लोगों तक पहुंचा सकता है।"

"तुमने तो कहा था कि वहां हथियार एक कमरे में बंद हैं।"

"ये बात अगोमा ने ही मुझे बताई थी। अगर अगोमा हथियार लाकर नहीं दे सका तो तुम लोगों को नए हथियार बनाने पड़ेंगे। डोबू जाति के ठिकाने से मुनासिब दूरी पर अपना ठिकाना बना लेना। वहीं पर रहकर हथियार तैयार करो।"

"अगोमा से बात करूंगा कि क्या वो वहां से हथियार निकालकर हम तक पहुंचा सकता है।" उधर से सोलाम ने कहा।

"तुम बात कर लेना।"

"तुम कब आओगे हमारे पास?"

"यहां से फुर्सत पाते ही, तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा। डोबू जाति पर हम रानी ताशा की हुकूमत नहीं चलने देंगे।"

"हम उन्हें वहां से भगा देंगे।"

"सोलाम से पता करना कि वहां पर रानी ताशा के कितने लोग मौजूद हैं।"

बबूसा और सोलाम की बातचीत खत्म हो गई। धरा ने फोन वापस ले लिया।

"रानी ताशा अब हमसे ज्यादा दूर नहीं है।" बबूसा ने गम्भीर निगाहों से सब पर नजर मारी—"वो कई दिन से डोबू जाति के ठिकाने से निकली हुई है। अब तक तो मुम्बई पहुंच...।"

उसी पल देवराज चौहान के फोन की बेल बजने लगी।

"हैलो।" देवराज चौहान ने फोन पर बात की।

"ये-ये तो राजा देव की आवाज है।" दूसरी तरफ से रानी ताशा का कम्पन भरा स्वर देवराज चौहान के कानों में पड़ा।

"कौन बोल रहा है?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

जगमोहन की निगाह देवराज चौहान पर थी।

"र-राजा देव, म-मैं रानी ताशा, आपकी ताशा।" रानी ताशा का कम्पन भरा स्वर खुशी में डूबा था—"म-मैंने आवाज पहचान ली है आपकी। मैं आपकी दासी ताशा, जिसे आप दिल-जान से चाहते हैं। आपने-आपने पहचाना मुझे?"

देवराज चौहान ठगा-सा, फोन कान से लगाए बैठा रहा।

रानी ताशा के सुबकने का स्वर देवराज चौहान के कानों में पड़ता रहा।

"कितनी देर बाद मैंने आपकी आवाज सुनी है देव। मेरे कान तरस गए थे आपकी आवाज सुनने को। आपके बिना मैं पागल हो गई थी राजा देव। जब-जब भी महापंडित ने मेरा जन्म कराया, मैं आपकी तलाश में ही रही। आपको ही ढूंढ़ते रह गई। महापंडित ने मुझे बताया था कि आप जिंदा हैं तो मैंने आपको वापस लाने का फैसला कर लिया। अब आपको लेने के लिए ही सदूर ग्रह से पृथ्वी ग्रह पर आई हूं। मेरे देव, अपनी ताशा को भूल तो नहीं गए। मैं-मैं...।"

"ताशा?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

बबूसा चौंककर देवराज चौहान को देखने लगा।

जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

धरा ने समोसा खाना छोड़ दिया।

"देव, मेरे देव।" उधर से ताशा का थरथराता स्वर देवराज चौहान के कानों में पड़ा—"आप कहां हैं देव?"

"ताशा...म-मैंने तुम्हें पहचाना नहीं।" देवराज चौहान के होंठों से निकल गया।

"ये क्या कह रहे हो देव, अपनी ताशा को नहीं पहचाना...आप मुझे कितना प्यार करते थे। मेरे बिना एक पल भी नहीं रहते थे। आपकी जान तो मेरे में बसी थी देव, फिर आप मुझे भूल कैसे सकते हैं।"

"म-मैंने पहचान लिया।" देवराज चौहान कह उठा—"तुम ताशा... ओह—नहीं पहचाना, मैं नहीं जानता तुम कौन हो।"

"मैं ताशा हूं। आपकी पत्नी, आपकी रानी। आप सदूर ग्रह के राजा थे, आप मेरे सब कुछ थे। आप मुझे सदूर ग्रह की सबसे खूबसूरत लड़की मानते

थे। मेरे प्रेमी थे और मैं आपकी थी राजा देव। आपकी ताशा—अभी-अभी आपने कहा था कि आप मुझे पहचान गए हैं। कहा था न, आप सच में मुझे पहचान गए हैं, याद आया कि सदूर ग्रह पर हम...।"

"हां-हां ताशा हो तुम—ताशा—पर कौन ताशा?" देवराज चौहान परेशानी भरे स्वर में कह उठा—"मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा। तुम्हारी आवाज मेरे दिमाग में हलचल पैदा कर रही है, मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा...।"

"सोचो देव, मेरे बारे में सोचो—मैं याद आ जाऊंगी। ताशा हूं मैं आपकी सबसे प्यारी।" उधर से रानी ताशा सिसक उठी—"अब कितनी कठिनाइयों से मैंने आपको तलाशा है और आप मुझे भूल गए...।"

"ताशा...।" देवराज चौहान बुदबुदाया।

"आपकी ताशा, देव। आप तो मेरे दीवाने हुआ करते थे। इतने दीवाने कि मैं आपसे तंग आ जाया करती थी और खुद को कमरे में बंद कर लिया करती थी। मुझे वो ही देव चाहिए। बोलो देव, मुझे वो ही प्यार दोगे न जब हम...।"

"हां-हां वो ही प्यार दूंगा।" देवराज चौहान व्याकुलता से कह उठा—"पर तुम कौन हो, मैं-मैं तुम्हें पहचान क्यों नहीं रहा? तुम्हारी आवाज मेरे दिमाग में खलबली क्यों पैदा कर रही है। मैं अचानक परेशान क्यों हो गया हूं।"

"मेरे देव। मुझसे मिलो। मुझे अपनी बांहों में ले लो। मैं तुम्हारी चौड़ी छाती पर सिर रखकर सोना चाहती हूं। याद है जब मैं तुम्हारी छाती पर सिर रखकर सो जाया करती थी तो तुम घंटों नहीं हिलते थे कि कहीं मेरी नींद खराब न हो जाए। तुम्हारे प्यार का दीवानापन मैं कभी नहीं भूल सकी। अब मुझे प्यार का महत्त्व समझ में आया तो तुम अपनी ताशा को भूल गए देव।"

"ताशा।" देवराज चौहान सोचों में गुम कह उठा—"तुम्हारी आवाज-आवाज मुझे पहचानी-सी लगती है।"

"ओह, आप मेरी आवाज को पहचान रहे हैं तो मुझे भी पहचान लेंगे। आपकी ताशा आपके पास ही है। आपके बेहद करीब, आपको मेरे जिस्म की महक बहुत अच्छी लगती थी याद है देव, आप मुझे तंग किया करते थे। छेड़ा करते थे फिर मुझे बांहों में भर लेते थे और कसकर दबा लेते थे ओह, कितना अच्छा था वो वक्त। वो वक्त फिर वापस आ जाएगा देव, सब ठीक हो जाएगा। हम अब कभी भी जुदा नहीं होंगे। तब मैं आपके प्यार को ठीक से समझ नहीं सकी और भूल कर बैठी। लेकिन अब मुझसे कोई भूल नहीं होगी। हम बहुत खुश रहेंगे देव। सदूर ग्रह को आपकी जरूरत है। वो राजा देव की वापसी चाहते हैं। आप मेरे साथ वापस अपने सदूर पर...।"

"ताशा।" देवराज चौहान का स्वर कांप उठा।

"देव, मेरे देव, मुझे बताओ आप कहां पर हैं, मैं आपके पास आती हूं।"
"हां-हां।" देवराज चौहान व्याकुलता से बोला—"मैं तुम्हें अपना पता बताता हूं तुम...।"
तभी बबूसा ने बाज की तरह झपट्टा मारा और देवराज चौहान का फोन ले लिया।
"इसे बंद कर लो।" बबूसा ने फोन धरा को दिया।
धरा ने फोन बंद कर दिया।
देवराज चौहान, बबूसा को देखने लगा। उसके चेहरे पर परेशानी थी।
जगमोहन चुपचाप बैठा दोनों को देखने लगा।
"ये आप क्या कर रहे हैं राजा देव। रानी ताशा को अपना पता बता रहे हैं।" बबूसा कह उठा।
"तुमने मेरा फोन क्यों छीना?" देवराज चौहान ने नाराजगी से कहा।
जगमोहन की निगाह देवराज चौहान पर जा टिकी।
देवराज चौहान व्याकुल था।
धरा भी देवराज चौहान को देखने लगी थी।
"आप रानी ताशा से बात कर रहे थे न?" बबूसा बोला।
"ताशा?" देवराज चौहान कह उठा—"ये नाम सुना हुआ लगता है। मुझे लगता है मैंने उसकी आवाज पहले भी सुन रखी है।"
"किसकी?" जगमोहन कह उठा।
"ताशा की आवाज।" देवराज चौहान कह उठा—"मैंने सुन रखी है वो आवाज।"
"कहां?"
"पता नहीं। याद नहीं आ रहा, परंतु मैंने उसकी आवाज सुन रखी है। उससे बात करके मुझे अच्छा लग रहा था।" देवराज चौहान खोया-खोया-सा कह उठा—"तुमने मुझसे फोन क्यों ले लिया?"
"रानी ताशा की आवाज सुनते ही आप पर कुछ प्रभाव हो गया है राजा देव।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"महापंडित ने ये नई चाल चली है कि रानी ताशा से आपको फोन करा दिया। ताकि उसकी आवाज का प्रभाव आप पर हो सके। आप खतरे में घिरते जा रहे हैं राजा देव। रानी ताशा मुम्बई पहुंच चुकी है और फोन करके अपनी पहली चाल भी चल दी है उसने।"
'ताशा।' देवराज चौहान सोच भरे अंदाज में बड़बड़ाया।
जगमोहन की निगाह एकटक देवराज चौहान पर थी।
"क्या हुआ?" जगमोहन ने पूछा।

"वो—वो ताशा थी। ताशा...।" देवराज ने खोए अंदाज में जगमोहन को देखा।

"कौन ताशा?"

"मालूम नहीं। लेकिन मैं उसे जानता हूं। मैं उसकी आवाज को पहचान पा रहा हूं। मैंने उसकी आवाज...।"

"तुम्हें नगीना भाभी की आवाज भूल गई क्या?" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"नगीना?" देवराज चौहान बोला—"नहीं, मैं ताशा की बात कर...।"

"मैं नगीना भाभी की बात कर रहा हूं।" जगमोहन का स्वर सख्त हो गया।

देवराज चौहान जगमोहन को देखने लगा। चेहरा उलझन से भरा था।

"देवराज चौहान को क्या हुआ?" धरा ने बबूसा से पूछा।

"रानी ताशा की आवाज का प्रभाव राजा देव पर असर दिखा रहा है। ये सब महापंडित की चाल है।" बबूसा गुस्से से बोला।

"होश में आओ।" जगमोहन बोला—"तुम...।"

तभी धरा के पास रखा देवराज चौहान का फोन बज उठा।

"ताशा।" देवराज चौहान बदहवास-सा कहते हुए उठा और फोन की तरफ झपटा।

"राजा देव, होश में आइए।" बबूसा फुर्ती से सामने आ गया।

जगमोहन खड़ा हो गया।

बबूसा के सामने आ जाने से देवराज चौहान का आगे बढ़ना रुक गया।

फोन की बेल बजती जा रही थी।

"मेरे सामने से हट जाओ।" देवराज चौहान गुर्राया।

"नहीं राजा देव। आप रानी ताशा की आवाज नहीं सुनेंगे। ये महापंडित की चाल है। रानी ताशा की आवाज आपके होश छीन रही है। आप फिर रानी ताशा के दीवाने हो जाएंगे और उसकी धोखेबाजी आपको याद नहीं आएगी। इसी वक्त के लिए तो मैं आपके साथ था कि रानी ताशा और महापंडित अपनी चाल में सफल न हो सकें। इन हालातों से आपको सिर्फ मैं ही बचा सकता हूं कि रानी ताशा आपको अपने 'बस' में न कर सके।"

"हट जाओ।" एकाएक देवराज चौहान गुर्राया और जोरों का घूंसा बबूसा के चेहरे पर मारा।

उस घूंसे का बबूसा पर कोई असर नहीं हुआ और बबूसा अपनी जगह खड़ा रहा। फोन बज रहा था। जगमोहन गम्भीर निगाहों से देवराज चौहान को देख रहा था। देवराज चौहान ने बबूसा को अपने सामने से हटाने की कोशिश करते आगे बढ़ना चाहा। तभी बबूसा का हाथ उठा और देवराज चौहान की

कनपटी पर जा पड़ा। देवराज चौहान के होंठों से कराह निकली। वो लहराकर नीचे गिरने को हुआ कि बबूसा ने उसे थामा और किसी खिलौने की तरह कंधे पर लादकर, देवराज चौहान के बेडरूम की तरफ बढ़ गया। फोन बजना बंद हो गया। धरा हैरत से बैठी ये सब देखे जा रही थी। बबूसा ने बेहोश देवराज चौहान को बेड पर लिटाया तो पीछे से जगमोहन भी आ पहुंचा। उसके चेहरे पर गम्भीरता छाई हुई थी। बबूसा पलटा और जगमोहन को देखकर बोला।

"देखा तुमने राजा देव का हाल। अभी तो राजा देव ने रानी ताशा की आवाज ही सुनी है। ये सोचो कि अगर रानी ताशा को राजा देव सामने देख लें तो राजा देव किस हाल में पहुंच जाएंगे।"

जगमोहन की निगाह बेहोश देवराज चौहान पर थी।

"इसमें राजा देव की कोई गलती नहीं है।" बबूसा ने पुनः कहा—"ये सब महापंडित की शक्तियों का कमाल है। मुझे तो ये ही बताया गया था कि राजा देव, रानी ताशा को देखने पर, उसके दीवाने हो सकते हैं। परंतु अब ये बात खुल गई कि रानी ताशा के अंग-अंग में, यहां तक कि उसकी आवाज में भी, महापंडित ने ऐसा कुछ डाल दिया है कि राजा देव अपनी सुध-बुध खो बैठे। वो ही हो रहा है, जो मैं शुरू से कहता आ रहा हूं।"

"इसका हल क्या है?" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"राजा देव को रानी ताशा से दूर रखा जाए।" बबूसा ने कहा।

"ये सम्भव नहीं।"

"क्यों?"

"रानी ताशा तो कभी भी देवराज चौहान के सामने आ सकती है।" जगमोहन बोला।

"इसी बात से तो हमें बचाना है राजा देव को।"

"हम कब तक बचाते रहेंगे? ये कब तक चलेगा। इसका अंत कहां पर होगा?" जगमोहन ने पूछा।

"मैं नहीं जानता ये कब खत्म होगा।" बबूसा का स्वर गम्भीर हो गया—"रानी ताशा, राजा देव को लिए बिना पीछे हटने वाली नहीं। मैं रानी ताशा के जिद्दी स्वभाव को जानता हूं।"

"तुम्हारा मतलब कि रानी ताशा, देवराज चौहान को ले जाने में सफल रहेगी।"

"बबूसा के होते रानी ताशा सफल नहीं हो सकेगी।" बबूसा दांत भींचकर कह उठा।

"तुम क्या करोगे?"

"रानी ताशा के आसपास मौजूद लोगों को खत्म करना होगा। जिससे कि

रानी ताशा की ताकत कम हो जाए, साथ ही मुझे राजा देव को भी संभाले रखना होगा कि रानी ताशा के जाल में न फंस सकें। अभी तुमने देखा ही है कि क्या हुआ है। इसी आने वाले वक्त का डर था मुझे, परंतु ये वक्त तो आना ही था। सिर्फ मैं ही महसूस कर सकता हूं कि आने वाले वक्त में क्या हो सकता है। रानी ताशा के साथ सोमाथ है जो कि मुझसे ताकतवर है। इस राह पर मेरे लिए परेशानियां कम नहीं हैं परंतु राजा देव के लिए मुझसे जो हो सकेगा, वो मुझे करना ही होगा। इस वक्त मुझे राजा देव का साथ देना है। अगर राजा देव को उस जन्म की याद आ जाती है तो फिर शायद सब कुछ ठीक हो जाए। राजा देव तब स्वयं ही सब कुछ संभाल लेंगे। लेकिन रानी ताशा के रूप का जादू राजा देव पर चल सकता है। महापंडित भी कम नहीं है। उसने कई इंतजाम कर रखे होंगे कि रानी ताशा के सामने आने पर राजा देव उसके दीवाने हो...।"

"ये कैसे सम्भव है?" जगमोहन कह उठा।

"महापंडित के लिए कुछ भी असम्भव नहीं। उसके पास ढेरों अजब-गजब मशीने हैं; तुम शायद मेरी बात समझ न सको लेकिन बता देता हूं कि जैसे कोई किसी को देखकर उसका दीवाना हो जाता है, इसका मतलब उसके चेहरे पर ऐसी कोई ताकत है, जो दीवाना होने वाले के दिमाग पर असर कर सकती है। ऐसे ही महापंडित ने रानी ताशा के जन्म के वक्त उसके चेहरे पर ऐसी ताकत डाल दी थी कि राजा देव जब भी उसे देखें तो उसके दीवाने हो जाएं। रानी ताशा की आवाज में ऐसा जादू कर दिया महापंडित ने कि उसे सुनकर राजा देव सुध-बुध खो बैठें। जैसा कि अब हुआ।"

"देवराज चौहान तो अपनी पत्नी को भी भूल गया।" जगमोहन बोला।

"वो रानी ताशा की आवाज में छाए जादू का असर था।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"तूफान की आहट आ गई है तूफान भी आएगा। मैं नहीं जानता, आने वाले वक्त में क्या होने वाला है। महापंडित अपनी शक्तियों का रानी ताशा द्वारा इस्तेमाल कर रहा है। महापंडित बहुत विद्वान है, वो अपनी मशीनों द्वारा ही सब खेल खेलता है उसके खेल से बच पाना आसान नहीं होगा।"

जगमोहन, देवराज चौहान को देखता रहा। सोचता रहा।

बबूसा बाहर निकल धरा के पास पहुंचा तो धरा कह उठी।

"देवराज चौहान बेहोश है?"

"हां।"

"मैंने सोचा कहीं तुमने उसकी जान न ले ली हो। तुममें तो बहुत ताकत है बबूसा, जरा सा हाथ मारकर उसे बेहोश कर दिया।"

बबूसा ने कुछ कहा और सोफा चेयर पर जा बैठा।

रानी ताशा की आंखों में आंसू थे। फोन बंद होते ही उसके बेपनाह खूबसूरत चेहरे पर उदासी छा गई। वो उदास-सी दिखने लगी थी। सामने बैठी सोमारा फौरन कह उठी।

"क्या हुआ रानी ताशा?"

"राजा देव मुझे पहचान नहीं रहे सोमारा। इससे बड़ा मेरा क्या दुर्भाग्य हो सकता है।" रानी ताशा भीगे स्वर में बोली।

"वो राजा देव ही थे न?"

"हां, वो आवाज राजा देव की ही थी। राजा देव की आवाज को मैं कैसे भूल सकती हूं। उस आवाज को सुनकर मुझे कितनी शांति मिली, जैसे मेरे भाग्य के दरवाजे खुल गए।" रानी ताशा की आंखों से आंसू निकलकर गालों पर आ गए—"तीन जन्मों के बाद, चौथे जन्म में मैं राजा देव की आवाज सुन पाई हूं। मैंने कितना बुरा काम किया था जो राजा देव को धोखा दिया। पर मैंने इसकी सजा भी बहुत भुगती है। हर जन्म में राजा देव के बिना तड़पी हूं। रोई हूं...।"

"तो क्या राजा देव ने आपको जरा भी नहीं पहचाना?"

"कभी-कभी वो पहचान रहे थे फिर तुरंत ही अंजाने बन जाते। आह, मैं राजा देव के पास जाना चाहती हूं सोमारा।" रानी ताशा गालों पर आ चुके आंसुओं को साफ करती कह उठी—"अब उनके बिना मैं जी नहीं पाऊंगी।"

"क्या कहा राजा देव ने?"

"वो मुझे पहचानने की कोशिश कर रहे थे। बार-बार मेरा नाम ले रहे थे। मैं उनके सामने जा खड़ी होऊं तो वो मुझे जरूर पहचान लेंगे। मैं उन्हें सब याद दिला दूंगी।" रानी ताशा तड़प उठी—"अब मुझसे रहा नहीं जाता, मैं राजा देव के पास जाऊंगी सोमारा।"

"राजा देव अब आपके बारे में ही सोच रहे होंगे।"

"पता नहीं वहां क्या हुआ है।"

"मैं समझी नहीं रानी ताशा?"

"वो मुझे अपना पता बताने वाले थे तभी फोन बंद हो गया। मैंने दोबारा फोन किया परंतु उन्होंने बात नहीं की।"

"ऐसा क्यों किया राजा देव ने?"

"शायद बबूसा कोई अड़चन डाली हो।" रानी ताशा भीगे स्वर में कह उठी—"बबूसा ने ऐसी किसी कोशिश के लिए ही राजा देव के पास है। वो जरूर रुकावटें डालेगा। मेरे और राजा देव के मिलन के दरम्यान। बबूसा

को ऐसा नहीं करना चाहिए। राजा देव को खोने के बाद मैंने कितनी सजा भुगत ली। अब बबूसा मेरी सजा का वक्त और क्यों बढ़ाना चाहता है।"

"बबूसा की आप चिंता न करें रानी ताशा। उसे मैं रास्ते पर ले आऊंगी। सोमारा पर भरोसा रखिए।"

अब तक खामोश खड़ा सोमाथ कह उठा।

"मुझे कहें रानी ताशा। मैं बबूसा की गर्दन तोड़कर, राजा देव को आपके पास ले...।"

"खबरदार जो बबूसा के बारे में कुछ गलत कहा।" सोमारा गुस्से से भड़क उठी।

"आप हुक्म दीजिए रानी ताशा?" सोमाथ ने पुनः रानी ताशा से कहा।

"बबूसा, भटक चुका है सोमाथ। उसे समझाने की जरूरत है। यूं भी उसकी मौत को राजा देव कभी पसंद नहीं करेंगे। मैं बबूसा से बात करूंगी। उसे समझाकर रास्ते पर लाऊंगी। सोमारा उसे रास्ते पर ले आएगी। उसे कुछ नहीं कहना है।" रानी ताशा बोली।

"तो राजा देव को तलाश करके यहां ले आऊं?" सोमाथ ने कहा।

"उसका पता ही कहां है जो...।"

"मैं बाहर जाकर लोगों से राजा देव के बारे में पूछूंगा। उनका पता मिल...।"

"राजा देव तो वो हमारे हैं। इस पृथ्वी पर तो वो किसी और नाम से पुकारे जाते होंगे। वैसे भी पृथ्वी ग्रह पर इस तरह किसी को नहीं ढूंढ़ा जा सकता। यहां बहुत ज्यादा लोग रहते हैं। महापंडित अवश्य राजा देव का पता बता सकता है।"

"भैया ने आपको राजा देव का फोन नम्बर क्यों दिया?" सोमारा ने पूछा।

"कह नहीं सकती कि महापंडित के मन में क्या है।"

"तो भैया से पूछ लीजिए।"

"यहां पर मेरे पास वो ही यंत्र है, जिससे मैं पोपा में किलोरा से बात कर सकती हूं। महापंडित से मैं सीधे बात नहीं कर सकती। किलोरा से ही कहना होगा कि वो मेरे सवाल महापंडित से पूछे।" रानी ताशा ने कहा।

"भैया से आप राजा देव का पता लीजिए, हम वहां चलते हैं। मैं बबूसा से भी मुलाकात कर लूंगी। आप राजा देव के पास बैठकर उसका हाथ अपने हाथों में लेकर, आराम से अपनी बात उन्हें समझा सकती हैं।

"सोमारा।" रानी ताशा के होंठों से सिसकारी निकली।

"क्या हुआ?"

"वो वक्त कितना अच्छा होगा, जब मैं राजा देव का हाथ अपने हाथ में लूंगी।" रानी ताशा खुशी से कह उठी।

"मैं तो कहती हूं वो वक्त जल्दी से आए।"

"राजा देव से प्यार किए, कितने जन्म बीत गए हैं। अब तो सब कुछ सपना-सा लगता है।"

"आपने अभी राजा देव की आवाज सुनी न?"

"हां।"

"महापंडित ने चाहा तो जल्दी ही आप राजा देव से मिलेंगी भी।" सोमारा ने मुस्कराकर कहा—"और मैं बबूसा से।"

"मैं उस वक्त को तरस रही हूं। तू बता अब राजा देव क्या सोच रहे होंगे?"

"आपके बारे में कि रानी ताशा कौन है, उसकी आवाज कितनी मधुर है और वो देखने में कितनी हसीन होगी।"

"ओह सोमारा...।" रानी ताशा ने आंखें बंद कर लीं।

तभी वहां महापंडित का स्वर गूंजा।

"मैं हाजिर हूं रानी ताशा।"

"भैया।" सोमारा के होंठों से निकला।

रानी ताशा ने तुरंत आंखें खोलीं और आस-पास देखा।

"तुम कहां हो महापंडित?"

"मेरी परछाई है सामने वाली दीवार पर।"

रानी ताशा, सोमारा और सोमाथ की निगाह सामने की दीवार की तरफ उठीं।

वहां मात्र छः इंच की छोटी-सी काले रंग की परछाई को हिलते पाया।

"तुम इतने छोटे क्यों हो गए भैया?" सोमारा ने पूछा।

"आप मेरे से कुछ पूछना चाहती हैं रानी ताशा?" महापंडित की आवाज आई।

"तुमने मुझे राजा देव का फोन नम्बर क्यों दिया? तुम तो राजा देव का पता देने वाले थे।"

"बेशक रानी ताशा। परंतु मेरी मशीनों ने मुझे एहसास दिलाया कि आपका सीधे-सीधे राजा देव के पास चले जाना ठीक नहीं होगा। ऐसे में मैंने आपकी आवाज में ऐसी शक्ति दे दी कि जिसे महसूस करके राजा देव को उस जन्म को महसूस कर सके।"

"सच में? राजा देव को याद आएगा कि ताशा उनकी पत्नी थी और वो मुझे कितना चाहते थे।"

"कह नहीं सकता कि क्या याद आएगा परंतु कुछ बातें तो याद आएंगी ही। ये बेहतर होगा कि राजा देव जब आपके सामने आएंगे तो आप उनके लिए पराई नहीं होगी, कुछ जानकारी तो होगी आपकी उन्हें।"

"उन्हें मेरी याद आएगी कि मैं...।"

"कुछ भी हो सकता है रानी ताशा। परंतु आपको कुछ वक्त धैर्य से निकालना होगा।"

"तुम मुझे राजा देव का पता क्यों नहीं दे देते। मैं सीधे उनके पास पहुंच जाऊं। मैं उन्हें देखना चाहती...।"

"जल्दी मत कीजिए रानी ताशा, अभी राह में बहुत परेशानियां हैं। आने वाला वक्त आसान नहीं होगा।"

"मुझे राजा देव मिल जाएंगे न?"

"सदूर ग्रह और पृथ्वी ग्रह में दूरी ज्यादा है, इस वजह से मैं ज्यादा बातें स्पष्ट नहीं जान पा रहा हूं। मेरी मशीनें बताते-बताते एक खास जगह पर आकर रुक जाती हैं। कई सवालों का जवाब तो अभी मेरे पास भी नहीं है। आपको सब्र से काम लेना होगा। सही वक्त का इंतजार करना होगा, परंतु वो इंतजार ज्यादा लम्बा भी नहीं रहेगा। आप जल्दी ही राजा देव से मुलाकात करेंगी। मैं आप ही के काम में लगा हूं इसके अलावा मुझे और कोई काम नहीं है।"

"अब राजा देव के बिना रह पाना कठिन हो रहा है।" रानी ताशा ने आंसू साफ किए।

"मैं जल्दी ही राजा देव से आपकी मुलाकात करवाऊंगा।" महापंडित की आवाज आई।

"बबूसा अड़चन डाल सकता है।" रानी ताशा ने कहा।

"मुझे मशीनों ने बताया कि आपकी और राजा देव की बातचीत में बबूसा ने ही समस्या खड़ी की, परंतु बबूसा की अक्ल सीधी करने के लिए सोमाथ आपके साथ है। मिलने पर बबूसा को समझाइए नहीं माने तो सोमाथ को बबूसा के सामने कर देना। सोमारा।"

"हां भैया।"

"बबूसा का खयाल मन से निकाल दो। मैं उससे बेहतर युवक तुम्हारे लिए...।"

"आप जानते ही हैं भैया कि मेरा क्या जवाब होगा।" सोमारा बोली—"बबूसा ही मुझे हर जन्म में अच्छा लगता है।"

"परंतु इस बार उसकी परवरिश पृथ्वी ग्रह पर हुई है। उसमें कई बदलाव हैं इस जन्म में।"

"मुझे वो स्वीकार है, बेशक वो कैसा भी हो।"
"वो तेरे को मुसीबतों में डाल देगा।"
"मुझे बस उसके साथ ही रहना है। उसके साथ रहकर मैं खुश रहूंगी।"
"नादान। तू बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ने जा रही है। मशीनों ने मुझे तेरे बारे में सतर्क किया है।"
"आपकी मशीनों ने बताया कि मैं बबूसा से मिलूंगी?"
"बताया।"
सोमारा का चेहरा खिल उठा।
"बस भैया, आपने मुझे खुशी दे दी। मैं बबूसा के पास रहकर खुश हूं।"
"जब तू मुसीबत में पड़ी तो मैं तेरी सहायता नहीं कर पाऊंगा।" महापंडित का नाराज स्वर सुनाई दिया।
"मुझे आपकी सहायता की जरूरत नहीं पड़ेगी। बबूसा इस बार बहुत ताकतवर है।"
"मुझसे जुबान लड़ाना बहुत महंगा पड़ेगा सोमारा। बबूसा इस वक्त मुसीबतों का टोकरा सिर पर रखे हुए है।"
"मैं उसे पसंद करती हूं।" सोमारा ने शांत स्वर में कहा।
कुछ पल ठहरकर महापंडित की आवाज आई।
"तू कैसा है सोमाथ?"
"बहुत अच्छा। आपने मुझे बहुत अच्छा बनाया है।" सोमाथ मुस्कराकर बोला।
"तुमने रानी ताशा का ध्यान रखना है।"
"अवश्य महापंडित।"
"बबूसा ने परेशानियां पैदा करनी शुरू कर दी हैं। उसे सबक सिखा देना।"
"भैया।" सोमारा ने पांव पटककर कहा—"ये आप क्या कह रहे हैं।"
"महापंडित।" सोमाथ बोला—"तुमने मेरा दिमाग ऐसा बनाया है कि मैं हमेशा रानी ताशा की ही बात मानूं। ऐसे में मुझे रानी ताशा की तरफ से जो आदेश मिलेगा, वो ही मानूंगा।"
"रानी ताशा जानती है कि उन्हें कब क्या आदेश देना है।" महापंडित की आवाज सुनाई दी—"मैं जा रहा हूं रानी ताशा। आप राजा देव से कुछ बार और फोन पर बात कीजिए। इससे आपको फायदा होगा।"
उसके बाद महापंडित की आवाज नहीं आई।
रानी ताशा उसी पल देवराज चौहान का नम्बर मिलाने लगी।
"राजा देव को फोन कर रही हैं रानी ताशा?" सोमारा कह उठी।

"हां।" नम्बर मिलाने के बाद रानी ताशा ने फोन कान से लगा लिया—"मैं राजा देव की आवाज सुनने को बेचैन हो रही हूं। वो भी मेरी आवाज सुनने को तरस रहे होंगे। मैं कितनी पास पहुंच चुकी हूं राजा देव के।"

दूसरी तरफ बेल जाने लगी। जाती रही।

"अभी तक बात नहीं की राजा देव ने?" सोमारा पुनः बोली।

"वो जरूर करेंगे।" रानी ताशा के चेहरे पर गम्भीरता थी।

परंतु बेल जाती रही फिर फोन खामोश हो गया।

रानी ताशा ने फोन कान से हटा लिया। आंखों में आंसू आ गए।

"क्या हुआ?"

"राजा देव बात नहीं कर रहे। जरूर बबूसा ने अड़चन खड़ी की है। तभी राजा देव बात नहीं कर रहे। परंतु मैं भी राजा देव को फोन करती रहूंगी। उन्हें अपनी ताशा से बात करनी होगी। वो मेरे हैं और मैं उन्हें वापस सदूर पर ले जाऊंगी।" रानी ताशा के स्वर में भर्राहट आ गई—"मैं उनके बिना नहीं रह सकती। ये जुदाई अब और सहन नहीं होती। मुझे राजा देव का प्यार चाहिए। वो ही, वैसा ही प्यार जो कभी वो मेरे से किया करते थे और मैंने उनके प्यार की गम्भीरता को कभी महसूस नहीं किया। पर अब ऐसा नहीं होगा। वो जितना प्यार मुझसे करेंगे, उससे ज्यादा मैं उनसे करूंगी। बस एक बार राजा देव मुझे बांहों में ले लें।"

▭ ▭

देवराज चौहान के होंठों से कराह निकली।

रात के साढ़े दस बजे थे। जगमोहन पास ही में कुर्सी रखे बैठा था। उसके चेहरे पर गम्भीरता थी और देवराज चौहान को होश आते पाकर संभलकर बैठ गया। पुनः देवराज चौहान के होंठों से मध्यम-सी कराह निकली फिर उसने आंखें खोल दीं। चंद क्षण वैसे ही रहा फिर उठ बैठा। जगमोहन पर नजर गई।

"मैं यहां क्यों लेटा हूं?" देवराज चौहान ने जगमोहन से पूछा।

"तुम्हें पता है।" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा।

"मुझे? मुझे क्या पता है?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"तुम्हें कुछ याद नहीं?" जगमोहन ने होंठ सिकोड़े।

देवराज चौहान सोचता दिखा फिर बोला।

"मैं हाल में सब लोगों के साथ बैठा था, तब—तब फोन आया था, हां फोन बजा था—फिर—फिर क्या हुआ?" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा—"उसके बाद की कोई बात मुझे याद क्यों नहीं आ रही। मैं यहां कैसे पहुंचा?"

"हैरानी है कि तुम्हें कुछ याद नहीं।"
"आखिर हुआ क्या?"
"वो फोन रानी ताशा का आया था।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।
"रानी ताशा?" देवराज चौहान के होंठों से हैरानी से निकला—"वो रानी ताशा का फोन था?"
"हां।"
"तुम्हें कैसे पता?"
"तुम रानी ताशा से बातें करने लगे। तुमने कई बार उसका नाम पुकारा और...।"
"मुझे तो याद नहीं।"
"तुम उससे करीब—करीब दीवानों की तरह बातें करने लगे थे।"
"नहीं।" देवराज चौहान हक्का-बक्का रह गया।
"वो तुम्हें क्या कह रही थी ये तो पता नहीं, परंतु तुम उसकी बातों में डूबते जा रहे थे।"
"ऐसा हुआ तो मुझे कुछ याद क्यों नहीं?"
"मुझे भी हैरानी है कि तुम्हें सब पता होना चाहिए। रानी ताशा शायद प्यार-मोहब्बत की बातें कर रही थी। तुम्हारी बातों से तो ऐसा ही लगा। तुम बार-बार उसका नाम पुकार रहे थे। तुमने शायद ये भी कहा कि तुम्हारी आवाज सुनी है कहीं। कई बातें की उससे। तब मैंने तुम्हें नगीना भाभी की याद दिलाई।"
"तो?"
"तब तुम भूल चुके थे कि नगीना कौन है। तुम्हें सिर्फ ताशा ही याद थी। वो तुमसे तुम्हारा पता मांग रही थी। तुम पता देने वाले थे कि बबूसा ने तुमसे फोन छीन लिया। तुमने फोन वापस पाने के लिए झगड़ा किया। बबूसा को घूंसा मारा। तब बबूसा ने तुम्हें बेहोश करके यहां लिटा दिया। अब दो-ढाई घंटे बाद तुम होश में आए हो।"
"इतना कुछ हो गया और मुझे कुछ भी याद नहीं।"
"तुम रानी ताशा की आवाज सुनते ही जैसे 'खो' से गए थे। तुम्हें जाने क्या हो गया कि तुम अपने आप में नहीं रहे। जैसे वो तुम्हारे सिर पर सवार हो गई हो। तुम्हें सिर्फ वो ही वो नजर आ रही थी।"
"यकीन नहीं आता।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।
"तब से मैं तुम्हारे पास बैठा इन्हीं बातों पर विचार कर रहा हूं।" जगमोहन गम्भीर था—"तुम दीवाने जैसे बन गए थे ताशा के। ये बात बबूसा कब से कह रहा था कि तुम पहले भी कभी रानी ताशा के दीवाने थे

और अब भी वो ही कुछ न हो जाए। अभी तक बबूसा की बात ठीक से मैं समझ नहीं पा रहा था, परंतु अब तुम्हारी हालत देखकर सब कुछ समझ गया। बबूसा की कही एक-एक बात सही है। तुम सच में खतरे में पड़ते जा रहे हो। रानी ताशा मुम्बई आ गई है तुम्हारे लिए। वो तुम्हें अपने सदूर ग्रह पर वापस ले जाना चाहती है। ये खतरनाक बात है। अब मैं मानता हूं कि सच में कोई सदूर ग्रह है, जहां दुनिया बसती है जहां कभी तुम रहा करते थे और रानी ताशा तुम्हारी पत्नी हुआ करती थी। महज एक फोन ने तुम्हारी जो हालत बना दी, वो खतरे की घंटी है हमारे लिए। तुम्हारी हालत अचानक बदल गई थी। मैं स्तब्ध रह गया था तब और...।"

"पर मुझे कुछ याद क्यों नहीं आ रहा?" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में कह उठा।

"ये मामला अब रुकेगा नहीं, और आगे बढ़ेगा।" जगमोहन ने चिंता से कहा।

"क्या मतलब?"

"रानी ताशा तुम्हें अपने साथ लेकर जाना चाहती है। उसके एक फोन ने हमें हिलाकर रख दिया। इसी से समझा जा सकता है कि वो कितनी ताकत रखती होगी। अगर बबूसा पास में न होता तो जाने क्या हो जाता। बबूसा उस वक्त तुम्हारी बातों से भांप गया था कि क्या हो रहा है और तुम्हारा फोन छीन लिया। तुम रानी ताशा को अपना पता बताने जा रहे थे। अगर बता देते तो अब तक रानी ताशा यहां पहुंच गई होती।"

देवराज चौहान बेड से उठकर कुर्सी पर आ बैठा। वो गम्भीर दिखा। उसने सिग्रेट सुलगाई।

जगमोहन उसे देखता रहा।

"तो रानी ताशा आ गई, जिसका कि बबूसा इंतजार कर रहा था।" देवराज चौहान बोला।

"बबूसा ने हर बात सच कही है। इसमें कोई शक नहीं है।"

"रानी ताशा के पास मेरा फोन नम्बर कहां से आया?" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"ये तो स्पष्ट है कि रानी ताशा अकेली नहीं होगी।"

"उसके साथ सोमाथ है, बबूसा का कहना है कि वो बहुत ताकतवर है। इसके अलावा भी रानी ताशा के पास और लोग होंगे।"

"उसके पास मेरा नम्बर...।"

"बात नम्बर की नहीं है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"बात

ये है कि वो आ गई है। अभी उसके और फोन भी आएंगे और वो खुद भी, कभी भी यहां आ सकती है। तब—तब क्या होगा?"

देवराज चौहान जगमोहन को देखने लगा।

चंद पल उनके बीच चुप्पी रही।

"क्या तुम रानी ताशा के साथ सदूर ग्रह पर जाना चाहते...।"

"क्या बकवास कर रहे हो।" देवराज चौहान के होंठ भिंच गए—"मैं क्यों कहीं जाऊंगा। मैं नहीं जानता कि रानी ताशा कौन है। मैंने उसे कभी देखा भी नहीं। अगर मुझे इन बातों का पता भी चल जाए तो भी मैं कहीं नहीं जाऊंगा। उस जन्म की बातें तभी खत्म हो गई थीं। अब मैं बाद का जन्म जी रहा हूं। यहां मेरे अपने लोग हैं। मेरी पत्नी है। तुम हो। मैं सोच भी नहीं सकता यहां से किसी और ग्रह पर जाने की...मेरी दुनिया यहां है।"

"तो फिर तुम फोन पर रानी ताशा से बातें करते, प्यार में गुम क्यों हो गए थे?"

"मैं—मुझे कुछ याद नहीं।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"एक बात भी याद नहीं?"

"नहीं। जरा भी नहीं।"

"रानी ताशा की आवाज तो याद होगी?"

देवराज चौहान ने इंकार में सिर हिला दिया।

जगमोहन गम्भीरता से देवराज चौहान को देखने लगा।

"मुझे तो यकीन नहीं आ रहा कि मैं रानी ताशा से बात करते, उसका दीवाना हो गया था। ये कैसे सम्भव है।"

"ऐसा हुआ था।"

"मैं तुम्हें गलत नहीं कह रहा।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला—"लेकिन ये बातें मैं कैसे भूल गया?"

"मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं।"

"तुम इस तरह क्यों बात कर रहे हो जगमोहन। जो कहना चाहते हो कहो...।" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"ये मामला, नगीना भाभी से वास्ता रखने लगा है क्योंकि दूसरी औरत तुम्हें अपना पति कहती है और वो तुम्हें अपने साथ ले जाने की चेष्टा में है। मेरा फर्ज बनता है कि मैं नगीना भाभी को इन सारे हालातों की जानकारी दूं।"

"ये ठीक नहीं होगा।"

"क्यों?"

"नगीना चिंता करेगी। वो रानी ताशा को लेकर परेशान होगी कि वो...।"

"नगीना भाभी समझदार है। उन्हें मामला समझते देर नहीं लगेगी। ऐसे

वक्त में मैं भाभी के पास होना ठीक समझता हूं। भाभी हमारे काम ही आएंगी। वो हम लोगों से किसी तरह कम नहीं हैं।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"नगीना को इस मामले से दूर ही रखा जाए तो ठीक...।"

"मैं भाभी को फोन नहीं करूंगा। फोन पर ऐसी बात कहना-समझना कठिन होता है।" जगमोहन दृढ़ स्वर में बोला—"कल सुबह मैं खुद भाभी के पास जाऊंगा। सब कुछ बताऊंगा। उसके बाद भाभी की इच्छा है कि वो...।"

तभी कदमों की आहटें उभरीं और बबूसा के साथ धरा ने भीतर प्रवेश किया।

"इसे तो होश आ गया।" धरा कह उठी।

"राजा देव।" बबूसा खुशी से कह उठा—"आपको होश आ गया। मैंने बहुत धीमे से मारा था। तब वैसा करना जरूरी हो गया था वरना मेरी क्या हिम्मत कि आपकी इजाजत के बिना मैं आपको छू भी सकूं।"

देवराज चौहान ने गम्भीर निगाहों से बबूसा को देखा।

"कुछ गलत हो गया क्या राजा देव?"

"मुझे जगमोहन ने बताया जो हुआ था, वो सब मुझे याद क्यों नहीं है?" देवराज चौहान बोला।

"ये तो अच्छी बात है कि आपको कुछ याद नहीं।" बबूसा संजीदा हो गया—"आपको कुछ याद न रहना ही अच्छी बात है। हालात अब बिगड़ने शुरू हो गए हैं। रानी ताशा मुम्बई पहुंचकर हरकत में आ चुकी है। मुझे जैसा डर था वैसा ही हुआ। आप रानी ताशा के दीवाने होते जा रहे थे फोन पर। आपके होश गुम होने लगे थे।"

"मुझे पता चला कि मैंने तुम्हें मारा।"

"आप राजा देव हैं। कुछ भी करने का हक है आपके पास। फिर उस वक्त आप होश में ही नहीं थे। आप तो रानी ताशा की आवाज के प्रभाव में आ गए थे। ये सब महापंडित ने किया है, ऐसा कर देना उसके लिए मामूली बात है। जाल तो आपके आस-पास पहले ही बिछ चुका था अब जाल कसना शुरू हो गया है। रानी ताशा और महापंडित आपको जकड़ लेना चाहते हैं। परंतु जब तक मैं जिंदा हूं आपका कुछ नहीं बिगड़ने दूंगा। बबूसा पर भरोसा रखें राजा देव।"

"देवराज चौहान साहब।" धरा कह उठी—"आपने रानी ताशा को देखा नहीं, वो खूबसूरत है या बदसूरत, और फोन पर उसकी आवाज सुनते ही उसके दीवाने जैसे हो गए।"

"तब राजा देव अपने होश में नहीं थे।" बबूसा बोला।

"इतना तो पता ही होगा कि तब क्या कह...।"

"राजा देव को कुछ भी याद नहीं है। ये सब महापंडित खेल, खेल रहा है। उसकी शक्तियां काम कर रही हैं। वो मशीनें बनाता है और उनसे बातें करता है, वो बहुत कुछ करता है। अब रानी ताशा का साथ दे रहा है महापंडित कि रानी ताशा राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जा सके। महापंडित राजा देव के साथ धोखेबाजी कर रहा है।" बबूसा के चेहरे पर गुस्सा आ गया—"महापंडित खूब जानता है कि रानी ताशा ने राजा देव को कैसा बुरा धोखा दिया था। आज तक रानी ताशा को सजा नहीं दी गई। सजा देता भी कौन, रानी ताशा तो सदूर ग्रह पर सबसे बड़ी है। रानी ताशा चाहती है कि आपको सदूर पर ले जाने के पश्चात, महापंडित आपके दिमाग का वो हिस्सा साफ कर दे, जहां उस जन्म की यादें मौजूद हैं और वो आपको याद आ गई तो आप रानी ताशा को सख्त से सख्त सजा देंगे। ये काम की सोचकर महापंडित भी सजा का हकदार बनता जा रहा है। ऐसे मौके पर उसे रानी ताशा का साथ नहीं देना चाहिए। सबसे पहले महापंडित को चाहिए कि वो आपको उस जन्म की याद कराए फिर रानी ताशा से आपका सामना कराए तो बढ़िया बात हो। लेकिन महापंडित रानी ताशा की बातें मानकर, रानी ताशा के मुताबिक सारे काम कर रहा है। महापंडित अब कमीना बन गया है। लेकिन राजा देव बबूसा आपका सेवक था और आपका ही रहेगा। सबसे पहले मैं आपके भले की सोचता हूं। मेरी पूरी कोशिश होगी कि आपको रानी ताशा से दूर रखूं और तब तक ऐसा करूं जब तक आपको सदूर ग्रह वाला जन्म न याद आ जाए। जब ऐसा हो गया तो उसके बाद आप जो भी फैसला लेंगे, वो आपकी मर्जी। मैं तो आपका सेवक हूं, सेवक ही रहूंगा।"

चुप्पी-सी आ ठहरी कमरे में। जगमोहन ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा।

"महापंडित कहां पर मिलेगा?"

"सदूर ग्रह पर।"

"वो रानी ताशा के साथ पृथ्वी पर नहीं आया?"

"महापंडित कहीं भी आता-जाता नहीं। वो तो सदूर पर भी अपनी जगह से बाहर नहीं निकलता। उसके पास बहुत काम है करने को। वो हर समय व्यस्त रहता है। कई-कई दिन वो नींद नहीं लेता, तब भी उसके होश बराबर कायम रहते हैं।"

"अजीब इंसान है वो।"

"महापंडित बहुत गुणी और विद्वान व्यक्ति है। मैं खुद उसकी तारीफ करता हूं।" बबूसा ने कहा—"परंतु उसकी जो बात गलत है वो गलत है। उसे रानी ताशा का साथ इस तरह नहीं देना चाहिए। परंतु वो भी ये इच्छा रखता है कि राजा देव फौरन वापस सदूर पर लौट आए जबकि मेरी इच्छा

है कि राजा देव को सदूर ग्रह वाला जन्म याद आए। वो जानें कि रानी ताशा ने उनके साथ कैसी धोखेबाजी की थी। कैसा व्यवहार किया था, उसके बाद ही रानी ताशा के बारे में फैसला लें। मुझे ये पसंद नहीं कि रानी ताशा इतना बड़ा धोखा करने के बाद, राजा देव की गुनहगार होने के बावजूद भी, राजा देव को इसके प्रति अंजान रखे और पुनः राजा देव का हाथ थाम ले। रानी ताशा का हाथ थामे या नहीं, ये फैसला होशोहवाश में ही राजा देव करेंगे।"

"लेकिन अब मुझे सदूर ग्रह से कोई मतलब नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा।

"बेशक आपको मतलब न हो।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु मुझे आपसे तो मतलब है। रानी ताशा को तो सदूर ग्रह से मतलब है। रानी ताशा की जान तो आप में बसी है परंतु अपना गुनाह याद करने को वो तैयार नहीं है। ये मामला आप ही का नहीं है राजा देव, हम सबका है। इसका हल निकालना भी जरूरी है। मैं नहीं जानता कि आने वाले वक्त में क्या होगा, परंतु रानी ताशा आपको सदूर ग्रह पर ले जाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगी।"

"अगर मुझे सब याद आ जाता है तो?" देवराज चौहान बोला।

"फिर तो सारा मामला ही सुलझ जाएगा।" बबूसा बरबस ही मुस्करा पड़ा—"रानी ताशा में इतनी हिम्मत कहां जो राजा देव के सामने सिर उठा सके। महापंडित आपकी एक आवाज में सीधा हो जाएगा। परंतु आपको सदूर ग्रह का वो जन्म, वो सब कुछ याद आना चाहिए। रानी ताशा का धोखा पता चलना चाहिए, तभी तो आप कुछ करेंगे।"

"अब रानी ताशा क्या करेगी?" धरा ने पूछा।

"पता नहीं क्या करेगी परंतु वो अपनी कोशिश फिर करेगी। जब तक वो कामयाब नहीं हो जाती, तब तक वो अपना ये सिलसिला चलाती रहेगी। रानी ताशा कदम उठाकर पीछे हटने वाली नहीं। वो राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाकर ही मानेगी। परंतु जब तक बबूसा जिंदा है, रानी ताशा के लिए ये काम आसान नहीं रहेगा।" बबूसा गुर्रा उठा था।

▭ ▭

अगले दिन सुबह दस बजे जगमोहन, नगीना के बंगले पर पहुंचा।

नगीना ने जगमोहन को देखा तो मुस्कराकर बोली।

"आज रास्ता भूल गए क्या जगमोहन भैया, जो इधर को आ गए?"

दोनों सोफों पर आमने-सामने बैठे।

नौकरानी ने जगमोहन को पानी दिया फिर कॉफी बनाने किचन में चली गई।

जगमोहन की चुप्पी देखकर नगीना मन-ही-मन सतर्क हुई।
"क्या बात है जगमोहन भैया?" नगीना ने पूछा—"तुम चुप-चुप से लग रहे हो।"
"मैं कुछ बताने आया हूं भाभी।"
"देवराज चौहान तो ठीक है?" नगीना के होंठों से निकला।
"वो ठीक है।"
"फिर क्या बात है?"
जगमोहन ने नगीना को सब कुछ बता दिया।
जो भी जगमोहन जानता था, वो अब नगीना भी जान गई।
परंतु नगीना के चेहरे पर उलझन की लकीरें दिखने लगी थीं।
"मुझे विश्वास नहीं आता।" नगीना के होंठों से निकला।
"किस बात का?"
"जो बात तुमने बताई। रानी ताशा के बारे में कि वो दूसरे ग्रह से आई है और देवराज चौहान के तीन जन्म पहले के पहले जन्म में उसकी पत्नी थी और अब अंतरिक्ष यान में बैठकर देवराज चौहान को लेने आई है।"
"ये सच है भाभी। पहले हमें भी बबूसा की बातों पर भरोसा नहीं हो रहा था। परंतु धीरे-धीरे पता लगा कि बबूसा जो कह रहा है वो सच है। डोबू जाति सच है। महापंडित सच है। हर बात सच है जो बबूसा कह रहा है। कल रात जब रानी ताशा का फोन आया देवराज चौहान को तो देवराज चौहान की हालत देखने वाली थी। उसकी आवाज सुनते ही सुध-बुध खो बैठा। ताशा-ताशा करने लगा। ताशा की आवाज उसे पहचानी-सी लगने लगी। वो दीवानों की तरह उससे बात करने लगा था।"
"मुझे यकीन नहीं होता।"
"बबूसा कहता है कि ऐसे कारनामे महापंडित करवाता है।"
"महापंडित? जो कि इस वक्त किसी दूसरे ग्रह पर मौजूद है?" नगीना की आंखें सिकुड़ीं।
"हां।"
"मैं नहीं मानती। ये कोई चाल है कुछ लोगों की। ऐसा कुछ नहीं हो सकता।" नगीना कह उठी।
"यकीन मानो भाभी मैं सच कह रहा हूं। तुम आकर सब कुछ अपनी आंखों से देख सकती हो। मैं खुद तुम्हारे पास आया हूं ये सब बताने के लिए तो तुम्हें मेरा भरोसा कर लेना चाहिए। देवराज चौहान भी जानता है कि मैं तुमसे मिलने आया हूं। मामले को हल्के में मत लो भाभी। ये गम्भीर बातें हैं। वरना मैं यहां नहीं आता।" जगमोहन ने कहा। चेहरे पर गम्भीरता थी।

नगीना, जगमोहन को सोच भरी निगाहों से देख रही थी।
"रानी ताशा मुम्बई में कहां है?" नगीना ने पूछा।
"मैं नहीं जानता। ये बात कोई नहीं जानता अभी तक।"
"रानी ताशा से मिलना हो तो कैसे मिला जा सकता है?"
"अभी ये नहीं पता कि वो मुम्बई में कहां ठहरी है और मेरे खयाल में उसे ढूंढ़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी। वो बहुत जल्द देवराज चौहान के पास आ पहुंचेगी। बबूसा कहता है कि रानी ताशा में इतना दम है कि वो देवराज चौहान को सदूर ग्रह पर ले जा सके। बबूसा ताकतवर इंसान लगता है, परंतु उसका कहना है कि रानी ताशा के साथ सोमाथ नाम का व्यक्ति (रोबॉट) है जो उससे भी कहीं ज्यादा ताकतवर है। वो सोमाथ को लेकर चिंता में है। वो तो...।"
"तुम्हें इन सब बातों पर भरोसा है?"
"पूरी तरह।" जगमोहन ने दृढ़ता से कहा।
"ये किसी की चाल है। ये एक घेराबंदी हो सकती है देवराज चौहान के लिए...।"
"तुम यकीन क्यों नहीं कर रही भाभी?"
तभी नौकरानी कॉफी के प्याले रख गई।
नगीना के चेहरे पर गम्भीरता ठहरी हुई थी।
"ये बे-सिर-पैर की बातें हैं जगमोहन। कोई भी बात तुमने ऐसी नहीं कही कि मैं मान सकूं।"
जगमोहन ने आहत भाव से, नगीना को देखा।
"अजीब बातें कह रहे हो तुम और कहते हो मैं मान लूं।" नगीना बोली।
"तुम मेरे साथ चलो भाभी। खुद देख लो।" जगमोहन ने कहा।
"जरूर आऊंगी। इन हालातों में मेरा देवराज चौहान के पास रहना जरूरी है।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा—"मुझे देखना है कि कौन ये चाल चल रहा है और क्या चाहता है।"
"ये चाल नहीं, ये सच बात है।" जगमोहन ने झल्लाकर कहा।
नगीना ने सिर हिलाया और गम्भीर स्वर में बोली।
"तुम मुझ पर दबाव मत डालो कि मैं तुम्हारी बात का भरोसा करूं। इस मामले को मैं अपने ढंग से देखूंगी।"
"जैसा तुम ठीक समझो।" जगमोहन उठ खड़ा हुआ—"मैं बंगले पर ही जा रहा हूं तुम मेरे साथ चलना चाहो तो...।"
नगीना कुछ पल जगमोहन को सोच भरी निगाहों से देखती रही, फिर कह उठी।

“मुझे कुछ काम है। तुम चलो, मैं वो काम निबटकर, वहां पहुंचती हूं।”

जगमोहन जाने लगा तो नगीना बोली।

“कॉफी तो पी लो भैया।”

“तुम बंगले पर पहुंचो भाभी। मैं कॉफी तैयार रखूंगा। मेरा वहां पहुंचना जरूरी है।” कहकर जगमोहन बाहर निकल गया। नगीना वहीं बैठी रही, चेहरे पर सोचें लहर बनकर दौड़ती रहीं।

“मैं नहीं मान सकती।” नगीना बड़बड़ा उठी—‘ये किसी ने जबर्दस्त चाल चली है कोई और इन लोगों को समझ नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है। ये सच मान बैठे हैं हालातों को। देवराज चौहान के चार जन्म पहले की पत्नी रानी ताशा? किसी और ग्रह पर रहती है और वो पृथ्वी पर आई है राजा देव को वापस ले जाने के लिए? ये कभी नहीं हो सकता। देवराज चौहान को बातों में उलझाकर कोई खेल, खेल रहा है और ये सब उसी खेल में उलझ गए हैं। मैं इस खेल का पर्दाफाश करके रहूंगी। कैसे? मुझे किसी ऐसे इंसान की जरूरत है जो सारे मामले की तह तक पहुंच सके। जो एक-एक बात को खोल कर रख दे। कौन करेगा ऐसा?”

नगीना सोचती रही।

उलझी-सी वहीं बैठे रही। कुछ मिनट बाद उसके होंठों से निकला।

“ओह, मुझे प्राइवेट जासूस की जरूरत है इस मामले में। ऐसा प्राइवेट जासूस जिस पर मैं पूरी तरह भरोसा कर सकूं क्योंकि ये मामला देवराज चौहान से वास्ता रखता है। इस सारे काम में गोपनीयता की जरूरत पड़ेगी। लेकिन मैं किसी प्राइवेट जासूस को जानती नहीं।” फौरन ही नगीना उठती हुई बोली—“रात्रिका जरूर जानती होगी या वो पता करके मुझे बता सकती है।”

बेडरूम में पहुंचकर नगीना ने अपना मोबाइल उठाया और उसमें से रात्रिका का नम्बर निकालकर मिलाया।

दूसरी तरफ बेल जाने लगी। फिर युवती की आवाज कानों में पड़ी।

“कैसी हो नगीना। बहुत दिन से तुमने बात नहीं की। मैं भी कुछ व्यस्त थी फोन नहीं कर सकी।”

“मुझे किसी प्राइवेट जासूस की जरूरत है।” नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा—“तुम इस बारे में कुछ बता सकती हो?”

“प्राइवेट जासूस? सब ठीक तो है?”

“सब ठीक है तू किसी प्राइवेट जासूस को जानती है?”

“इधर मुम्बई में तो नहीं जानती। परंतु आठ साल पहले जब दिल्ली में मेरा अपहरण बदमाशों ने फिरौती के लिए किया था तो पापा ने उस प्राइवेट जासूस की सेवाएं ली थीं, वो मुझे बदमाशों से छुड़ा लाया था। वो हिम्मती

और अच्छा इंसान लगा था मुझे। शरीफ भी है। वो चाहता तो मेरा फायदा उठा सकता था, परंतु उसने ऐसा कुछ नहीं किया। उसे कई मौके मिले भी। मिले क्या मैंने ही दिए मौके। वो मुझे अच्छा लगने लगा था।"

"मुझे विश्वास वाला बंदा चाहिए।"

"वो पूरी तरह भरोसे का है।"

"उसका नाम पता बता...।"

"अर्जुन भारद्वाज नाम है उसका। दिल्ली के करोल बाग इलाके में, चैम्बर ऑफ जमुना प्रसाद बिल्डिंग की दूसरी मंजिल पर सुपर प्राइवेट डिटैक्टिव एजेंसी के नाम से उसका ऑफिस है। होल्ड कर, उसका फोन नम्बर भी बताती हूं।"

सोचों में डूबी नगीना ने मोबाइल कानों से लगाए रखा।

मिनट भर बाद रात्रिका की आवाज पुनः आई।

"नोट कर—98187...।" रात्रिका ने प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज का मोबाईल नम्बर बताया—"लेकिन बात क्या है जो तुझे प्राइवेट जासूस की जरूरत पड़ गई। ऐसी-वैसी बात है तो मैं तेरे पास आती हूं...।"

"सब ठीक है। तू परेशान न हो। मेरी एक दूसरी सहेली को प्राइवेट जासूस की जरूरत है। फिर फोन करूंगी।"

▭ ▭

दिल्ली।

दोपहर के 12.30 बजे थे। मौसम बढ़िया था। ठंडी हवा चल रही थी। धूप थी परंतु चुभ नहीं रही थी। अर्जुन भारद्वाज ईस्ट पटेल नगर स्थित अपने घर जगदम्बा अपार्टमेंट से कार पर निकला और दस मिनट में करोल बाग में अपने ऑफिस जा पहुंचा था। काली पैंट और सफेद कमीज डाल रखी थी उसने। हमेशा की तरह अपने अंदाज में वो चमक रहा था। ऑफिस में प्रवेश करते ही उसका सामना नीना से हुआ जो रिसैप्शन के पीछे बैठी आज की डाक छांट रही थी।

"गुड नून सर।" नीना बोली।

"ये मेरी सुबह है। गुड मॉर्निंग।" अर्जुन भारद्वाज ने रिसैप्शन डैस्क के सामने से निकलते हुए कहा।

"आज तो आप बहुत जंच रहे हैं।"

अर्जुन भारद्वाज ठिठका और पलटकर गहरी निगाहों से नीना को देखा।

"मैं जंच रहा हूं?" अर्जुन बोला।

"हां सर, किसी भी लड़की से पूछ लीजिए।" नीना मुस्कराकर बोली।

"मैं रोज ही जंचता हूं। तुम अपनी नजरें मेरे सामने नीची रखा करो। नहीं तो मुझे नजर लग जाएगी।"

"आज तो सच में जंच रहे हैं।" नीना ने अर्जुन पर मोहक मुस्कान फेंकी।

अर्जुन ने कुछ नहीं कहा और सामने नजर आ रहे केबिन में प्रवेश करता चला गया। कुर्सी पर बैठा और ड्राज खोलकर कुछ कागज बाहर निकाले कि नीना ने भीतर प्रवेश किया। हाथ में एक लैटर था।

"बंसल कहां है?"

"बंसल, पंडित, किशोर, सब अपने-अपने केसों में उलझे हुए हैं। सुबह से कोई भी ऑफिस नहीं आया। किशोर और बंसल का फोन आया था परंतु पंडित का तो फोन भी नहीं आया।" नीना ने कहा।

"बंसल और किशोर ने कोई खास बात कही?"

"नहीं।" नीना हाथ में पकड़े लैटर को सामने रखती कह उठी—"रायसीना रोड से मेहरा साहब का लैटर है। वो लिखते हैं कि मैं अमेरिका जा रहा हूं। मेरा दिया केस बंद कर दें। लौटने पर बाकी की फीस दे दूंगा।"

"मेहरा का दिया केस बंद कर दो।" अर्जुन ने लैटर देखे बिना कहा।

"ये बात तो मेहरा साहब फोन पर भी कह सकते थे पत्र लिखने की क्या जरूरत थी?"

"फोन पर कहता तो मैंने बकाया पेमेंट फौरन ले लेनी थी। पर वो अभी पैसे नहीं देना चाहता होगा। तभी...।"

अर्जुन का मोबाइल फोन बज उठा।

"हैलो।" अर्जुन ने फौरन बात की।

"मिस्टर अर्जुन भारद्वाज?" उधर से नगीना की आवाज आई।

"जी हां।"

"आप प्राइवेट जासूस हैं?"

"जी हां।"

"करोल बाग में सुपर डिटैक्टिव एजेंसी आप ही की है?"

"बिल्कुल मेरी ही है।" अर्जुन ने शांत स्वर में कहा—"आपकी कोई सेवा कर सका तो मुझे खुशी होगी।"

"आपका फोन नम्बर मुझे रात्रिका ने दिया है। आठ साल पहले उसका अपहरण हुआ था तो आपने सब ठीक कर दिया था। मेरा नाम नगीना है और मैं मुम्बई से बोल रही हूं। मुझे प्राइवेट जासूस की फौरन जरूरत है।"

"काम दिल्ली में करवाना है या मुम्बई में?" अर्जुन ने पूछा।

"मुम्बई में।"

"तो नगीना जी, बेहतर होगा कि आप मुम्बई स्थित प्राइवेट जासूस से सम्पर्क करें। मुम्बई में भी बढ़िया से बढ़िया प्राइवेट जासूस हूं।"

"मुझे भरोसे का व्यक्ति चाहिए।"
"मुम्बई में भरोसे के लोग मिल जाएंगे।"
"रात्रिका ने कहा है कि मैं आपका पूरा भरोसा कर सकती हूं।"
"मुझे मुम्बई बुलाने पर, मेरी फीस बहुत ज्यादा हो जाएगी। मुझे होटल में रुकना होगा और वो खर्चा भी आपका...।"
"मैं दूंगी।"
"प्लेन से आने-जाने का टिकट।"
"वो भी मैं दूंगी।"
"मेरे साथ।" अर्जुन ने नीना पर निगाह मारी—"मेरी असिस्टेंट भी आ सकती है।"
"कोई दिक्कत नहीं। आप जो फीस कहेंगे, आपको मिल जायेगी।"
अर्जुन भारद्वाज ने गहरी सांस ली फिर बोला।
"मेरी फीस काम सुनकर तय होगी। अभी ये भी पता नहीं कि आप जो काम कहेंगी, वो करना मुझे पसंद आता है कि नहीं। अगर मैं काम नहीं करूंगा तो भी मुम्बई आने-जाने की फीस एक लाख लूंगा।"
"मुझे मंजूर है। मैं दो लोगों की प्लेन से टिकट ई-मेल करा देती हूं। जल्दी से जल्दी की जिस फ्लाइट में सीट मिलेगी, उसी प्लेन में...।"
"क्या अभी आना होगा?" अर्जुन के होंठ सिकुड़े।
"बिल्कुल अभी। काम अर्जेंट है और जरूरी है। ज्यादा वक्त नहीं है। आप मेरे मुताबिक काम कीजिए मिस्टर अर्जुन और फीस अपनी मर्जी की लीजिए।" उधर से नगीना का गम्भीर स्वर अर्जुन भारद्वाज के कानों में पड़ रहा था—"मैं होटल ताज में आपके नाम का कमरा अभी बुक करा देती हूं। आप एयरपोर्ट से सीधा ताज पहुंचें, मुझे फोन करें तो मैं आ जाऊंगी वहां।"
"होटल ताज?" अर्जुन भारद्वाज के होंठों से निकला।
"अगर पसंद नहीं तो किसी दूसरे होटल में...।" उधर से नगीना ने कहना चाहा।
"मेरा मतलब है ताज के कमरे की कीमत बहुत ज्यादा...।"
"उसकी आप फिक्र न करें। अपने असिस्टेंट का नाम बताइए, टिकट बनाने के लिए नाम की जरूरत पड़ेगी।"
अर्जुन भारद्वाज ने फोन कान से हटाकर नीना से पूछा।
"मुम्बई चलोगी केस के सिलसिले में?"
"आपके साथ तो मैं कुएं में भी छलांग लगा दूंगी।" नीना ने लम्बी सांस खींची।
"नीना।" अर्जुन ने फोन पर नगीना से कहा।

"आधे घंटे बाद अपनी ई-मेल चैक कीजिएगा। टिकटें पहुंच जाएंगी। ई-मेल आई-डी बताइए।"

अर्जुन भारद्वाज ने ई-मेल आई-डी बता दी।

उसके बाद उधर से फोन बंद कर दिया गया।

अर्जुन ने मोबाइल टेबल पर रखा और नीना को देखा।

"क्या हुआ?"

"फोन करने वाली अपना नाम नगीना बता रही थी। पैसे की इसे परवाह नहीं है। हमारे लिए ताज होटल में कमरा बुक कराने जा रही है। इससे फीस में मोटी रकम ली जा सकती है अगर इसका बताया काम मुझे पसंद आया तो।"

"काम की भी पसंद होती है क्या?" नीना ने पूछा।

"होती है। ज्यादा गलत काम करने को कहेगी तो मैं नहीं करूंगा। प्राइवेट जासूस अपनी हद से बाहर जा सकता है, परंतु बाहर जाने की भी हद होती है। अगर वो पैसा दिखाकर गलत काम मुझसे लेना चाहती है तो ऐसा नहीं होगा।"

"मुम्बई में क्या प्राइवेट जासूसों की कमी है जो आपको दिल्ली से बुला रही है।"

"रात्रिका से उसने मेरा नम्बर लिया?"

"रात्रिका कौन?"

"कई साल पहले उसके अपहरण का केस सॉल्व किया था। फिर उसकी शादी मुम्बई में हो गई थी। मैं उसकी शादी में भी गया था।"

"मुझे नहीं लेकर गए?"

"बच्चों को शादी-ब्याह से दूर रहना चाहिए।" अर्जुन भारद्वाज ने नीना को देखा—"मुम्बई चलने की तैयारी करो। रिसैप्शन पर भी कोई होना चाहिए। देखो तो हमारा कौन-सा एजेंट खाली है, जो भी खाली हो उसे बुला लो।"

"सर, अगर आपने काम को इंकार किया तो भी लाख रुपया मिलेगा।"

"फिर?"

"मुझे मुम्बई जरूर घुमा देना। समुद्र का किनारा, उछलती लहरें और चौपाटी पर तो...।"

"अगले महीने तनख्वाह तो नहीं लोगी?"

"क्यों नहीं लूंगी। वो तो मेरा हक बनता है लेना।"

"तो मुम्बई घूमने का हक नहीं बनता। निकलो यहां से और रिसैप्शन के लिए किसी को बुलाओ। नगीना मुम्बई से हमारी टिकटें भेजने वाली है। हमें फौरन ही निकल चलना होगा। वो जल्दी की फ्लाइट में सीट रिजर्व कराएगी।" अर्जुन ने सोच भरे स्वर में कहा।

अर्जुन भारद्वाज शाम 5.45 बजे मुम्बई के सांताक्रुज एयरपोर्ट पर पहुंच चुका था। दो दिन पहले ही अर्जुन ने एक बड़े केस से फुर्सत पाई थी और अभी दूसरा काम हाथ में नहीं लिया था, ये ही वजह थी कि वो फुर्सत में था और नगीना की मुम्बई आने की बात, फौरन मान ली थी। एयरपोर्ट से ताज होटल के लिए टैक्सी ली और नगीना को फोन करके अपने आ पहुंचने की खबर दी तो नगीना ने कहा, ताज होटल में उसका रूम नम्बर दो सौ एक है और वो एक घंटे बाद दूसरी मंजिल की लॉबी में मिलेगी तब उसने नीली जींस और काला टॉप पहन रखा होगा। पहचान लेना।

अर्जुन और नीना पचास मिनट में ताज होटल पहुंच गए।

नगीना के आने का वक्त करीब था।

रिसैप्शन से रूम नम्बर 201 की चाबी मांगी तो पोर्टर उनका सामान उठाकर उनकी अगुवाई में चल पड़ा। वे रूम पर पहुंचे, सामान रखा। अर्जुन ने हाथ-मुंह धोया, नीना ने भी मुंह धोकर मेकअप किया। सात बजने जा रहे थे।

"अब हमें लॉबी में पहुंच जाना चाहिए। वो वहां हमारा इंतजार कर रही होगी।" अर्जुन ने कहा।

"कौन नगीना?"

"हां, उसी से तो मिलने आए हैं।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसकी भी सुननी है कि वो क्या कहती है।"

"मैं कैसी लग रही हूं?" नीना एकाएक मुस्कराकर बोली।

"बकवास।"

"क्या—ऽ-ऽ-ऽ?"

"मुझे तो तुम ऐसी ही लगती हो। तारीफी शब्द सुनने हैं तो किसी और से राय ले लो।"

"इसका मतलब मैं बढ़िया लग रही हूं।" नीना मुस्कराई—"रात को चैपाटी चलेंगे। समुद्र के किनारे।"

"हम काम के लिए मुम्बई आए हैं।"

"तो घूमने पर पाबंदी थोड़े न है।"

दोनों बाहर निकले। दरवाजा बंद करके लॉबी की तरफ बढ़ गए। अर्जुन भारद्वाज इस होटल में कई बार ठहर चुका था और जानता था कि लॉबी किस तरफ है। साथ चलती नीना कह उठी।

"एयरपोर्ट जाते समय जब रास्ते में घर से कपड़े लेने गई तो पता है मां ने क्या कहा?"

"क्या?"

"शादी कब कर रही है तू।"

"तो मुझे क्यों बता रही हो। मैंने तो कभी भी तुमसे शादी करने को नहीं कहा।" अर्जुन बोला।

"मैं तो मां की बात बता रही हूं।" नीना ने मुंह फुलाकर कहा।

"घर की बातों को ऑफिस के कामों में मत घसीटा करो।"

"मैं तो शादी की बात कर रही थी।"

"किसके साथ?"

"प-पता नहीं।" नीना सकपका उठी।

अर्जुन के होंठों पर दबी-सी मुस्कान नाच उठी।

"अपनी मां से कह दो कि तुम्हारे लिए कोई लड़का देख ले।"

"कह दूं?"

"शादी करनी है तो कहना ही पड़ेगा।"

"मेरी शादी हो गई तो फिर ऑफिस कौन संभालेगा?"

"कोई दूसरी आ जाएगी।"

"मैंने कई बार आपकी जान बचाई है। कितने केस मैंने आपके साथ सॉल्व किए हैं।" नीना याद दिलाने वाले अंदाज में कह उठी।

गैलरी बाईं तरफ मुड़ी तो वे भी मुड़ गए।

"तो मैंने तुम्हें तनख्वाह भी दी है।"

"वो सब मैंने जमा कर रखा है। जब कहेंगे वापस दे दूंगी।"

"वापस क्यों दोगी?"

"पता नहीं।" नीना ने उखड़ी निगाहों से अर्जुन को देखा—"आपका दिमाग जासूसी के अलावा, बाकी कामों में काम नहीं करता।"

"ये तुम कैसे कह सकती हो?"

"क्योंकि आपको पता ही नहीं कि मैं क्या कह रही हूं। मेरा मतलब क्या है।"

"तुम अपनी शादी की बात कर रही थी।" अर्जुन ने भोलेपन से कहा।

"मैं कोई बात नहीं कर रही थी।" नीना ने झल्लाकर कहा—"मुझे रात सपना आया था कि एक जंगली गधे के साथ मेरी शादी हो गई है और मैं उसकी सूरत देखते ही मर गई।"

अर्जुन के होंठों के बीच मुस्कान आ दबी। तभी लॉबी का बड़ा-सा शीशे का दरवाजा आ गया। वहां खड़े दरबान ने आदर से दरवाजा खोला तो वो भीतर प्रवेश कर गए।

लॉबी के रूप में ये काफी खुला हॉल था। जगह-जगह लाल रंग के

मखमली सोफे कतार में लगे हुए थे। ए.सी. की ठंडी हवा वातावरण में व्याप्त थी। कुछ लोग वहां बैठे हुए थे। बातें कर रहे थे। कुछ अकेले भी थे और उन अकेले बैठे लोगों में वीरेंद्र त्यागी भी था। जो कि किसी के आने का इंतजार कर रहा था। वो इसी होटल की दूसरी मंजिल के 212 नम्बर कमरे में ठहरा था और इसी लॉबी में किसी को मिलने का वक्त दिया था। त्यागी ने उड़ती निगाह अर्जुन भारद्वाज और नीना पर मारी फिर नजरें हटा लीं।

अर्जुन की निगाह पूरी लॉबी में गई।

"क्या देख रहे हो?" नीना बोली।

"नीली जींस की पैंट और काले टॉप वाली लड़की को...।"

"वो आ गई।"

नीना के शब्द सुनते ही अर्जुन भारद्वाज की निगाह घूमी दरवाजे की तरफ। तो नगीना को नीली जींस की पैंट और काले टॉप में भीतर प्रवेश करते देखा।

"लड़की जोरदार है।" नीना धीमे स्वर में बोली—"पर मेरे से ज्यादा जोरदार नहीं है।"

"न तो मैंने आज तक तुम्हारा जोर देखा है, न ही उसका।" अर्जुन धीमे स्वर में बोला—"इस वक्त हम क्लाइंट से मिलने जा रहे हैं, सिर्फ ये बात ध्यान रखो। क्लाइंट सिर्फ क्लाइंट होता है।"

नगीना ने अर्जुन और नीना को अपनी तरफ देखते पाया, उसके कदम धीमे हो गए। नजरें उन दोनों पर ही रहीं। वो धीमे-धीमे आगे बढ़ी और जब उनके करीब से निकलने लगी तो अर्जुन ने टोका।

"मैडम नगीना?"

"ओह यस।" नगीना कहते हुए ठिठक गई।

"मैं प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज और ये मेरी असिस्टेंट नीना है।" अर्जुन भारद्वाज ने मुस्कराकर कहा।

नगीना ने अर्जुन और नीना से मुस्कराकर हाथ मिलाया। अर्जुन बोला।

"आइए, वहां बैठते हैं।"

वे तीनों लॉबी के सोफों पर जा बैठे। ये इत्तफाक ही था कि वे वीरेंद्र त्यागी के पास ही जा बैठे थे। सोफों की पीठें जुड़ी हुई थी। इस तरफ ये तीनों बैठे थे तो उस तरफ वीरेंद्र त्यागी मौजूद था।

"आपका बहुत-बहुत शुक्रिया कि मेरे एक बार कहने पर ही आप मुम्बई आ गए।" नगीना बोली।

"मैं आपको क्या कहकर बुला सकता हूं।"

"नगीना कहिए।" नगीना बोली—"रात्रिका का कहना है कि आप पर विश्वास किया जा सकता है।"

अर्जुन भारद्वाज खामोशी से नगीना को देखता रहा।

"आपने जवाब नहीं दिया मिस्टर अर्जुन।"

"आप पूरी तरह मुझ पर भरोसा कर सकती हैं। परंतु मैं आपके कहने पर भी कोई गैर कानूनी काम नहीं करूंगा। इसलिए मुझे जानना है कि आप मुझसे क्या काम लेना चाहती हैं। प्राइवेट जासूस की हद तो आप जानती ही होंगी।"

तीन फुट दूर पीठ किए बैठे वीरेंद्र त्यागी के कानों में स्पष्ट शब्द पड़ रहे थे। वो सब कुछ सुन रहा था।

"आपको ये वादा करना होगा कि मैं जो कहूं उसे आप हर स्थिति में गुप्त रखेंगे, बेशक आप मेरा काम करें या न करें।"

"ये वादा है।" अर्जुन बोला।

"नगीना जी।" नीना तुरंत कह उठी—"अगर हम काम को इंकार करते हैं तो तब भी आपने एक लाख रुपया देना है।"

"अपने साथ लाई हूं वो लाख रुपया। ऐसा हुआ तो अभी आपको मिल जाएगा।" नगीना कह उठी। वो गम्भीर थी—"सबसे पहले तो मैं आपको बता देना चाहती हूं मैं देवराज चौहान की पत्नी हूं।"

"देवराज चौहान कौन—क्या बिजनेस है देवराज चौहान का?" अर्जुन भारद्वाज ने पूछा।

"मैं डकैती मास्टर देवराज चौहान की बात कर रही हूं मिस्टर अर्जुन।"

वीरेंद्र त्यागी के कान खड़े हो गए।

अर्जुन भारद्वाज बुरी तरह चौंका। नीना ने अर्जुन की बांह पर हाथ रखकर दबा दिया।

"डकैती मास्टर देवराज चौहान। वो तो खतरनाक डकैती मास्टर है। वो—वो...।"

"वो साधारण-सा इंसान है आपकी तरह। आप प्राइवेट जासूस हैं और वो डकैतियां करता है। मैं उसी की पत्नी हूं। मेरे कहने पर आपको देवराज चौहान के लिए काम करना है। काम जरा भी गैरकानूनी नहीं है। अगर आप डकैती मास्टर देवराज चौहान का काम नहीं कर सकते तो बता दीजिए। बात यहीं पर खत्म हो जाएगी।" नगीना ने शांत स्वर में कहा।

"हैरानी है कि आप देवराज चौहान जैसे इंसान की पत्नी हैं।" अर्जुन ने गहरी सांस लेकर कहा।

"देवराज चौहान में क्या बुरा है?"

"पता नहीं।" अर्जुन अपने को सामान्य करने की कोशिश में था।
"कभी मिले हैं उससे?"
"नहीं। सिर्फ सुना है।"
"तो एक बार उससे मिल लीजिए। मैं मिलवाऊंगी, फिर उसके बारे में अपनी राय कायम करें।"
"देवराज चौहान के लिए मुझे जो काम करना है, वो गैर कानूनी नहीं होगा?" अर्जुन ने पूछा।
"जरा भी नहीं। जहां भी आपको गैरकानूनी होने का एहसास हो, आप वहीं पर काम छोड़ दीजिए। मैं पैसे वापस भी नहीं मागूंगी। अब आपको सोचना ये है कि डकैती मास्टर देवराज चौहान के लिए काम करने में आपको एतराज तो नहीं?"
"कोई एतराज नहीं पर ये बात पुलिस के कानों तक न पहुंचे कि मैंने देवराज चौहान के लिए कोई काम किया है।"
"बात हमारी तरफ से बाहर नहीं जाएगी।"
अर्जुन भारद्वाज ने सिर हिला दिया। तब नीना बोली।
"सर, इतने बड़े डकैती मास्टर के लिए आप काम करेंगे तो पुलिस आपको छोड़ने वाली नहीं। वो बहुत खतरनाक इंसान है। पुलिस के कानों में पड़ ही जाएगा कि आपमें और देवराज चौहान में सम्बंध है।"
अर्जुन ने नीना को देखा फिर कह उठा।
"तुम ठीक कहती हो नीना, पर मोटी फीस के लिए इतना खतरा तो उठाना ही पड़ेगा।"
"बात खुली तो पुलिस आपको गिरफ्तार भी कर लेगी। जासूसी का लायसैंस कैंसिल कर देगी।"
"मुझे सुन लेने दो कि काम क्या है।" अर्जुन की निगाह नगीना पर गई।
"सुनने के बाद आप बात बाहर नहीं करेंगे मिस्टर अर्जुन।" नगीना ने कहा।
"इस बारे में मुझ पर पूरा भरोसा रखें।"
अर्जुन भारद्वाज की गम्भीर निगाह नगीना पर जा टिकी।
नीना ने अभी भी अर्जुन की बांह थाम रखी थी।
"मेरी बांह छोड़ दो मैं भागा नहीं जा रहा।" अर्जुन ने धीमे स्वर में कहा।
"छोड़ दी।" नीना ने अपना हाथ पीछे करते हुए कहा—"मां शादी के बारे में पूछ रही थी।"
"तुम्हारी मां से शादी करने का मेरा कोई इरादा नहीं है।" धीमा स्वर था अर्जुन का।

"मां मेरी शादी की बात कर रही...।"

"तुम अभी तक अपने लिए एक लड़का नहीं तलाश कर सकीं, जबकि मैंने तुम्हें रिसैप्सनिस्ट से जासूस बना दिया है।"

"वो तो मैंने ढूंढ़ लिया है।"

"फिर दिक्कत क्या है?"

"वो गधा मेरी बात समझता ही नहीं।"

"गधा?" अर्जुन ने गर्दन घुमाकर नीना को देखा।

"वो गधा ही हुआ।" नीना सब्र के साथ बोली—"जो समझकर भी मेरी बात नहीं समझ रहा।"

"इस बारे में फिर बात करना।" अर्जुन बोला—"मुझे क्लाइंट से बात कर लेने दो।"

"सोच लो, डकैती मास्टर देवराज चौहान खतरनाक इंसान है। कहीं वो तुम्हें ले न डूबे।" नीना ने कहा।

अर्जुन नगीना को देखता कह उठा।

"बताइए नगीना जी, पूरा मामला क्या है?"

"एक ताशा नाम की लड़की है जो कि अपने को किसी दूसरे ग्रह से आई बताती है। उसका कहना है कि तीन जन्म से पहले के जन्म में देवराज चौहान उसका पति था और वहां के ग्रह का मालिक था। परंतु किसी वजह से देवराज चौहान उस ग्रह से बाहर निकलकर, पृथ्वी पर पहुंच गया और यहां जन्म लेने लगा। अब वो कहती है कि वो उस सदूर ग्रह से पृथ्वी पर आई है ताकि देवराज चौहान को वापस उस ग्रह पर ले जा सके।

अर्जुन भारद्वाज ने आंखें सिकोड़कर नगीना को देखा।

"मैडम। नगीना जी।" अर्जुन तीखे स्वर में बोला—"उसने ये बातें कही और आपने मान ली।"

"मानी होती तो आपको दिल्ली से नहीं बुलाती।"

"वो ताशा, या तो बहुत बड़ी पागल है या बहुत ही चालाक, जो ऐसी बातें कर रही है।" अर्जुन ने कहा—"ऐसा न तो होता है और न ही हो सकता है। दूसरा कोई ग्रह ऐसा नहीं है जहां दुनिया बसती हो। वो देवराज चौहान को पागल बनाने की कोशिश कर रही है।" अर्जुन भारद्वाज इंकार में सिर हिलाता कह उठा।

"देवराज चौहान का उस लड़की के साथ कोई चक्कर तो नहीं था पहले?" नीना बोली।

"नहीं।"

"देवराज चौहान के पास पैसा है?"

अर्जुन ने व्यंग भरी निगाहों से नीना को देखा।

"हां। बहुत पैसा है।"

"वो मशहूर डकैती मास्टर है।" अर्जुन ने नीना से कहा—"उसके पास काफी पैसा होना चाहिए।"

"फिर वो ताशा जरूर उसके पैसे पर हाथ डालने के चक्कर में होगी।" नीना कह उठी।

"तुम चुप रहो।" अर्जुन बोला।

"मां शादी के लिए...।" नीना ने जल्दी से कहना चाहा।

अर्जुन नगीना से कह उठा।

"तो ये मामला है।"

"हां।"

"ताशा कहां रहती है?"

"वो मुम्बई में कहीं पर है, परंतु उसे ढूंढ़ना पड़ेगा। ये काम आप करेंगे।"

"आपकी दी जानकारी पूरी तरह अधूरी है।"

"मैंने अभी कुछ बताया ही नहीं है।"

"तो बता दीजिये। एक ही बार में सिलसिलेवार सब कुछ बता दीजिए ताकि मैं आसानी से मामले की कड़ियां जोड़ सकूं।"

"जो मुझे मालूम है, वो मैं आपको बता देती हूं अर्जुन साहब।" इसके साथ ही नगीना, जगमोहन की बताई सब बातें बताने लगी। डोबू जाति के बारे में बताया। बबूसा के बारे में बताया। रानी ताशा के फोन आने के बारे में बताया और हर वो बात बताई जो इस मामले से वास्ता रखती थी। नगीना बताती रही।

अर्जुन भारद्वाज और नीना सुनते रहे।

साथ जुड़े सोफे के दूसरी तरफ बैठा वीरेंद्र त्यागी भी सुनता जा रहा था।

पंद्रह मिनट बाद नगीना ने अपनी बात खत्म की।

अर्जुन के होंठ सिकुड़े हुए थे।

नीना भारी उलझन में दिखाई दे रही थी।

"ये है सारी बात।" नगीना बोली।

"सर।" नीना कह उठी—"ये मामला बहुत बुरी तरह उलझा हुआ है। इसमें ताशा नाम की वो लड़की ही नहीं, बबूसा नाम का वो व्यक्ति भी संदिग्ध है जो देवराज चौहान के साथ चिपका हुआ है। हैरानी है कि देवराज चौहान उसे अपने पास क्यों रख रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि वो रानी ताशा—सॉरी ताशा से मिला हुआ है। वो खुद को राजा देव का सेवक बता रहा है, दूसरे ग्रह की बातें कर रहा है, वो जरूर रानी ताशा का ही भेजा

हुआ है कि देवराज चौहान का दिमाग वॉश कर सके। उस सदूर ग्रह के होने और उसके वहां का राजा होने के बारे में यकीन दिला सके। ये एक जबर्दस्त साजिश है, देवराज चौहान के गिर्द जाल बिछाया गया है और जाल बिछाने वाले बहुत ही शातिर और समझदार लोग हैं। इसके पीछे उन्होंने महीनों की मेहनत की है।"

"मेरा भी ये ही खयाल है।" नगीना कह उठी।

अर्जुन भारद्वाज गम्भीर दिख रहा था। वो बोला।

"मुझे देवराज चौहान से, बबूसा से मिलना होगा।"

"आप जब भी कहेंगे, देवराज चौहान का पता बता दूंगी।" नगीना ने कहा।

"आप देवराज चौहान के पास ही हैं?"

"अभी तक तो उसके पास नहीं थी, परंतु अब यहां से सीधा उसके पास ही जाऊंगी।"

"अभी नहीं।" अर्जुन सोच भरे स्वर में कह उठा—"मैंने सब कुछ सुना है, परंतु इन बातों को समझना भी है। आज का वक्त मुझे समझने में लगेगा। कल मैं आपको फोन करके देवराज चौहान का पता लूंगा। परंतु ये बात तो पूरी तरह सच है कि ताशा बहुत गहरा खेल खेल रही है। बबूसा मुझे उसी का भेजा साथी लगता है क्योंकि वो भी किसी सदूर ग्रह की बात कर रहा है और खुद को राजा देव का महत्त्वपूर्ण सेवक बताता है। ताशा और बबूसा मिलकर देवराज चौहान को पागल बनाने पर लगे हैं। वे देवराज चौहान को गहरी साजिश में लपेटे हुए हैं।"

"लेकिन देवराज चौहान बेवकूफ नहीं है सर। वो भला उनकी बातों में कैसे फंस गया?" नीना ने कहा।

"आप इस सारे मामले को किस नजर से देखती हैं?" अर्जुन ने नगीना से पूछा।

"ये सब कुछ फ्रॉड है। धोखेबाजी है।" नगीना ने सख्त स्वर में कहा—"यूं तो रानी ताशा जो भी हो, उसे मैं ढूंढ़ सकती थी, मैं उसे संभाल सकती थी परंतु इस वक्त मुझे लगा कि मुझे देवराज चौहान के पास रहना चाहिए। यही वजह है कि मैंने आपको बुला लिया कि इस मामले को आप देखें।"

"जरूर। मैं ही देखूंगा। कुछ अंदाजा है कि ताशा कहां पर हो सकती है?"

"मैं इस बारे में कुछ नहीं जानती।"

"देवराज चौहान को पता होगा?"

"यकीन के साथ कुछ नहीं कह सकती।"

"तो कल मैं इस बारे में देवराज चौहान से बात करूंगा। तगड़ी साजिश रची जा रही है देवराज चौहान के खिलाफ। इस मामले में और भी शातिर लोग शामिल हो सकते हैं। मामला खतरनाक रुख भी ले सकता है।" अर्जुन गम्भीर स्वर में बोला।

"मैं आपको मुंह मांगी फीस दूंगी। आप ये काम ठीक से पूरा कर दीजिए।" नगीना ने कहा।

"पांच लाख तो आप आज ही दे दीजिए।"

"बाहर मेरी कार खड़ी है, उसमें पैसा रखा है।"

"मैं आपके साथ कार तक चलती हूं।" नीना ने तुरंत कहा।

"ये पांच लाख मैं फीस की पहली किस्त ले रहा हूं। कल देवराज चौहान से मिलूंगा। बबूसा से बात करूंगा। ताशा की तलाश करके उससे बात करूंगा। आगे जाकर इस मामले में कुछ भी हो सकता है। हर सप्ताह मैं पांच लाख लेता रहूंगा और मामला खत्म होने पर एकमुश्त दस लाख लूंगा।"

"मुझे मंजूर है।" नगीना बोली।

"आप देवराज चौहान से ताशा के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी लेने की कोशिश करें। मुझे लगता है कि देवराज चौहान ताशा को पहले से भी जानता हो सकता है।" अर्जुन ने कहा।

"ऐसा नहीं है। वो ताशा को पहले से नहीं जानता।"

"आपको उस पर पूरा भरोसा है?"

"पूरी तरह।"

"हैरानी है कि आप डकैती मास्टर जैसे इंसान पर पूरा भरोसा करके बैठी हैं।" अर्जुन मुस्करा पड़ा।

"मैंने पहले भी कहा है कि पहले देवराज चौहान से मिलिए उसके बाद उसके बारे में राय कायम करें।"

"नीना, इनका फोन नम्बर ले लेना।"

"हां सर। मुझे याद है कि पांच लाख भी लेने हैं। परंतु हम इस होटल में रहेंगे। बिल, का क्या होगा।"

"होटल वाले आपसे कोई पैसा नहीं मांगेंगे। मैं अभी पैसा एडवांस में जमा करा देती हूं। इस बारे में आप निश्चिंत रहे।" कहने के साथ ही नगीना उठते हुए बोली—"मुझे विश्वास है मिस्टर अर्जुन भारद्वाज कि आप ये मामला ठीक से पूरा कर देंगे।"

"जरूर। आप मुझ पर भरोसा कर सकती हैं।"

नीना भी उठ खड़ी हुई।

"देवराज चौहान को पता है कि आप इस काम के लिए मुझसे बात कर रही हैं।"

"उसे नहीं पता।"

"तो क्या उसे एतराज नहीं होगा कि मैं इस मामले में दखल दे...।"

"अर्जुन साहब मैं उसकी पत्नी हूं और उसने मुझे सारे हक दे रखे हैं। देवराज चौहान मेरे द्वारा किए गए किसी भी काम को गलत नहीं कहता। मेरी खुशी में ही उसकी खुशी है। आप पर उसे कोई एतराज नहीं होगा।"

अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीरता से सिर हिला दिया।

तभी नीना कह उठी।

"सर मैं पांच लाख और नगीना जी का फोन नम्बर लेकर आती हूं।"

नगीना और नीना वहां से बाहर की तरफ बढ़ गईं।

वीरेंद्र त्यागी फौरन उठा और उनके पीछे चल पड़ा।

अर्जुन भारद्वाज वहीं बैठा सोचों में डूबा रहा।

▭ ▭

नीना आई। हाथ में पांच लाख के नोटों का लिफाफा था। अर्जुन भारद्वाज के साथ वो रूम में पहुंची और नोटों को अपने सूटकेस में रख दिया। अर्जुन गहरी सोचों में डूबा दिखा।

"तुमने पैसा अपने सूटकेस में क्यों रखा?" अर्जुन कह उठा।

"आदत डाल रही हूं सर।"

"किस बात की?"

"आपका पैसा-गहना संभाल कर रखने की। इस मामले में आप पूरे लापरवाह हैं।"

"तुम्हारी शादी होने वाली है। बेहतर है कि तुम अपने बारे में सोचो।"

"मेरी शादी? किससे सर?" नीना की आंखें चमक उठीं।

"ये अपनी मां से पूछना।"

"सर।" नीना ने गहरी सांस ली—"वो गधा पता नहीं कब समझेगा कि मैं उसे चाहती हूं।"

"उस गधे को साफ-साफ कहो कि तुम उससे शादी करना चाहती हो।"

"कभी नहीं।"

"क्यों?"

"मैं तो इस बात का इंतजार कर रही हूं कि वो मुझसे शादी को कहे। मेरा उससे कुछ कहना ठीक नहीं।" नीना ने शांत स्वर में कहा—"मैंने

शादी करनी है तो उसने भी तो करनी है। लड्डू तो दोनों ही खाएंगे। फिर मैं क्यों कहूं?"

अर्जुन भारद्वाज मुस्करा पड़ा।

"मैं देवराज चौहान वाले मामले पर सोच रही हूं। ये बहुत अजीब मामला है।"

"कोई अजीब नहीं है। मुझे तो लगता है कि ताशा और बबूसा आपस में मिले हुए हैं। बबूसा प्लान के मुताबिक अपनी चाल चलकर देवराज चौहान के पास आ पहुंचा और उसके दिमाग में सदूर ग्रह की कहानी डालने लगा कि वो तब उसका सेवक हुआ करता था जब वो उस ग्रह का राजा देव था। इस मामले में ज्यादा उलझन नहीं है। वैसे तो मैं बबूसा से ही बात करके ये मामला निबटा लूंगा, उसी से रानी ताशा के बारे में जानकारी मिल जाएगी, बबूसा काबू में नहीं आया तो ताशा को ढूंढ़ना पड़ेगा। देखते हैं कि आगे क्या हो पाता है।"

"तो आप क्या करेंगे सर?"

"कल देवराज चौहान से मिलूंगा।"

"कैसा लगता होगा देवराज चौहान। बहुत बड़ा डकैती मास्टर है। उसकी तो बड़ी-बड़ी मूंछें होंगी। लम्बा-चौड़ा होगा। बड़े-बड़े बाल होंगे। कानों में सोने की बाली पहन रखी होगी और बात-बात पर रिवॉल्वर निकाल लेता होगा।"

"तुम फिल्में बहुत देखती हो।"

"मैंने गलत कहा सर।"

"हां। वो ऐसा नहीं होगा। उसकी पत्नी को देखा है तुमने अभी?"

"तो?"

"उसी से तुम समझ सकती हो कि वो कैसा होगा। वो पैसे वाला दौलतमंद इंसान है। उसकी खूबसूरत पत्नी है। ऐसे में देवराज चौहान पूरी तरह हम जैसा सामान्य इंसान दिखता होगा। फिल्मी डाकू जैसा वो नहीं होगा।" अर्जुन ने कहा।

"कल पता चल जाएगा सर। अब तो हम फ्री हैं चौपाटी चलें?"

"वहां तुम जो खाओगी, वो पैसा मैं तुम्हारी तनख्वाह से काटूंगा।"

"मैं तो आपको पहले ही बता चुकी हूं कि मैंने आज तक की ली सारी तनख्वाहें संभाल रखी हैं। ये ही सोचती हूं कि उस गधे से शादी की बात बन गई तो सारी तनख्वाहें उसे दे दूंगी। छोड़िए सर, चौपाटी चलते हैं। वहां का समुद्र मुझे बहुत अच्छा लगता है और रात के इस वक्त तो वहां भीड़ भी बहुत होगी। मजा आएगा।"

□ □

वीरेंद्र त्यागी ने नगीना का पीछा किया। त्यागी के दिमाग में नगीना की कही बातें घूम रही थीं कि कोई ताशा नाम की लड़की देवराज चौहान को पहले जन्मों का अपना पति कह रही थी और कहती थी कि वो दूसरे ग्रह से आई है देवराज चौहान को ले जाने के लिए। त्यागी को ये सब बकवास लगा कि ऐसा भी कभी हो सकता है। परंतु सब कुछ सुनकर इस मामले में उसकी दिलचस्पी जाग उठी थी कि आखिर मामला क्या है। ये तो वो समझ गया था कि देवराज चौहान की पत्नी नगीना ने दिल्ली से किसी प्राइवेट जासूस को बुलाकर उसकी सेवाएं ली हैं और उसका नाम अर्जुन भारद्वाज है। त्यागी ने पहली बार जाना था कि देवराज चौहान ने शादी कर रखी है और नगीना को भी उसने पहली बार देखा था। जो भी हो इस मामले को टटोलने की उसने सोच ली थी।

नगीना का पीछा करके, वीरेंद्र त्यागी ने देवराज चौहान का बंगला देख लिया। परंतु ये जानने के लिए कि ये बंगला सच में देवराज चौहान का ही है। इसके लिए वो गेट के पास ही अंधेरे में जम गया। थोड़ी देर के बाद उसने जगमोहन को कार पर बाहर निकलते देखा तो समझ गया कि देवराज चौहान यहीं रहता है। वो तब अपनी कार के पास पहुंचा और वहां से चल पड़ा। चेहरे पर सोचें नाच रही थीं और उसका शातिर दिमाग तेजी से दौड़ रहा था।

□ □

देवराज चौहान का पूरा दिन सामान्य ढंग से बीता था। रानी ताशा का आज फोन नहीं आया था। वैसे भी बबूसा ने देवराज चौहान का फोन धरा को दे रखा था और उसे कह दिया था कि फोन किसी भी हालत में देवराज चौहान को नहीं देना है। देवराज चौहान ने फोन मांगा भी नहीं। जगमोहन दोपहर एक बजे तक लंच पैक कराकर लेता आया था और देवराज चौहान को बताया कि वो नगीना भाभी को सारा मामला बता आया है।

देवराज चौहान जानता था कि नगीना उसके पास आ जाएगी।

बबूसा दिन भर बेचैनी से टहलता रहा। तो कभी धरा के पास जा बैठता तो कभी देवराज चौहान के पास चक्कर लगा आता। इसी प्रकार दिन बीता था। शाम छः बजे धरा ने कॉफी बनाकर देवराज चौहान को दी, जबकि बबूसा कॉफी के नाम पर बुरा-सा मुंह बना लेता था कि वो कड़वी लगती है। धरा जब कॉफी देने देवराज चौहान के पास गई तो देवराज चौहान ने उससे अपना फोन ले लिया था।

"आज रानी ताशा का फोन नहीं आया।" जगमोहन देवराज चौहान से बोला।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"नगीना भाभी को अब तक आ जाना चाहिए था।" जगमोहन पुनः बोला—"भाभी को फोन करता...।"

"रहने दो। नगीना रुकने वाली नहीं।" देवराज चौहान कॉफी के प्याले के साथ उठता हुआ बोला—"किसी काम में व्यस्त होगी और वो पहुंचेगी जरूर। न आना होता तो फोन कर देती।" देवराज चौहान बेडरूम से बाहर निकल आया।

जगमोहन उसके साथ था।

दोनों हॉल ड्राइंगरूम में पहुंचे जहां बबूसा और धरा मौजूद थे।

"तुम किस चिंता में हो?" देवराज चौहान, बबूसा का परेशान चेहरा देखकर कह उठा।

"रानी ताशा के बारे में सोच रहा हूं कि आज उसने फोन क्यों नहीं किया।" बबूसा बोला।

"हो सकता है वो किसी और काम में व्यस्त हो।"

"उसे और कोई काम नहीं है सिवाय राजा देव के।" बबूसा कह उठा—"उसका फोन न करना मुझे इस शंका में डाल रहा है कि वो कोई और हरकत करने की न सोच रही हो।"

"कैसी हरकत?"

"कहीं उसने यहां का पता जान लिया हो और वो यहां आने की तैयारी में लगी हो।"

बबूसा के शब्द सुनते ही देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"मुझे रानी ताशा का कोई डर नहीं है, बेशक वो यहां आ पहुंचे।" देवराज चौहान ने कहा।

"ऐसा मत कहिए राजा देव। वो बहुत चालाक है। महापंडित की शक्तियां उसका साथ दे रही हैं। वो आप पर भारी पड़ेगी। हमने देखा है वो वक्त जब रानी ताशा से आपने फोन पर बात की थी और उसी में खो गए थे।

"बबूसा सही कहता है।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"बबूसा।" धरा बोली—"हम देवराज चौहान को कहीं छिपा देते हैं ताकि...।"

"मैं ऐसा नहीं करूंगा।" देवराज चौहान ने दृढ़ स्वर में कहा—"मैं छिपने वाला नहीं।"

"छिपने से कोई फायदा भी नहीं होगा।" बबूसा ने गर्दन हिलाकर कहा—"महापंडित की शक्तियां रानी ताशा को वहां तक पहुंचा देंगी जहां पर भी राजा देव मौजूद होंगे। तुम रानी ताशा की ताकत नहीं समझ रही हो।"

"ये बताओ कि देवराज चौहान रानी ताशा से कैसे निबट सकता है।"
"किसी तरह से भी नहीं।" बबूसा ने धरा को देखा—"राजा देव, रानी ताशा के सामने बेहद कमजोर पड़ जाएंगे। बात सिर्फ रानी ताशा की नहीं है। महापंडित की शक्तियों की है। दगाबाज महापंडित रानी ताशा का साथ देने में लगा है। मैं राजा देव से उसे सजा जरूर दिलवाऊंगा।" बबूसा का चेहरा गुस्से से भर गया—"वो सोचता है कि राजा देव को उस जन्म का कुछ याद नहीं, ऐसे में वो जो कुछ भी कर ले। परंतु वक्त जरूर बदलेगा। राजा देव को सब कुछ याद आएगा, रानी ताशा ने जो धोखा दिया है, उसके बारे में राजा देव को याद आ जाएगा, तब राजा देव किसी को छोड़ेंगे नहीं, तब...।"
"मुझे कुछ भी याद नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।
"याद आ जाएगा राजा देव। रानी ताशा को देखने के बाद आपको याद आने लगेगा।"
"तो रानी ताशा को कैसे देखा जाए?" जगमोहन बोला।
"वो आएगी। जल्द ही आएगी। रानी ताशा तो खुद बे-करार होगी अपको देखने के लिए राजा देव।"
"तुम कहते हो कि महापंडित की शक्तियां रानी ताशा को रास्ता दिखा रही हैं तो रानी ताशा फोन पर क्यों पता पूछती है कि देवराज चौहान कहां रहता है। महापंडित उसे क्यों नहीं बता देता कि...।"
"महापंडित क्या खेल खेलता है इसका आभास नहीं हो पाता। वो अपनी बनाई मशीनों पर बहुत भरोसा करता है। मशीनें ही उसे आने वाले वक्त के बारे में बताती हैं। उसके बाद ही वो अपने कामों की दिशा तय करता है। परंतु उसे इस बात की परेशानी अवश्य हो रही होगी कि रानी ताशा बहुत दूर पृथ्वी ग्रह पर मौजूद है। दोनों ग्रहों की दूरी उसके कामों में अड़चन पैदा कर रही होगी। लेकिन वो इतना बड़ा ज्ञानी है कि इस दूरी पर भी काबू पा लेगा।" बबूसा गम्भीर था—"महापंडित ने मुझे कभी भी पसंद नहीं किया। परंतु राजा देव की वजह से वो सीधे-सीधे मुझ पर उंगली भी तो नहीं उठा पाया। उसे सबसे बड़ी दिक्कत ये होती है कि हर जन्म में मैं उसकी बहन से ही क्यों ब्याह कर लेता हूं।"
"महापंडित की बहन?" धरा बोली।
"हां, सोमारा नाम है उसका। हर जन्म में वो ही मेरी पत्नी बनती है, परंतु ये बात महापंडित को कभी पसंद नहीं आई। इस बार वो अवश्य इसी ग्रह पर मुझे खत्म कर देना चाहेगा कि मैं हमेशा के लिए उसकी बहन से दूर हो जाऊं। महापंडित की चालों में बहुत बातें भरी होती हैं।" बबूसा को जैसे सोमारा की याद आ गई—"सोमारा अच्छी है। वो मुझे समझती है कि

मेरे मन में क्या है। उसकी ये ही बात मुझे अच्छी लगती है। वो कभी भी मुझे दुखी नहीं रहने देती। वो मेरे से झगड़ा करती है परंतु प्यार भी बहुत करती है। लेकिन इस जन्म में सोमारा से मुलाकात नहीं हो पाई क्योंकि वो सदूर पर है और मेरा जन्म होते ही पोपा मुझे डोबू जाति में छोड़ गया था। पर वो मुझे जरूर याद करती होगी। एक वो ही है, जो मुझे समझ सकती है। वो जानती है कि राजा देव के लिए तो मैं अपनी जान भी दे सकता हूं।"

"बात अब की है कि अब हम क्या करें?" जगमोहन ने कहा।

"हमें रानी ताशा के आने का इंतजार करना है।" बबूसा बोला—"वो कभी भी यहां, राजा देव के पास पहुंच सकती है। जिस ताकतवर सोमाथ को वो अपने साथ लाएगी मुझे सिर्फ उसकी चिंता है। महापंडित ने कहा है कि उसकी मौत नहीं हो सकती। उसका कोई अंग कटेगा या घायल होगा तो शरीर फौरन भरपाई कर देगा और कटा अंग फिर विकसित हो जाएगा। घाव तुरंत भर जाएगा। मैं इसी सोच में रहता हूं कि सोमाथ की मौत क्यों नहीं होगी। महापंडित ने आखिर उसे किस तरह बनाया है। ये कैसे सम्भव है कि कोई मरे ही नहीं...।"

"तुमने जोबिना हथियार के बारे में बताया था जो सामने वाले को राख कर देता है। सोमाथ उससे तो मर सकता है।"

"जोबिना से कोई नहीं बच सकता परंतु वो मेरे पास नहीं है। जोबिना रानी ताशा के साथ आए लोगों के पास होगा। उसे वो मुझे नहीं लेने देंगे। मैंने ऐसी कोई कोशिश की तो वो जोबिना मुझ पर चला देंगे।"

"तुम तो ताकतवर हो। उन्हें...।" धरा ने कहना चाहा।

"जोबिना के सामने कोई ताकत नहीं चलती। जोबिना मुझ पर इस्तेमाल करेंगे तो मैं राख बन जाऊंगा।" बबूसा का चेहरा कठोर होता चला गया—"रानी ताशा से राजा देव को बचाने के लिए मुझे बहुत कुछ करना पड़ेगा।"

"मेरी वजह से तुम परेशान हुए पड़े हो।" देवराज चौहान बोला।

"ये आप क्या कह रहे हैं राजा देव। मेरा तो काम ही आपकी सेवा करना है। कितने जन्मों के बाद मुझे फिर आपकी सेवा करने का मौका मिला है। मुझसे ज्यादा खुशनसीब और कौन होगा। आपको उस जन्म की याद आ जाए तो मेरे कंधों पर लदा बोझ हट जाएगा। फिर तो सब कुछ आपने पलक झपकते ही संभाल लेना है। उसी दिन का तो इंतजार है मुझे।"

इन्हीं बातों में वक्त बीतता चला गया।

पता ही नहीं चला कब रात के नौ बज गए।

जब नगीना वहां पहुंची तो वक्त का एहसास हुआ उन्हें।

"भाभी।" नगीना को देखते ही जगमोहन कह उठा।

नगीना प्रवेश द्वार पर ठिठकी-सी सबको देख रही थी, फिर वो पास आ पहुंची। रह-रहकर उसकी निगाह बबूसा पर जा रही थी। बबूसा की निगाह भी नगीना पर ही थी।

धरा ने जगमोहन से पूछा।

"ये कौन है?"

"भाभी।"

"भाई साहब कहां हैं?" धरा कुछ समझी नहीं तो पूछ बैठी।

जगमोहन ने देवराज चौहान की तरफ इशारा कर दिया।

धरा समझी तो गहरी सांस लेकर रह गई।

"तुम बबूसा हो?" नगीना ने आंखें सिकोड़कर बबूसा से पूछा।

"हां।" बबूसा बोला—"लेकिन तुम कौन हो?"

"नगीना। देवराज चौहान की पत्नी।"

"ओह, तो इस जन्म में तुम राजा देव की पत्नी...।"

"बकवास बंद करो।" नगीना ने तीखे स्वर में कहा—"यहां कोई राजा देव नहीं है। तुम फ्रॉड हो। देवराज चौहान का दिमाग खराब करने पर लगे हो। तुम्हारा सम्बंध ताशा से है, उसी ने तुम्हें भेजा है।"

"ये तुम क्या कह रही हो।" बबूसा उलझन भरे स्वर में कह उठा।

"नगीना।" देवराज चौहान ने कहा—"ये सही है, इसे गलत मत समझो।"

"तो आप इसकी बातों को सच मानते हैं।"

"भाभी, ये सही कहता है। पहले हम भी इस पर ऐसा ही शक करते...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

"मुझे इसकी बातों पर जरा भी भरोसा नहीं है।" नगीना कह उठी—"ये धोखेबाज है और...।"

"मैं धोखेबाज नहीं हूं।"

"बबूसा सच्चा इंसान है।" धरा कह उठी।

"कोई दूसरे ग्रह से नहीं आया। बबूसा और ताशा मिलकर कोई चाल खेल रहे हैं कि देवराज चौहान का पैसा हड़प सकें।" नगीना ने बबूसा को तेज नजरों से घूरते हुए कहा—"मैंने इस सारे मामले की छानबीन के लिए प्राइवेट जासूस को हायर किया है। वो कल आएगा। वो ही अब इस सारे मामले को देखेगा।"

"प्राइवेट जासूस?" जगमोहन के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"तुम किस प्राइवेट जासूस की बात कर रही हो?" देवराज चौहान कह उठा।

"अर्जुन भारद्वाज।" नगीना बोली—"दिल्ली में सुपर डिटैक्टिव के नाम से, करोलबाग में एजेंसी है। मैंने उसे मुम्बई बुला लिया है। सब कुछ जानने के बाद वो ये मानने को तैयार नहीं कि ये कोई दूसरे ग्रह का मामला है।"

देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"तुमने उसे सब बता दिया?" देवराज चौहान ने पूछा।

"सब कुछ। मैं उससे काम ले रही हूं। सब कुछ बताऊंगी नहीं तो वो ठीक से काम कैसे करेगा?"

"तुमने जल्दबाजी की। एक बार मेरे से तो बात कर लेती...।" देवराज चौहान ने कहा।

"जगमोहन ने मुझे सब बता दिया था। उसके बाद पूछने की जरूरत नहीं थी। जगमोहन की बातों से मुझे स्पष्ट हो गया था कि तुम सब लोग बबूसा की बातों का यकीन किए बैठे हो और मेरे गले से बातें नीचे नहीं उतर रहीं। ये सब झूठा खेल चल रहा है।"

"तुमने उस जासूस को यहां का पता बता दिया है।" देवराज चौहान बोला।

"आप फिक्र मत कीजिए। उससे ये बात बाहर नहीं जाएगी कि आप कहां रहते हैं। ये मेरी जिम्मेवारी है।"

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए।

"भाभी ने ऐसा करके गलत कदम तो नहीं उठा लिया?" जगमोहन कह उठा।

"नगीना ने जो किया है सोच-समझकर ही किया होगा।" देवराज चौहान बोला—"परंतु नगीना अभी हालातों को समझ नहीं पा रही है। वो इन बातों की गम्भीरता नहीं समझ पा रही। बबूसा की बातें सही हैं। हमें भी ये बात महसूस होते-होते ही हुई।"

बबूसा ने गम्भीर स्वर में नगीना से कहा।

"तुम मुझे झूठा नहीं कह सकतीं। तुमने मेरी बातों को सुना ही कहां है जो ऐसा कह रही...।"

"जगमोहन मुझे सब बता चुका है।" नगीना ने सख्त स्वर में कहा।

"भाभी।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला—"मैंने तो तुम्हें कल के फोन के बारे में भी बताया था कि ताशा का फोन आने पर, उसकी आवाज सुनने पर देवराज चौहान की क्या हालत हो गई थी।"

"मैं इन बातों को नहीं मानती।" नगीना ने कहा—"बबूसा फ्रॉड है। ये ऐसी बातें करके कोई धोखेबाजी कर रहा है। ये देवराज चौहान के तीन जन्मों से भी पहले के जन्म की बात कर रहा...।"

"भाभी। इसे कैसे पता चला उन तीन जन्मों के बारे में। उसे तो हम लोग ही जानते हैं।"

"ये बात तुमने इससे पूछी नहीं?"

"पूछी। ये कहता है कि महापंडित ने सब कुछ बताया...।"

"और वो महापंडित सदूर ग्रह यानी कि दूसरे किसी ग्रह पर बैठा है। मैं इसकी बातों में फंसने वाली नहीं।" नगीना ने बबूसा से कहा—"अच्छा ये ही होगा कि तुम यहां से चले जाओ और दोबारा इधर आना भी नहीं।"

"तुम कौन होती हो मुझे हुक्म देने वाली। मैं राजा देव का सेवक हूं। उनके अलावा मैं किसी की बात नहीं मानूंगा।"

"आप इसे यहां से जाने को कहते क्यों नहीं?" नगीना ने देवराज चौहान से कहा।

"मुझे इसकी बातों पर भरोसा है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मर्जी आपकी। मैं प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज से इस सिलसिले में काम ले रही हूं। मुझे अपना काम करने दीजिए।"

देवराज चौहान ने गम्भीर निगाहों से जगमोहन को देखा।

जगमोहन ने कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाह मारकर बोला।

"डिनर का वक्त हो चुका है। मैं खाना पैक कराकर लाता हूं।" कहने के साथ ही जगमोहन बाहर चला गया।

"राजा देव।" बबूसा बोला—"आप अपनी पत्नी को बताइए कि मैं झूठ नहीं बोलता—मैं...।"

"नगीना तुम्हें किसी काम से नहीं रोक रही। ये जो करना चाहती है इसे कर लेने दो।"

नगीना की संदेह भरी निगाह बबूसा पर थी फिर धरा से बोली।

"इस षड्यंत्र में तुम भी इनके साथ हो?"

"षड्यंत्र?" धरा के होंठों से निकला।

"ये दूसरे ग्रह की बातें, पोपा की बातें, रानी ताशा की बातें और महापंडित की बातें...।"

"ये सब सच है।" धरा कह उठी।

"मतलब कि तुम भी इसके साथ शामिल हो।"

"मैं शामिल? कैसी बातें कर रही हैं आप। इस मामले में पड़कर मैंने अपनी मां को खो दिया। चक्रवर्ती साहब और प्रकाश को खो दिया। मेरी सरकारी नौकरी का अब कोई अता-पता नहीं। घर से बे-घर हो गई हूं मैं और तुम कहती हो कि ये षड्यंत्र हो रहा है। बहुत गलत सोच रही हो तुम।"

"तुमने सदूर ग्रह देखा है?" नगीना ने तीखे स्वर में पूछा।
"नहीं।" धरा बोली।
"पोपा देखा है?"
"नहीं।"
"रानी ताशा को देखा है?"
"नहीं।"
"महापंडित को देखा है?"
"नहीं।"
"कुछ भी नहीं देखा और कहती हो कि ये सब बातें सही हैं। तुम अपना मजाक बना रही हो।"
"मैंने बबूसा को देखा है। इसे समझा है। ये जाना है कि ये कभी झूठ नहीं बोलता।"
"मतलब कि इसने कहा और तुमने मान लिया?"
"देवराज चौहान ने भी तो मानी है ये बात। जगमोहन ने भी मानी है। सब कुछ सामने तो है।"
"ये सब झूठी बातें हैं।" नगीना ने दृढ़ स्वर में कहा।
"अब मैं तुम्हारे घर पर बैठकर तुमसे ज्यादा बहस भी नहीं कर सकती। तुम मुझे घर से निकाल सकती हो और मेरे पास रहने का कोई ठिकाना भी नहीं है। यहां तक कि डोबू जाति के योद्धा मेरी जान के पीछे हैं। परंतु तुम मेरी बात को सच मानो कि बबूसा सच्चा इंसान है। ये कोई भी बात झूठ नहीं बोलता।"
नगीना ने देवराज चौहान से कहा।
"आप भी इनकी बातों में आ गए।"
"बबूसा सही है नगीना। मुझे इस पर विश्वास करने में काफी वक्त लगा। तुम...।"
"आप ताशा को पहले से जानते थे?"
"मैंने तो नाम ही पहली बार सुना है।"
"ये गहरा षड्यंत्र है आपके खिलाफ। अब अर्जुन भारद्वाज ही इस मामले को संभालेगा।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा।
देवराज चौहान कुछ कहने लगा कि तभी उसका फोन बजने लगा।
"फोन।" धरा तेज स्वर में बोली—"बबूसा, देवराज चौहान का फोन बजा है।"
देवराज चौहान ने फोन उठा लिया।
बबूसा, देवराज चौहान की तरफ बढ़ा।

"वहीं रुक जाओ।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।

बबूसा के कदम वहीं जम गए।

"अगर ये फोन रानी ताशा का है तो चिंता मत करो। जो पहले हुआ था, वो अब नहीं होगा।" देवराज चौहान ने कहा।

बबूसा वहीं खड़ा रहा। चेहरे पर व्याकुलता आ गई थी।

नगीना के माथे पर बल आ ठहरे।

"तुम फोन पर आया नम्बर देखो।" धरा बोली—"शायद किसी पहचान वाले का नम्बर हो।"

"कोई नया नम्बर है।" देवराज चौहान ने कहकर फोन कान से लगाया और कॉलिंग स्विच दबाकर बोला—"हैलो।"

"राजा देव।" रानी ताशा की सरसराती-सी आवाज कानों में पड़ी।

"ता-शा...।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

बबूसा ने तुरंत आगे बढ़ना चाहा।

परंतु देवराज चौहान द्वारा सख्त नजरों से देखने पर, बबूसा वहीं खड़ा रह गया।

"मेरे राजा, मेरे देव।" रानी ताशा की लरजती आवाज पुनः कानों में पड़ी—"आप कहां हैं। मैं आपके बिना तड़प रही हूं।"

"कौन हो तुम?"

"मैं-मैं ताशा हूं मेरे प्यारे देव, तुम्हारी ताशा। याद करो वो दिन जब तुम्हें हर तरफ मैं ही नजर आया करती थी। तुम ताशा-ताशा कहते दौड़ते फिरते थे। कितने हसीन दिन थे वे देव। तुम मुझे सज-संवरकर रहने को कहा करते थे। मेरी एक मुस्कान पर तुम फिदा हो जाते थे। कितना प्यार करते थे तुम मुझे देव। तुम हमेशा मेरे पांवों में पायल डाला करते थे। तुम्हें पायल डालना बहुत पसंद था। याद आया देव।" रानी ताशा की आने वाली आवाज में खुशी भर आई थी—"मुझे वो दिन कभी भी नहीं भूलते, जब किले के पीछे जोकता (आमों) के बाग से तुम कच्चे जोकता (आम) तोड़कर दूर से फेंककर मुझ पर मारा करते थे। एक बार तो तुम्हारा फेंका जोकता (आम) मेरी आंख पर लग गया था। आंख सूज गई। तुम रोने लगे कि तुमने मुझे मार दिया। जब तक आंख ठीक नहीं हुई, उतने दिन तुम मेरे पास ही बैठे रहे। तुम मुझे कितना प्यार करते थे। अपनी ताशा को कैसे भूल सकते हो। मैं वो ही ताशा हूं जिस पर तुम जान दिया करते थे, याद करो देव, मैं वो ही ताशा हूं जिसके बिना तुम कभी चैन की नींद नहीं ले पाते थे। मुझे पिता के पास भी नहीं जाने देते थे। देव, मेरे प्यारे देव, मैंने तुमसे मिलने की चाह में तीन जन्म काट लिए। महापंडित ने पहले ही बता दिया था कि मैं

इस जन्म में तुमसे मिल पाऊंगी। इसी आस के सहारे मैं जन्म काटती रही। तुम तो मुझसे ऐसे दूर हुए कि तरस गई हूं तुम्हें देखने को। मेरे देव, अपनी ताशा को पहचानो मेरी आवाज को पहचानो मैं वो ही...।"

"ता-शा।" देवराज चौहान के होंठों से निकला—"मैं तुम्हें पहचान गया हूं—नहीं—ओह मुझे याद क्यों नहीं आता कि तुम कौन हो। तुम्हारी आवाज, तुम्हारी आवाज मुझे याद आ रही है, मैंने पहले कहीं सुन रखी है, तुम...।"

"मैं ताशा हूं देव।" उधर से ताशा का स्वर भर्रा उठा—"तुम मुझे पहचानते क्यों नहीं?"

"प-पहचान रहा हूं तुम—तुम ताशा हो। ता-शा, ये मैंने कहां सुना है नाम।" देवराज चौहान अब बातों में खोने लगा था। उसके चेहरे के भाव भी नरम पड़ने लगे थे—"तुम—तुम ताशा हो?"

"तुम्हारी ताशा, देव।"

"ताशा...।"

"तुम्हें सदूर ग्रह भी याद नहीं आ रहा, जहां के तुम राजा हो। महापंडित ने मुझे बताया कि पृथ्वी ग्रह पर तुम साधारण-से चोर हो। ये तुम कैसी जिंदगी जी रहे हो देव। मैं तुम्हें वापस ले जाने आई हूं। क्या तुम मेरे साथ सदूर ग्रह पर चलोगे देव। वो तो तुम्हारा पसंदीदा ग्रह है। वहां मैं हूं। राज-पाट है। ऐशो-आराम है। तुमने ग्रहों पर घूमने के लिए पोपा (अंतरिक्ष यान) बनाया था। मैं उसी पर बैठकर पृथ्वी तक पहुंची हूं। हम पोपा में अंतरिक्ष की सैर किया करेंगे देव। तुम्हें एक खबर बताऊं कि जम्बरा ने एक और पोपा बना लिया है तुम्हारे पोपा को देखकर। वो भी चाहता है कि तुम्हारी सेवा करे...।"

"जम्बरा...।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

तभी बबूसा तेजी से आगे बढ़ा।

परंतु नगीना ने फौरन हाथ उठाकर उसे रोक दिया।

बबूसा ने सख्त निगाहों से नगीना को देखा तो नगीना उसके पास पहुंचकर बोली।

"मुझे देखने दो कि क्या होता है।"

"राजा देव, रानी ताशा के बस में जाते जा रहे हैं।" बबूसा ने बेचैनी से कहा।

"वो ही तो मुझे देखना है।" नगीना ने तीखे स्वर में बबूसा से कहा।

"मैं तुम्हारी बात क्यों मानूं, मैं तो राजा देव का सेवक...।"

"खबरदार जो आगे बढ़े।" नगीना गुस्से से कह उठी—"ये राजा देव

नहीं, मेरा पति देवराज चौहान है। ये मेरा घर है। मैं तुम्हें इजाजत नहीं देती कि तुम इस मामले में दखल दो।"

तभी धरा उठकर बबूसा के पास आ गई।

बबूसा ने धरा को देखा तो धरा ने उसे खामोश रहने का इशारा किया।

बबूसा, धरा को एक तरफ ले जाकर बोला।

"राजा देव, रानी ताशा की आवाज के प्रभाव में आते जा रहे हैं। वो जम्बरा की बातें करने लगी है।"

"जम्बरा कौन?"

"पोपा का निर्माण करने में सदूर ग्रह पर राजा देव का सहयोगी था जम्बरा सदूर का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है वो।"

"तुम अभी खामोश रहो। देवराज चौहान की पत्नी को भी देख लेने दो कि क्या होता है।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

बबूसा बेचैनी से देवराज चौहान को देखने लगा।

"वो ही जम्बरा।" रानी ताशा की आवाज देवराज चौहान के कानों में पड़ रही थी—"जिसे तुम बताते रहते थे कि पोपा कैसे बनाना है किन-किन चीजों का निर्माण करना है। तुम्हारे कहने पर वो काम किया करता था। तुम्हें याद है राजा देव एक बार मैं घोड़े से गिर गई थी तो तुम मुझे बांहों में उठाकर किले पर ले आए थे। तुमने ही मेरे घावों पर दवा लगाई थी। तब तुम्हारी आंखों में आंसू थे कि तुम्हारी ताशा को तकलीफ हो गई, जबकि मैं तुम्हारा हाल देखकर हंस रही थी। मेरे देव, मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकती। महापंडित ने अपनी बातों से मुझे सहारा दे रखा, वरना मैं तो महापंडित से कह भी देती कि मेरा जन्म अब दोबारा न कराए। परंतु महापंडित मुझे कहता रहा कि उसकी मशीनें बता रही हैं, मेरी मुलाकात होगी आपसे। आप जिंदा हैं। मैंने जो गलती की, उसके लिए तीन जन्मों तक तड़पी हूं और इस चौथे जन्म में भी तड़प रही हूं पर अब आपके करीब आ पहुंची हूं। देव तुम्हारी ताशा आ गई है। तुम्हें तो खुश हो जाना चाहिए मेरी तरह। मेरे साथ वापस सदूर ग्रह पर चलोगे न देव?"

"ह-हां, जरूर चलूंगा ताशा। मैं तुम्हारे साथ कहीं भी चलूंगा।" देवराज चौहान का स्वर अब बदलने लगा था।

नगीना के होंठ भिंच गए।

"मेरे देव।"

"ताशा। मेरी ताशा—मैं-मैं...।" देवराज चौहान आगे कुछ न कह सका।"

"कहो देव।"

"तुम्हारी आवाज। तुम्हारी आवाज मैंने सुन रखी है, मुझे तुम याद आ रही हो, आह क्या नाम बताया था तुमने अपना...।"

"ताशा।"

"ताशा। तुम—तुम—ओह मुझे याद क्यों नहीं आ रहा।" देवराज चौहान दीवानों की तरह कह उठा—"तुम मेरी हो। सिर्फ मेरी हो ताशा। मैं—मैं तुम्हारे पास आना चाहता हूं। तुम्हारे करीब, तुम्हें बांहों में लेना चाहता हूं।"

"ताशा की याद आ गई देव। क्या तुम्हें याद आ गया कि मैं वो ही ताशा...।"

"तुम मेरी हो। मेरी हो ताशा।" देवराज चौहान कम्पन भरे स्वर में कह उठा—"हां, हम जुदा हो गए थे। तुम कहां हो ताशा, मेरे पास क्यों नहीं आ जाती। तुम्हारे बिना अब मेरा दिल भी नहीं लग रहा। आ जाओ ताशा, मेरे पास आ जाओ।"

"मेरे प्यारे देव।" उधर से ताशा का स्वर भर्रा उठा—"ये सुनने के लिए तो मैं कब से तड़प रही थी। तुम्हारे बिना एक-एक पल मुझ पर भारी पड़ता है। वक्त कटता ही नहीं। कितना तड़पी हूं मैं...।"

"मेरी बांहों में आ जाओ ताशा।"

"जब तक बबूसा तुम्हारे पास है नहीं आ सकती। वो हमें मिलने नहीं देगा।"

"बबूसा।" एकाएक देवराज चौहान गुर्रा उठा और निगाह बबूसा की तरफ उठी—"मैं बबूसा को मार दूंगा।"

"सच देव।"

"तुम्हारे लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं। देखो, मैं अभी बबूसा को खत्म कर देता हूं।"

बबूसा ने गम्भीर निगाहों से नगीना को देखा।

नगीना उलझन से भरी खड़ी थी।

"देव। मेरे प्यारे देव। तुम मेरे पास आ जाओ। अपनी ताशा को बांहों में ले लो। मुझे जी भर कर प्यार करो। जैसे पहले किया करते थे। तुम्हारे प्यार में मैं सब कुछ भूल जाती थी। आह, अब हमारे वो सुनहरी दिन लौट आएंगे।"

"तुम—तुम कहां हो ताशा, मैं—मैं आता हूं।" देवराज चौहान का स्वर आवेश में थरथरा रहा था।

"मैं सी-ब्यू पर्ल होटल में ठहरी हूं और तुम्हारा इंतजार कर रही...।"

तभी नगीना देवराज चौहान के पास आ पहुंची।

देवराज चौहान ने अजनबी जैसी निगाहों से नगीना को देखा।

"आप फोन बंद कर दो।" नगीना कह उठी।

"ये किसकी आवाज है?" उधर से रानी ताशा ने एकाएक पूछा।

"ये मेरी पत्नी है नगीना।" देवराज चौहान ने फोन पर कहा—"पर मैं तुम्हारा हूं ताशा, तुम मेरी हो, मैं तुम्हारे पास सी-व्यू पर्ल होटल में आ रहा हूं। मैं भी तुम्हारे बिना नहीं रह सकता—मैं—मैं ता—शा—आ रहा हूं।"

"जल्दी-से आ जाओ मेरे प्यारे देव। पर बबूसा तुम्हें नहीं आने देगा। वो तुम्हें रोकेगा।"

"मैं बबूसा को मार दूंगा।" देवराज चौहान ने दांत पीसकर कहा—"मैं अभी उसे...।"

तभी नगीना ने झपट्टा मारा और फोन छीन लिया देवराज चौहान से।

"तुम-तुमने मेरा फोन छीन लिया।" देवराज चौहान एक झटके से उठा और नगीना पर झपट पड़ा।

नगीना को शायद ऐसी आशा नहीं थी।

देवराज चौहान ने क्रोध से दांत पीसते नगीना का गला दोनों हाथों में दबा लिया।

"मैं ताशा से बात कर रहा था। वो मेरा इंतजार कर रही है और तुमने मेरा फोन ले लिया। मैं तुम्हें मार दूंगा—मैं...।"

नगीना का गला दबने से, उसका चेहरा लाल होने लगा।

पलक झपकते ही बबूसा पास पहुंचा और घूंसे के रूप में मध्यम वेग से देवराज चौहान की कनपटी पर हाथ दे मारा। देवराज चौहान के हाथ नगीना के गले से हट गए। वो लहराकर नीचे गिरने को हुआ कि बबूसा ने फौरन उसे संभाला और उठाकर पास ही के लम्बे सोफे पर लिटा दिया।

बेहोश हो चुका था देवराज चौहान।

नगीना सन्न-सी खड़ी थी। हाथ से अपने गले को रगड़ रही थी। नजरें देवराज चौहान पर थीं।

"तुम ठीक हो?" पास पहुंचकर धरा कह उठी।

नगीना ने गहरी सांस ली। पास के सोफे पर जा बैठी।

"ये—ये देवराज चौहान को क्या हो गया था।" नगीना के होंठों से निकला—"मुझे विश्वास नहीं आता कि इसने मेरा गला दबा देना चाहा। नहीं, ये तो कभी भी नहीं हो सकता। देवराज चौहान मेरे साथ ऐसा नहीं करेगा। पर ये हुआ...।"

"अब तो तुम्हें भरोसा हो गया कि बबूसा सही है।" धरा बोली।

"नहीं। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। ये अच्छे-भले तो थे फिर इन्हें क्या हो...।"

"फिर तुम क्या कहना चाहती हो?"
नगीना ने बबूसा को देखकर कहा।
"मैं बबूसा की बात कर रही हूं।" स्वर में सख्ती आ गई।
"क्या?"
"ये डोबू जाति का है न?"
"नहीं। इसका जन्म सदूर ग्रह पर हुआ था और अंतरिक्ष यान (पोपा) इसे...।"
"तुम सदूर ग्रह पर गई हो। वहां तुमने बबूसा को जन्म लेते देखा था फिर तुमने ये भी देखा होगा कि बबूसा को अंतरिक्ष यान में बैठाकर, पृथ्वी ग्रह पर, डोबू जाति में छोड़ दिया गया।"
धरा, नगीना को देखने लगी।
"जवाब दो। तुमने ये सब देखा था?"
"नहीं।"
"तो फिर ये मत कहो कि बबूसा सदूर ग्रह पर पैदा हुआ। सच बात तो ये है कि सदूर ग्रह है ही नहीं।"
धरा ने बबूसा को देखा।
बबूसा आराम से बैठा था।
"सच बात तो ये है कि बबूसा डोबू जाति में ही पैदा हुआ। ये बात भी इस कारण मान रही हूं कि तुम किसी तरह डोबू जाति के ठिकाने तक जा पहुंची थीं और वहां से जिंदा बचकर लौट आई किसी तरह और बबूसा की खबरें भी लाई।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **'बबूसा**।)
"इस वजह से ये बात जम जाती है कि बबूसा डोबू जाति से है।"
"तुम्हारा कहना गलत नहीं है। मैं डोबू जाति से हूं।" बबूसा बोला—"वहां मैं पला-बड़ा हुआ, मेरी यादें वहां की हैं। मेरे इस जीवन का पूरा हिस्सा डोबू जाति से जुड़ा हुआ है। आज सदूर ग्रह से ज्यादा मुझे डोबू जाति से प्यार है। परंतु ये बात भी पूरी तरह सच है कि मेरा जन्म सदूर ग्रह पर हुआ था और पोपा मुझे डोबू जाति में छोड़ गया था।"
"दूसरे ग्रह वाली झूठी बात को मैं कभी नहीं मानूंगी।" नगीना ने दृढ़ स्वर में कहा—"तुम्हारी चाल को मैं बेनकाब कर दूंगी। तुम, ताशा नाम की लड़की के साथ मिलकर खेल रच रहे हो, परंतु मैं तुम लोगों को कामयाब नहीं होने दूंगी।" नगीना ने धरा को देखा—"मुझे पूरा विश्वास है कि तुम भी इसके साथ शामिल हो।"
"मैं तो पहले ही मुसीबत की मारी हूं।" धरा ने गहरी सांस ली—"परंतु तुम बबूसा की तरफ उंगली उठाकर बहुत गलत कर रही हो। मैंने और

बबूसा ने देवराज चौहान को ढूंढ़ने में बहुत मेहनत की है। कहां-कहां धक्के नहीं खाए। ये बात तो तुम सोहनलाल से पूछ सकती हो, जो बबूसा के डर से भागकर देवराज चौहान के पास आ गया था। वो पुलिस वाला, क्या नाम है, हां इंस्पेक्टर पवन कुमार वानखेड़े, उससे पूछो कि देवराज चौहान की खबर पाने के लिए हम उससे मिले। उसी ने हमें सोहनलाल के बारे में बताया था, तो हम सोहनलाल के पास...।"

"तुम क्या सोचती हो कि मैं तुम्हारी ये बातें मान लूंगी कि तुम सच कह...।"

"मत मानो।" धरा ने मुंह बनाकर कहा—"परंतु मैं तुम्हें स्पष्ट कह देना चाहती हूं कि मैं गलत नहीं हूं, बबूसा को मैंने बहुत हद तक जाना है, बबूसा जो कहता है पूरी तरह सच कहता है, रही बात रानी ताशा की तो मैंने रानी ताशा को कभी देखा नहीं है सिर्फ बबूसा के मुंह से ही उसके बारे में सुना है, परंतु रानी ताशा है और यकीनन है। ये दूसरे ग्रह का मामला है। डोबू जाति वाले, सदूर ग्रह से, रानी ताशा से और अन्य लोगों से बात करते हैं। मैंने डोबू जाति में जाकर उनका वो बिजली वाला कमरा देखा है, जो सदूर ग्रह से आए लोगों ने तैयार करके, उन्हें दिया था। वहां तरह-तरह के ढेरों यंत्र लगे हैं, जो कि मेरी समझ से बाहर हैं, उन्हीं यंत्रों से वो सदूर ग्रह पर बात करते हैं। डोबू जाति वाले इसी कारण मुझे मार देना चाहते हैं कि मैंने उनका वो बिजली वाला कमरा देख लिया है और इस बारे में मैं कहीं लोगों को न बता दूं। डोबू जाति के अनपढ़, गंवार लोग कभी भी बिजली के यंत्र और तारों की सैटिंग नहीं कर सकते। सदूर ग्रह से पोपा में बैठकर लोग डोबू जाति में आते रहे हैं और अपने यंत्र उन्होंने वहां फिट किए हैं।"

"खूब। तो तुम कहती हो कि मैं देवराज चौहान के बारे में मान लूं कि वो दूसरे ग्रह पर कभी राजा देव थे और तब उनकी पत्नी रानी ताशा थी।" नगीना ने व्यंग भरे स्वर में कहा।

"मत मानो। आने वाला वक्त तुम्हें इस बात का एहसास जरूर कराएगा।" धरा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"रानी ताशा अंतरिक्ष यान में बैठकर आई। अंतरिक्ष यान अक्सर धरती पर आता रहा और किसी को पता भी न चला।"

"तुमने डोबू जाति नहीं देखी कि वो कहां रहते हैं।" धरा बोली—"हिमाचल के लाहौल स्पीति के उस आखिरी छोर पर बर्फीले खोखले पहाड़ों के भीतर डोबू जाति बसी है, जहां अक्सर इंसान पहुंच ही नहीं सकता। मीलों-मीलों तक बर्फ का रेगिस्तान है। कोई इंसान नहीं बसता उधर, जहां ये रहते हैं। उनके सबसे करीबी बस्ती टाकलिंग ला है जहां से घोड़ों का और पैदल का

सफर करके मैं जोगाराम के साथ उधर पहुंची थी। चार दिन लगे थे मुझे और मैं दुनिया से कट गई थी उस वक्त। टाकलिंग ला जाकर डोबू जाति के बारे में पता करो, सच बात तो ये है कि टाकलिंग ला में कोई डोबू जाति के बारे में बात करना ही नहीं चाहता। फिर भी कोशिश करते रहने पर तुम्हें किसी-न-किसी से पता चलेगा कि जिधर डोबू जाति रहती है, उधर से आकाश से, कभी-कभी तेज नीली और सफेद रोशनी चमकती है। मेरे खयाल में ऐसा तभी होता होगा जब दूसरे ग्रह का पोपा आता होगा।"

"तुम सही कह रही हो।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"जब पोपा जमीन पर उतरने वाला होता है तो नीली रोशनी छोड़ने लगता है। मैंने तीन बार पोपा को आकर, वहां उतरते देखा है।"

धरा ने आगे कहा।

"ये बातें झूठी नहीं हैं। रानी ताशा का वजूद सच में है, दूसरा ग्रह भी है और...।"

"तुम इतने तर्क क्यों दे रही हो कि मैं तुम्हारी बात मान लूं।" नगीना कह उठी—"शायद इसलिए कि तुम इनके साथ मिलकर काम कर रही हो और...।"

"ऐसा मत कहो।" धरा कह उठी—"वरना गुस्से में मैं भी कुछ कह दूंगी।"

"कल का इंतजार करो।"

"कल क्या होगा?"

"अर्जुन भारद्वाज तुम लोगों की चालों को समझेगा। वो...।"

"प्राइवेट जासूस तो चोर होते हैं।"

"अच्छा।" नगीना ने उसे घूरा—"प्राइवेट जासूसों ने कितनी बार तुम्हारी चोरी कर ली?"

"एक बार भी नहीं। मैं ऐसे लोगों को मुंह नहीं लगाती।" धरा ने तीखे स्वर में कहा।

नगीना कुछ कहने लगी कि बाहर कार रुकने की आवाज आई।

"जगमोहन खाना ले आया होगा।" धरा ने कहा।

बबूसा ने बेचैनी से पहलू बदला।

कुछ पलों बाद जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया और वहां का नजारा देखते ही थम गया। हाथ में चार बड़े-बड़े लिफाफे उठा रखे थे। परंतु उसकी निगाह सोफे पर लेटे-पड़े देवराज चौहान पर थी। वो पास पहुंचा। धरा-नगीना और बबूसा की निगाह उस पर ही थी। जगमोहन गम्भीर स्वर में कह उठा।

"रानी ताशा का फोन फिर आया था?" उसकी नजरें तीनों पर गईं।

"हां।" धरा ने जवाब दिया—"इस बार तो देवराज चौहान ने अपनी पत्नी का गला दबा दिया था।"

जगमोहन के चेहरे पर सख्ती नाच उठी। उसने बबूसा से कहा।

"तब तुम कहां थे?"

"यहीं था। राजा देव की अब की पत्नी, यानी इसने मुझे पीछे रुके रहने को कह दिया था, वरना राजा देव ऐसा न कर पाते। मैं उन्हें पहले ही रोक लेता।" बबूसा ने गम्भीर और धीमे स्वर में कहा।

"आखिर ये सब कब तक चलेगा?" जगमोहन कह उठा।

"अभी तो कुछ हुआ ही नहीं है और तुम परेशान हो उठे।" बबूसा ने जगमोहन को देखा—"तूफान तो तब उठेगा जब रानी ताशा, राजा देव के सामने आएगी और ये कभी भी हो सकता है। उस वक्त जो होगा उसे रोक पाना आसान नहीं होगा। तब महापंडित की शक्तियां काम कर रही होंगी रानी ताशा के साथ। सोमाथ भी रानी ताशा के साथ होगा और मैं अकेला उनके सामने खड़ा होऊंगा। कम-से-कम मेरे लिए वो बुरा वक्त होगा। महापंडित पहले ही कह चुका है कि मैं सोमाथ का मुकाबला नहीं कर सकता।"

"तो क्या तब तुम उनसे हार जाओगे?" जगमोहन चिंतित होता दिखा।

"बबूसा हारता नहीं है।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा—"मेरे होते रानी ताशा, राजा देव को सदूर ग्रह तक नहीं ले जा सकती। अगर राजा देव को सदूर ग्रह का जन्म वक्त रहते याद आ गया तो फिर राजा देव की मर्जी...।"

तभी नगीना कह उठी।

"जगमोहन भैया तुम तो इनकी बातों के जाल में पूरी तरह फंस चुके हो।"

जगमोहन ने गम्भीर निगाहों से नगीना को देखा।

नगीना की शिकायत भरी निगाह जगमोहन पर थी।

"भाभी।" जगमोहन कह उठा—"मैंने तुम्हें सुबह भी कहा था कि ये जो हो रहा है सच है।"

"सच नहीं है।"

"कैसे कह सकती हो?"

"दूसरा ग्रह। ताशा का बार-बार फोन आना। बबूसा का पहले ही आकर ये सब बातें करना किसी बड़ी चाल का हिस्सा है।"

"ये कोई चाल नहीं है। क्योंकि धरा डोबू जाति में होकर आ चुकी है। धरा के पीछे डोबू जाति के लोग हैं। उस दिन मैं धरा के साथ ही था जब चौकोर पत्ती जैसे हथियार से हम पर हमला किया गया। हम मरते- मरते बचे थे।"

"मैं बबूसा और रानी ताशा की बात कर रही हूं। ये दोनों फ्रॉड हैं। इनकी बातें विश्वास के काबिल नहीं।"

"भाभी, तुमने अभी देवराज चौहान का हाल देखा था, जब उसने ताशा से फोन पर बात की।" जगमोहन ने कहा।

"ताशा ने आवाज के सम्मोहन से फंसा लिया था देवराज चौहान को। वो सम्मोहन की विद्या जानती...।"

"ये नहीं समझेगी।" बबूसा बोला—"ये समझना ही नहीं चाहती।"

बबूसा की बात पर ध्यान न देकर जगमोहन बोला।

"सम्मोहन से किसी पर काबू पाया जा सकता है, परंतु उससे किसी पर हमला नहीं कराया जा सकता है।"

"हमला?"

"देवराज चौहान ने तुम्हारी गर्दन दबा देनी चाही। तुम क्या सोचती हो कि क्या देवराज चौहान कभी ऐसा कर सकता है?"

"न-हीं।"

"फिर देवराज चौहान ने ऐसा क्यों किया?"

नगीना के होंठ भिंच गए।

"मैं बताता हूं।" जगमोहन बोला—"सच बात तो ये है कि ताशा की आवाज सुनकर देवराज चौहान अपने होश गंवा बैठता है। उसे ताशा ने तो नहीं कहा होगा कि वो तुम्हारा गला दबा दे। परंतु पागल-सा हुआ देवराज चौहान तुम्हारा गला दबाने लगा।"

"तुम तो यहां नहीं थे। फिर तुम्हें क्या पता कि कैसे हुआ होगा ये सब?" नगीना बोली।

"अंदाजा लगा सकता हूं। क्योंकि देवराज चौहान की ऐसी हालत पहले देख चुका हूं, जब उसने बबूसा को घूंसा मारा था।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"यहां जो भी हो रहा है वो सच है। देवराज चौहान का ये हाल हो जाना मामूली बात नहीं, तुम्हें मेरी बात का भरोसा करके इन हालातों पर विश्वास करना चाहिए और आने वाले वक्त के बारे में सोचना चाहिए।"

"पर तुम ऐसा क्यों नहीं सोचते कि बबूसा और ताशा आपस में मिले हुए हैं, बबूसा इधर पहुंचकर देवराज चौहान के दिमाग में अपने प्लान के हिसाब से बातें ठूंस रहा है उधर से ताशा फोन करके, देवराज चौहान का दिमाग खराब कर रही...।"

"अगर ऐसा है तो देवराज चौहान की हालत क्यों बिगड़ जाती है, ताशा का फोन आने पर।"

"बताया तो, उसकी आवाज में सम्मोहन है, वो...।"

"सम्मोहित हो जाने पर, कोई किसी पर हमला नहीं कर देता...।"
"जो भी सच है, बहुत जल्दी सामने आ जाएगा। नगीना बोली—"कल अर्जुन भारद्वाज इस मामले की छानबीन करेगा।"
जगमोहन, सोफे पर पड़े देवराज चौहान के पास पहुंचा। उसे चैक किया।
"देवराज चौहान ने ताशा से बात करते समय होटल सी व्यू पर्ल का नाम लिया था।" नगीना गम्भीर स्वर में कह उठी—"मेरे खयाल में ताशा होटल सी व्यू पर्ल में ठहरी हुई है और देवराज चौहान को वहीं बुला रही थी।"
'सी व्यू, पर्ल?' जगमोहन सोच भरे स्वर में बड़बड़ा उठा।
"सुना है इस होटल का नाम?"
"हां, ये जुंहु बीच पर है। पांच सितारा होटल है।" जगमोहन ने कहा—"तो ताशा इस होटल में ठहरी है। हम इसे पकड़ सकते...।"
"इस मामले में जो करना होगा, अर्जुन भारद्वाज ही करेगा।" नगीना बोली।
"भाभी तुम उस प्राइवेट जासूस पर इतना भरोसा क्यों कर रही हो?" जगमोहन झल्ला उठा।
"मैंने सुना है, वो काबिल इंसान है। वो सब ठीक कर देगा।" नगीना ने यकीनी स्वर में कहा।
तभी बबूसा, जगमोहन से गम्भीर स्वर में कह उठा।
"तुम अभी कह रहे थे कि रानी ताशा को पकड़ सकते हो। ऐसा दोबारा सोचना भी मत। अगर तुम गलत इरादे के साथ रानी ताशा के पास भी पहुंचे तो मार दिए जाओगे। सोमाथ रानी ताशा के करीब ही रहता होता और अन्य लोग भी रानी ताशा के आसपास ही मौजूद होंगे। मेरे खयाल में तुम अभी तक रानी ताशा को ठीक से समझ नहीं सके।"
"तुम्हारा मतलब कि वो खतरनाक है?"
"बहुत।"
"तो ऐसी औरत किसी को (देवराज चौहान) प्यार क्या करेगी?"
"वहम में मत रहना, वो राजा देव को बहुत चाहती है। तभी तो इन्हें लेने सदूर से पृथ्वी तक आ पहुंची है।"
"तुम।" नगीना गुस्से से कह उठी—"अपनी चालें खेलना बंद नहीं करोगे?"
"ये सच्चाई है।" बबूसा गम्भीर था।
"मक्कार, तुमने किस बुरी तरह सबको अपने चक्कर में ले लिया है। तुम भी शायद सम्मोहन जानते हो।"
बबूसा गम्भीर भाव में मुस्कराया।

"फिर तो मैं तुम पर भी सम्मोहन का इस्तेमाल कर सकता हूं।"

"तुम मुझे पागल नहीं बना सकते।" नगीना उठ खड़ी हुई—"मैं ताशा से बात करने होटल सी व्यू पर्ल जा रही हूं।"

"नहीं।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"गलती मत करना।" धरा कह उठी—"वो बहुत खतरनाक लोग हैं। उसके साथ डोबू जाति के योद्धा भी हो सकते हैं।"

"ये ही तो मैंने देखना है कि वो कितने खतरनाक...।"

"तुम वहां नहीं जाओगी भाभी।" जगमोहन कह उठा—"मैं नहीं चाहता कि तुम उन लोगों के सामने पड़ो।"

"मैं जाऊंगी।" नगीना दृढ़ स्वर में कह उठी—"मैं जा...।"

तभी बबूसा सामने आ गया नगीना के।"

नगीना ने गुस्से से बबूसा को देखा।

"तुम्हारा वहां जाना जरा भी ठीक नहीं होगा।"

"मेरे खयाल में तुम्हें चिंता हो रही है कि मेरे ताशा के सामने पड़ने से, तुम्हारी योजना खुल जाएगी।"

"मेरी कोई योजना नहीं है। परंतु तुम रानी ताशा को नहीं जानतीं। राजा देव को रानी ताशा हर हाल में पाना चाहती हैं। ऐसे में जो भी उसके रास्ते में आएगा, वो उसको खत्म कर देगी। रानी ताशा को मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूं कि वो कैसी है। जब वो जानेगी कि तुम राजा देव की पत्नी हो इस जन्म में तो वो तुम्हारे साथ कुछ भी कर सकती है।"

"मैं तुम्हारी बातों का भरोसा नहीं करती।" तुम...।"

"भाभी।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"कल वो प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज आएगा न?"

"हां।"

"तो वो रानी ताशा से बात कर लेगा। वो देख लेगा इस मामले को। तुम रानी ताशा के पास मत जाओ।"

नगीना ने कुछ नहीं कहा खामोश-सी वापस सोफे पर जा बैठी।

बबूसा, नगीना के सामने से हट गया।

जगमोहन खाने के लिफाफे आगे बढ़ाकर धरा को देता कह उठा।

"ये किचन में रख दो। जिसे भूख हो खा ले। मैं देवराज चौहान के साथ ही खाऊंगा। भाभी तुम खाओगी।"

नगीना ने चुप-सी, इंकार में सिर हिला दिया। चेहरे पर सोचें नाच रही थीं। नजरें सोफे पर बेहोश पड़े देवराज चौहान पर जा टिकी थीं।

▭ ▭

रानी ताशा ने फोन एक तरफ रखा, आंखों में आंसू थे। उसका भोला-भाला खूबसूरत चेहरा आंसुओं से भरा अच्छा नहीं लग रहा था। सोमाथ एक तरफ खड़ा था। सोमारा पास ही बैठी कह उठी।

"क्या हुआ रानी ताशा?"

"राजा देव मेरे पास आना चाहते हैं। वो मुझसे मिलने को बेकरार हैं।" रानी ताशा भीगे स्वर में बोली।

"आपने तो उन्हें होटल का नाम भी बता दिया है, वो आते ही होंगे।"

"नहीं।" रानी ताशा ने इंकार में सिर हिलाया—"वो नहीं आ सकेंगे।"

"क्यों?"

"कोई उन्हें रोक रहा है। कोई है जो राजा देव की बात, मेरे से पूरी नहीं होने देता। हर बार बात अधूरी रह जाती है। अब भी किसी ने उनसे फोन छीन लिया था। मुझे किसी औरत की आवाज सुनाई दी थी। वो राजा देव की इस जन्म की पत्नी है। राजा देव ने ही मुझे ये बात कही। पता नहीं राजा देव इस वक्त किस हाल में होंगे।"

"क्या पता वो यहां आते ही हों।"

"नहीं सोमारा, राजा देव की पत्नी उन्हें मेरे पास नहीं आने देगी। बबूसा भी वहां है, वो भी राजा देव को जरूर रोकेगा मेरे पास आने को। अगर बबूसा ने विद्रोह न किया होता तो अब तक सब ठीक हो गया होता।"

"मैं बबूसा को सीधा कर दूंगी रानी ताशा। एक बार वो मेरे सामने तो पड़े।" सोमारा बोली—"राजा देव को वो जन्म कुछ याद आया कि नहीं? क्या वो सच में आपके पास आना चाहते हैं?"

"राजा देव ने ऐसा ही कहा। वो उतावले हो रहे थे। व्याकुल थे मेरे पास आने को। परंतु उन्हें याद नहीं आया कि सदूर ग्रह पर कभी वो अपना जीवन जिया करते थे लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि उन्हें याद आ जाएगा। सोमारा, मैं भी राजा देव के पास जाना चाहती हूं। अब उन्हें देखे बिना चैन नहीं मिलता। मन तड़प रहा है मेरा।"

"लेकिन राजा देव कहां हैं, ये तो हमें पता नहीं। हम उनके पास कैसे जाएंगे?"

"महापंडित बताएगा। जैसे भी हो उसे बताना ही होगा कि...।"

तभी कुछ दूर पड़े रानी ताशा के यंत्र से कुछ आवाज-सी आने लगी।

रानी ताशा फौरन उठी और आगे बढ़कर यंत्र उठाकर उसके दो बटनों को दबाया। आवाज बंद हो गई और दूसरी तरफ से किलोरा की आवाज आ रही थी जो रानी ताशा को पुकार रहा था।

"कहो किलोरा।" रानी ताशा ने कहा—"वहां पर सब ठीक तो है?"

"सब ठीक है रानी ताशा। डोबू जाति वाले पूरी तरह हमारे इशारे पर चल रहे हैं।"

"ये अच्छी बात है, कोई लापरवाही मत कर देना।"

"हम इस बारे में सतर्क हैं।"

"होम्बी की कोई खबर?"

"वो अपने कमरे में ही रहती है। बाहर नहीं निकलती। किसी से बात नहीं करती।" किलोरा की आवाज ट्रांसमिटर जैसे यंत्र से निकली।

"कुछ और कहना है तुमने?"

"अभी-अभी महापंडित ने हमसे सम्पर्क करके बात की है। आपको संदेश देने को कहा है।"

"बताओ।"

"महापंडित का कहना है कि सदूर ग्रह और पृथ्वी में दूरी ज्यादा होने के कारण उसकी दो मशीनें जवाब दे गई हैं। उन्हें ठीक करने में वक्त लगेगा। ऐसे में राजा देव का पता बताना कठिन होगा। इस बारे में कुछ दिन रुकने को कहा है।"

"ओह।" रानी ताशा गम्भीर हो उठी—"ये तो बुरी बात हुई।"

"मेरे लिए क्या हुक्म है रानी ताशा?" किलोरा की आवाज यंत्र से निकली।

"डोबू जाति को ठीक से काबू में रखो। हम अपना काम पूरा करके वापस लौट आएंगे।"

उसके बाद बातचीत समाप्त हो गई। रानी ताशा ने यंत्र वापस रखा और सोफे की तरफ बढ़ती गम्भीर स्वर में बोली।

"बहुत बुरा हुआ सोमारा। महापंडित की दो मशीनें खराब हो गई हैं। ठीक करने में ज्यादा वक्त लगेगा। वो अभी राजा देव का पता नहीं बता सकता।"

"तो अब हम क्या करेंगे?" सोमारा कह उठी—"मैं तो सोच रही थी कि बबूसा से जल्दी ही मिलूंगी।"

"हमें खुद ही राजा देव की तलाश करनी होगी।"

"पर कैसे? हमें क्या पता वो कहां होंगे, या कौन हमें उनके बारे में बता सकता है।" सोमारा बोली।

"जैसे भी हो, हमें राजा देव को ढूंढ़ना होगा। इस बीच महापंडित ने मशीनें ठीक कर ली तो वो बता देगा। वरना तब तक हम हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठे रह सकते।" रानी ताशा ने सोच भरे स्वर में कहा फिर सोमाथ को देखा—"सोमाथ...।"

"जी रानी ताशा।" सोमाथ एक कदम आगे आया।

"हमने राजा देव को ढूंढ़ना है, कैसे ढूंढ़े?"

"हमें होटल से बाहर निकलकर राजा देव की तलाश करनी होगी।" सोमाथ ने कहा।

"पर कैसे? पृथ्वी ग्रह पर तो लोग ही बहुत हैं। हम कैसे ढूंढ़ पाएंगे राजा देव को?"

"राजा देव पृथ्वी ग्रह पर किस नाम से रहते हैं, हमें तो ये भी नहीं पता।" सोमारा बोली।

"ये समस्या तो सही है। हमारे पास राजा देव की तस्वीर भी नहीं।" रानी ताशा व्याकुल हो उठी—"हमारे लिए राजा देव को ढूंढ़ना बेहद कठिन होगा। कैसे करें सोमाथ?"

"मेरे खयाल में।" सोमाथ ने सोच भरे स्वर में कहा—"हमें इस ग्रह के निवासी की सहायता लेनी चाहिए। वो ही हमें रास्ता बता सकता है। हम इस ग्रह के सिस्टम के बारे में ज्यादा नहीं जानते।"

"इस ग्रह का आदमी भी राजा देव को कैसे ढूंढ़ पाएगा। हमारे पास तो न राजा देव का, यहां का नाम है, न ही उनके चेहरे की तस्वीर।" रानी ताशा ने कहा—"मुझे ये काम बहुत कठिन लग रहा है।"

"सोमाथ ठीक कहता है रानी ताशा।" सोमारा ने सोच भरे स्वर में कहा—"अगर इस हाल में हमारी कोई सहायता कर सकता है तो वो इस ग्रह का इंसान ही है। उसके सामने हम सारे हालात रखकर, उससे सलाह लेंगे कि हमें क्या करना चाहिए।"

"ये ही बेहतर रास्ता है, क्यों सोमाथ?" रानी ताशा ने सोमाथ को देखा।

"मुझे भी ये बात जंची।"

"तो इस ग्रह के ऐसे किसी इंसान को ढूंढ़ो जो हमारी सहायता कर सके।"

"मैं किसी को ढूंढ़ कर लाता हूं रानी ताशा।" सोमाथ ने कहा और बाहर निकल गया।

रानी ताशा ने सोमारा से कहा।

"कितने नाजुक मौके पर महापंडित की मशीनें खराब हो गईं। सदूर और पृथ्वी में दूरी भी तो बहुत ज्यादा है। पृथ्वी के बारे में कोई बात जानने की चेष्टा में मशीनों पर जोर पड़ा होगा और वो खराब हो गईं।"

"मैं अपने भाई को जानती हूं।" सोमारा बोली—"वो जल्दी ही मशीनें ठीक कर लेगा।"

"पर हम खाली नहीं बैठेंगे। हम भी अपने ढंग से राजा देव की तलाश शुरू कर देंगे।" रानी ताशा का स्वर भर्रा उठा—"मैं अब ज्यादा देर राजा देव से दूर नहीं रह सकती। कितने दुख की बात है कि राजा देव मेरे से

ज्यादा दूर नहीं हैं, परंतु मैं समझ नहीं पा रही कि वो कहां पर हैं, राजा देव भी मेरे बिना तड़प रहे होंगे। मेरी आवाज सुनते ही पागल जैसे हो उठते हैं राजा देव। ताशा-ताशा कहकर पुकारते हैं, सुनकर कितना अच्छा लगता है कि राजा देव, मुझे पुकार रहे हैं।" रानी ताशा की आंखें आंसुओं से भर आईं—"देव, मेरे देव—मेरे प्यारे मुझे अपनी बांहों में ले लो। तुम्हारा बहुत इंतजार किया है मैंने। अब रहा नहीं जाता।"

▭ ▭

विजय बेदी ने जब से रानी ताशा को देखा था, तभी से रानी ताशा पर नजर रखे हुए था। परंतु तब से रानी ताशा उसे नजर नहीं आई थी। वो होटल के कमरे में ऐसी बंद हुई कि बाहर नहीं निकली थी। बेदी मन-ही-मन उसकी सुंदरता का कायल हो चुका था। परंतु उसे सुंदरता से ज्यादा मतलब नहीं था, उसे तो इस बात से मतलब था कि वो पैसे वाली है। अगर उससे किसी तरह बात हो जाए तो सिर में फंसी गोली निकलवाने के लिए डॉक्टर वधावन से ऑप्रेशन करा सकता है। पैसे वसूल सकता है इससे। विजय बेदी सोच रहा था कि कैसे वो उस औरत से मुलाकात करे कि वो उसे अपने पास बैठा ले। उसे नोट दे दे। तरह-तरह के प्लान सोच रहा था और होटल में ही जमा हुआ था। किराए पर ले रखे कमरे में सिर्फ कपड़े बदलने जाता था। इस वक्त वो होटल की तीसरी मंजिल पर रानी ताशा वाले कमरे के सामने से निकल रहा था। कमरे का दरवाजा बंद था। कुछ आगे जाकर वो फिर वापस आया कि तभी कमरे का दरवाजा खुलते और सोमाथ को बाहर निकलते देखा। उसने दरवाजा बंद कर दिया और गैलरी में आगे बढ़ गया।

बेदी ने सोमाथ को फौरन पहचाना।

उस दिन इसे भी रानी ताशा के साथ देखा था।"

बेदी के दिमाग में घूमती कई योजनाओं में से एक योजना ने उछाल मारी और तेजी से सोमाथ के पीछे चलता उसके पास पहुंच गया और जेब से पैकिट निकालता, मुस्कराकर बोला।

"सर, आपके पास लाइटर होगा?"

सोमाथ ने ठिठककर बेदी को देखा।

बेदी खुलकर मुस्कराया। सोमाथ को देखता रहा।

"क्या बोला तुमने?"

"लाइटर।" विजय बेदी पैकिट से सिग्रेट निकालकर, होंठों पर लगाता कह उठा।

सोमाथ ने उसके होंठों के बीच फंसी सिग्रेट को ध्यान से देखा फिर कह उठा।

"मैं नहीं जानता, लाइटर क्या होता है।"

"लाइटर नहीं जानते आप?" बेदी अजीब-से अंदाज में मुस्कराया।

"नहीं।"

"आप मजाक कर रहे हैं।" बेदी हौले-से हंस पड़ा—"चलिए नीचे चलते हैं, आप भी तो नीचे ही जा रहे थे।"

लिफ्ट पास ही में थी। दोनों वहां पहुंचे। लिफ्ट खड़ी मिली। वो भीतर सवार हुए और बेदी ने ग्राउंड फ्लोर का बटन दबा दिया। लिफ्ट नीचे सरकने लगी। बेदी ने सिग्रेट पैकिट में डाली कि सोमाथ बोला।

"तुम इस ग्रह पर क्या करते हो?"

"ग्रह पर?" विजय बेदी ने न समझने वाली निगाहों से सोमाथ को देखा।

"पृथ्वी ग्रह पर।"

बेदी अचकचाकर सोमाथ को देखने लगा।

"क्या मैंने कुछ गलत कह दिया?" सोमाथ शांत स्वर में बोला।

"तुम मुझसे पूछ रहे हो कि मैं पृथ्वी ग्रह पर क्या करता हूं।" बेदी कह उठा।

"हां।"

"तुम्हारी बात में पृथ्वी ग्रह का क्या मतलब हुआ। क्या तुम किसी दूसरे ग्रह से आए हो?"

सोमाथ चुप रहा।

लिफ्ट नीचे पहुंची और दरवाजा खुल गया। दोनों बाहर निकले। यहां ज्यादा रौनक दिख रही थी। वे दोनों एक तरफ बढ़ गए। विजय बेदी कह उठा।

"अगर फुर्सत हो तो कॉफी ले लेते हैं।"

"मैं कॉफी नहीं पीता।"

"व्हिस्की तो लेते होगे।"

"व्हिस्की? वो क्या होता है?" सोमाथ चलते-चलते बोला।

"कमाल है, तुम दारू नहीं जानते।" बेदी ने अजीब-से स्वर में कहा।

"दारू क्या होती है?"

"दारू भी नहीं जानते।" बेदी ने मुस्कराकर सोमाथ के चेहरे पर नजर मारी—"लगता है मजाक करना तुम्हारी आदत है। चलो कुछ खा लेते हैं।"

"मैं कुछ भी नहीं खाता।"

"खाते तुम नहीं, पीते तुम नहीं फिर तुम जिंदा कैसे रहते हो?"

"मेरी बैट्री मुझे जीवन देती है।"

"बैट्री?"

"हां, वो मेरे भीतर लगी है।"
"मान गए। तुम तो पहुंचे हुए लगते हो।"
सामने लॉबी दिखी तो सोमाथ ने कहा।
"चलो वहां बैठकर बातें करते हैं।"
"लॉबी में, हां-हां वहीं बैठते हैं।"
दोनों लॉबी के सोफों पर जा बैठे।
"तुम क्या करते हो?"
विजय बेदी ने सोमाथ को देखा।
"अब तो मैंने अपना सवाल ठीक ढंग से पूछा?"
"हां।" बेदी मुस्कराया—"तुम मजाक करने वाले इंसान हो। वैसे मैं तो ऐश करता हूं।"
"ऐश?"
"हां, खाता-पीता हूं। मजे करता हूं। मेरे पास बहुत पैसा है। खत्म नहीं होता।"
"समझ गया। क्या तुम मेरी सहायता करोगे?" सोमाथ ने पूछा।
"सहायता?"
"एक आदमी को ढूंढ़ना है परंतु उसका नाम-पता नहीं मालूम।"
"नाम-पता नहीं मालूम और ढूंढ़ना है। ये कैसे हो सकता है बिना नाम-पते के...।"
"ये तुम्हें पता होगा कि इस ग्रह पर कैसे किसी को ढूंढ़ा जा सकता है।" सोमाथ ने कहा।
विजय बेदी को लगा कि ये अच्छा मौका है उस औरत के करीब जाने का।
"ठीक है। मैं कोशिश करूंगा। उस आदमी की तस्वीर होगी?"
"नहीं है।"
"कुछ भी नहीं है और एक आदमी को ढूंढ़ना है।" बेदी ने आहत भाव से सोमाथ को देखा।
"तुम बताओ कि कैसे ढूंढ़ा जाए?"
"उसका नाम क्या है?"
"उसका इस ग्रह का नाम नहीं पता।"
"इस ग्रह का नाम नहीं पता?" विजय बेदी ने उसे घूरा—"तो दूसरे ग्रह का नाम क्या है?"
"राजा देव।"
"कौन-सा ग्रह है तुम्हारा?" बेदी ने उखड़े स्वर में पूछा।
"सदूर ग्रह...।"

विजय बेदी, सोमाथ को टकटकी बांधे देखने लगा।

"उस आदमी को ढूंढ़ना है।"

"नाम-पता नहीं मालूम। उसकी तस्वीर भी नहीं है। कुछ भी नहीं है और उसे ढूंढ़ना है।" विजय बेदी कह उठा—"ये काम तो कठिन है और तुम दूसरे ग्रह का उसका नाम बता रहे हो, राजा देव। वैसे ये ग्रह है कहां पर?"

सोमाथ ने उंगली ऊपर की।

बेदी ने छत को देखा। फिर सोमाथ को देखा।

"मेरे से मजाक करना बंद करो। सीधी तरह कहो कि बात क्या है?" बेदी बोला।

"क्या मेरी बात समझ नहीं आई?" सोमाथ ने पूछा।

"समझकर भी समझ नहीं आई।" बेदी ने हाथ हिलाया—"तुम्हारे दूसरे ग्रह की बात तो जरा भी समझ नहीं आई।"

"तुम मेरा कहा काम करने को तैयार हो?"

"तैयार तो हूं पर समझ में नहीं आया कि काम क्या है।"

"मेरे साथ चलो। रानी ताशा तुम्हें समझा देगी, जो तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा।"

"रानी ताशा?" बेदी का दिल धड़का। उस औरत का खूबसूरत चेहरा आंखों के सामने नाचा—"वो कौन है?"

"सदूर ग्रह की रानी है।"

"वो ग्रह जो ऊपर है?"

"हां। क्या तुम रानी ताशा से इस बारे में बात करना पसंद करोगे?"

"क्यों नहीं।" अपनी खुशी पर काबू पाकर, बेदी ने सामान्य स्वर में कहा।

"मेरे साथ चलो।" सोमाथ कहते हुए खड़ा हुआ।

बेदी भी उठा। जानते हुए भी पूछा।

"रानी ताशा कहां पर है?"

"इसी होटल के एक कमरे में।"

"क्या वो भी तुम्हारी तरह ही बातें करती है। ग्रह की बातें या कुछ खाती-पीती नहीं, या...।"

"रानी ताशा खाती है। कॉफी भी पीती है।" सोमाथ ने कहा।

"दारू भी।"

"दारू होती क्या है?"

"उसे पीने से सिर पर नशा सवार हो जाता है।"

"रानी ताशा ऐसी चीजों का सेवन नहीं करती।"

"तुम रानी ताशा के क्या लगते हो?"

"मैं उनका सेवक हूं। उनका हुक्म मानना मेरा काम है।"

विजय बेदी को ठीक से सोमाथ की बातें समझ में नहीं आईं। परंतु मन-ही-मन वो खुश था कि उस खूबसूरत औरत से उसका सामना होने जा रहा है। वो किसी को तलाश करवाना चाहती है। यानी कि नोटों का जुगाड़ हो सकता है कि वो वधावन से ऑप्रेशन करा सके। बेदी सोचता जा रहा था कि रानी ताशा नाम की औरत को कैसे फंसाए।

▭ ▭

विजय बेदी ने सोमाथ के साथ उस होटल के कमरे में प्रवेश किया। कमरा काफी बड़ा था और बेडरूम के साथ-साथ ड्राइंग रूम का भी काम दे रहा था। एक तरफ सोफे लगे थे और रानी ताशा, सोमारा के साथ सोफों पर ही बैठी थी। उनकी निगाह भी पास आते दोनों पर गई। उनकी निगाह बेदी पर टिक चुकी थी।

"रानी ताशा।" सोमाथ ने कहा—"ये हमारा काम करने को तैयार है।"

"राजा देव को ढूंढ़ लेगा ये।" सोमारा कह उठी।

"परंतु ये आपसे बातचीत करना चाहता है। मेरी बातों से इसे तसल्ली नहीं हुई।"

रानी ताशा अपनी जगह से उठी। विजय बेदी को देखकर मुस्कराई।

"स्वागत है।" रानी ताशा बोली।

अपनी धड़कनों पर काबू पाए विजय बेदी आगे बढ़ा। हाथ आगे करके बोला।

"हैलो।"

रानी ताशा ने उसका बढ़ा हाथ देखा और फिर उसका हाथ थाम लिया।

"यहां के लोग इस तरह, नए लोगों से मिलते हैं।" रानी ताशा बोली।

"यहां के लोग?" बेदी के चेहरे पर उलझन उभरी।

"मेरा मतलब इस ग्रह के लोग।"

विजय बेदी दो पल के लिए सकपका-सा उठा फिर कह उठा।

"ये ग्रह वाली बात मेरी समझ में नहीं आई।"

"तुमने इसे कुछ बताया नहीं सोमाथ?" रानी ताशा ने सोमाथ को देखा।

"बता दिया है ग्रह के बारे में।"

रानी ताशा की निगाह विजय बेदी पर जा टिकी। बेदी ने रानी ताशा का हाथ छोड़ा और सोमारा को अपनी तरफ देखते पाकर हैलो कहा।

जवाब में सोमारा सिर्फ उसे देखती रही।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"विजय—विजय बेदी।" बेदी ने कहा।

"बैठो, मैं तुम्हें सब कुछ बताती हूं।" कहते हुए रानी ताशा बैठ गई।

विजय बेदी भी बैठा।

सोमाथ खड़ा रहा था।

"मैं सदूर ग्रह पर कभी राजा देव के साथ रहती थी, परंतु राजा देव...।"

"सदूर ग्रह?" बेदी का सिर घूम गया कि ये भी किसी ग्रह की बात कर रही है—"मैं ग्रह वाली बात नहीं समझा मैडम।"

"तुम मुझे मैडम क्यों कह रहे हो?"

"यहां किसी औरत को इज्जत देते हुए मैडम ही कहते हैं।"

"पर तुम मुझे रानी ताशा कहो। सब मुझे ये ही कहते हैं।" रानी ताशा ने कहा।

"ठीक है मैं रानी ताशा कहूंगा तुम्हें। तो मैं पूछ रहा था कि ये ग्रह वाली बात...।"

"हम पृथ्वी के रहने वाले नहीं हैं।"

"क्या?" विजय बेदी की आंखें सिकुड़ीं—"तुम लोग पृथ्वी ग्रह पर नहीं रहते?"

"नहीं, हम सदूर ग्रह पर रहते हैं। पोपा में बैठकर आए हैं।"

"पोपा?" बेदी का सिर घूम गया।

"जब एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर जाते हैं तो पोपा का इस्तेमाल करते हैं।" रानी ताशा ने कहा।

"समझा। हमारे यहां पोपा को अंतरिक्ष यान कहते हैं।" विजय बेदी को ये सब पागलों वाली बातें लग रही थीं, लेकिन वो रानी ताशा की हां में हां मिलाता बोला—"तो आप लोग अंतरिक्ष यान में बैठकर यहां पृथ्वी पर आए हैं।"

"हां, क्योंकि हमें यहां पर राजा देव की तलाश है। उसे यहां से वापस सदूर ग्रह पर ले जाना है।"

"साली, मुझे पागल बना रही है।" बेदी बड़बड़ा उठा—'मुझे क्या, मुझे तो नोटों से मतलब है।'

"क्या कहा तुमने?" रानी ताशा बोली।

"मैं तुम्हारी बात याद कर रहा था कि तुम सदूर ग्रह से आई हो। पर तुम्हारा पोपा कहां है?" बेदी ने पूछा।

"वो डोबू जाति के पास खड़ा है।"

"डोबू जाति?"

"उससे तुम्हें कोई मतलब नहीं। तुमने तो राजा देव को ढूंढ़ना है, जिनका यहां पर क्या नाम है, मालूम नहीं...।"

"ये राजा देव कौन है?"

"वो ही तो तुम्हें बता रही थी कि सदूर ग्रह के राजा हैं, राजा देव और मैं उनकी रानी थी।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु कभी कुछ ऐसा हुआ कि राजा देव सदूर ग्रह से पृथ्वी पर आ गए।"

"पोपा में बैठकर?" बेदी के होंठों से निकला।

दो क्षण चुप रहने के बाद रानी ताशा कह उठी।

"ये तो मुझे पता नहीं कि राजा देव पृथ्वी पर कैसे पहुंचे, परंतु वो पृथ्वी ग्रह पर आ गए।"

"फिर?"

"अब मैं पोपा में बैठकर पृथ्वी पर आई हूं कि राजा देव को वापस ले जा सकूं।"

"समझ गया, सब समझ गया।" विजय बेदी ने कुछ ज्यादा ही सिर हिलाया—"पर मैंने तो सुना है कि ब्रह्मांड के किसी भी ग्रह पर लोग नहीं रहते।"

"हम रहते हैं सदूर ग्रह पर।"

"जरूर रहते होंगे।" बेदी ने पुनः सिर हिलाया जैसे बातों को हजम कर रहा हो—"तो आपको राजा देव को तलाश करना है। क्या राजा देव को याद है कि वो सदूर ग्रह पर राजा थे?"

"नहीं याद।"

"कैसे पता कि उसे नहीं याद।"

"मेरी उनसे बात हुई थी।"

"कब? कैसे?" बेदी के होंठों से निकला।

"कुछ देर पहले ही फोन पर बात हुई...।"

"तुम्हारे पास उसका फोन नम्बर है?" बेदी हैरान-सा कह उठा।

"हां।"

"कहां से मिला?"

कुछ चुप रहकर रानी ताशा ने कहा।

"कहीं से मिल गया था।"

"तो फोन पर उनसे पूछा क्यों नहीं कि वो कहां रहता है। आप जैसी खूबसूरत युवती को देखकर वो धन्य हो जाएगा और आप उसको अपना पति कह रही हैं तो, उसकी तो लॉटरी ही खुल गई। वो तो खुश हो जाएगा।"

"बबूसा राजा देव के पास है, वो उन्हें मेरे पास आने से रोक रहा है।"

"बबूसा कौन?"

"सदूर ग्रह पर राजा देव का सेवक हुआ करता था।"

"तो क्या वो भी आपके साथ ही पृथ्वी ग्रह पर आया है?"

रानी ताशा ने बेदी को देखते गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम्हें इन बातों से कोई मतलब नहीं होना चाहिए। सारी बातें जानने की जरूरत भी क्या है।"

विजय बेदी ने सिर हिलाया। उसे लगा कि पागल और बेवकूफ लोगों में आ फंसा है। जिनका दिमाग अपनी जगह से हिला हुआ है। परंतु उसे तो नोटों से मतलब था कि अपना ऑप्रेशन करा सके।

"रानी ताशा।" विजय बेदी ने अपने स्वर को गम्भीर बनाकर कहा—"ये बहुत मुश्किल काम है क्योंकि आपको राजा देव का आज का नाम भी नहीं पता। उसकी कोई तस्वीर भी नहीं है। उसके यारों दोस्तों की भी जानकारी नहीं है। सिर्फ उसका फोन नम्बर ही है। परंतु वहां बबूसा बैठा है जो कि टांग फंसा रहा है। मतलब कि राजा देव को ढूंढ़ना आसान काम नहीं। क्या पता वो मुम्बई शहर में है या कहीं और रहता...।"

"वो मुम्बई में ही रहते हैं।"

"कैसे पता?"

"बबूसा के मुम्बई में होने का ये ही मतलब निकलता है। महापंडित ने भी मुम्बई में ही होने के बारे में कहा था।"

"महापंडित कौन?" बेदी ने सामान्य स्वर में पूछा।

"ये है कोई, तुम्हें बताने की जरूरत नहीं। तुम राजा देव को ढूंढ़ने की बात करो। उन्हें ढूंढ़ सकते हो?"

"आपके लिए तो मैं कुछ भी कर सकता हूं।"

"मतलब कि राजा देव को तलाश कर लोगे?" रानी ताशा का चेहरा चमक उठा।

"हां। आराम से। परंतु इसमें बीस लाख का खर्चा आएगा।"

"बीस लाख, क्या बीस लाख?" रानी ताशा के होंठों से निकला।

तभी सोमारा कह उठी।

"ये इस ग्रह के पैसों की बात कर रहा है। यहां हर कोई पैसे लेता है। हमने कपड़े लिए तो पैसे दिए। हम होटल में ठहरे तो हमने पैसे दिए। इसी प्रकार ये भी पैसे मांग रहा है।"

"सही कहा आपने।" बेदी सोमारा को देखकर मुस्कराया।

"यहां हर काम के पैसे लगते हैं?" सोमारा ने पूछा।

बेदी ने सहमति से सिर हिला दिया फिर बोला।

"इस काम का बीस लाख रुपया लगेगा। पांच लाख मैं पहले लूंगा।"

रानी ताशा ने सोमाथ को देखकर कहा।

"क्या हमारे पास इतना पैसा है?"

"जरूर है, रानी ताशा।" सोमाथ बोला।

"तो इसे दे दो। ये पहले पांच लाख लेगा।" रानी ताशा ने बेदी से कहा—"बाकी कब लोगे?"

"जब आपको राजा देव तक पहुंचा दूंगा। मुझे राजा देव का फोन नम्बर दे दीजिए।"

रानी ताशा ने फोन नम्बर बता दिया।

"अब पांच लाख।"

रानी ताशा ने सोमाथ को देखा तो सोमाथ कमरे के वार्डरौब की तरफ बढ़ गया। विजय बेदी सोफे पर बैठा सोमाथ को देखता रानी ताशा से कह उठा।

"जब तक मैं राजा देव को तलाश करूंगा, तब तक मैं आपके साथ ही रहूंगा।"

"हमें कोई एतराज नहीं।"

"क्या इसी कमरे में रहूंगा या मुझे कोई अलग से कमरा लेकर देंगी।"

"जैसा तुम चाहो। मैं तो कहूंगी कि तुम हमारे साथ ही रहो। तुमसे बातचीत करके हमें पृथ्वी ग्रह को जानने का मौका मिलेगा।"

"फिर पृथ्वी ग्रह।" बेदी बड़बड़ा उठा—'चुप कर बेदी, नोट आने दे। तेरा ऑप्रेशन हो जाएगा। कहने दे जो ये कहते हैं। पृथ्वी हो या सदूर, तेरा काम तो हो रहा है न।"

"क्या कहा तुमने?" रानी ताशा ने पूछा।

बेदी ने सोमाथ को वार्डरौब से सूटकेस निकालते देखा तो खड़ा हो गया।

"उस सूटकेस में रुपए हैं?" बेदी ने पूछा।

"हां।"

सोमाथ ने वहीं पर सूटकेस रखकर उसे खोला तो आधा सूटकेस नोटों की गड्डियों से भरा था।

विजय बेदी की आंखें फैल गईं।

ये नोट रानी ताशा को डोबू जाति के ठिकाने पर से ही मिले थे। पहाड़ों में मिले कीमती पत्थर (हीरे) बेचकर ओमारू रुपया अपने पास रखकर जाति के लोगों की जरूरत का सामान अपने लोगों से आसपास के कस्बों से मंगाया करता था। तो ये वहां से रानी ताशा अपने साथ ले आई थी तो कुछ वहां पर अपने लोगों को दे आई थी कि जरूरत पड़ने पर वो इस्तेमाल कर सकें।

"इधर आओ।" सोमाथ ने बेदी को पुकारा।

बेदी उठकर सोमाथ के पास पहुंचा।

"तुम कितना पैसा लेना चाहते हो पहले।" सोमाथ ने पूछा।

"पांच लाख।"

"ले लो।"

विजय बेदी फौरन झुका और हजार-हजार के नोटों की पांच गड्डियां ईमानदारी से उठा लीं। जबकि सोमाथ, रानी ताशा या सोमारा नहीं जानती थी कि पांच लाख कितना होता है। ये बात अगर बेदी को पता होती तो बेदी ने एक ही बार में बीस-पच्चीस लेकर निकल जाना था। बहरहाल उसने पांच लाख ही निकाला और कहा।

"बंद कर लो।"

सोमाथ ने सूटकेस बंद किया और उसे वापस वार्डरौब में रख लिया।

"तुम ये पैसा यहीं पर रखते हो।" बेदी ने पूछा।

"हां।"

सोमाथ ने वार्डरौब का दरवाजा बंद किया।

बेदी ने हसरत भरी निगाहों से वार्डरौब को देखा।

"अब तुम कैसे ढूंढ़ोगे राजा देव को?" रानी ताशा ने पूछा।

बेदी नोटों की गड्डियां थामे रानी ताशा के पास आ पहुंचा।

"मैं थोड़ी देर में वापस आता हूं।" विजय बेदी ने कहा।

"कहां जा रहे हो?" रानी ताशा ने पूछा।

"ये पैसा रखने। उसके बाद राजा देव को...।"

"तुम कहीं पैसा लेकर भाग तो नहीं जाओगे?" रानी ताशा कह उठी।

विजय बेदी की निगाह वार्डरौब की तरफ उठी फिर रानी ताशा से मुस्कराकर बोला।

"भागने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मैं बहुत ईमानदार बंदा हूं। आने वाले वक्त में आप समझ जाएंगी बेदी को।"

▭ ▭

विजय बेदी डेढ़ घंटे में लौट आया। चेहरे पर सदाबहार मुस्कान बिछी थी।

"सोमारा कह रही थी तुम पैसा लेकर भाग गए। अब नहीं लौटोगे।" रानी ताशा बोली।

"सोमारा गलत कह रही थी।" बेदी ने सोमारा को देखा—"मैं बहुत शरीफ बंदा हूं।"

"अब हमें तुम पर भरोसा हो गया।" सोमारा कह उठी।

"शुक्रिया।" बेदी आगे बढ़ा और चेयर पर बैठता कह उठा—"मुझे भूख लगी है। इस होटल का खाना बढ़िया होता है। मंगवा लो।"

"हम नहीं जानते कि इस ग्रह पर खाने को क्या-क्या होता है।" रानी

ताशा ने कहा—"बेहतर है तुम ही आर्डर दो। हमारे लिए भी मंगवा लेना। सोमाथ कुछ नहीं खाएगा।"

विजय बेदी ने इंटरकॉम पर रूम सर्विस को खाने का ऑर्डर दे दिया।

"अब राजा देव को कैसे ढूंढ़ोगे?" रानी ताशा गम्भीर स्वर में बोली।

"ये काम तो मैं अभी निबटा देता हूं। बाकी का पंद्रह लाख लेकर, ऑप्रेशन करवाकर, सिर में फंसी गोली निकलवानी है।"

"गोली क्या होती है?" सोमाथ ने पूछा।

"रिवॉल्वर की गोली।"

"रिवॉल्वर क्या होती है?"

बेदी, सोमाथ को टकटकी बांधे देखने लगा, फिर धैर्य से बोला।

"रिवॉल्वर, एक हथियार का नाम है। वहां से गोली निकलती है और जिसे लगती है, वो मर जाता है।"

"तुम्हें गोली लगी है।"

"हां। सिर के बीच, दोनों दिमागों के हिस्सों के बीच फंसी है। कई साल हो गए। अभी तो गोली वहीं की वहीं सैट है अगर वहां से हिल गई तो सिर में जहर फैल जाएगा और मैं मर जाऊंगा। इसलिए गोली निकलवानी जरूरी है। उसके लिए पैसों की जरूरत है और अब पैसे तुमसे मिल रहे हैं। लगता है इस बार मेरा काम हो ही जाएगा।"

"पर तुमने तो कहा था कि तुम्हारे पास बहुत पैसे हैं।" सोमाथ शांत स्वर में बोला।

"वो पैसे ऑप्रेशन कराने के लिए नहीं हैं। ऐश करने के लिए हैं।" बेदी ने मुस्कराकर कहा।

"राजा देव को ढूंढ़ो।" रानी ताशा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मुझे उनकी बहुत जरूरत है।"

"अभी लो।" कहने के साथ ही विजय बेदी ने फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

"किसे फोन कर रहे हो?" रानी ताशा ने पूछा।

"उसी नम्बर पर फोन कर रहा हूं जो तुमने ये कहकर दिया था कि ये राजा देव का नम्बर है।"

"तुम राजा देव से बात करने जा रहे हो।"

"देखती जाओ।" कहने के बाद विजय बेदी ने फोन को कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बेल जाने लगी।

बेदी ने कलाई पर बंधी घड़ी में वक्त देखा। रात के बारह बजने जा रहे थे।

'साला सो गया होगा।' बेदी बड़बड़ा उठा।

रानी ताशा, सोमारा और सोमाथ की निगाह बेदी पर ही थी।

उधर बेल जा रही थी।

फिर बेल जानी बंद हो गई। कॉल रिसीव नहीं की गई।

बेदी ने दोबारा नम्बर मिलाया और फोन कान से लगा लिया। बेल जाने लगी।

"हैलो।" फौरन ही नगीना की आवाज कानों में पड़ी।

"आपका चोरी गया सामान बरामद कर लिया गया है मैडम।" बेदी ने फौरन कहा।

"चोरी गया सामान?"

"पुलिस स्टेशन में आपने रिपोर्ट...।"

"रांग नम्बर, हमारा कोई सामान चोरी नहीं हुआ।" उधर से नगीना ने कहा।

"मैं सब-इंस्पेक्टर तौलपड़े बोल रहा हूं। आप कहां से बोल रही हैं, पता बताइए।"

"क्यों?"

"आपने रिपोर्ट के साथ अपना ये ही नम्बर दिया था, अब आप कहती हैं कि सामान चोरी नहीं हुआ। जबकि सामान के साथ हमने चोर को भी गिरफ्तार कर लिया है। उसका कहना है कि आपके यहां से ही सामान चोरी किया...।"

"चोर ऐसा कहता है।"

"हां।"

"तो चोर ही आपको बता देगा कि उसने कहां से सामान चोरी किया...।"

"वो कहता है आपके यहां से ही सामान चोरी किया है।"

"तो चोर आपको हमारे घर तक ले आएगा। आप आइए, हम आपका इंतजार कर रहे हैं।"

"आप अपने पति से बात कराइए।"

"क्यों?"

"आप मेरी बात नहीं समझ रहीं...।"

"हमने पुलिस में चोरी की रिपोर्ट लिखाई थी? नगीना ने उधर से व्यंग भरे स्वर में कहा।

"हां।"

"फिर तो रिपोर्ट में भी हमारा एड्रेस होगा। सीधा चले आइए हमारे पास।" कहकर उधर से नगीना ने फोन बंद कर दिया।

बेदी गहरी सांस लेकर बड़बड़ाया।
"समझदार है।" इसके साथ ही पुनः नम्बर मिलाकर, फोन कान से लगा लिया।
बेल गई फिर जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।
"बोलो।"
"सर जी, आपका सामान चोरी...।"
"कौन हो तुम?" जगमोहन का तीखा स्वर कानों में पड़ा।
"सब-इंस्पेक्टर तौलपड़े...।"
"तुम पुलिस वाले नहीं हो। किसके कहने पर फोन कर रहे हो?"
"किसके कहने पर?" बेदी संभला—"अरे भाई मैं सब-इंस्पेक्टर तौलपड़े...।"
"भूतनी के, तू पुलिस वाला नहीं है। पुलिस वालों का लहजा मैं अच्छी तरह पहचानता हूं। तू किसी के कहने पर फोन कर रहा है। मैं सब समझ रहा हूं। कौन खड़ा है तुम्हारे पास।"
बेदी ने रानी ताशा पर नजर मारकर कहा।
"एक बात कहूं मालको।"
"कह।"
"तुम्हारी तो किस्मत खुल गई है।"
"वो कैसे?"
"रानी ताशा तुम्हें अपना पति कह रही है। कसम से बम चीज है। देखते ही मर जाओगे। माल भी बहुत है। मैंने अभी-अभी नोटों से भरा सूटकेस उसके पास देखा है। तेरे तो न्यारे-व्यारे हो गए। औरत के पास बेपनाह दौलत भी हो, ऐसी औरतें कभी-कभी ही मिलती हैं। मेरी मान तो लपक ले। मौका मत छोड़। ये वक्त गया तो सब कुछ गया।"
जगमोहन की आवाज नहीं आई।
"सोचता क्या है।" बेदी ने फौरन कहा—"सही कह रहा हूं ऐसी चीज तूने पहले नहीं देखी होगी। भोग ले। तुझे देखे बिना कह सकता हूं रानी ताशा तेरी औकात से कहीं ऊंची चीज है। भोले की फौज, करेगी मौज वाली बात है। पूरा आनंद मिलेगा। साथ में नोट भी मिलेंगे। ये ही तो चाहिए होता है जिंदगी में। थोड़ी-सी सनकी जरूर है। वो अपने को दूसरे ग्रह से आया बताती है। बताने दे, तेरा या मेरा क्या जाता है। तू अपना काम निबटा, मैं अपना निबटा रहा हूं।"
जगमोहन ने उधर से कुछ नहीं कहा।
"बात समझ में नहीं आई?" बेदी पुनः बोला।

"आई।"

"तो सोचता क्या है, होटल सी व्यू पर्ल के कमरा नम्बर...।"

"तू कौन है?"

"मैं विजय बेदी हूं।"

"कौन विजय बेदी?"

"अब क्या बताऊं तेरे को, मुसीबत का मारा हूं ये साली सिर में गोली फंसी है, उसे निकलवाने के लिए बारह लाख की जरूरत है, वो बारह लाख ही इकट्ठे करता फिर रहा हूं। पांच-सात किसी प्रकार इकट्ठे कर लेता हूं जब तक बारह पूरे होते हैं तो पहले के पांच-सात खर्च हो जाते हैं। ये ही हो रहा है मेरे साथ।" विजय बेदी ने समझाने वाले स्वर में कहा—"अब ये रानी ताशा से इस बात का बीस लाख मिल रहा है कि उसे तुम तक पहुंचा दूं। तुम्हारा पता बता दूं कि तुम कहां रहते हो। मेरी मानो तो सौदा घाटे का नहीं है। ऐसी कयामत चीज मैंने तो पहले नहीं देखी, तुम भी उसे देखते ही गश खा जाओगे। साथ में नोटों से भरा सूटकेस है। मुझे तो लगता है कि ऐसे और भी सूटकेस होंगे। भाव क्यों खाता है तू। आकर गले मिल ले, फायदे में रहेगा।"

"तू बढ़िया बातें करता है।"

"मैं बंदा भी बढ़िया हूं, ये साली सिर में फंसी गोली ने मुझे बेकार कर दिया, हर वक्त ये ही चिंता रहती है कि सिर से गोली निकाल लूं। अगर ये चिंता न होती तो अब तक मैं ही रानी ताशा को लेकर उड़ गया होता। तेरे को तो पता ही है कि खूबसूरत औरत और नोटों की हर मर्द को जरूरत होती है। लपक ले, मौका मत चूक।"

"रानी ताशा ने तुझे क्या-क्या बताया अपने बारे में?"

"पूछ मत।"

"बता तो।"

"ये ही कि ये किसी दूसरे ग्रह से आई है। राजा देव को ढूंढ़कर अपने साथ ले जाने।"

"और तूने मान लिया?"

"क्यों न मानूं, तुझे ढूंढ़ने के बीस लाख दे रही है। मैं तो उसकी हर बात मानूंगा।"

"तेरे को ये पागल नहीं लगती।" उधर से जगमोहन ने कहा।

"पूरी तरह।" बेदी ने रानी ताशा पर निगाह मारी।

"इसकी बातें विश्वास के काबिल हैं?"

"जरा भी नहीं।"

"फिर तू इसके साथ क्यों चिपक गया?"

"पांच लाख एडवांस ले चुका हूं। अब तू मेहरबानी करे तो बाकी का पंद्रह भी मिल जाएगा।" बेदी बोला।

"ये तुझे कहां मिल गए?"

"इसी होटल में। तू राजा देव बनकर, सज-धजकर इधर आ-जा। सारे काम ठीक हो जाएंगे।"

"मेरे आने से बात नहीं बनेगी। क्योंकि मैं वो नहीं हूं जो तू समझ रहा है।"

"तो कौन है तू?" बेदी के माथे पर बल पड़े।

"उसका दोस्त।"

"ये तूने पहले क्यों नहीं कहा?"

"सुनना चाहता था कि आखिर बात क्या है।"

"अब तो सुन लिया। जरा उसे फोन दे। उससे भी बात कर...।"

उधर से जगमोहन ने फोन बंद कर दिया।

बेदी के होंठ सिकुड़ गए। उसने कान से फोन हटा लिया।

"राजा देव से बात कर रहे थे तुम अभी।" रानी ताशा व्याकुलता से कह उठी।

"नहीं। उसके दोस्त से।" बेदी पुनः नम्बर मिलाता कह उठा।

"राजा देव से बात क्यों नहीं हुई?"

"हो जाएगी।" कहने के साथ ही बेदी ने पुनः फोन कान से लगा लिया।

"तुम उससे कैसी बातें कर रहे थे। कई बातें मेरी समझ में नहीं आईं।" रानी ताशा ने कहा।

दूसरी तरफ बेल जाने लगी थी।

"मुझे अपना काम करने दो। मैं कैसी बातें करता हूं इस पर ध्यान मत दो।"

लम्बी बेल जाने के बाद जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम इसी तरह फोन करते रहे तो मुझे फोन का स्विच ऑफ करना पड़ेगा।"

"मैं तुम्हारा नाम पूछना भूल गया।"

"जगमोहन।"

"और तुम्हारे दोस्त का नाम क्या है?"

"क्यों जानना चाहते हो? रानी ताशा ने नहीं बताया?" दूसरी तरफ से जगमोहन ने कहा।

"बता दे यार। इस तरह हमारी जान-पहचान पक्की हो जाएगी।"

"देवराज चौहान।"

"देवराज चौहान।" बेदी ने नाम दोहराया—"अब जरा उससे बात भी करा दे।"

"दोबारा फोन मत करना।"

"मेरी मानो तो एक बार रानी ताशा से मिल...।"

परंतु बात पूरी होने से पहले ही उधर से जगमोहन ने फोन बंद कर दिया था।

बेदी ने फोन वाला हाथ नीचे कर लिया। चेहरे पर सोच के भाव थे।

"क्या हुआ?" रानी ताशा ने बेचैन स्वर में पूछा।

"तुम्हारे राजा देव का नाम, देवराज चौहान है।"

"तो इस ग्रह पर राजा देव का नाम देवराज चौहान है।" सोमारा कह उठी।

'ग्रह का भूत इनके सिरों से कब उतरेगा।' बेदी बड़बड़ा उठा।

"इस बार भी राजा देव से बात नहीं हुई?" रानी ताशा ने व्याकुल स्वर में कहा।

"नहीं। देवराज चौहान के दोस्त जगमोहन से बात हुई थी।" बेदी ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"तो अब क्या करोगे?"

"काम हो रहा है। अभी मैंने उसका नाम पता किया है। धीरे-धीरे उसका पता भी मालूम हो जाएगा। इसमें एक-दो दिन का वक्त तो लगेगा ही। तुमसे ज्यादा जल्दी मुझे है कि बाकी का पंद्रह लाख लूं और चलता बनूं। ऐसे बेवकूफ वो नहीं लगते कि सीधे-सीधे अपना पता बता दें। उन्हें धीरे-धीरे ही किसी प्रकार झांसे में लूंगा। वो तो...।"

तभी डोर बेल बजी।

वेटर खाना ले आया था। बातें रुक गईं।

▭ ▭

अगले दिन देवराज चौहान ने नहा-धोकर, नगीना के साथ बेडरूम में ही नाश्ता किया। तब नगीना बोली।

"रात आपको क्या हो गया था?"

"पता नहीं। मुझे याद नहीं।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला—"फोन पर ताशा की आवाज सुनने के बाद मेरे होश गुम हो जाते हैं। मुझे कुछ भी याद नहीं रहता। समझ में नहीं आता कि ये सब क्या हो रहा है। फोन पर उसकी आवाज सुनते ही मैं सब कुछ भूल क्यों जाता हूं। बाद में मुझे किसी के बताने से पता चलता है कि मैंने क्या किया तब।"

"आप ताशा का फोन मत सुना करें।" नगीना गम्भीर स्वर में बोली।
"ऐसा ही करूंगा।"
"रात आपका नया रूप देखकर मुझे बहुत हैरानी हुई।" नगीना ने गहरी सांस ली।
"मैंने तुम्हारा गला दबाने की कोशिश की, उसका मुझे दुख...।"
"तब आप होश में नहीं थे। मैं ये ही समझ नहीं पा रही कि तब आपको हो क्या गया था।"
देवराज चौहान कुछ नहीं बोला।
"क्या आप भी जगमोहन की तरह मानते हैं कि जो हो रहा है, वो सब सच है।" नगीना ने गम्भीर स्वर में पूछा।
"मुझे सच ही लगता है।"
"कोई वजह तो होगी सच लगने की?"
"वजह मैं नहीं जानता, परंतु अब तक के हालातों पर गौर करता हूं तो सब सच ही लगता...।"
"तो मेरी मानिए। हम सब रानी ताशा के पास चलकर बात करते हैं।" नगीना बोली।
देवराज चौहान ने सोच भरे स्वर में कहा।
"इस सारे मामले को बबूसा देख रहा...।"
"आपको बबूसा पर विश्वास है?"
"पहले नहीं था लेकिन फिर विश्वास होने लगा।"
"मेरा खयाल है कि बबूसा और रानी ताशा आपसे मिलकर, आपको पागल करने की कोशिश...।"
"बबूसा को झूठा मत कहो नगीना। वो सच्चा इंसान लगा है मुझे।" देवराज चौहान बोला।
"वो प्राइवेट जासूस आ रहा है। मेरी उससे कुछ देर पहले बात हुई थी। वो रास्ते में होगा।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा।
"अर्जुन भारद्वाज।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।
"हां। वो इस सारे मामले की छानबीन करेगा। रानी ताशा एक बहुत बड़ा फ्रॉड है। उसने बबूसा के साथ मिलकर बहुत ही चालाकी भरा जाल, आपके गिर्द बिछाया गया है और आप उस जाल में उलझकर रह गए हैं।"
"मेरे खयाल में तो इस मामले में किसी प्राइवेट जासूस को लाने की जरूरत नहीं थी।" देवराज चौहान ने कहा।
"मेरे खयाल में जरूरत है।" नगीना दृढ़ स्वर में कह उठी।

वीरेंद्र त्यागी, देवराज चौहान के बंगले के बाहर, एक तरफ कार की स्टेयरिंग सीट पर बैठा वहां नजर रख रहा था कि अर्जुन भारद्वाज, नीना के साथ टैक्सी पर वहां पहुंचा। बंगले के बाहर ही टैक्सी को छोड़ा। किराया दिया और बंगले के गेट से भीतर प्रवेश कर गए। अर्जुन की निगाह हर तरफ जा रही थी। नीना बोली।

"मुझे तो यकीन नहीं हो रहा कि इतना बड़ा डकैती मास्टर यहां भीड़-भरे इलाके में रहता है और किसी को उसका पता नहीं जबकि पुलिस को उसकी तलाश है। देखना एक दिन पकड़ा जाएगा।"

"वो बेहतर जानता है कि उसका कहां पर रहना ठीक है।" अर्जुन बोला।

"पता नहीं देवराज चौहान देखने में कैसा होगा?" नीना ने कहा।

"वो हम जैसे लोगों की ही तरह होगा।"

वे सदर द्वार पर पहुंचे। दरवाजा बंद था। नीना ने कॉलबेल के बटन पर उंगली रख दी।

भीतर कहीं बेल बजी।

कुछ क्षणों बाद जगमोहन ने दरवाजा खोला। दोनों को देखा।

"हैलो।" अर्जुन भारद्वाज शांत स्वर में बोला—"नगीना जी ने मुझे यहां आने को कहा था। मैं प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज हूं और ये मेरी असिस्टेंट नीना है।"

जगमोहन के चेहरे पर कोई भाव नहीं आया, पर वो एक तरफ हटकर बोला।

"आइए।"

अर्जुन भारद्वाज और नीना भीतर प्रवेश कर गए। सामने ड्राइंग हॉल था, जहां बबूसा और धरा बैठे दिखे। तभी एक तरफ से नगीना आती नजर आ गई।

जगमोहन ने दरवाजा बंद करने के बाद कहा।

"खड़े क्यों हैं मिस्टर अर्जुन, आइए।" जगमोहन ने सोफों की तरफ इशारा किया।

तब तक अर्जुन और नीना की निगाह, इसी तरफ आती नगीना पर पड़ चुकी थी। वे आगे बढ़े।

नगीना उनके पास आई और मुस्कराकर बोली।

"हैलो। मिस्टर अर्जुन—हैलो नीना।" नगीना ने दोनों से हाथ मिलाया फिर कहा—"चलिए उधर सोफों पर बैठते हैं।" वो सब उसी तरफ चल पड़े। नगीना पुनः बोली—"नाश्ते में क्या लेंगे...।"

"हम नाश्ता करके आए हैं।" नीना ने कहा—"अर्जुन साहब काम शुरू कर देना चाहते हैं। आपका ये मामला बहुत ही उलझा हुआ है। कल से अर्जुन जी इसी बारे में सोच रहे हैं।"

वे सोफों के पास पहुंचे।

बबूसा और धरा, अर्जुन और नीना को ही देख रहे थे।

"ये बबूसा हैं।" नगीना परिचय कराती कह उठी—"जो कि खुद को किसी डोबू जाति से वास्ता रखते बताते हैं और कहते हैं कि इनका जन्म किसी सदूर ग्रह पर हुआ था परंतु अंतरिक्ष यान इन्हें पृथ्वी पर तभी छोड़ गया था।"

जगमोहन शांत-सा खड़ा देख-सुन रहा था।

"और ये धरा है। इसके बारे में मैं आपको बता ही चुकी हूं। और ये प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज हैं, ये इनकी असिस्टेंट नीना है। इस मामले की जांच करने के लिए मैंने ही इन्हें यहां बुलाया है।" नगीना ने सामान्य स्वर में कहा।

अर्जुन ने जगमोहन को देखकर कहा।

"ये साहब कौन हैं?"

"ये जगमोहन हैं। देवराज चौहान के दोस्त, भाई और सबसे करीबी।" नगीना बोली।

"देवराज चौहान कहां हैं?"

"वो उधर बेडरूम में हैं, उन्हें बुलाऊं क्या?"

"मैं वहीं पर उनसे मिलूंगा।" अर्जुन बोला।

"आइए।"

वे चल पड़े, बंगले के भीतर की तरफ।

अर्जुन भारद्वाज, जगमोहन से बोला।

"मैंने आपका नाम, देवराज चौहान के साथ ही सुन रखा है।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"नगीना जी।" अर्जुन बोला—"कल के बाद कोई नई बात हुई या सब कुछ वैसा ही चल रहा है।"

"कल रात को रानी ताशा का फोन आया था और देवराज चौहान उससे बातें करते, पागलपन की हद तक जा पहुंचे।"

"कैसा पागलपन?"

"रानी ताशा के पास जाने को व्याकुल हो उठे और मेरा गला दबाने लगे।"

अर्जुन के होंठ सिकुड़ गए।

"सर।" नीना बोली—"ये पागलपन का मामला भी हो सकता है।"

ये सुनकर जगमोहन के होंठों पर मुस्कान उभरी।

अर्जुन ने उसकी मुस्कान को देखा और सिर हिलाकर रह गया।

वे सब देवराज चौहान के कमरे में पहुंचे।

देवराज चौहान कुर्सी पर बैठा, सोचों में डूबा था कि खड़े होकर अर्जुन और नीना से हाथ मिलाए।

"मुझे परिचय देने की तो जरूरत नहीं।" अर्जुन भारद्वाज मुस्कराकर बोला।

"नहीं। आप दोनों का परिचय नगीना मुझे पहले ही दे चुकी है।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"मैं किस सिलसिले में यहां आया हूं ये भी आपको पता होगा।"

देवराज चौहान ने सहमति से सिर हिला दिया।

"आप देवराज चौहान हैं। मशहूर डकैती मास्टर।" अर्जुन बोला।

"आप ऐसा भी कह सकते हैं मिस्टर अर्जुन।"

"इनकी न तो बड़ी-बड़ी मूंछें हैं। न बड़े-बड़े बाल।" नीना बोली—"मैं तो कुछ और ही सोच रही थी सर।"

"बैठिए आप लोग...।" देवराज चौहान ने कहा।

"ऐसे ही ठीक है, मुझे आपसे ज्यादा बातें नहीं करनी हैं। ये ही पूछना है कि इस सारे मामले में आपका क्या विचार है?"

देवराज चौहान चुप रहा।

"ये सब कुछ सच है या झूठ। आपने इस बारे में कुछ तो सोचा होगा।" अर्जुन पुनः बोला।

"बबूसा के बारे में पूछ रहे हैं या रानी ताशा के बारे में?" देवराज चौहान ने पूछा।

"दोनों के बारे में।"

"बबूसा जो कहता है वो सही है, वो सच्चा है।" देवराज चौहान ने कहा—"मुझे उसकी बातों पर भरोसा है। अभी तक उसने जो-जो कहा, वो ही सामने आ रहा है। मुझे वो झूठा नहीं लगता।"

"और रानी ताशा?"

"उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता। मैंने उसे अभी तक देखा नहीं है। परंतु बबूसा उसका जिक्र करता है तो वो ठीक ही कहता होगा। मैं बबूसा की बातों को चैक करते हुए उस पर विश्वास करता जा रहा हूं।"

"रानी ताशा के आने वाले फोनों के बारे में क्या कहते हैं मिस्टर देवराज चौहान।"

"दो बार रानी ताशा के फोन आए हैं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"फोन पर उसकी आवाज सुनते ही मुझे जाने क्या हो जाता है मैं होश खो बैठता हूं। पहली बार मैंने बबूसा को घूंसा मारा। दूसरी बार कल रात मैंने नगीना का गला दबाने की कोशिश की, जबकि ऐसा मैं सोच भी नहीं सकता। पता नहीं कैसे हो गया ऐसा।"

अर्जुन भारद्वाज की निगाह देवराज चौहान पर थी।

"रानी ताशा से बात करते आपके होश गुम हो जाते हैं।"

"हां। जबकि दूसरी बार मैंने कोशिश की थी कि मैं होश गुम नहीं होने दूंगा, परंतु मिनट भर ठीक रहने के बाद मेरी हालत बिगड़ गई। उसके बाद मुझे याद नहीं कि मैंने क्या किया।"

"तो आप संभले कैसे?"

"बबूसा ने घूंसा मारकर इन्हें बेहोश कर दिया था।" नगीना बोली।

"और होश आने पर...?" अर्जुन ने नगीना को देखा।

"होश आने पर ये सामान्य थे।" नगीना ने कहा।

"देवराज चौहान जी, जब आप रानी ताशा से बात करते हैं तो कैसा महसूस करते हैं?" अर्जुन ने पूछा।

"कैसा महसूस करता हूं।" देवराज चौहान सोच भरे स्वर में बोला—"महसूस करने तक तो मैं पहुंच ही नहीं पाता। बातें शुरू होती हैं और उसके बाद जैसे मैं कहीं गुम हो जाता हूं, मुझे कुछ भी याद नहीं रहता।"

"ऐसा कुछ पहले कभी महसूस हुआ है?"

"पहले? नहीं, ताशा से बात करने से पहले, ऐसा कभी नहीं हुआ। ये सब मेरे साथ पहली बार ही हो रहा है।"

अर्जुन भारद्वाज ने क्षणिक चुप्पी के बाद कहा।

"अगर मैं कहूं कि बबूसा और रानी ताशा मिलकर आपके खिलाफ षड्यंत्र कर रहे हैं तो आप क्या कहेंगे?"

"मैं कभी नहीं मानूंगा। क्योंकि बबूसा को मैंने हमेशा सच्चा पाया है। मुझे बेवकूफ बनाना आसान नहीं है।"

अर्जुन ने सिर हिलाया फिर बोला।

"और रानी ताशा के बारे में आपकी क्या राय है?"

"जिसे मैंने देखा नहीं, उसके बारे में कैसे राय कायम कर सकता हूं।"

"बबूसा पर आपको भरोसा है और बबूसा ने आपको रानी ताशा के बारे में सब कुछ बताया देवराज चौहान जी।"

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव उभरे, फिर कह उठा।

"बबूसा की बातों पर मुझे पूरी तरह यकीन है।"

"तो आप मानते हैं इस बात को कि रानी ताशा किसी दूसरे ग्रह से आई है। वो सदूर ग्रह पर कभी आपकी पत्नी हुआ करती थी। किसी तरह से आप इस ग्रह पर आ गए तो अब वो आपको वापस ले जाने आई है।" अर्जुन भारद्वाज ने कहा।

"हां, मुझे बबूसा की बातों पर यकीन है।" देवराज चौहान ने दृढ़ स्वर में कहा।

"बबूसा से पहले कभी मिल चुके हैं आप?"

"नहीं।"

"ताशा से कभी वास्ता पड़ा हो?"

"नहीं।"

अर्जुन भारद्वाज जगमोहन की तरफ पलटकर बोला।

"इन बातों पर मैं आपकी राय लेना चाहूंगा मिस्टर जगमोहन।"

"मैं देवराज चौहान की हर बात से सहमत हूं।"

"आप देवराज चौहान से सहमत हैं या बबूसा की बातों से भी सहमत हैं।"

"बबूसा की बातों से भी सहमत हूं।" जगमोहन दृढ़ स्वर में बोला।

"इसका मतलब कि बबूसा आप दोनों पर अपनी बातों से अधिकार पा चुका है। वो...।"

"अधिकार पा चुका से आपका क्या मतलब।" जगमोहन तीखे स्वर में बोला—"हम उसकी बातों के जाल में नहीं फंसे हैं, बल्कि करते-करते ही, उसकी बातों पर भरोसा किया है। कोई हम पर अधिकार नहीं पा सकता।"

अर्जुन ने सिर हिलाया। देवराज चौहान को देखकर कहा।

"आप लोग बेहद समझदार हैं। मेरा खयाल है कि देवराज चौहान और जगमोहन बेवकूफ नहीं हैं जो किसी की बातों में इस तरह फंस जाएं।" स्वर में गम्भीरता थी—"आप दोनों ने बबूसा की बातों पर यकीन किया तो जरूर उस यकीन की भी वजह होगी। क्या मैं उस यकीन के बारे में कुछ जान सकता हूं मिस्टर देवराज चौहान?"

"यकीन यही है कि हमने बबूसा को कभी भी झूठ बोलते महसूस नहीं किया।" देवराज चौहान ने कहा।

"एक बात तो उसकी झूठी लगी होगी?"

"एक भी नहीं।"

"तो आप इस बात पर पूरी तरह यकीन कर रहे हैं कि बबूसा ने जो कहा, सच कहा। रानी ताशा वास्तव में किसी दूसरे ग्रह से आई है और आपको ले जाने आई है, क्योंकि कभी आप उस सदूर ग्रह पर उसके पति थे।"

"रानी ताशा के बारे में सच्चाई सामने आनी अभी बाकी है।" देवराज चौहान ने कहा—"इस बारे में हम बबूसा की बातों पर ही भरोसा कर रहे हैं और हमें ये ही लगता है कि बबूसा गलत नहीं कहता।"

अर्जुन भारद्वाज ने नगीना से कहा।

"और आपको इन सब बातों पर जरा भी यकीन नहीं है।"

"नहीं। मुझे ये सब षड्यंत्र का हिस्सा लगता है। बबूसा चालबाज है। रानी ताशा के साथ मिला हुआ है। दोनों अपने प्लान के मुताबिक काम करते, देवराज चौहान के पीछे लगे हैं। शायद इससे दौलत पाना चाहते हैं। मैं आपको एक और बात बताना चाहती हूं मिस्टर अर्जुन कि रानी ताशा मुम्बई के सी व्यू पर्ल होटल में ठहरी है।"

अर्जुन भारद्वाज संभला।

"कैसे पता लगाये?" अर्जुन ने पूछा।

"कल रात को जब देवराज चौहान, ताशा से बात कर रहे थे तो इनके मुंह से सी व्यू पर्ल होटल का नाम निकला था। ये वहां जाने को कह रहे थे। एक बात और, इसके दो घंटे बाद विजय बेदी नाम के व्यक्ति का फोन आया था। वो फोन पहले मैंने सुना फिर जगमोहन भैया ने सुना। विजय बेदी यहां का पता पूछ रहा था, उसका कहना था कि वो बीस लाख रुपए के लिए, रानी ताशा के वास्ते देवराज चौहान को ढूंढ़ रहा है, पांच लाख वो एडवांस भी ले चुका है। जगमोहन भैया से उसने देवराज चौहान समझकर बात की थी कि ताशा बहुत खूबसूरत है और उसके पास नोट भी हैं, उससे मिलने में नुकसान नहीं होगा। अपने बारे में उसने बताया कि उसके सिर के बीच गोली फंसी हुई है, वो निकलवानी है, इसलिए वो रानी ताशा का ये काम कर रहा है। वो काफी जोर लगा रहा था कि देवराज चौहान, ताशा से मुलाकात कर ले। उसका कहना था कि ताशा से मुलाकात होते ही उसे बाकी का पंद्रह लाख मिल जाएगा।"

"दिलचस्प।" अर्जुन भारद्वाज के होंठ सिकुड़े—"ये विजय बेदी तो और भी मजेदार इंसान है। ताशा का रूम नम्बर कितना है?"

नगीना ने जगमोहन को देखा।

"रूम नम्बर जानने तक बात नहीं आई। वो बताना चाहता था, पर मैंने नहीं सुना।"

"सर।" नीना बोली—"वो तो हम रिसैप्शन से भी पता कर लेंगे।"

अर्जुन ने देवराज चौहान और जगमोहन को देखकर कहा।

"मेरी नजर में बबूसा और रानी ताशा पूरी तरह संदिग्ध हैं। मैं नहीं मानता कि रानी ताशा किसी दूसरे ग्रह से आई है। रही बात बबूसा की तो

वो मुझे ज्यादा खतरनाक लगता है, जो आप लोगों के पास आ टिका। इस मामले की किसी भी बात पर मुझे भरोसा नहीं हो रहा, न ही आप लोगों से बात करके मुझे तसल्ली मिली। आप दोनों महज एक इंसान पर ही भरोसा करके चल रहे हैं और भरोसे की वजह सिर्फ इतनी है कि आपका दिल कहता है कि बबूसा सच्चा है। जबकि आज की दुनिया में दिल का कोई महत्त्व नहीं बचा, सिवाय इसके कि वो शरीर को जिंदा रखने का काम करता है। मैं इस मामले में अपने ढंग से काम करूंगा। बबूसा से भी पूछताछ करूंगा। उसके बाद...।"

"बबूसा जो कहता है सही कहता है।" जगमोहन बोला—"तब मैं धरा के साथ कार में था, जब डोबू जाति वालों ने अपने अजीब से हथियारों से हम पर जानलेवा हमला किया था जो कि चौकोर पत्ती जैसे, तेज धार के...।"

"धरा सिर्फ इसलिए बबूसा के साथ है कि डोबू जाति से, बबूसा ही उसे बचा सकता है।" अर्जुन बोला।

"सही कहा।"

"बहुत अजीब और उलझा मामला है देवराज चौहान साहब, मैं आपसे सहयोग की आशा करता हूं।"

"कैसा सहयोग?"

"रानी ताशा का फोन आए तो आप जरूर बात करें उससे।" अर्जुन भारद्वाज बोला।

"क्या?" नगीना के होंठों से निकला—"बात करें, परंतु इन्हें तो तब अपने पर काबू नहीं रहता कि...।"

"नगीना जी, ये ही तो देखना है मैंने कि बेकाबू होकर ये क्या करते हैं। आगे कुछ होगा तो इस मामले के रहस्य की परतें खुलेंगी।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा—"इन्हें रानी ताशा से बात करने दें। बबूसा से बात करने के बाद मैं रानी ताशा से मिलने सी व्यू पर्ल होटल भी जाऊंगा। मैं पूरी कोशिश करूंगा कि जल्द-से-जल्द सच को सामने ला सकूं। इस केस को समझकर भी मैं समझ नहीं पा रहा हूं। दूसरे ग्रह की बातें मुझे हजम नहीं हो रहीं। कम-से-कम मेरे लिए तो यकीन करना कठिन है कि दूसरे ग्रह से अंतरिक्ष यान आये और यहां की दुनिया को खबर ना लगे। देवराज चौहान जी आपने रानी ताशा का फोन आने पर उससे बात करनी है और आप बाकी लोग ये देखेंगे कि देवराज चौहान बात करके क्या करते हैं। कहां जाते हैं। रानी ताशा अगर पता मांगे तो उसे पता दीजिए। वो बुलाए तो देवराज चौहान को जाने दें और खुद इन पर नजर रखें। इनके आसपास रहें और उस वक्त मुझे फोन कर दें।"

"सर।" नीना बोली—"हम रानी ताशा से मिलने वाले हैं। रानी ताशा को हम यहां का पता दे सकते हैं।"

"नहीं नीना। हम ऐसा नहीं करेंगे।" अर्जुन भारद्वाज सिर हिलाकर कह उठा—"रानी ताशा अपना काम जैसे कर रही है, उसे करने देंगे। हमें देखना है कि वो कब क्या कर रही है और हम अपना काम करेंगे। ये बहुत ही उलझा हुआ मामला है। अभी तक ऐसी कोई बात सामने नहीं आई कि उस पर विश्वास कर सकें। इस केस में लोग खुद को दूसरे ग्रह से आया बता रहे हैं जो कि कोरी बकवास के अलावा कुछ नहीं है। मुझे इस मामले का सच सबके सामने लाना होगा।"

खामोश खड़ा जगमोहन कह उठा।

"अर्जुन साहब। बेशक आप मामले की छानबीन करें, परंतु जो सच है वो ही आप सुन रहे हैं।"

"हैरानी है कि आप और देवराज चौहान इन बातों पर यकीन कर रहे हैं।"

"आप भी करेंगे।" जगमोहन मुस्कराया—"जैसे कि हम कर रहे हैं।"

"सर।" नीना ने कहा—"हमें बबूसा से बात करनी चाहिए।"

▭ ▭

अर्जुन भारद्वाज, नीना और नगीना, उस बेडरूम से निकलकर ड्राइंग हॉल में पहुंचे जहां पर बबूसा और धरा मौजूद थे। अर्जुन मुस्कराया और अपना कार्ड निकालकर बबूसा की तरफ बढ़ाया।

"मैं प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज हूं।"

बबूसा ने कार्ड को देखा, लिया नहीं। धरा कह उठी।

"उसे क्या दिखाते हो। मुझे दिखाओ।"

अर्जुन ने कार्ड धरा की तरफ बढ़ाया।

"मुझे नहीं देखना।" धरा ने मुंह बनाकर कहा—"मैंने सुन रखा है कि प्राइवेट जासूस चोर होते हैं।"

अर्जुन भारद्वाज ने मुस्कराकर कार्ड वापस जेब में रखा। नीना तीखे स्वर में कह उठी।

"तुम हमें चोर कह रही हो। हम तुम्हें चोर दिखते हैं।"

"मैंने सुनी हुई बात कही है।" धरा ने नीना को देखा।

"तुमने गलत सुना है। प्राइवेट जासूस बहुत शरीफ होते हैं। पुलिस से ज्यादा तेजी से काम करते हैं और तुम जैसे लोगों का षड्यंत्र खोलकर रख देते हैं, जैसे कि अब तुम लोगों का खेल हम खराब करेंगे।"

"तुम्हारा मतलब कि हम खेल खेल रहे हैं।" धरा बोली।

"इस बारे में तो 'सर' ही बात करेंगे।" नीना ने शराफत से कहा।
अर्जुन भारद्वाज ने बबूसा को देखकर कहा।
"मैं तुमसे कुछ सवाल पूछना चाहता हूं।"
बबूसा ने समझने वाले भावों से धरा को देखा तो धरा कह उठी।
"जो पूछता है बता दो। तुम नहीं समझोगे कि प्राइवेट जासूस क्या होता है। मैंने अक्सर अखबारों में पढ़ा है कि ये लोग आधे से ज्यादा ब्लैकमेलर होते हैं।" धरा का स्वर तीखा था—उसने नगीना को देखकर कहा—"तुम्हें बबूसा की बातों पर यकीन नहीं आ रहा, जबकि ये हर बात सच कहता है।"
अर्जुन बबूसा से कह उठा।
"ये सब क्या हो रहा है, मुझे बताओ।"
"सब पता है तुम्हें।" धरा ने कड़वे स्वर में कहा—"फिर भी पूछ रहे हो।"
"मैं तुम्हें कुछ भी बात क्यों बताऊं?" बबूसा शांत स्वर में बोला।
अर्जुन ने नगीना को देखा।
"मैं चाहती हूं तुम सब बातें मिस्टर अर्जुन से कहो।" नगीना ने कहा।
"इससे बात करो बबूसा।" धरा बोली—"इसे यकीन दिला दो कि तुम जो कह रहे हो वो सही है।"
बबूसा ने अर्जुन भारद्वाज को शुरू से अंत तक सारी बात, सब कुछ बताया।
अर्जुन गम्भीरता से सुनता रहा।
नीना और नगीना ने भी सब सुना। धरा शांत थी।
बबूसा के खामोश होने पर अर्जुन ने कहा।
"तो तुम अपने को किसी सदूर ग्रह का बताते हो।"
"मैं हूं। परंतु इस जन्म में मेरी परवरिश डोबू जाति में हुई। रानी ताशा ने अपने प्लान के तहत ही मुझे जन्म करवाकर पृथ्वी पर पोपा में भेजा था कि ये वाला वक्त आने पर मैं उनकी सहायता करता।"
"और तुम रानी ताशा का साथ देने से इंकार कर रहे हो।" अर्जुन बोला।
"हां।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं राजा देव का सेवक हूं। जो भी करूंगा, उन्हीं के भले के लिए करूंगा। रानी ताशा ने राजा देव को बहुत बुरा धोखा दिया था। ग्रह से बाहर फेंक दिया था। अब रानी ताशा अपनी उस करतूत पर पर्दा डालना चाहती है। महापंडित रानी ताशा का पूरा साथ दे रहा है। रानी ताशा, राजा देव को धोखे में रखकर, पोपा में बैठाकर सदूर ग्रह पर ले जाएगी और वहां महापंडित, राजा देव के दिमाग के उस हिस्से को साफ कर देगा, जहां रानी ताशा के धोखे वाली बात दर्ज है। परंतु मैं ऐसा

नहीं होने दूंगा। राजा देव को तब तक रानी ताशा से बचाता रहूंगा जब तक कि राजा देव को सदूर के जन्म की बातें याद नहीं आ जातीं।"

"देवराज चौहान को वो बातें कब याद आएंगी?" अर्जुन भारद्वाज ने पूछा।

"जब राजा देव, रानी ताशा को देखेंगे तो उसके बाद सदूर ग्रह का जन्म और रानी ताशा की धोखेबाजी कभी भी याद आ सकती है। महापंडित ने मुझे ऐसा ही बताया था कि ऐसा ही होगा।" बबूसा ने कहा।

"रानी ताशा के चेहरे पर ऐसा क्या है कि चेहरा देखकर देवराज चौहान को सब याद आने लगेगा।" अर्जुन ने पूछा।

"महापंडित ने ही बताया था कि रानी ताशा के चेहरे पर उसने ऐसी शक्ति डाल रखी है कि राजा देव जब भी रानी ताशा का चेहरा देखेंगे तो उन्हें सदूर ग्रह का जन्म याद आने लगेगा।" बबूसा ने बताया।

"महापंडित ने ऐसा क्यों किया? वो रानी ताशा के चेहरे पर शक्ति न डालता तो देवराज चौहान को कुछ भी याद नहीं आता और रानी ताशा किसी तरह जुगाड़ भिड़ाकर देवराज चौहान को सदूर ग्रह पर ले जाती फिर...।"

"इसका जवाब तो महापंडित ही दे सकता है।"

"और महापंडित से मैं पूछताछ कर नहीं सकता।" अर्जुन भारद्वाज मुस्करा पड़ा।

"वो तो सदूर ग्रह पर है।" बबूसा बोला।

"तो तुमने देवराज चौहान को उसकी गंध से ढूंढ़ निकाला।" अर्जुन बोला।

"हां। महापंडित ने मेरे भीतर जन्म कराते समय, राजा देव की गंध डाल दी थी और गंध को पहचानने की शक्ति भी डाल दी थी। इसी वजह से मैं राजा देव को तलाश कर सका, परंतु इसमें मुझे महीनों का वक्त लग गया।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **राजा पॉकेट बुक्स** से प्रकाशित अनिल मोहन का उपन्यास **'बबूसा'**।)

"ये महापंडित तो कोई देवता लगता है।" अर्जुन बराबर मुस्करा रहा था।

"पता नहीं देवता कौन होते हैं, पर महापंडित तो मेरे जैसा ही इंसान है। लेकिन वो बहुत विद्वान है। वो लोगों के जन्म कराता है। वो मशीनें बनाता है, मशीनों से बातें करता है। वो आने वाले वक्त के बारे में पहले ही बता देता है। महापंडित जैसा सदूर पर दूसरा कोई नहीं है। राजा देव भी उसका बहुत आदर करते थे।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"और रानी ताशा के बारे में मुझे क्या बताना चाहोगे?"

"रानी ताशा झूठी-मक्कार और बेईमान औरत है। परंतु ग्रह की सबसे

खूबसूरत औरत मानी जाती है। शायद इसलिए कि वो राजा देव की पत्नी है। राजा देव, रानी ताशा से बहुत प्यार करते थे परंतु उसने राजा देव को धोखा दिया। लेकिन बाद में बहुत पछताई, क्योंकि राजा देव जैसे शानदार व्यक्ति को खो देना, बहुत दुख वाली बात थी। जब राजा देव को ग्रह से बाहर फेंका गया तो मेरी हालत पागलों जैसी हो गई थी। मैं राजा देव को बहुत चाहता था। कहने को मैं राजा देव का सेवक मात्र था, परंतु हर समय उनके साथ रहने के कारण मैं उनका दोस्त बन गया था। राजा देव अपने दिल की बात भी मुझसे कर लिया करते थे। मुझ पर राजा देव को पूरा विश्वास था और मैंने कभी उनका विश्वास तोड़ा भी नहीं। राजा देव दिल के बहुत अच्छे थे। बहुत अच्छे ताकतवर योद्धा थे। राजा बनने के लिए ग्रह के ताकतवर लोग अक्सर उन्हें चुनौती दिया करते...।"

"कैसी चुनौती? मैं समझा नहीं...।"

"ग्रह का नियम है कि कोई भी राजा बन सकता है, अगर वो वर्तमान राजा को चुनौती देकर मैदान में परास्त कर दे तो। ऐसे मुकाबलों के लिए एक बहुत बड़ा मैदान बना रखा है, जहां ऐसे वक्त में सदूर ग्रह के लोग भी इस लड़ाई को देख सकते हैं। तो ग्रह के ताकतवर लोग, जो ये सोचता है कि वो युद्ध में राजा देव को हराकर राजा बन सकता है तो वो राजा देव को चुनौती देने किले पर जाता था। किले के कर्मचारी उसका नाम-पता नोट करके कुछ दिन बाद की तारीख दे देते थे कि इस दिन सुबह नौ बजे वो मुकाबले के लिए मैदान में पहुंच जाए। फिर वहां मुकाबला होता था। राजा देव ग्रह के सबसे ताकतवर इंसान थे और मुकाबले में योद्धा की जान ले लेते थे।"

"जान ले लेते थे?"

"ये भी मुकाबले का नियम था कि ऐसे मुकाबले में एक योद्धा की जान जाएगी ही। अगर हारने वाला जिंदा रहा तो वो भविष्य में किसी तरह से राजा के लिए परेशानी खड़ी कर सकता है। राजा देव ने ही ये नियम बनाया था।"

"जब राजा देव ग्रह से बाहर फेंक दिए गए तो उस स्थिति में ऐसे मुकाबलों का क्या हुआ?"

"बंद हो गए। ग्रह की मालकिन रानी ताशा बन गई। औरतों के साथ मुकाबले का कोई रिवाज नहीं है ग्रह पर। उसके बाद ऐसे मुकाबले बंद हो गए। राजा नहीं तो मुकाबला भी नहीं।" बबूसा ने कहा।

"तुम बहुत अजीब बातें कह रहे हो?" अर्जुन भारद्वाज गम्भीर स्वर में बोला।

"मैंने जो कहा है, सच कहा है।"

"ग्रह से बाहर किसी को कैसे फेंका जाता है?" अर्जुन ने पूछा।

"सदूर ग्रह की जमीन ज्यादा मोटी नहीं है। वो लगभग एक प्लेट के आकार की है, पतली जैसी है। ग्रह पर कुछ लोग ऐसे भी होते थे जिन्हें फैसलों के बाद राजा देव मौत की सजा देते थे। परंतु राजा देव को किसी की जान लेना पसंद नहीं था। ऐसे में उनके आदेश पर किले से कुछ दूर जमीन में सीधी सुरंग बनाई गई। पंद्रह दिन में ही आर-पार सुरंग खोद कर उसमें छः फुट व्यास का एक पाइप तैयार करके लगा दिया गया। वहां पर बड़ा-सा कमरा बना दिया गया कि कोई इंसान अंजाने में भीतर न गिर जाए। उसके बाद जिस किसी को भी मौत की सजा दी जाती तो किले के कर्मचारी उसे उसी पाइप में फेंक देते। इस तरह नीचे से निकलकर वो ग्रह के बाहर चला जाता।"

अर्जुन भारद्वाज ने गहरी सांस लेकर कहा।

"तुमने तो हर बात का जवाब तैयार रखा हुआ है।"

"ये जवाब नहीं, हकीकत बता रहा है तुम्हें।" धरा बोली।

"तुम्हें कैसे पता कि ये हकीकत है।" अर्जुन ने धरा को देखा।

"क्योंकि मुझे ये पता है कि बबूसा कभी झूठ नहीं बोलता। मैं कब से इसके साथ हूं।"

"तुम इसके साथ कैसे हो?" अर्जुन ने पूछा।

"ये लम्बी कहानी है।" धरा ने गहरी सांस ली।

"मैं जानना चाहता हूं।"

"मेरे बारे में जानकर तुम्हें क्या मिलेगा जासूस साहब?"

"क्योंकि तुम भी संदिग्ध हो और बबूसा के साथ जुड़ी हुई हो।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा।

तब धरा ने अपने बारे में सब कुछ बताया कि वो सरकार के पुरातत्त्व विभाग में काम करती थी और उसका काम गुमशुदा जातियों को ढूंढ़कर उन्हें मुख्य धारा में मिलाना होता था और कैसे वो डोबू जाति जैसे खतरनाक लोगों में जा पहुंची थी। सब कुछ बताया। (ये सब विस्तार से जानने के लिए अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'बबूसा'** अवश्य पढ़ें।) सब कुछ बताकर धरा रुकी तो उसकी आंखों में आंसू थे। वो बोली।

"डोबू जाति वालों ने मुम्बई पहुंचकर मेरी मां की जान ले ली। मेरे ऑफिस पहुंचकर चक्रवर्ती साहब और प्रकाश को मार दिया। मैं भी मारी जाती अगर बबूसा मुझे न बचाता। ये मुझे बचाता रहा और मैं देवराज चौहान की तलाश में इसकी सहायता करती रही। एक बार मैं बबूसा से अलग हो गई और जगमोहन से जा मिली। तब मैं और जगमोहन डोबू जाति वालों के हाथों मरते-मरते बचे थे।"

धरा ने आंखों से बह निकले आंसुओं को साफ किया।

अर्जुन भारद्वाज के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी। नीना भी गम्भीर थी।

जबकि नगीना के चेहरे पर उलझन की लकीरें दिखाई दे रही थीं।

"तुम। धरा भीगे स्वर में बोली—"मेरी बातों की आसानी से छानबीन कर सकते हो। लाहौल स्पिति के टाकलिंग ला कस्बे में जाओ और मेरे बारे में पूछो। डोबू जाति के बारे में पता करो। चाहो तो डोबू जाति की तरफ जा सकते हो, परंतु वहां जाने में चार दिन लगते हैं। दुर्गम रास्ता है और कोई तुम्हें वहां ले जाने को भी तैयार नहीं होगा। क्योंकि टाकलिंग ला कस्बे के लोग डोबू जाति को रहस्यमय बताते हैं और उनसे डरते भी हैं। मैंने किसी तरह दस लाख रुपया देकर जोगाराम को साथ चलने को तैयार कर लिया था। लेकिन वापसी पर डोबू जाति वाले हमारे पीछे हमारी जान लेने को लगे थे और जोगाराम मारा गया, मैं बच निकली।" धरा ने झुरझुरी ली फिर सूखे होंठों पर जीभ फेरी—"वो वक्त याद करके मैं आज भी कांप जाती हूं। मैं पागल थी जो डोबू जाति में चली गई। मेरा फैसला बहुत गलत था। मैंने बहुत बड़ी भूल की ऐसा करके।"

अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर निगाहों से बबूसा को देखा।

"तुमने बताया कि रानी ताशा पोपा (अंतरिक्ष यान) पर पृथ्वी ग्रह पर आई है।" अर्जुन बोला।

बबूसा ने सहमति से सिर हिलाया।

"तो पोपा इस वक्त कहां है?"

"डोबू जाति के पहाड़ के सामने—दो पहाड़ों के बीच वो उतरता है और छिप-सा जाता है कि बाहरी लोग उसे न देख सके। मैंने तीन बार देखा है। पोपा वहीं पर ही उतरता है।" बबूसा ने कहा।

"तुम्हें यकीन है कि पोपा इस वक्त वहीं पर होगा।"

"पूरा यकीन है।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा—"पोपा वहीं पर होगा।"

"हैरानी है कि दूसरे ग्रह से कोई अंतरिक्ष यान आता है और पृथ्वी वाले उसे देख नहीं पाते...।"

"अर्जुन साहब।" धरा गम्भीर स्वर में बोली—"अगर तुम डोबू जाति में गए होते तो कभी भी ऐसा न कहते। डोबू जाति ऐसी जगह पर स्थित है कि वहां कोई नहीं पहुंच सकता। हर तरफ बर्फ ही बर्फ है। वहां जीवन बिताना भी कठिन है परंतु डोबू जाति वाले वहां आराम से जीवन बिताते हैं।"

"पोपा जब भी वहां आता है तो रात का अंधेरा फैला होता है।" बबूसा बोला—"ऐसे में उसे देख पाना आसान नहीं होता।"

अर्जुन कुछ पल चुप-सा रहकर गम्भीर स्वर में बबूसा से बोला।

"और तुम कहते हो कि मैं तुम्हारी बातों का विश्वास कर...।"

"मैंने कुछ भी झूठ नहीं कहा।" बबूसा बोल पड़ा।

"सच-झूठ जानने का बहुत आसान रास्ता है तुम्हारे पास।" धरा बोली—"डोबू जाति तक जाओ और वहां खड़ा अंतरिक्ष यान देख लो। अंतरिक्ष यान न मिले तो हम झूठे, नहीं तो तुम झूठे।"

अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर निगाहों से धरा को देखा।

"कम-से-कम मैं तो तुम्हें डोबू जाति तक नहीं ले जा सकती। मैं मरना नहीं चाहती।" धरा बोली।

"डोबू जाति कहां पर रहती है मुझे बताओ।" अर्जुन ने कहा।

धरा ने बताया। दस मिनट तक समझाने के बाद बोली।

"अगर ऐसा सफर तुम कर सकते हो तो जाओ। मरना चाहते हो तो जाओ। परंतु मार्गदर्शक के बिना तुम वहां नहीं पहुंच सकते। यूं भी आज के हालात वहां कुछ और हैं। अब तो और भी खतरनाक है वहां जाना।"

"वो कैसे?"

धरा ने बबूसा पर नजर मारी फिर अर्जुन को देखकर कह उठी।

"डोबू जाति में रानी ताशा ने सब कुछ अपने अधिकार में ले लिया है। डोबू जाति के मुख्य लोगों को खत्म करके, उन पर अपनी हुकूमत कायम कर ली है रानी ताशा ने। अब वहां रानी ताशा के लोग ही सब कुछ संभाल रहे हैं।"

"तुम्हें कैसे पता?" अर्जुन भारद्वाज के होंठ सिकुड़े।

"बबूसा ने बताया।"

"बबूसा को कैसे पता?" अर्जुन भारद्वाज की निगाह बबूसा की तरफ उठी।

"ये बात डोबू जाति के मेरे साथी सोलाम ने मुझे बताई।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला—"रानी ताशा ने डोबू जाति वालों को धोखा दिया है। रानी ताशा की फितरत ही ऐसी है कि कभी भी कुछ भी कर दे। धोखा देना तो उसका शौक है। राजा देव को धोखा दिया। डोबू जाति वालों को धोखा दिया। उससे किसी भी बात की अपेक्षा की जा सकती है।"

"सोलाम कहां है?" अर्जुन ने पूछा।

"मुम्बई में ही है। वो यहां बिखरे डोबू जाति के उन लोगों को इकट्ठे कर रहा है जो धरा को मारने के लिए भेजे गए थे। उन्हें बताया गया है कि डोबू जाति पर क्या किया है रानी ताशा ने। वो मेरे से भी सम्बंध बनाए हुए है। हम इस बात की तैयारी कर रहे हैं कि डोबू जाति को रानी ताशा की हुकूमत से मुक्त कराया जा सके।" बबूसा ने कहा।

"तुम्हें चिंता है डोबू जाति की?"

"क्यों नहीं होगी। बेशक मैं सदूर ग्रह का रहने वाला हूं परंतु इस जन्म में मेरा सारा जीवन डोबू जाति में ही बीता है। मुझे लगाव है उन लोगों से। कम-से-कम रानी ताशा की हुकूमत तो मैं वहां नहीं देख सकता।" बबूसा गुस्से से भर उठा।

"रानी ताशा ने ऐसा क्यों किया?"

"मैं नहीं जानता।"

"तुम जानते हो अब रानी ताशा कहां है?" अर्जुन भारद्वाज ने पूछा।

"वो मुम्बई के एक होटल सी-व्यू पर्ल में है। कल रात फोन करके वो राजा देव को वहीं बुला रही थी।"

"वो देवराज चौहान को ढूंढ़ रही है।"

"हां।"

"तो तुम देवराज चौहान और रानी ताशा को आमने-सामने क्यों नहीं कर देते। फिर देखते हैं कि क्या होता है।"

"वो तबाही का वक्त होगा।" बबूसा का चेहरा कठोर हो गया।

"कैसे?"

"राजा देव को सदूर के जन्म का कुछ भी याद नहीं। ऐसे में रानी ताशा के सामने जाना, उनके लिए ठीक नहीं होगा। महापंडित ने जाने कौन-सी चाल चल रखी है कि जब राजा देव, रानी ताशा को देखें तो जाने क्या हो जाए। राजा देव सदूर ग्रह पर रानी ताशा के दीवाने हुआ करते थे। रानी ताशा को बहुत चाहते थे। मुझे डर है कि रानी ताशा को देखते ही राजा देव फिर से दीवाने न हो जाएं। ऐसा हो गया तो हालातों को संभालना बहुत कठिन हो जाएगा और रानी ताशा की राह आसान हो जाएगी। फोन पर रानी ताशा की आवाज सुनकर ही राजा देव का हाल दीवानों जैसा हो रहा है। समझ में नहीं आता कि क्या करूं। मुझे बहुत चिंता हो रही है कि जब रानी ताशा, राजा देव के सामने पड़ेगी तो तब क्या होगा?"

"तुमने कहा था कि रानी ताशा का चेहरा देखने पर देवराज चौहान को वो जन्म याद आ जाएगा।"

"महापंडित ने मुझे ऐसा ही कहा था। परंतु जन्म याद आ जाएगा नहीं, याद आना धीरे-धीरे शुरू होगा। कुछ वक्त लगेगा परंतु राजा देव अगर रानी ताशा के दीवाने हो गए तो फिर कैसे जन्म याद आएगा। रानी ताशा उन्हें अपने में उलझाकर सदूर ग्रह पर ले जाएगी। पर जब तक मैं हूं, ऐसा नहीं होने दूंगा। मैं राजा देव को बचाऊंगा...।"

"पर तुम कब तक रानी ताशा और देवराज चौहान का आमना-सामना होने से रोक सकोगे?" अर्जुन भारद्वाज ने कहा।

"ज्यादा देर तक ऐसा नहीं कर सकूंगा मैं।" बबूसा के होंठ भिंच गए—"वो बुरा वक्त कभी भी आ सकता है।"

अर्जुन भारद्वाज बबूसा को देखता रहा। चेहरे पर सोच के भाव थे।

नीना भी बबूसा को देख रही थी।

जबकि नगीना के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"मैं तुम्हारी बातों की सच्चाई जानने की कोशिश करूंगा।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा।

नगीना के साथ अर्जुन और नीना वहां से दूर हट गए।

"सर।" नीना गम्भीर स्वर में बोली—"बबूसा और धरा के हाव-भाव बता रहे हैं कि वो झूठ नहीं बोल रहे।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो आप दोनों भी उनकी बातों में फंस गए।" नगीना के होंठों से निकला।

"मेरा काम सच जानना है और मैं अपना काम कर रहा हूं नगीना जी।" अर्जुन बोला—"मैं आपकी राय जानना चाहता हूं कि आपने सब कुछ सुना, आपको क्या लगता है?"

नगीना ने होंठ भींच लिए।

"मुझे ये लोग सच्चे लग रहे हैं।" अर्जुन बोला।

नगीना बेचैन हो उठी।

"रानी ताशा से मिलने के बाद, स्पष्ट तौर पर कुछ कह सकूंगा।" अर्जुन ने कहा।

नगीना कुछ क्षण अर्जुन भारद्वाज को देखती रही फिर धीमे स्वर में बोली।

"मैंने आज ध्यान से बातें सुनीं। मुझे बबूसा झूठ बोलता नहीं लगा।"

अर्जुन ने गम्भीर निगाहों से नगीना को देखा।

"तब तो आपको ये खतरा सताने लगा होगा कि रानी ताशा कहीं आपके पति को अपने ग्रह पर न ले जाए।" नीना बोली।

"अगर देवराज चौहान ताशा के साथ जाना चाहेगा तो मैं रोकूंगी नहीं। उनकी खुशी में मेरी खुशी है।"

"फिर चिंता क्या है?" नीना के होंठों से निकला।

"देवराज चौहान को उस जन्म का कुछ भी याद नहीं, ऐसे में ताशा, इन्हें ले गई तो...?"

"इस काम के लिए मैं आपके साथ हूं।" अर्जुन बोला—"जब तक देवराज चौहान को वो जन्म याद नहीं आता, तब तक मैं रानी ताशा को, देवराज चौहान को नहीं ले जाने दूंगा।"

"सच कह रहे हैं आप?" नगीना बोली।

"हां, पूरी कोशिश करूंगा कि ऐसा न हो। ऐसा हो गया तो फीस नहीं लूंगा।" अर्जुन गम्भीर था।

"बबूसा भी तो इसी कोशिश में है।" नीना बोली।

"मैंने कल रात।" नगीना व्याकुल स्वर में बोली—"ताशा का फोन आने पर देवराज चौहान की हालत देखी। वो जैसे पूरी तरह पागल-सा हो गया था ताशा से बात करके। उसके होश गुम हो गए थे। मैं तभी समझ गई कि बबूसा की बातों में कुछ सच्चाई जरूर है। अब ध्यान से बबूसा की बातें सुनीं तो लगा जैसे वो हर बात सच कह रहा है।"

अर्जुन भारद्वाज के चेहरे पर गम्भीरता छाई हुई थी।

"आप इस मामले में मेरे साथ रहिए अर्जुन साहब।"

"मैं आपके साथ हूं और अंत तक इस केस पर काम करूंगा।" अर्जुन ने कहा।

"जब तक देवराज चौहान को सदूर ग्रह वाला जन्म याद नहीं आ जाता, तब तक रानी ताशा उसे ले जा न सके।"

"मेरी ये ही कोशिश होगी कि ऐसा ही हो।" अर्जुन ने कहा—"अब मैं रानी ताशा से मिलने जा रहा हूं। उससे मेरा बात करना जरूरी हो गया है। आप चाहें तो रानी ताशा से मिलने के लिए चल सकती हैं।"

नगीना के चेहरे पर सोच के भाव उभरे फिर बोली।

"मैं जानती हूं कि रानी ताशा से जल्दी ही मुलाकात होगी। वो कभी भी देवराज चौहान के लिए यहां आ सकती है।"

"हां। वो यहां जरूर आएगी।" अर्जुन ने कहा।

"मेरा उसके पास जाना ठीक नहीं होगा।" नगीना बोली।

"तो हम चलें सर।" नीना कह उठी।

"हां। मैं रानी ताशा को देखने और उससे बात करने को उत्सुक हूं।"

▭ ▭

अर्जुन भारद्वाज और नीना कार पर वहां से निकले। अर्जुन ने नगीना से कार मांग ली थी। पहले से ही बाहर मौजूद वीरेंद्र त्यागी ने उन्हें कार में जाते देखा तो अपनी कार उनके पीछे लगा दी।

"सर, आप सच में दूसरे ग्रह वाली बात पर यकीन कर रहे हैं?" नीना कह उठी।

"बबूसा और धरा मुझे झूठ बोलते नहीं लगे। बातों के दौरान ये बात मैंने खास तौर से नोट की।"

"मतलब सदूर ग्रह पर आप यकीन कर रहे हैं।"

"पूरी तरह नहीं।" अर्जुन सोच भरे स्वर में बोला—"रानी ताशा से बात करने के बाद ही कुछ कह सकूंगा।"

"वहां पर विजय बेदी नाम का आदमी भी होगा, जिसने रात फोन पर नगीना और जगमोहन से बात की थी।"

"वो तो वहां अपने नोट भुनाने के लिए बैठा है। पांच लाख ले चुका है और पंद्रह लाख की बाट जोह रहा है।" अर्जुन ने होंठ सिकोड़कर कहा—"देखते हैं उसे भी।"

अर्जुन और नीना जुहु बीच पर स्थित होटल सी-व्यू पर्ल पहुंचे। पांच सितारा शानदार होटल था। अर्जुन ने पार्किंग में कार ले जा रोकी और बाहर निकलकर नीना के साथ होटल के प्रवेश दरवाजे की तरफ बढ़ गया। जहां लम्बा-सा दरबान खड़ा था। अन्य लोग भी आ-जा रहे थे। उनके पास पहुंचते ही दरबान ने शीशे का दरवाजा खोला तो वो भीतर प्रवेश कर गए। ए.सी. की ठंडक ने उनका स्वागत किया।

वे रिसैप्शन पर पहुंचे। रानी ताशा के बारे में पूछा।

पता चला कि वो तीसरी मंजिल पर 204 नम्बर कमरे में ठहरी है।

अर्जुन और नीना लिफ्ट की तरफ बढ़ गए। वहां चार लिफ्टें थीं। चारों इस समय व्यस्त थी तो दोनों लिफ्ट के आने का इंतजार करने लगे। तभी नीना कह उठी।

"सर, मैं मां से क्या कहूं?"

"मां से?"

"वो शादी के बारे में पूछ रही थी मेरे से। आप मेरी छोटी-सी समस्या हल नहीं कर सकते।"

"कर लो शादी।"

"किससे?"

"ये तुम जानो। मेरी नजर में तो सब शादीशुदा हैं, किसी कंवारे को मैं नहीं जानता।" अर्जुन ने मुस्कराकर मुंह फेर लिया।

"अपने आस-पास ध्यान से देखिए सर, शायद बिना शादी का लड़का दिख जाए।"

अर्जुन ने अपने आगे-पीछे देखा।

तभी त्यागी उनके पास आ खड़ा हुआ। अर्जुन से नजरें मिलीं तो त्यागी मुस्कराकर बोला।

"मैंने आपको शायद पहले भी देखा है।"

"सारी, मैंने नहीं देखा आपको।" अर्जुन कह उठा।

"मैं दिल्ली से हूं। पंडित तीरथराम रस्तोगी। चेहरा देखकर दिल का हाल बता देता हूं।" त्यागी बेहद मीठे स्वर में कह रहा था—"जैसे कि इन दिनों आप बेहद अजीब से मामले में उलझे हुए हैं। दूसरे ग्रह जैसा मामला।"

अर्जुन भारद्वाज की आंखें सिकुड़ीं।

"सर, सुना आपने?" नीना कह उठी।

"आपके आसपास एक खतरनाक माना जाने वाला इंसान भी है। कोई चोर या बहुत बड़ा डकैती मास्टर।"

"खूब।" अर्जुन मुस्कराया—"आप तो बहुत पहुंचे हुए पंडित लगते हैं।"

"पंडित जी मेरी शादी कब होगी?" नीना कह उठी।

परंतु त्यागी की निगाह, अर्जुन पर ही थी।

"इस वक्त हालात क्या हैं अर्जुन साहब।" त्यागी ने शांत स्वर में पूछा।

"आप तो मेरा नाम भी जानते हैं।"

"प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज का नाम जान लेना कोई बड़ी बात नहीं है।" त्यागी बोला—"देवराज चौहान के हालात क्या हैं?"

"वो ही हैं जो पहले थे।" अर्जुन ने त्यागी को भांपने की कोशिश की।

"रानी ताशा से देवराज चौहान की मुलाकात हुई?"

"नहीं।"

"आपने इस मामले में क्या तीर मारा?"

अर्जुन भारद्वाज ने त्यागी की आंखों में झांका।

नीना सतर्क हो चुकी थी।

लिफ्ट आई और भरकर चली गई।

"आप कौन हैं?"

"पंडित तीरथ राम रस्तोगी।" वीरेंद्र त्यागी मुस्कराकर बोला।

"दिलचस्प इंसान हैं आप।" अर्जुन भी मुस्कराया।

"आपको कई मजेदार बातें बता सकता हूं अगर आप मेरी बात का जवाब दें।"

"पूछो।"

"इस मामले में आपने क्या पाया? देवराज चौहान की क्या स्थिति है?"

"वो बुरी तरह फंसा पड़ा है।"

"वो कैसे?"

"पंडित जी पहले आप अपनी कोई मजेदार बात बताइए और अपना नाम भी...।"

"क्या रानी ताशा वाली बातें सच हैं?" त्यागी ने गम्भीर स्वर में पूछा।
"शायद।"
"हैरानी है कि ये बातें भी सच हो सकती हैं। दूसरे ग्रह के लोग...।"
"आप कौन हैं?"
"मैं देवराज चौहान का जानी दुश्मन हूं।" वीरेंद्र त्यागी मुस्करा पड़ा—"मैं देवराज चौहान को बर्बाद कर देना चाहता हूं और ऐसा करने के मुझे कई मौके मिले और उन मौकों का इस्तेमाल भी किया। परंतु पूरी तरह सफल नहीं हो सका। लेकिन देर-सबेर में सफल होकर रहूंगा।" कहने के साथ ही पलटा और त्यागी एक तरफ बढ़ गया।
अर्जुन तेजी से आगे बढ़ा और त्यागी की बांह पकड़ ली।
त्यागी ने ठिठककर अर्जुन को देखा।
"भाई साहब।" अर्जुन मीठे स्वर में बोला—"लेकिन इस मामले में आपकी क्या दिलचस्पी है?"
त्यागी ने बांह छुड़ाई, उसे झाड़ा और शांत स्वर में बोला।
"मैं नहीं चाहता कि मेरे जानी दुश्मन पर कोई और हाथ मार ले। वो मेरा माल है उसे मैं ही तबाह करूंगा।" कहने के साथ त्यागी फिर आगे बढ़ गया। परंतु अर्जुन जल्दी से आगे बढ़ा और साथ चलते त्यागी से कहा।
"अपना नाम तो बता दो।"
"त्यागी। वीरेंद्र त्यागी कहते हैं मुझे।" इसके साथ ही त्यागी आगे बढ़ता चला गया।
अर्जुन भारद्वाज गम्भीर निगाहों से उसे जाता देखता रहा।
तभी नीना पास आ पहुंची।
"क्या हुआ सर?" नीना ने पूछा।
"ये आदमी बहुत खतरनाक है।" अर्जुन भारद्वाज कह उठा।
"लेकिन ये है कौन?"
"वीरेंद्र त्यागी, देवराज चौहान का दुश्मन। लेकिन इसे रानी ताशा वाले मामले का कैसे पता चला?" अर्जुन के होंठ सिकुड़े।
"इसे हमारे बारे में भी पता है।" नीना बोली।
"कम-से-कम नगीना से तो बात बाहर नहीं जाने वाली। इसके बारे में देवराज चौहान ही बता सकता है कि वीरेंद्र त्यागी कौन है। आओ, हमें अपना काम करना है।" अर्जुन ने कहा और नीना के साथ लिफ्ट की तरफ बढ़ा।
"सर। डकैती मास्टर देवराज चौहान के मामले में हाथ डालकर आपने गलती तो नहीं कर दी।"

"अभी तक तो मुझे गलती का एहसास नहीं हुआ। बल्कि ये मामला बहुत ही दिलचस्प है मेरे लिए।"

"और ये वीरेंद्र त्यागी?"

"इससे हमें कोई मतलब नहीं। वो देवराज चौहान और उसका मामला है।" अर्जुन भारद्वाज बोला। लिफ्टों के पास पहुंचकर ठिठक गए। वहां तीन लोग और भी खड़े थे लिफ्ट आने के इंतजार में—"त्यागी के मामले में मुझे एक ही बात उलझन में डाल रही है कि उसे कैसे पता चला देवराज चौहान और रानी ताशा के मामले के बारे में।"

"इसका जवाब तो वो वीरेंद्र त्यागी ही दे सकता है।" नीना बोली।

"जो भी हो ऐसे मौके पर, खतरनाक इरादे के साथ त्यागी का सामने आना ठीक नहीं। वो देवराज चौहान का दुश्मन है तो बुरा ही सोचेगा। अच्छा तो करने से रहा। वो इन हालातों में भी कोई मौका ढूंढ़ेगा देवराज चौहान को तकलीफ देने का।"

तभी एक लिफ्ट नीचे आ पहुंची। लोग बाहर निकले तो अर्जुन, नीना के साथ तीन और लोग भी भीतर प्रवेश कर गए। दरवाजे बंद हुए और लिफ्ट ऊपर सरकने लगी। अर्जुन भारद्वाज के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी।

▭ ▭

अर्जुन ने 204 नम्बर कमरे के बंद दरवाजे के पास लगी कॉल बेल दबा दी।

"मुझे अजीब-सा लग रहा है कि इस कमरे में हम रानी ताशा से मिलने जा रहे हैं।" नीना कह उठी।

अर्जुन ने कुछ नहीं कहा।

तभी दरवाजा खोला गया। आधा दरवाजा और बीच में सोमाथ खड़ा दिखा।

अर्जुन और नीना ने उसे गहरी निगाहों से देखा।

"मुझे रानी ताशा से मिलना है।" कहने के साथ ही अर्जुन ने अपना कार्ड निकाला और आगे कर दिया।

"ये क्या है?" सोमाथ ने पूछा।

"मेरा कार्ड।"

"तो मैं इसका क्या करूं?" सोमाथ का स्वर शांत था।

अर्जुन के होंठ सिकुड़े और कार्ड वापस अपनी जेब में रखता कह उठा।

"इस पर मेरा नाम लिखा है और मेरे काम के बारे में लिखा है कि मैं क्या करता हूं। साथ में मेरी तस्वीर लगी है।"

"तुम्हारा नाम क्या है?" सोमाथ ने पूछा।

"अर्जुन भारद्वाज और मैं प्राइवेट जासूस हूं। रानी ताशा से बात करना चाहता हूं।"

दो पल चुप रहने के बाद सोमाथ ने कहा।

"यहीं रुको।" इसके साथ ही पीछे हटकर सोमाथ ने दरवाजा बंद कर दिया।

"ये विजय बेदी होगा, जिसने रात जगमोहन और नगीना को फोन किया था।" नीना ने कहा।

"अभी पता चल जाएगा।" अर्जुन गम्भीर दिख रहा था।

दो मिनट के इंतजार के बाद दरवाजा खुला। विजय बेदी ने दरवाजा खोला था।

"हैलो, तो तुम प्राइवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज हो। ये ही कहा था न तुमने। कहो, यहां क्यों आए?" बेदी कह उठा।

"तुम कौन हो?"

"मैं विजय बेदी हूं।"

"रानी ताशा से मिलना है।"

"क्यों?"

"मैं अपनी क्लाइंट नगीना के लिए काम कर रहा हूं। उसका कहना है कि रानी ताशा उसका पति छीनना चाहती है।"

"ऐसा तो कुछ नहीं है मेरे भाई।" बेदी प्यार से बोला—"रानी ताशा को क्या पड़ी है किसी का पति छीनने की। वो तो खुद ही ऐसी शय है कि दुनिया भर के पति उसके सामने गिर-गिर कर मरने लगे।"

अर्जुन भारद्वाज ने तीखी निगाहों से बेदी को देखा।

"वो मेरे से भी सुंदर है।" नीना ने मुंह बनाकर कहा।

"बुरा मत मानना, तुम फुलझड़ी हो तो वो डबल बम है।" बेदी ने छोटी-सी मुस्कान फेंकी।

"तो तुम विजय बेदी हो।" अर्जुन बोला—"रात तुमने ही जगमोहन और नगीना को फोन किया था।"

बेदी बुरी तरह चौंका।

"जगमोहन?" हां...लेकिन—ओह तो तुम देवराज चौहान की बात कर रहे हो?" बेदी के होंठों से निकला।

"अब सही समझे।"

"नगीना, देवराज चौहान की पत्नी है?"

अर्जुन ने सहमति से सिर हिलाया।

'तो ये चक्कर है।' बेदी बड़बड़ाया फिर बोला—"रानी ताशा से मिलकर क्या करोगे?"

"मुझे ये जानना है कि ये क्या चक्कर है। रानी ताशा किस फेर में है। वो खुद को दूसरे ग्रह से आई बताती...।"

"तुम किन पागलों के चक्कर में फंस गए।" बेदी ने गहरी सांस लेकर कहा।

"क्या मतलब?"

"देख भाई प्राइवेट जासूस।" विजय बेदी ने शांत स्वर में कहा—"ये पागलों वाला मामला है। यहां हर कोई अपने को दूसरे ग्रह से आया बताता है। पर तू इन बातों की परवाह क्यों करता है। मैं प्राइवेट जासूसों को जानता हूं वो सब नोट बनाने के चक्कर में लगे रहते हैं। इस काम की तूने मोटी फीस ली होगी। क्यों न लेगा, आखिर प्राइवेट जासूस जो ठहरा। इधर मुझे भी नोटों की जरूरत है। मेरे सिर में गोली फंसी है उसे ऑप्रेशन करवाकर निकालना है। ऑप्रेशन के बारह लाख लगते हैं, रानी ताशा से मैंने बीस लाख में सौदा तय किया है कि देवराज चौहान उसे ढूंढ़कर दूंगा। पांच लाख तो एडवांस में मार लिए। अब तेरे को तो पता ही होगा कि देवराज चौहान कहां पर है, मुझे उसका पता बता दे। मेरा तो काम बन जाएगा दोस्त।"

अर्जुन ने मुस्कराकर होंठ सिकोड़े।

"बता दे मेरे भाई...।"

"तेरे को क्या लगता है कि वो लोग सच में दूसरे ग्रह से आए हैं?" अर्जुन बोला।

"ऐसा भी कभी होता है।" बेदी ने झल्लाकर कहा—"किसी ग्रह पर कोई दुनिया नहीं बसती। सिर्फ पृथ्वी ग्रह पर हम लोग ही रहते हैं। मैंने तुम्हें पहले भी कहा है कि ये पागल लोग हैं, जो खुद को दूसरे ग्रह से आया बताते हैं।"

"मतलब कि ये यहीं के लोग हैं।"

"सौ प्रतिशत।" बेदी ने गर्दन हिलाई।

"किस चक्कर में है। देवराज चौहान के पीछे क्यों है? देवराज चौहान के बारे में ये क्यों कहते हैं कि पीछे एक जन्म में वो राजा देव था, रानी ताशा का पति था और अब उसे वापस...।"

"तू कैसा प्राइवेट जासूस है। तेरे को नहीं पता कि पागल लोग कुछ भी कह देते हैं। कहने दे। मैं तो बाकी का पंद्रह लाख लेने के फेर में हूं। तू मुझे देवराज चौहान का पता बता दे। मेरा कल्याण हो जाएगा। उधर तू देवराज चौहान की पत्नी से अपनी मोटी फीस झाड़। हम दोनों का काम हो जाएगा।"

"बहुत समझदार है तू।" अर्जुन मुस्कराया—"तू मेरा असिस्टेंट क्यों नहीं बन जाता?"

"मेरे सिर में फंसी गोली निकलवा दे, तेरा असिस्टेंट भी बन जाऊंगा।"

"तेरे को ट्रेनिंग की काफी जरूरत है।"
"क्यों?"
"क्योंकि तेरे को अभी तक ये नहीं पता कि देवराज चौहान कौन है।" अर्जुन भारद्वाज ने शांत स्वर में कहा।
"कौन है?"
"डकैती मास्टर देवराज चौहान है वो।"
विजय बेदी एकटक अर्जुन को देखने लगा।
"नाम सुना है?"
"डकैती मास्टर देवराज चौहान।" बेदी ने लम्बी सांस ली—"ये देवराज चौहान, वो वाला देवराज चौहान है?"
"वो ही वाला।"
बेदी से फौरन कुछ कहते नहीं बना।
"क्या हो गया तुझे?"
"व-वो तो बहुत खतरनाक है, सुना है ऐसा, तू मिला उससे?" बेदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।
"मिला।"
"वो खतरनाक है?"
"बहुत। सामने वाला बंदा उसे पसंद न आए तो उसकी गर्दन मरोड़ देता है। तेरे को तो वो पसंद करेगा ही नहीं।"
"क्यों, मैंने उसका क्या बिगाड़ा है?"
"तू दरवाजे पर अड़ा हुआ है, मुझे रानी ताशा से मिलने नहीं दे रहा।"
"पागल लोगों से मिलकर क्या करेगा। वो साले दूसरे ग्रह से कम, बात नहीं करते।" बेदी ने मुंह बनाया।
"कितने लोग हैं भीतर?"
"तीन। रानी ताशा, सोमारा और सोमाथ।"
"जिसने दरवाजा खोला था, वो सोमाथ था?"
"हां।"
"सोमारा कौन है?"
"वो भी अपने को दूसरे ग्रह की बताती...।"
"रास्ता दे। मुझे रानी ताशा से मिलना है।"
"यार तू मेरा खेल बिगाड़ देगा। मेरा पंद्रह लाख डूब गया तो...।"
अर्जुन भारद्वाज ने पलक झपकते ही कमर में फंसी रिवॉल्वर निकाली और विजय बेदी की छाती पर नाल लगा दी। बेदी घबरा उठा। उसकी जान अटक गई।

"ये—ये क्या?" बेदी के होंठों से हड़बड़ाया-सा स्वर निकला।
"सर।" नीना जल्दी से कह उठा—"पिछली बार गलती से ट्रेगर दब गया और बंदा मर गया था। इस बार भी कहीं गलती से ट्रेगर मत दबा देना। बेचारा मर गया तो सिर में फंसी गोली ऑप्रेशन करके कैसे निकलवाएगा।"
विजय बेदी का चेहरा फक्क पड़ गया।
"रि-रिवॉल्वर हटाओ।" बेदी सूखे स्वर में कह उठा।
"रास्ता दे।" अर्जुन ने सख्त स्वर में कहा—"कोई मेरी बात न माने तो कभी-कभी ट्रेगर दब जाता...।"
बेदी फौरन दरवाजे से पीछे हटता चला गया।
अर्जुन भारद्वाज ने रिवॉल्वर जेब में रखी और दरवाजा पूरा खोलकर भीतर प्रवेश कर गया। उसके पीछे-पीछे नीना अंदर आई और दरवाजा बंद कर दिया।
बेदी सकपकाया-सा एक तरफ खड़ा था।
अर्जुन ने पूरे कमरे में नजर मारी।
सोमाथ एक तरफ खड़ा था। रानी ताशा सोफे पर बैठी उसे देख रही थी। सोमारा का भी ये ही हाल था।
अर्जुन की घूमती नजर रानी ताशा पर जा टिकी, क्योंकि वो बेहद खूबसूरत थी। इसी से समझ गया कि वो रानी ताशा हो सकती है। तभी बेदी अपने पर काबू पाता कह उठा।
"रानी ताशा ये मिस्टर अर्जुन भारद्वाज है। प्राइवेट जासूस है और देवराज चौ...मतलब कि राजा देव की पत्नी नगीना ने इन्हें आपके पास भेजा है कि आपसे कुछ बातचीत कर सके।"
रानी ताशा के खूबसूरत चेहरे पर कुछ बल पड़े।
"राजा देव की इस जन्म की पत्नी ने भेजा है इन्हें—क्यों...? राजा देव को क्यों नहीं भेजा?"
अर्जुन आगे बढ़ा और रानी ताशा के सामने सोफे पर बैठता हुआ बोला।
"मैं ये जानने की चेष्टा कर रहा हूं कि ये सारा मामला क्या है?"
"कैसा मामला?" रानी ताशा बोली—"मैं अपने राजा देव को वापस ले जाने के लिए आई हूं।"
"कहां से?"
"सदूर ग्रह से। मैं वहां की रानी हूं और राजा देव वहां के राजा हैं।" रानी ताशा ने बेबाक स्वर में कहा।
"सदूर ग्रह कहां पर है?"
"ऊपर, आसमानों के पार।"

"कैसे आईं आप?"
"पोपा से।"
"पोपा?"
"अंतरिक्ष यान को ये लोग पोपा कहते हैं।" बेदी मुस्कराकर कह उठा—"क्यों फालतू के चक्कर में पड़ते हो।"
"तो पोपा इस वक्त कहां है?"
"बर्फीले पहाड़ों के पास, डोबू जाति के यहां पोपा खड़ा है।"
"डोबू जाति कौन-सी जगह पड़ती है इस पृथ्वी पर?"
"कौन-सी जगह?" रानी ताशा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे—"ये मैं नहीं बता सकती। क्योंकि मैं पृथ्वी के रास्तों को नहीं जानती।" उसकी निगाह बेदी पर गई—"तुम बताओ।"
"मैं? मैं क्या बताऊं, मैं तो कभी वहां गया नहीं।" बेदी ने जल्दी से कहा।
"अगर आपको अब पोपा के पास जाना हो तो कैसे जाएंगी?" अर्जुन ने पूछा।
"उसका इंतजाम है हमारे पास।" रानी ताशा ने एक तरफ रखे ट्रांसमिटर जैसे यंत्र की तरफ इशारा किया—"इस यंत्र से मैं किलोरा से सम्पर्क करूंगी और कहूंगी कि वो डोबू जाति के किसी व्यक्ति को यहां भेजे जो हमें पोपा तक ले आए तो डोबू जाति से कोई आ जाएगा, हमें राह दिखाने।"
"किलोरा कौन है?"
"मेरा सेवक, जो कि इस वक्त पोपा पर तैनात है और सब देखभाल करता है।" रानी ताशा ने कहा।
"बबूसा कौन है?"
"तुम बबूसा को कैसे जानते हो?" रानी ताशा के माथे पर बल पड़े।
"मैं उससे मिल चुका हूं।"
"बबूसा, राजा देव के पास है?" रानी ताशा ने पूछा।
"हां।"
"बबूसा ने हमसे विद्रोह करके बुरा किया। उसे इसकी सजा मिलेगी।" रानी ताशा सख्त स्वर में बोली।
"मुझे तो लगता है कि बबूसा देवराज चौहान का शुभचिंतक है।"
रानी ताशा के होंठ भिंच गए।
"बबूसा के बारे में आपने कुछ नहीं बताया?"
रानी ताशा ने बबूसा के बारे में बताया।
अर्जुन भारद्वाज चेहरे पर गम्भीरता समेटे रानी ताशा की बात सुनता रहा।

रानी ताशा चुप हुई तो अर्जुन सोमाथ और सोमारा को देखकर बोला।

"ये दोनों भी सदूर ग्रह से आए हैं।"

"हां।"

बबूसा ने अपने बारे में जो बताया था, वो ही रानी ताशा ने कहा। जबकि इस वक्त दोनों एक-दूसरे के खिलाफ काम कर रहे थे। इस बात ने अर्जुन को सोचने पर मजबूर किया कि इनकी बातें आपस में मिल रही हैं।

"लेकिन यहां पर कोई भी ये मानने को तैयार नहीं कि आप लोग किसी दूसरे ग्रह से आए हैं।" अर्जुन बोला।

"तो क्या हम झूठ बोल रहे हैं।" सोमारा कह उठी।

"हो सकता है आप लोग झूठ कह रहे हों।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा—"पृथ्वी ग्रह पर किसी ने कभी भी कहीं पर दुनिया के बसे होने की बात नहीं सुनी कभी। इसलिए कोई नहीं मानेगा ये बात।"

"बेशक कोई मत माने। हम राजा देव को लेकर चले जाएंगे यहां से।" सोमाथ बोला।

"लेकिन देवराज चौहान आप लोगों के साथ नहीं जाना चाहता। वो आपको नहीं जानता।"

"ये सच है कि इस वक्त राजा देव को अपना वो जन्म याद नहीं, परंतु मेरे से बात करते वो तड़प उठते हैं। मेरे पास आना चाहते हैं वो, लेकिन कोई उनसे फोन ले लेता है और बात पूरी नहीं होने देता।"

"ऐसा कुछ नहीं है। मैंने देवराज चौहान से बात की है, वो आपके पास नहीं आना चाहता।" अर्जुन ने कहा।

"सब ठीक हो जाएगा।" रानी ताशा की आंखों से आंसू बह निकले—"मैं जानती हूं अभी राजा देव को उस जन्म का या मेरे बारे में कुछ भी याद नहीं आ रहा, परंतु जल्दी ही उन्हें याद आ जाएगा। जब मेरा चेहरा देखेंगे तो राजा देव को याद आना शुरू हो जाएगा। महापंडित ने ऐसा ही कहा था। तभी तो चाहती हूं कि एक बार राजा देव मुझे अपने सामने देख लें, उसके बाद सब ठीक होता चला जाएगा। वो मुझे बहुत प्यार करते हैं। मेरे बिना रह नहीं सकते। इतना लम्बा वक्त उन्होंने मेरे बिना कैसे बिताया होगा। अपनी ताशा को बांहों में लेने को वो तड़प रहे होंगे।"

अर्जुन भारद्वाज गम्भीर निगाहों से रानी ताशा को देखते कह उठा।

"देवराज चौहान का वक्त बढ़िया कट रहा है क्योंकि उन्हें कुछ भी याद नहीं आपके बारे में।"

"पर मुझे तो सब याद है।" रानी ताशा गालों पर आ लुढ़के आंसुओं को साफ करती कह उठी—"मैं तो कभी नहीं भूली राजा देव को। एक

पल के लिए भी नहीं भूली। हर वक्त उनकी याद में तड़पती रही और उन्हें ढूंढ़कर सदूर ग्रह पर लाने के ख्वाब देखती रही। हर जन्म में मैंने राजा देव को ही याद किया।"

"हर जन्म में?"

"हां, हर...।"

"पर इंसान तो एक जन्म के बाद जब दूसरा जन्म पाता है तो पहले जन्म की बातें भूल जाता है।"

"ऐसा अवश्य होता है परंतु महापंडित की मेहरबानी से मैं कुछ नहीं भूली। महापंडित की कृपा जिस पर रहती है, उसे जरूरत की बातें याद आ जाती हैं। जन्म कराते समय महापंडित दिमाग में कुछ डाल देता है कि बीता जन्म याद रहे।"

"महापंडित जन्म कराता है सदूर ग्रह पर?"

"हां। जीना-मरना उसी के हाथों में है। बहुत बातें हैं जो महापंडित ही करता है। परंतु वो राजा देव का कहा मानता है। वो राजा देव की बहुत इज्जत करता है। राजा देव के लिए वो महत्त्वपूर्ण है।"

"तो क्या महापंडित नहीं मरता?"

"मरता है। उसका जीवन भी अन्य लोगों की तरह एक दिन खत्म हो जाता है, परंतु ऐसे वक्त के लिए वो अपना नया रूप पहले से ही तैयार करके रखता है। उसे पता रहता है कि उसका शरीर कब तक चलेगा और वक्त आने पर खुद को वो नए रूप में प्रवेश करा लेता है और पुराना शरीर छोड़ देता है। इस तरह वो सब कामों को संभाले रहता है।"

अर्जुन भारद्वाज के चेहरे पर सोचें दौड़ रही थीं।

नीना कमरे में खड़ी सब सुन रही थी।

"देवराज चौहान को ग्रह से बाहर क्यों फेंका गया?"

"वो मेरी भयानक भूल थी। सब मेरी गलती की वजह से ही हुआ।" रानी ताशा की आंखों से पुनः आंसू बह निकले—"तब मैं राजा देव के प्यार को ठीक से समझ नहीं पाई और भूल कर बैठी।"

"क्या हुआ था तब?" अर्जुन ने पूछा।

"ये मैं नहीं बता सकती।" रानी ताशा ने आंसू पोंछे—"बताने की जरूरत भी नहीं है।"

"आपकी बातों पर यकीन कर लेना आसान नहीं है रानी ताशा। आप खुद को दूसरे ग्रह से आया बताती हैं, ये ही बात अविश्वास पैदा करती है। अगर आपकी बातें जनता जान ले तो हो-हल्ला मच जाए। पुलिस को पता चल जाए तो फिर आपको भगवान ही बचाए। आप लोग मुसीबतों में घिर

जाएंगे।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं चाहता हूं कि अब आप सच बोलें। तभी मैं इस मामले को सुलझा सकता हूं नहीं तो पहेलियां खड़ी हो जाएंगी।"

"तो अब तक मैं तुमसे झूठ कह रही थी।" रानी ताशा ने नाराजगी भरे स्वर में कहा।

"आपके पास पहचान-पत्र तो होगा ही, वो दिखाइए।" एकाएक अर्जुन कह उठा।

"पहचान-पत्र? वो क्या होता है।"

विजय बेदी मुंह लटकाए कभी अर्जुन को देखता तो कभी रानी ताशा को।

"लायसैंस, वोटर पहचान पत्र, पासपोर्ट या ऐसा ही कुछ और...।"

रानी ताशा ने सोमाथ को देखकर कहा।

"ऐसा कुछ हमारे पास है सोमाथ?"

"नहीं। हम इन चीजों का इस्तेमाल नहीं करते। ये शायद इस ग्रह की चीजें हैं।" सोमाथ बोला।

"सुना तुमने।" रानी ताशा ने अर्जुन को देखा।

अर्जुन भारद्वाज ने विजय बेदी पर निगाह मारी।

बेदी ने तुरंत मुंह फेर लिया।

"सर।" नीना कह उठी—"ये शातिर लोग हैं, आसानी से सही रास्ते पर नहीं आने वाले।"

सोमारा के माथे पर बल पड़ गए।

"क्या कहा तुमने?" सोमारा तीखे स्वर में कह उठी—"तुम हमें बे-ईमान कह रही हो।"

"इसमें नाराज होने वाली बात नहीं।" अर्जुन भारद्वाज ने तुरंत गम्भीर स्वर में कहा—"आप लोग अजीब-सी बातें कर रहे हैं। खुद को दूसरे ग्रह से आया बता रहे हैं, जो कि झूठ है। रानी ताशा और राजा देव वाली आपकी बात भी मानने वाला कोई नहीं। दूसरे ग्रह से आए लोग आप जैसे नहीं होते। आप जैसे लोग तो हमारे यहां हैं...।"

"हम तुम लोगों जैसे क्यों नहीं हो सकते?" रानी ताशा कह उठी—"जैसे तुम हो, वैसे हम हैं।"

"ये ड्रामा छोड़िए मैडम।" अर्जुन भारद्वाज का स्वर सख्त हो गया—"सीधी तरह बताइए कि बात क्या है। आप क्यों देवराज चौहान के पीछे पड़ी हैं। क्या आप उसे पहले से जानती हैं या...।"

"मैंने बताया तो मैं राजा देव को पहले से जानती हूं।" रानी ताशा उठ

खड़ी हुई। चेहरे पर तनाव आ गया—"वो सदूर ग्रह के मालिक और मेरे राजा पति थे। वो मेरे बिना नहीं रह सकते...।"

"आपकी ये बात मानने के काबिल नहीं है।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा—"देवराज चौहान की पत्नी नगीना ने मुझे ये ही जानने भेजा है कि इस मामले की हकीकत क्या है और तुम लोग कौन हो। परंतु तुम मेरे सामने दूसरे ग्रह की बातें कर रही हो। पोपा और महापंडित की बातें कर रही हो। राजा देव की बातें कर रही हो। इसके अलावा तुमने कोई बात नहीं की। तुम चालाकी से अपनी बातों में मुझे उलझा रही हो।"

रानी ताशा ने सख्त निगाहों से अर्जुन भारद्वाज को देखा।

अर्जुन भारद्वाज भी उठ खड़ा हुआ।

"तुम जानते हो कि इस वक्त राजा देव कहां पर मौजूद हैं।" रानी ताशा ने स्पष्ट स्वर में पूछा।

"बेशक जानता हूं। मैं अभी वहीं से आ रहा हूं।" अर्जुन बोला।

"मुझे राजा देव का पता बताओ।"

"पहले तुम मुझे ये बताओ कि तुम क्या खेल खेल रही हो।" अर्जुन आंखें सिकोड़कर कह उठा।

रानी ताशा ने सोमाथ को देखकर सपाट स्वर में कहा।

"ये राजा देव का पता जानता है सोमाथ। इससे पता पूछो।"

सोमाथ तुरंत अर्जुन भारद्वाज की तरफ बढ़ गया।

अर्जुन सतर्क हो उठा। उसने फौरन रिवॉल्वर निकालकर सोमाथ की तरफ कर दी।

"वहीं रुक जाओ।" अर्जुन भारद्वाज गुर्रा उठा।

"सर।" नीना जल्दी-से कह उठी—"गोली मत चला देना।"

परंतु सोमाथ नहीं रुका।

हालातों को बदलते देखकर विजय बेदी घबरा उठा।

"रिवॉल्वर जेब में रख लो।" बेदी ने तेज स्वर में कहा—"गोली चल जाएगी।"

तब तक सोमाथ अर्जुन भारद्वाज के पास पहुंच चुका था। गोली चलाने का अर्जुन का इरादा वैसे भी नहीं था। परंतु सोमाथ के सिर पर आ जाने की वजह से वो उलझन में घिर गया। सोमाथ ने उसके हाथ में दबी रिवॉल्वर को पकड़कर दूर फेंका और अर्जुन के सिर के बालों को पकड़ने लगा।

तभी अर्जुन ने अपना घुटना सोमाथ की टांगों के बीच दे मारा।

लेकिन सोमाथ पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

अर्जुन भारद्वाज छिटककर चार कदम पीछे हट गया और सोमाथ को

देखने लगा। सोमाथ के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान उभरी। वो पुनः अर्जुन की तरफ बढ़ा। उसी पल अर्जुन भारद्वाज उछला और तेजी से सोमाथ से आ टकराया। अर्जुन को लगा जैसे किसी लोहे के पेड़ से टकरा गया हो। उसका पूरा शरीर झनझना उठा। सोमाथ ने उसे बांहों के घेरे के बीच बांध लिया।

अर्जुन छटपटाया।

"इससे पूछो सोमाथ कि राजा देव का पता क्या है।" रानी ताशा सख्त स्वर में कह उठी।

"राजा देव का पता क्या है?" सोमाथ ने रानी ताशा के शब्द दोहरा दिए।

"ये बात तुम कभी नहीं जान सकते।" अर्जुन भारद्वाज दांत भींचे कह उठा।

सोमाथ ने बांहों का घेरा तंग कर लिया।

अर्जुन तड़पा। होंठों से कराह निकली।

"बोलो।" सोमाथ शांत स्वर में बोला।

"नहीं। कभी नहीं...।"

सोमाथ ने बांहों का घेरा और तंग कर लिया।

अर्जुन चीख उठा।

सोमाथ की बांहों ने उसे चिमटे की तरह भींच लिया था।

"बता दो, नहीं तो मैं तुम्हें मार दूंगा।" सोमाथ ने कहा।

"छोड़ दे कमीने।" नीना कह उठी—"अभी तो इन्होंने शादी भी नहीं की। बात चलाने की कोशिश कर रही हूं।"

सोमाथ ने नीना को देखा और बोला।

"तुम भी तो जानती हो राजा देव का पता।"

नीना चौंकी।

"भाग जा नीना। भाग...।" अर्जुन चीखा।

"आपको छोड़कर?" नीना कसमसा-सी उठी।

"मैंने कहा भाग...।" अर्जुन ने गुस्से से कहा।

नीना तुरंत दरवाजे की तरफ भागी।

"पकड़ो उसे।" रानी ताशा ने विजय बेदी से तेज स्वर में कहा।

"मैं?" बेदी के होंठों से निकला और अगले ही पल नीना की तरफ दौड़ा।

तब नीना दरवाजा खोलने जा रही थी।

"रुक जाओ।" बेदी ने धीमे स्वर में कहा—"मैंने तो पहले ही कहा था कि टांग मत फंसाओ। ये पागल लोग हैं पर तुम लोगों ने मेरी बात नहीं मानी। पंगा लिया है तो भुगतना भी पड़ेगा।"

नीना ने दरवाजा खोला कि बेदी ने फौरन बंद करके कहा।

"मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा। रानी ताशा का ऑर्डर तो मानना ही पड़ेगा। उसने मुझे पंद्रह लाख देने हैं।"

नीना ने कठोर निगाहों से विजय बेदी को देखा।

"माफ करना।" बेदी ने परेशान स्वर में कहा—"पर मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा। नहीं तो पंद्रह लाख हाथ से निकल जाएंगे।" इसके साथ ही बेदी ने नीना की कलाई पकड़ी और खींचकर उसे कमरे के भीतर ले आया।

तभी अर्जुन की चीख सुनाई दी।

सोमाथ ने अपनी बांहें और तंग कर ली थीं।

"अब तू मर जाएगा।" सोमाथ बोला—"राजा देव का पता बता दे तो बच जाएगा।"

अर्जुन भारद्वाज सोमाथ जैसे लोहे के इंसान की बांहों में फड़फड़ाकर रह गया।

"नहीं बताएगा?" सोमाथ का स्वर सामान्य था।

"नहीं—मैं नहीं...।" अर्जुन ने कहना चाहा।

तभी सोमाथ की बांहें खुलीं और हाथ अर्जुन भारद्वाज के सिर पर पड़ा।

अर्जुन वहीं का वहीं कटे पेड़ की तरह ढेर हो गया।

"सर...।" नीना चीखी और बांह छुड़ाकर अर्जुन की तरफ दौड़ी।

बेदी दो पलों के लिए हक्का-बक्का रह गया फिर बोला।

"ये तुमने क्या किया?" मार दिया इसे?"

सोमाथ रानी ताशा को देखकर बोला।

"ये राजा देव का पता नहीं बता रहा। इसे मार दूं रानी ताशा?"

"पागल हो गए हो।" विजय बेदी भड़क उठा—"अगर तुम लोगों ने खून-खराबा किया तो मैं तुम लोगों के लिए देवराज चौहान को तलाश नहीं करूंगा। किसी की जान ली तो मैं यहां से गया।"

"ये तुम्हारा क्या लगता है?" रानी ताशा ने कहा।

"कुछ भी नहीं। पर इसे मार दिया जाए, ये मुझे पसंद नहीं। पुलिस किसी को भी नहीं छोड़ेगी। मैं भी फंस जाऊंगा। तुम लोग इसकी जान नहीं लोगे।" बेदी पूरी तरह गुस्से में आ चुका था—"इन्हें जाने दो। देर-सबेर में मैं तुम्हारे राजा देव को ढूंढ़ लूंगा। इस तरह किसी की जान लेने का कोई मतलब नहीं बनता।"

"इस लड़की से राजा देव का पता पूछो सोमाथ।" रानी ताशा कह उठी।

सोमाथ ने नीना को देखा, जो कि बेहोश अर्जुन भारद्वाज के पास बैठी थी।

नीना का चेहरा फक्क पड़ गया, वो तुरंत कह उठी।

"मैं-मैं—मुझे क्या पता। मैं तो होटल के कमरे में सो रही थी। ये आया और मुझे साथ चलने को कहने लगा। नौकरी करनी है तो नखरे कैसे। मैं साथ चल पड़ी और यहां आकर फंस गई। मुझे नहीं मालूम राजा देव या देवराज चौहान जो भी है, कहां रहता है। कसम से मुझे तो कुछ भी नहीं पता है कि ये सब क्या हो रहा है।"

सोमाथ तब तक नीना की तरफ बढ़ चुका था।

"मैं नहीं जानती कि...।"

तब तक सोमाथ ने नीना की बांह पकड़ी और उसे खड़ा कर दिया।

"इसे कुछ मत कहो।" विजय बेदी परेशानी भरे स्वर में कह उठा—"ये सच में देवराज चौहान के बारे में कुछ नहीं जानती। मेरे होते तुम लोग चिंता क्यों करते हो। मैं देवराज चौहान का पता पाने में लगा हूं न। मैं ढूंढ़ लूंगा उसे।"

"ठहरो सोमाथ।" रानी ताशा कह उठी।

सोमाथ, नीना की बांह पकड़े रुक गया।

रानी ताशा ने बेदी से कहा।

"तुम जल्दी से राजा देव को ढूंढ़ दोगे?"

"कोशिश कर तो रहा हूं। मुझे कुछ वक्त दो।" बेदी ने तेज स्वर में कहा।

रानी ताशा की आंखों से एकाएक आंसू बह निकले।

"मैं अब जल्दी-से राजा देव को साथ लेकर सदूर ग्रह पर वापस चले जाना चाहती हूं। मैं अपने प्यारे देव के बिना नहीं रह सकती। वो मुझे सबसे प्यारे हैं। मुझे उनके पास ले चलो।" रानी ताशा सुबक उठी।

"हौसला रखो। मैं देवराज चौहान को जल्दी ही ढूंढ़ लूंगा।" बेदी ने गम्भीर स्वर में कहा।

रानी ताशा ने गीली आंखों से नीना की तरफ देखकर कहा।

"तो इसका क्या करें?"

"इन्हें जाने दो यहां से रानी ताशा।" बेदी ने संभले स्वर में कहा—"इनका यहां कोई काम नहीं।"

"सोमाथ, जाने दो इनको।" रानी ताशा ने भीगे स्वर में कहा और धप्प से सोफे पर बैठ गई।

सोमाथ ने नीना की बांह छोड़ दी।

नीना ने व्याकुल भाव से बेहोश अर्जुन भारद्वाज को देखा फिर बेदी से कह उठी।

"ये तो बेहोश है।"

"मैं इसे होश में लाता हूं।" कहने के साथ ही बेदी बाथरूम से पानी का मग लाया और अर्जुन पर छींटे डालने लगा।

बता देना चाहता हूं।" अर्जुन ने पूर्ववत स्वर में कहा—"जैसे कि बबूसा से बात करके मुझे महसूस हुआ कि वो सच्चा हो सकता है उसी तरह रानी ताशा से बात करके मुझे लगा कि वो सच्ची हो सकती है। मेरे खयाल में वो जो कह रही है, वो सही हो सकता है।"

"ये आप कैसे कह सकते हैं?" नगीना व्याकुल हो उठी।

"क्योंकि उन्होंने जो कहा, उनके चेहरे के हाव-भाव बताते हैं कि वो सच कह रहे हैं।"

"आपका मतलब कि वो दूसरे ग्रह से आए हैं।"

"हो सकता है।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा—"अगर उन्होंने झूठ कहा है तो समझिए मैं उनके झूठ को पकड़ नहीं पाया। परंतु मेरा काम ही लोगों के झूठ पकड़ना है, ऐसे में मैं कह सकता हूं कि मुझे वो सच्ची लगी।"

"आपका मतलब कि राजा देव वाली बात सही है।" नगीना के होंठों से निकला।

"बात सच भी हो सकती है।"

"रानी ताशा की बातों की सच्चाई पर आपको पूरा भरोसा है मिस्टर अर्जुन?"

"पूरा तो नहीं, परंतु उनकी सच्चाई पर बहुत ज्यादा भरोसा है। बाकी तो आगे के हालात देखने पर पता चलेगा।"

अर्जुन की निगाह नगीना पर ही थी। नगीना भी उसे देख रही थी।

"रानी ताशा का जो हाल मैंने देखा, उसमें कहीं भी मुझे झूठ नहीं लगा।"

"परंतु इस बात को आप कैसे कह सकते हैं कि वो दूसरे ग्रह से आए हैं।" नगीना बोली।

"उनकी बातों से। वो अपने अंतरिक्ष यान के बारे में भी बताते हैं कि वो कहां खड़ा है। बबूसा की कही बातें और रानी ताशा की बातें आपस में मिलती हैं जबकि दोनों एक-दूसरे के खिलाफ काम कर रहे हैं।"

"कहीं बबूसा और रानी ताशा मिलकर किसी चाल को अंजाम दे रहे हों?" नगीना बोली।

"मुझे ऐसा नहीं लगता। बाकी आने वाला वक्त बताएगा।"

"सोमाथ तो बहुत ताकतवर है।" नीना कह उठी—"मिनटों में 'सर' का बुरा हाल कर दिया।"

"कौन सोमाथ?"

"रानी ताशा के साथ था वो।" नीना ने कहा।

"वो लोहे की तरह ताकत रखता है।" अर्जुन भारद्वाज ने छोटी-सी मुस्कान के साथ कहा—"उसका मुकाबला कर पाना सम्भव नहीं। वो मुझसे

देवराज चौहान का पता पूछ रहे थे, इसी बात पर झड़प हो गई थी।"

"वो तो मुझे भी पकड़ लेना चाहते थे परंतु भला हो बेदी भैया का कि जिन्होंने बात संभाल ली और हमें वहां से निकाल दिया। तब तो 'सर' बेहोश पड़े थे। बहुत मुश्किल से बचे हैं।"

"बेदी भैया कौन?" नगीना ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"विजय बेदी।" अर्जुन ने कहा—"जिससे फोन पर आपने बातें की थीं।"

"ओह, वो...।"

"हालांकि विजय बेदी को रानी ताशा पर यकीन नहीं है कि वो दूसरे ग्रह से आए हैं। वो गलत भी नहीं है, इस बात पर आसानी से यकीन भी नहीं किया जा सकता। बेदी तो उन लोगों से इसलिए जुड़ा हुआ है कि सिर में फंसी गोली के ऑप्रेशन के लिए उसे पैसा चाहिए। उनसे पैसा लेने की फिराक में है और उन्हें कहता है कि वो उनके लिए देवराज चौहान को जल्दी ही ढूंढ़ लेगा।" अर्जुन भारद्वाज ने सोच भरे स्वर में कहा।

नगीना व्याकुल-सी खड़ी दोनों को देखती रही।

"अब मेरे लिए क्या काम है। इस केस को यहीं छोड़ दूं या आगे बढ़ाऊं?" अर्जुन बोला।

"आप इस केस पर ही रहिए। मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा कि ये क्या हो रहा है।" नगीना परेशान थी।

"फिर मुझे रानी ताशा पर नजर रखनी होगी कि वो किससे मिलती है या उससे मिलने कौन आता है।" अर्जुन ने कहा—"कोई गड़बड़ होगी तो मुझे पता चल जाएगा। रानी ताशा हर वक्त मेरी नजर में रहेगी।"

"और मैं क्या करूं?" नगीना के होंठों से निकला।

"आप देवराज चौहान के पास रहिए और आने वाले वक्त का इंतजार कीजिए।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा—"एक बात मैं आपसे जरूर कहना चाहूंगा नगीना जी, अगर रानी ताशा की बातें सच हैं, जो कि मुझे सच लगती हैं, तो आने वाला वक्त बहुत ही खतरनाक मोड़ ले सकता है क्योंकि रानी ताशा जी-जान से राजा देव को चाहती है और हर हाल में उसे वापस अपने ग्रह पर ले जाना चाहती है। वो खतरनाक और दृढ़ निश्चय वाली औरत लगी मुझे। देवराज चौहान के मामले में उससे किसी भी तरह की छूट की आशा मत रखना। वो कभी भी, कुछ भी कर सकती है और देर-सबेर में वो देवराज चौहान का पता लगा ही लेगी कि वो यहां रहता है और यहां तक पहुंच जाएगी।"

नगीना के होंठ भिंचने लगे।

"यहां आकर वो क्या करेगी?"

"मेरे खयाल में तो देवराज चौहान को अपने साथ ले जाना चाहेगी।"

"हम उसे ऐसा नहीं करने देंगे।" नगीना के चेहरे पर सख्ती आने लगी।

"बेशक। आप लोग उसे रोकेंगे, परंतु वो भी तो किसी दम के साथ ही आई है कि राजा देव को वापस ले जाना है। उसे कमजोर समझने की भूल मत करें। अभी तो मैंने उसके एक ही आदमी सोमाथ को देखा है जो लोहे से भी मजबूत है।" अर्जुन ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसके पास और भी इंतजाम होंगे। मेरे खयाल में तो आप लोगों को आने वाले खतरे के प्रति सतर्क हो जाना चाहिए।"

नगीना के होंठ पूरी तरह भिंच चुके थे।

"बेहतर होगा कि इस बारे में आप लोग अपना मजबूत इंतजाम करके रखें। रानी ताशा कभी भी देवराज चौहान के लिए यहां पहुंच सकती है। मैंने महसूस किया है कि वो अपनी सोच से पीछे हटने वाली औरत नहीं है।" अर्जुन भारद्वाज ने कहा।

"आपका मतलब कि अब आने वाले वक्त में कुछ भी हो सकता है।" नगीना गुर्रा उठी।

"हां। बस रानी ताशा के यहां तक पहुंचने की देर है।" अर्जुन बेहद गम्भीर था।

"देवराज चौहान मेरा पति है मिस्टर अर्जुन भारद्वाज।" नगीना का लहजा खतरनाक हो उठा—"और उसे मेरे से कोई नहीं छीन सकता। रानी ताशा भी नहीं। ये बात जुदा है कि अगर देवराज चौहान, ताशा के साथ जाना चाहे तो मुझे एतराज नहीं होगा। वरना रानी ताशा के लिए अपनी मनमानी करना आसान नहीं होगा।"

"आप क्या सोच रही हैं?" अर्जुन के होंठों से निकला।

"नीना।" नगीना बोली—"तुम कॉफी बनाकर भीतर सबको दे दो।" कहकर नगीना जाने लगी।

"परंतु आप कहां जा रही हैं?" अर्जुन ने नगीना को रोकना चाहा।

"कुछ देर में लौट आऊंगी।" नगीना का स्वर बेहद सख्त था।

"रानी ताशा के पास जा रही हैं।"

"मुझे क्या पड़ी है उसके पास जाने की।" नगीना ने कठोर स्वर में कहा—"मैं किसी और के पास जा रही हूं, मुझे भी अपनी तैयारी करनी है कि रानी ताशा अपने मकसद को जबर्दस्ती कामयाब न कर सके।"

"मैं आपके साथ चलता...।"

"कोई जरूरत नहीं मिस्टर अर्जुन।"

"आप इस वक्त गुस्से में हैं। मैं आपके साथ चलता हूं। जिससे मिलना है मिलिए। मैं बाहर खड़ा रहूंगा।"

"मैं पूरी तरह अपने होश में हूं आप मेरी चिंता न करें। इस मामले में आप जो ठीक समझते हैं वो कीजिए। ताशा पर नजर रखना बेहतर है तो ऐसा ही कीजिए। मैं अपने काम करती हूं क्योंकि रानी ताशा अपनी सोच से पीछे हटने वाली नहीं तो मैं उसे देवराज चौहान को ले जाने न दूंगी।" दांत भींचे कहती नगीना वहां से चली गई।

अर्जुन भारद्वाज होंठ सिकोड़े नगीना को ही देखता रहा।

"सर।" नीना कह उठी—"गड़बड़ हो रहा है मामला।"

"होगा ही।" अर्जुन भारद्वाज ने गम्भीर स्वर में कहा—"नगीना कैसे अपने पति को, ताशा को ले जाने देगी।"

"झगड़ा होगा?"

"तगड़ा।" अर्जुन बोला—"सोमाथ की ताकत देखकर ही मैं चिंता में पड़ गया हूं। अगर रानी ताशा के पास ऐसे और भी इंतजाम हुए तो आने वाले वक्त में कुछ भी हो सकता है।"

"मैं कुछ कहूं सर?"

"क्या?"

"निकल चलते हैं। ऐसा न हो कि इस मामले में पड़कर हमारी जानें चली जाएं।"

अर्जुन ने नीना को घूरा।

"क-क्या हुआ सर?"

"पहले कभी मैं कोई केस छोड़कर पीछे हटा हूं?" अर्जुन भारद्वाज ने तीखे स्वर में कहा।

"वो बात नहीं सर। ये मामला जरा ज्यादा खतरनाक है। दूसरे ग्रह के लोग, बीते जन्म के रिश्ते, सोमाथ जैसा खतरनाक इंसान। रानी ताशा जैसी अपने मकसद को हासिल करने वाली आधी पागल औरत और इधर डकैती मास्टर देवराज चौहान और वो बबूसा भी डटा बैठा है कि रानी ताशा को सफल नहीं होने देगा। कभी भी बहुत कुछ हो सकता है और हमारी तो गिनती भी नहीं होगी कहीं, अगर हमें कुछ हो गया तो।"

"मैं इस मामले को पूरा देखूंगा कि आगे क्या होता है।"

"पूरा देखेंगे?" नीना का मुंह लटक गया।

"तुम दिल्ली वापस जा सकती हो।"

"मैं नहीं जा सकती। वापस चली गई तो मां मेरा बुरा हाल कर देगी।"

"मां?" अर्जुन ने आंखें सिकोड़कर नीना को देखा।

"वो ही सर, शादी वाली बात। आप ही कहिए कि मां को शादी वाली बात का क्या जवाब दूं। हां कह दूं?"

"कॉफी बनाकर भीतर दो। वो इंतजार कर रहे हैं।" अर्जुन ने मुस्कराकर कहा।

"सर, मैंने आज तक की सारी तनख्वाहें संभाल रखी हैं। आपके एक इशारे पर वापस कर दूंगी।"

"संभाले रखो। तुम्हारे बच्चों के काम आएगा वो पैसा।"

"मेरे बच्चों के—पर सर उन बच्चों का बाप भी तो कोई होगा। ये बता दीजिए वो कौन होगा।"

अर्जुन भारद्वाज पलटा और ड्राइंग रूम की तरफ बढ़ गया।

"कभी तो मेरा हाथ थामोगे ही अर्जुन साहब।" नीना गहरी सांस लेकर बड़बड़ाई—'फिर गला पकड़कर, सारा हिसाब लूंगी। शादी के बाद देखूंगी कि आप नखरे कैसे लगाते हैं। देखती हूं ऐसा कब तक चलता है। कभी तो नीना के बन ही जाओगे।"

▭ ▭

अर्जुन भारद्वाज और नीना जा चुके थे। नीना ने कॉफी बनाकर देवराज चौहान और अन्यों को दी थी और अर्जुन ने देवराज चौहान से कह दिया था कि रानी ताशा की बातों में हकीकत हो सकती है। बबूसा नहाने चला गया था। धरा, देवराज चौहान और जगमोहन के पास बैठी कॉफी पी रही थी। नगीना बंगले से जा चुकी थी। देवराज चौहान से वो इतना ही कह कर गई थी कि वो अभी लौट आएगी।

कॉफी समाप्त हो गई तो धरा खाली प्याले किचन में रख आई।

तभी देवराज चौहान का फोन बजने लगा।

जगमोहन ने उसी पल फोन उठाकर नम्बर देखा और कह उठा।

"रानी ताशा का फोन है।" देवराज चौहान को देखा।

"मुझे दो।" देवराज चौहान बोला।

"रहने दो।" धरा बोली—"तुम फिर होश गंवा दोगे।"

"मुझे दो।" देवराज चौहान ने हाथ बढ़ाकर जगमोहन से फोन लिया और बात की—"हैलो।"

"मेरे राजा देव।" रानी ताशा का भर्राया स्वर कानों में पड़ा—"आप कहां हैं?"

"ताशा?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

जगमोहन सतर्क-सा पास बैठा था।

"आपकी ताशा। आपकी प्यारी।" उधर से रानी ताशा रो पड़ी—"आप

मुझसे मिलते क्यों नहीं। मेरे पास क्यों नहीं आ जाते। आपको देखने के लिए मैं कितना तड़प रही हूं। क्या आपका दिल नहीं करता मुझे बांहों में लेने को। वैसा ही प्यार करने को जैसा आप पहले करते थे। इतना भूल गए अपनी ताशा को कि...।"

"ता-शा।" एकाएक देवराज चौहान के चेहरे पर बेचैनी की छाप उभरने लगी—"ताशा—तुम...।"

"हां-हां कहो मेरे देव...।"

"पता नहीं।" देवराज चौहान के होंठों से निकला—"मैंने तुम्हारी आवाज सुन रखी है। कहीं सुना है तुम्हें—मैं...।"

"मैं तुम्हारी ताशा ही हूं देव। तुम घंटों बैठकर मेरे से बातें किया करते थे। मेरा हाथ अपने हाथों में थामे रखते थे। वो सदूर ग्रह के सुहावने दिन। तुम मुझे कितना प्यार करते थे। मेरे चेहरे पर मुस्कान देखने के लिए, मुझे हमेशा खुश रखते थे। मुझे बांहों में भर लेते थे और मैं किसी तरह आजाद होकर दौड़ जाया करती थी। तुम मेरे पीछे दौड़ते थे और फिर मुझे बांहों में भर लेते थे। मैं तुम्हारा प्यार हूं देव और तुम मेरी जान हो। तुम मेरे से अब और जुदा नहीं रह सकते। मैं तुम्हें वापस ले जाने आई हूं देव, हम फिर अपनी प्यार की दुनिया बसाएंगे। लेकिन इस बार तुम्हारी ताशा तुम्हें, तुमसे भी ज्यादा प्यार देगी। इतना प्यार कि तुम कभी मेरे से दूर नहीं जा पाओगे देव।"

देवराज चौहान के चेहरे के भाव तेजी से बदलते जा रहे थे।

जगमोहन और भी चौकस हो चुका था।

"ताशा।" देवराज चौहान का स्वर कांपा—"ताशा तुम—तुम...।"

"आ जाओ न देव।" रानी ताशा का भर्राया स्वर कानों में पुनः पड़ा—"मैं मर जाऊंगी तुम्हारे बिना...।"

"नहीं ताशा नहीं—तुम नहीं मर सकतीं।"

"मेरे पास आ जाओ। होटल सी-व्यू पर्ल में मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रही हूं। नहीं तो मुझे अपना पता बता दो मेरे प्यारे देव, तुम्हारे बिना अब चैन नहीं मिलता। मैं पागल हो...।"

देवराज चौहान उछलकर खड़ा हो गया। चेहरे पर अजीब से भाव और चमक छा चुकी थी।

"मैं आ रहा हूं ताशा। मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं।"

"जल्दी आ जाओ देव। मैं तुम्हें बहुत प्यार करूंगी, कितना भाग्य वाला दिन है कि तुम्हें देखूंगी तीन जन्मों के बाद...।"

देवराज चौहान ने फोन फेंका और दरवाजे की तरफ लपका।

जगमोहन तुरंत सामने आ गया।

"तुम कहीं नहीं जाओगे।" जगमोहन दृढ़ स्वर में कह उठा।

"ताशा—वो ताशा मुझे बुला रही...।"

"होश में आओ तुम कहीं नहीं जाओगे।" जगमोहन गुस्से से बोला।

देवराज चौहान के चेहरे पर पागलों जैसे भाव उभरे हुए थे। एकाएक उसके चेहरे पर गुस्सा उभरा और पूरी ताकत से घूंसा जगमोहन के चेहरे पर मारा। जगमोहन के होंठों से कराह निकली और उसका माथा पीछे, दरवाजे से जा टकराया तो तीव्र कराह के साथ नीचे को जा लुढ़का। माथे पर खून उभरता दिखा। वो बेहोश हो चुका था।

"ये तुमने क्या किया?" घबराई सी धरा कह उठी।

"ताशा-ऽ-ऽ-ऽ।" देवराज चौहान चीखता हुआ कमरे से बाहर निकला और मुख्य दरवाजे की तरफ दौड़ता चला गया—"मैं आ रहा हूं ताशा। तुम्हारे पास आ रहा हूं। तुम्हारा देव आ रहा है ताशा।"

"रुक जाओ।" पीछे से धरा चीखी।

परंतु देखते ही देखते देवराज चौहान दौड़ता-चिल्लाता बाहर निकलता चला गया।

"बबूसा...।" धरा गला फाड़कर चीखती, बाथरूम की तरफ दौड़ी जहां बबूसा नहा रहा था।

▭ ▭

राघव, धर्मा और एक्स्ट्रा।

R.D.X.

इन तीनों की कार सड़क पर ट्रैफिक के साथ दौड़ रही थी। एक्स्ट्रा कार ड्राइव कर रहा था और धर्मा बगल में बैठा था। राघव पीछे की सीट पर अधलेटा-सा पड़ा था।

"ओम तलपड़े को फिल्म बनाने के वास्ते हमने पैंतीस करोड़ दिया। अब साला पच्चीस करोड़ और मांगता है। कहता है बजट बढ़ गया फिल्म का।" धर्मा ने कहा—"साले का सिर तोड़ देना चाहिए। पहले कहता था पैंतीस करोड़ में फिल्म बन जाएगी और साठ करोड़ हमें लौटा देगा। पहले ही फिल्म लेट शुरू हुई। हिरोइन की डेट नहीं मिल रही...।"

"तो दिक्कत क्या है।" पीछे से राघव कह उठा—"पच्चीस करोड़ और दे देते हैं। बीस का तो इंतजाम बाबू भाई से होने जा रहा है। बाकी पांच हमारे पास पड़ा ही है।"

"बाबू भाई अपनी बेटी को ढूंढ़ने का हमें पचास करोड़ दे रहा है।" एक्स्ट्रा ने कहा—"लेकिन उसकी बेटी हमें मिल नहीं रही।"

"मिल जाएगी।" राघव ने पुनः कहा—"हमारे मुखबिर बाबू भाई की लड़की की खबर पाने को दौड़े फिर रहे हैं। सुरेश कांवड़े ने सुबह कहा था कि उसके एक आशिक का पता चला है, वो भी घर से गायब है। तो इस बात को बल मिलता है कि दोनों एक साथ ही भागे होंगे। हमारे मुखबिर जल्दी ही उनकी कोई पक्की खबर पा लेंगे।"

"तलपड़े से अब सख्ती से बात करनी होगी कि इस पच्चीस करोड़ के बाद और पैसा उसने मांगा तो साले का सिर तोड़ देंगे।" धर्मा ने कहा—"पक्की तरह समझा देना है कमीने को।"

"मैं समझा दूंगा।" एक्स्ट्रा ने कहा।

"एक काम और आया है हाथ में।" राघव ने कहा।

"क्या?" धर्मा बोला।

"अंडरवर्ल्ड का सुधीर तौले। उसकी आजकल बाबा खान से तगड़ी लगी हुई है। सुधीर तौले के आदमी का फोन आया था कि बाबा खान के ड्रग्स के गोदाम को आग लगानी है। पांच करोड़ देगा।"

"पांच करोड़ कम हैं।" एक्स्ट्रा बोला—"ये बाबा खान का मामला है।"

"कम-से-कम पंद्रह तो होना चाहिए।" धर्मा ने गर्दन घुमाकर राघव को देखा—"तुमने क्या कहा?"

"मना कर दिया?"

"क्यों?"

"पैसे भी कम थे और हमें सुधीर तौले और बाबा खान के झगड़े में नहीं पड़ना है।"

"ठीक किया मना करके। सुधीर तौले के पास ढेरों आदमी हैं, उनसे क्यों नहीं करा लेता ये काम।"

"पंगे वाला काम तभी करना ठीक होता है जब माल भी तगड़ा मिले।" एक्स्ट्रा ने कहा—"पांच-दस करोड़ के चक्कर में बड़े मगरमच्छ से झगड़ा ले लेना ठीक नहीं। हम तो...।" एकाएक एक्स्ट्रा चौंककर बोला—"ये क्या...देवराज चौहान...।"

"देवराज चौहान।" राघव तुरंत उठकर बैठ गया—"कहां?"

"वो रहा।" धर्मा हैरानी से बोला—"कारों के बीच दौड़ता सड़क पार कर रहा है। नाइट सूट पहने है। ये क्या—पांवों में भी कुछ नहीं पहना है। नंगे पांव है। गड़बड़ है राघव।"

"लगता है देवराज चौहान किसी मुसीबत में है।" एक्स्ट्रा कह उठा।

तीनों की नजरें देवराज चौहान पर थीं।

देवराज चौहान कारों की परवाह न करता, दौड़ता सड़क पार करता जा रहा था।

"पीछे देखो, पीछे कौन लगा है।" राघव कह उठा।

परंतु पीछे उन्हें कोई नहीं दिखा।

"कार रोक एक्स्ट्रा।" धर्मा सोच भरे स्वर में कह उठा—"देवराज चौहान किसी मुसीबत में लगता है।"

"यहीं रोकूं, सड़क के बीच?"

"रोक, मुझे उतरना है।" धर्मा दरवाजा खोलता कह उठा।

एक्स्ट्रा ने तुरंत ब्रेक लगा दिए।

पीछे आते वाहनों के टायर भी चीखे।

कार रुकते ही धर्मा दरवाजा खोलकर बाहर निकला और देवराज चौहान की तरफ दौड़ पड़ा। राघव भी कार का दरवाजा खोलकर, बाहर निकलते एक्स्ट्रा से बोला।

"कार हमारे पीछे लेता आ।" कहने के साथ ही राघव भी उस तरफ भागता चला गया।

▭ ▭

"ताशा। मेरी ताशा।" बदहवासी के हाल में देवराज चौहान सड़कों पर दौड़ता कहता जा रहा था—"मैं आ रहा हूं ताशा। मैं आ रहा हूं। मैं भी तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। मैं तुम्हें चाहता हूं ताशा। तुम मेरी हो, सिर्फ मेरी...।" देवराज चौहान का चेहरा, शरीर पसीने से भरा हुआ था। चेहरे पर अजीब-सा पागलपन नजर आ रहा था। दो बार कारों से टकराते-टकराते बचा था। नंगे पांव यूं ही बोलता वो भागे जा रहा था। उसे कुछ भी होश नहीं था कि वो क्या कर रहा है।

राघव और धर्मा भागते-भागते उसके पीछे पहुंच चुके थे। वो देवराज चौहान को पुकारे जा रहे थे, परंतु देवराज चौहान ने एक बार भी पलटकर पीछे नहीं देखा था, जैसे कोई शक्ति उस पर अधिकार जमाए, उसे भगाए जा रही हो। उसकी सोचने-समझने की सारी शक्ति छीन ली हो।

देवराज चौहान के दौड़ने की रफ्तार भी बहुत तेज थी।

परंतु किसी तरह भागते-भागते धर्मा उसके पास पहुंचा और पीछे से उसकी कमीज का कॉलर पकड़ लिया। देवराज चौहान को झटका लगा। वो जोरों से लड़खड़ाया और गिरते-गिरते बचा। संभला।

तब तक राघव भी पास आ पहुंचा।

तीनों बुरी तरह हांफ रहे थे। देवराज चौहान के चेहरे पर छाए अजीब-से भावों को देखकर धर्मा-राघव चौंके।

"ताशा। मुझे ताशा के पास जाना है।" देवराज चौहान कह उठा—"वो मेरा इंतजार कर रही...।"

"चिंता मत कर।" राघव ने खोज भरी निगाह उसके चेहरे पर मारी—"हम सब ठीक कर देंगे। अपना हाल तो देख कि क्या बना रखा है। हमें बता क्या मामला है। तेरे काम आकर हमें खुशी होगी देवराज चौहान।"

"ताशा। ताशा-ऽ-ऽ-ऽ...।" ऊंचे स्वर में कहता देवराज चौहान पुनः भागने लगा।

"पकड़ राघव।" धर्मा भी भागा—"मुझे गड़बड़ लग रही है। देवराज चौहान अपने होश में नहीं लगता।"

देवराज चौहान इस बार पंद्रह कदम से ज्यादा न भाग सका।

राघव उसके पास पहुंचकर उसकी बांह पकड़ चुका था।

"क्या हुआ तुझे?" राघव कह उठा—"नाइट सूट में, नंगे पांव सड़कों पर कहां भागा जा रहा है?"

"ये ताशा कौन है।" धर्मा बोला—"लड़की के चक्कर में पड़ के खुद को बर्बाद मत कर। हमें देख, धंधे की तरफ ही ध्यान देते हैं। लड़कियों की तरफ तो देखते भी...।"

"ताशा। मुझे ताशा के पास जाना...।"

"कहां रहती है वो?" धर्मा ने पूछा।

"वो—वो होटल सी-व्यू पर्ल में रहती है।" देवराज चौहान गुम होश में कह उठा—"वो मेरा इंतजार कर रही है। वो रो रही है। मेरे बिना वो मर जाएगी। मैं भी उसके बिना नहीं रह सकता—ताशा के पास जाना है मुझे।" कहते हुए देवराज चौहान ने राघव की गिरफ्त से अपनी बांह छुड़ानी चाही। परंतु राघव पहले से ही सावधान था। बांह नहीं छोड़ी।

एकाएक देवराज चौहान के चेहरे पर गुस्सा नाच उठा।

"संभल।" धर्मा जल्दी-से राघव से बोला—"ये पंगा खड़ा करने वाला है।"

उसी पल देवराज चौहान ने जोरदार घूंसा राघव के चेहरे पर मारा।

राघव सावधान था। उसने फौरन देवराज चौहान की कलाई बीच में ही रोक ली।

"होश में आ देवराज चौहान।" राघव सख्त स्वर में कह उठा।

तभी कार पास आकर रुकी और भीतर से एक्स्ट्रा ने कहा।

"क्या हो रहा है? झगड़ा कर रहे हो क्या?"

देवराज चौहान के होंठों से गुर्राहट निकली और वो राघव पर झपट पड़ा।

तभी पास खड़े धर्मा ने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाली और उसका दस्ता वेग

के साथ देवराज चौहान के सिर के पिछले हिस्से में मारा। देवराज चौहान के होंठों से तेज कराह निकली और वो लहराकर राघव की बांहों में आ फंसा।

"कार में डाल इसे।" धर्मा कार का पीछे का दरवाजा खोलता कह उठा—"मामला बहुत ज्यादा गड़बड़ लग रहा है। हैरानी की बात है कि डकैती मास्टर देवराज चौहान, बुरे हाल में सड़कों पर एक लड़की के लिए पागल हुआ दौड़ता फिर रहा है।"

राघव और धर्मा ने देवराज चौहान को कार के पीछे की सीट पर लिटाया। धर्मा उसके साथ बैठा। राघव आगे की सीट पर बैठा तो एक्स्ट्रा ने तेजी से कार दौड़ा दी। आस-पास आते-जाते लोगों ने ये सब कुछ देखा। परंतु कार के चले जाने के बाद, वे सब अपने रास्तों पर निकल गए। मुम्बई जैसे शहर में किसी के पास वक्त नहीं था कि दूसरे के बारे में सोचें कि ऐसा क्यों हो रहा है। सब अपनी ही दौड़ में, दौड़े जा रहे थे।

▭ ▭

नगीना ने कॉलबेल बजाई।

चेहरे पर गम्भीरता थी। कुछ गुस्सा भी उभरा हुआ था। दरवाजे के पास खड़ी रही और दूसरी बार बेल बजाई तो भीतर से करीब आते कदमों की आहटें सुनीं फिर दरवाजा खोल दिया गया।

सामने मोना चौधरी खड़ी थी।

मोना चौधरी ने मुम्बई में एक फ्लैट ले रखा था कि मुम्बई आना अक्सर होता रहता है, होटलों में बार-बार रुकना ठीक नहीं था। नगीना इस फ्लैट के बारे में जानती थी और मोना चौधरी को देखने यहां आ पहुंची थी और मोना चौधरी इत्तफाक से मिल भी गई।

"बेला (नगीना के पूर्वजन्म का नाम) तुम?" नगीना पर निगाह पड़ते ही मोना चौधरी बुरी तरह चौंकी।

नगीना, मोना चौधरी को देखने लगी। मोना चौधरी ने नगीना के चेहरे पर छाई गम्भीरता को महसूस किया और पीछे हटती बोली।

"आओ, भीतर आओ।"

नगीना भीतर आई तो मोना चौधरी दरवाजा बंद करने के बाद बोली।

"बात क्या है बेला। तेरा चेहरा नार्मल नहीं लग रहा।"

"बहन, बहन के पास सहायता मांगने आई है।" नगीना ने थके स्वर में कहा।

"कह तो, क्या बात है, मैं तेरे लिए सब कुछ करूंगी।" मोना चौधरी ने नगीना का हाथ थाम लिया—"आज पहली बार है जो तू इस तरह मेरे पास आई है, जरूर कोई खास वजह होगी। कह तो...।"

दोनों सोफे पर जा बैठी।

"मैं बहुत-से अजीब हालातों में फंस गई हूं और देवराज चौहान इस स्थिति में नहीं है कि, वो कुछ कर सके। ऐसे में मुझे तेरी ही याद आई। तेरे पास आकर मैंने कुछ गलत तो नहीं किया?"

"बिल्कुल भी नहीं, मुझे बता क्या बात है। इस जन्म की न सही, पूर्व जन्म में मैं तेरी बहन थी बेला। फिर कुछ रिश्ते तो ऐसे होते हैं जो कभी नहीं टूटते। हमारा रिश्ता भी ऐसा है, बेशक हममें जो भी बातें होती रहें।"

"एक औरत।" नगीना ने गम्भीर स्वर में कहा—"जो खुद को रानी ताशा कहती है और कहती है कि वो दूसरे ग्रह से आई है और देवराज चौहान कुछ जन्म पहले उसका पति था। राजा देव कहते थे उसे—वो अब उसी राजा देव को लेने आई है।"

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"वो कोई नाटक खेल रही है।" मोना चौधरी ने गुस्से से कहा—"ऐसा नहीं हो सकता।"

"पहले ये ही लगता है कि वो कोई षड्यंत्र कर रही है, परंतु धीरे-धीरे उसकी बातों का यकीन आने लगता है।"

"तो तुम मानती हो कि वो सच कहती है?"

"मैं कुछ नहीं मानती। परंतु हालात खराब होते जा रहे हैं, इतने खराब कि मुझे तेरी याद आ गई। कुछ भी ठीक नहीं हो रहा। अच्छा ये ही होगा कि पहले तू सारी बातें जान ले, तभी कुछ कहना।"

"बता बेला। सब कुछ बता।" मोना चौधरी के चेहरे पर उलझन आ गई थी—"ऐसा क्या हो गया कि देवराज चौहान भी बेबस हो गया।"

नगीना ने बताना शुरू किया।

शुरू से लेकर अंत तक एक-एक बात बता दी।

सब कुछ सुनकर मोना चौधरी के चेहरे पर गम्भीरता दिखने लगी।

नगीना कहकर रुकी फिर बोल पड़ी।

"रानी ताशा सच है या झूठ। बबूसा जो कहता है उसके बारे में भी मैं यकीन से कुछ नहीं कह सकती। ये बातें ही ऐसी हैं कि उन पर भरोसा करना कठिन है। परंतु हालात बुरे होने लगे हैं। अर्जुन भारद्वाज ने इशारा दिया है कि रानी ताशा के सामने आने पर शायद हम उसे न रोक सकें और वो देवराज चौहान को अपने साथ ले जा सकती है। अर्जुन भारद्वाज पर मुझे पूरा भरोसा है। वो समझदार जासूस है और इस मामले को गहराई से जानने की कोशिश कर रहा है।"

"तो बेला तू चाहती है कि मैं रानी ताशा को रोकूं कि वो देवराज चौहान को न ले जा सके।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में बोली।

"मैं चाहती हूं कि रानी ताशा अपनी मनमानी न कर सके। मैं अभी तक नहीं समझ पाई कि वो क्या चीज है। देवराज चौहान अगर अपने होशोहवास में, अपनी खुशी से ताशा के साथ जाना चाहे तो मुझे जरा भी एतराज नहीं। परंतु मैं नहीं चाहती कि रानी ताशा अपनी ताकत के दम पर, जबर्दस्ती देवराज चौहान के ले जाए अपने साथ।"

मोना चौधरी के होंठ भिंचे थे। चेहरे पर सोचें थीं। वो बोली।

"जो बातें तूने बताई हैं, उससे मेरा दिमाग जोरों का हिल रहा है। सच बात तो ये है कि मैं जानती हूं तू जो भी कह रही है, सच कह रही है, परंतु तब भी जैसे इन बातों का यकीन नहीं आ रहा कि रानी ताशा, किसी दूसरे ग्रह से आई है और अपने पहले के जन्म के पति राजा देव (देवराज चौहान) को वापस ले जाना चाहती है। परंतु जो भी है, मैं जरूर देखूंगी इस मामले को और जैसा तू चाहती है, तेरे लिए वैसा ही काम करूंगी। हैरानी है इन बातों को देवराज चौहान मान रहा है, जगमोहन मान रहा है और अब अर्जुन भारद्वाज वो प्राइवेट जासूस भी मानने लगा है। पर मैं नहीं मानती। मुझे तो वो बबूसा भी, रानी ताशा की किसी चाल का हिस्सा लगता है।"

"मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाई।" नगीना बोली—"तू इस मामले में कुछ कर सके तो मुझे चैन मिलेगा मिन्नो।"

"फिक्र मत कर।" मोना चौधरी उठते हुए बोली—"मैं अभी तेरे साथ चलती हूं। रानी ताशा को मैं देखूंगी।" मोना चौधरी के चेहरे पर सख्ती उभरी—"वो कोई खतरनाक खेल खेल रही है और मैं उसे कामयाब नहीं होने दूंगी।"

▭ ▭

जगमोहन पागलों की तरह देवराज चौहान को ढूंढ़ता फिर रहा था। जब उसे होश आया तो बंगले पर कोई नहीं था। बबूसा और धरा भी नहीं थे। जगमोहन के माथे पर आया खून साफ करने के बाद धरा को फोन किया तो धरा से बात हो गई थी। जगमोहन ने देवराज चौहान के बारे में पूछा।

"देवराज चौहान का कुछ पता नहीं है। बबूसा एक बार फिर उसे गंध के सहारे ढूंढ़ने का प्रयास कर रहा है।"

जगमोहन ने फोन बंद किया और उसी वक्त कार पर होटल सी-व्यू पर्ल के लिए जुहु बीच की तरफ निकल पड़ा। होटल पहुंचकर, बाहर रहकर निगरानी करने लगा कि देवराज चौहान इसी होटल में आने को कह रहा था। रानी ताशा इसी होटल में ठहरी हुई है। परंतु वो नहीं जानता था कि रानी ताशा इस होटल के किस कमरे में ठहरी हुई है। जगमोहन को चिंता थी कि देवराज चौहान रानी ताशा तक न पहुंच जाए। तीन घंटे इंतजार

करने के पश्चात भी जब उसे देवराज चौहान नजर नहीं आया तो वो होटल के भीतर प्रवेश कर गया। रिसैप्शन से रानी ताशा के कमरे का नम्बर पता करके तीसरी मंजिल के 204 नम्बर कमरे में जा पहुंचा।

दरवाजे के पास लगी कॉलबेल बजा दी।

जल्दी ही दरवाजा खुला और विजय बेदी दिखा।

"कहिए।" बेदी ने शीतल स्वर में कहा।

"मैं होटल का असिस्टेंट मैनेजर हूं।" जगमोहन ने जबरन मुस्कराकर कहा—"डिस्टर्ब करने के लिए माफी चाहता हूं परंतु बगल वाले कमरे में ठहरे साहब ने शिकायत की है कि इस कमरे से ठक-ठक की आवाजें आ रही हैं।"

"ठक-ठक की आवाजें?" विजय बेदी ने अजीब से स्वर में कहा—"नहीं जनाब, ऐसा कुछ नहीं हो रहा यहां।"

"अगर आपको एतराज न हो तो मैं भीतर देख सकता हूं।"

"क्यों नहीं देख सकते जनाब। आपका होटल है। हम तो मेहमान हैं। आइए।" बेदी दरवाजे से हट गया।

जगमोहन ने धड़कते दिल के साथ कमरे में प्रवेश किया। नजरें घूमीं। सोमाथ को, रानी ताशा को और सोमारा को देखा फिर बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

"तो ये है रानी ताशा।" जगमोहन बड़बड़ाया—"बेहद खूबसूरत। बिल्कुल रानी की तरह लग रही है।"

जगमोहन ने बाथरूम चैक किया।

देवराज चौहान कहीं नहीं था।

"तकलीफ के लिए माफी चाहता हूं।" जगमोहन सबको देखकर मुस्कराता हुआ दरवाजे की तरफ बढ़ता बोला। बेदी उसके साथ-साथ था कि दरवाजा बंद कर सके।

"ठक-ठक कहीं मिली?" जगमोहन दरवाजे से बाहर निकला तो बेदी कह उठा।

"नहीं।"

"मैंने तो पहले भी कहा था कि नहीं मिलेगी।" बेदी ने मुस्कराकर सिर हिलाया।

बाहर निकलकर जगमोहन आगे बढ़ता चला गया। जेहन में रानी ताशा का खूबसूरत चेहरा नाच रहा था। बबूसा ने बताया था कि वो इंतहाई खूबसूरत है तभी वो रानी ताशा को पहचान सका था। परंतु वो देवराज चौहान के पीछे क्यों पड़ी है। देवराज चौहान यहीं पर आने के लिए भागा था और अब इस बात को घंटों हो चुके हैं। वो यहां तक पहुंचा क्यों नहीं?"

जगमोहन पुनः होटल के बाहर आकर जम गया।

परंतु देवराज चौहान आता-जाता कहीं नहीं दिखा। जब उसे विश्वास हो गया कि देवराज चौहान यहां नहीं आएगा तो कार पर सीधा बंगले पर पहुंचा कि देवराज चौहान कहीं वापस न आ गया हो। बंगला खुला पड़ा था। भीतर आने पर देवराज चौहान तो नहीं मिला, परंतु जिसे देखा, उसे देखकर जगमोहन क्रोध से सिर से पांव तक कांप उठा। हाथों की मुट्ठियां भिंच गईं। चेहरा दहक उठा।

वीरेंद्र त्यागी ठीक सामने सोफे पर टांग पर टांग रखे बेहद आराम से बैठा था।

"कमीने त्यागी, तुम...?" जगमोहन गुर्रा उठा।

वीरेंद्र त्यागी बेहद शांत भाव में मुस्कराया और कह उठा।

"मुझे यहां देखकर अगर ये सोचते हो कि मुझे पकड़ लोगे या मार दोगे तो ये तुम्हारी भूल है। त्यागी को पकड़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। त्यागी का मुकाबला नहीं कर सकते तुम।"

▭ ▭ ▭

से 'लक्की ड्रॉ' सिस्टम से विजेताओं के नाम के कूपन निकाले जाएंगे। जैसे कि पहले कूपन पर जिस भाग्यशाली पाठक का नाम होगा, वही पहला भाग्यशाली विजेता घोषित किया जाएगा। इसी प्रकार दूसरे और तीसरे विजेता चुने जाएंगे।

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय ईनाम आपके चहेते लेखक अनिल मोहन द्वारा वितरित किए जाएंगे।

'राजा पॉकेट बुक्स' का वादा है कि देवराज चौहान सीरीज के **'बबूसा'** उपन्यासों की श्रृंखला के समाप्त होने पर 60 दिन के भीतर विजेता पाठकों के नामों की घोषणा कर दी जाएगी और अगले 30 दिन में ईनाम वितरित कर दिए जाएंगे। इस प्रतियोगिता में जो भी पाठक हिस्सा लेंगे, उनके नाम-पते, अनिल मोहन के **'बबूसा'** श्रृंखला के अंतिम उपन्यास के बाद के नए उपन्यास में प्रकाशित किए जाएंगे। इस ईनामी प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए अब आप तैयार हो जाएं। आप अपनी प्रति अपने शहर के पुस्तक विक्रेताओं के पास आज ही से सुरक्षित करा दें।

प्रतियोगिता के नियम

1. इस प्रतियोगिता में 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनमें से आपको केवल 6 के सही जवाब देने हैं।
2. जैसा कि हमने 'मिस्ड कॉल' में घोषित किया है कि अनिल मोहन के देवराज चौहान सीरीज की 'बबूसा' सीरीज की श्रृंखला के हर उपन्यास में एक कूपन छपेगा, इस सीरीज के सभी उपन्यासों में छपे हुए कूपनों को आपको अपने पास संभालकर रखना है। और अंत वाले उपन्यास में छपे कूपन पर इसी सीरीज के सारे कूपन चिपकाकर प्रतियोगिता में छपे प्रश्नों के उत्तरों के साथ किस पते पर भेजना है उसकी जानकारी सीरीज के अंत वाले उपन्यास में दी जाएगी। आप उपन्यास पढ़ चुके हैं तो इस सीरीज का अंत में दिया हुआ पहला कूपन आप अपने पास काटकर सुरक्षित कर लें। या उपन्यास को ही आप अपने पास संभालकर रख लें।
3. जिन सही जवाब देने वाले पाठकों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय ईनाम नहीं मिलता है उन विजेता पाठकों में से 300 पाठकों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में 12" × 18" साइज का अनिल मोहन का हस्ताक्षरयुक्त पोस्टर दिया जाएगा तथा उन्हें अनिल मोहन के

उपन्यासों के Brilliant Reader नाम की उपाधि से नवाजा जाएगा। उन 300 विजेताओं के नाम का कूपन भी अनिल मोहन जी के द्वारा ही निकाला जाएगा।

4. जो भी पाठक हमें कूपन भेजेंगे वे ओरिजनल कॉपी होनी चाहिए। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकृत नहीं की जाएगी।
5. प्रतियोगियों से जो सवाल पूछे जाएंगे, वो 'बबूसा' उपन्यासों की शृंखला में से ही पूछे जाएंगे, प्रतियोगिता के प्रश्न इस सीरीज के अंतिम उपन्यास में प्रकाशित किए जाएंगे।
6. इस प्रतियोगिता में राजा पॉकेट बुक्स का कोई भी कर्मचारी भाग नहीं ले सकता।
7. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले पाठकों से विशेष निवेदन है कि वे अपने नाम का कूपन केवल एक ही बार भेजेंगे, एक ही नाम-पते के कई कूपन भेजने पर निर्णायक कमेटी कूपन को निरस्त कर सकती है।
8. प्रत्येक स्थिति में निर्णायक मंडल का निर्णय मान्य होगा।

विशेष नोट : घोषित किए गए प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार यदि किसी कारणवश—मॉडल नम्बर कम्पनी द्वारा बंद किए जाने की स्थिति में अथवा किसी अन्य स्थिति में—उपलब्ध नहीं हुए तो विजेता प्रतियोगियों को प्रथम पुरस्कार लैपटॉप के बदले 30,000 रुपए, द्वितीय पुरस्कार पांच प्रत्येक विजेताओं को गैलेक्सी मोबाइल के बदले 6,500 रुपए व तृतीय पुरस्कार एम.पी.3 प्लेयर के बदले 1,500 रुपए दिए जाएंगे।
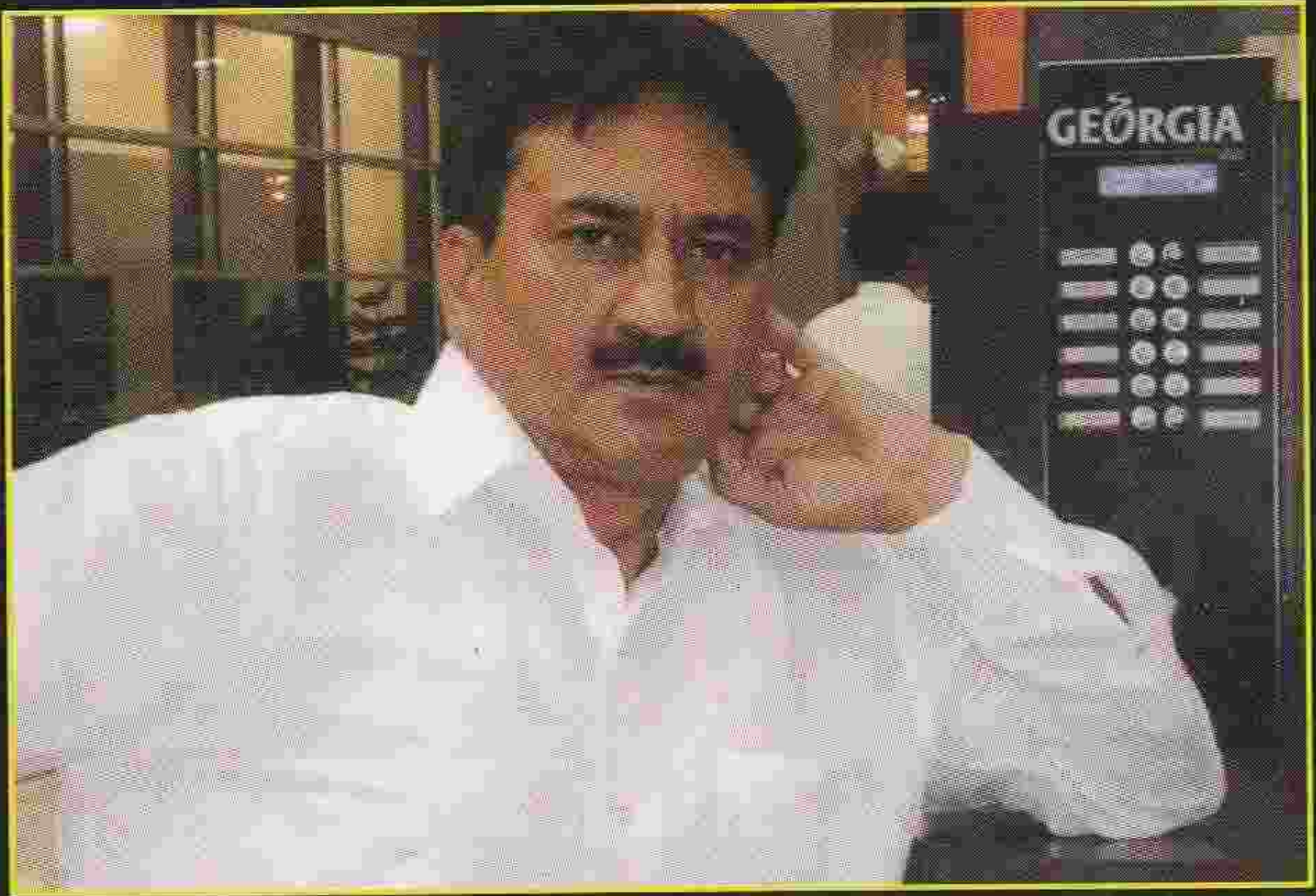
रानी ताशा सदूर ग्रह से राजा देव को वापस ले जाने पृथ्वी ग्रह पर आ पहुंची थी और मुम्बई में देवराज चौहान की तलाश पर लग गई। उससे टकरा गया विजय वेदी, जो कि सिर में फंसी गोली निकालने के लिए 12 लाख का जरूरतमंद था। वो इस काम में रानी ताशा की सहायता करने लगा। रानी ताशा शीघ्र ही देवराज चौहान तक पहुंच भी जाती परंतु 'बबूसा' रानी ताशा के रास्ते में रुकावटें डालने लगा। वो, देवराज चौहान और रानी ताशा का आमना सामना नहीं होनें देना चाहता था।

ISBN : 978-93-80871-53-0

9 789380 871530

Price : ₹ 60

A.H.W. TIGER SERIES